मङ्गलमणिमाला

(मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः)

द्वितीयो भागः

गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्

प्रयागः

5.2

श्रद्धेय गुरुजी को
सादर समर्पित !

नीरजा मिश्र
18.12.03
इलाहाबाद



देवगढ़ में दशावतार मंदिर की दीवार पर लगी हुई शेषशायी विष्णु की गुप्तकालीन प्रतिमा

॥ मङ्गलमणिमाला ॥

विविधग्रन्थेभ्य उद्धृतानां मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः

•

योजनानिर्देशकः प्रधानसम्पादकश्च

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

•

संकलनकर्त्री सम्पादिका च

डॉ० वीना मिश्रा

•

गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
चन्द्रशेखर-आज़ाद उद्यानम्
प्रयागः

२००२

प्रकाशक -

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी, डी०लिट्०
प्राचार्य
गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
चन्द्रशेखर आजाद पार्क
इलाहाबाद-२

मूल्य -

प्रकाशन वर्ष २००२

मुद्रक -

अलका कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
१०८/५ छोटा बघाड़ा
इलाहाबाद-२

RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
(Under the auspices of the Ministry of H.R.D.)
New Delhi

Ganganatha Jha Kendriya Sanskrit Vidyapitha
TEXT SERIES

Chief Editor
Prof. G.C. Tripathi
Principal

Vol. No. 47

MANGALMANIMĀLĀ

(A Collection of Mangalacarana-verses from various Sanskrit work)

Collected and edited by
Dr. Smt. Beena Misra
Manuscript Pandit and Curator-in-charge

Ganganatha Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha
Chandrashekhar Azad Park
Allahabad-211 002

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्
(केन्द्रीय-शिक्षामन्त्रालयस्याङ्गभूतम्)
देहली

गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठ-ग्रन्थमाला
प्रधानसम्पादकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

सप्तचत्वारिंशं प्रसूनम्

❖

॥ मङ्गलमणिमाला ॥

संकलयित्री सम्पादिका च
डॉ० बीना मिश्रा

गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
प्रयागः

पूज्य पितृश्री बसन्त कुमार शुक्ल
की पुण्य स्मृति
को समर्पित

विषय-सूची



मङ्गलमणिमाला

द्वितीयो भागः

(ब्रह्म-विष्णु-बुद्धादिदेवात्मकाः मङ्गलाचरणश्लोकाः)

FOREWORD

It is very gratifying that the second volume of the **Maṅgalamaṇimālā** is being issued by the Vidyapeetha within a few months of the appearance of the first one. This volume, as announced in the first volume, pertains to benedictory verses relating mainly to Viṣṇu and his various incarnations - including his special forms or **Aṃśāvatāras**. Since the Rāma and the Kṛṣṇa incarnations have a separate cult of their own and have developed themselves more or less as independent deities, they have been accorded separate sections. Kāma, the god of love, being regarded as the son of Lakṣmī and Viṣṇu also figures among the Vaiṣṇava deities.

The first volume has been very well received by the lovers of Sanskrit and hope that they shall extend the same warm welcome to this volume as well. I thank Mrs. Beena Misra for preparing this volume in this wonderful manner with a scholarly introduction and hope that the third volume on mother goddess and other female deities shall also see the light of day before long.

Prof. G.C. Tripathi
Principal
G.N. Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha

भूमिका

देवताओं का स्वरूप और रहस्य अगम्य है। वस्तुतः वह स्वानुभव से ही जाना जा सकता है। हमारे ऋषियों ने अपने अनुभवों से सिद्ध किया है कि सभी जड़-चेतन पदार्थों के पीछे एक दिव्य शक्ति होती है। यही शक्ति उसका देवत्व है। इसी परमशक्ति या परमतत्त्व के भिन्न-भिन्न अंशों को लेकर भिन्न-भिन्न देवताओं की कल्पना कर ली जाती है। वस्तुतः सभी देवता एक ही परमात्मदेव की विभूतियाँ ही हैं। परमात्मदेव या परमब्रह्म यद्यपि शब्द, स्पर्श, रस, रूप तथा गन्ध इन सबसे शून्य कहा गया है फिर भी पुराणों में उसके द्विविध रूप का वर्णन हुआ है। ये दो रूप हैं प्रकृति तथा विकृति—

रूपंगन्धरसैर्हीनः शब्दस्पर्शविवर्जितः।

प्रकृतिर्विकृतिस्तस्य द्वे रूपे परमात्मनः।।

(वि.ध. 46/ 1-2)

परमतत्त्व का अव्यक्त, अदृष्ट एवं अलक्ष्य रूप प्रकृति है। इसी को निर्गुण रूप भी कहते हैं —

अलक्ष्यं तस्य तद्रूपं प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता।। (वि.ध. 46/2)

इसके दूसरे रूप को विकृति कहा है —

साकारा विकृतिर्ज्ञेया तस्य सर्वं जगत्स्मृतम् । (वि.ध. 46/3)

यही साकार रूप है, सगुण रूप हैं इस सगुण रूप को परब्रह्म प्रकट करता है— माया का आश्रय लेकर ।

'स्वमायया वर्तितलोकत्रयम्'' (श्रीमद्भा. 3/21/21)

माया के द्वारा ही निर्गुण स्वरूप ब्रह्म सत्व, रज तथा तम इन तीन गुणों से युक्त होकर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय में लीन होता है।

सत्वं रजस्तम इति निर्गुणस्य गुणास्त्रयः।

स्थितिसर्गनिरोधेषु गृहीता मायया विभोः।। (श्रीमद्भा. 2/5/18)

सृष्टि का यह कार्य उस परमानन्दस्वरूप सनातन की लीला मात्र है—

"लोकवत्तु लीलाकैवल्यम् " (ब्रह्मसूत्र 2/1/3) अर्थात् परमेश्वर की यह सृष्टि रचना केवल लीला विलास ही है। परमेश्वर अपनी माया शक्ति के द्वारा अनेक रूपों में हो जाता है *"इन्द्रो मायाभिः पुरु ईयते"* (ऋ. 6/47/18)। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में क्रीडाविदग्ध परमेश्वर के विभिन्न रूपों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। यहाँ इस ग्रन्थ में संगृहीत मंगलाचरणों के परिप्रेक्ष्य में ही देवों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है।

परब्रह्म —

परब्रह्म कार्यकारण से रहित, कालादि से अविच्छिन्न, समस्त चराचर का स्वामी, सर्वव्यापी, शुद्धात्मा है। यह *"अणोरणीयान् महतोमहीयान् "* है। यह वह परमज्योति है जो अविद्या का नाश करती है, तथा स्वयंप्रकाश हैं। प्राणियों के सत् असत् कर्म इसी के अधीन हैं (श्लोक सं० 47)। अपनी माया शक्ति के द्वारा सृष्टि की लीला में तत्पर होता है। परब्रह्म की वह शक्ति जो सृष्टि उत्पत्ति के समय होती है "ब्रह्मा" कहलाती है। सृष्टि पालन के समय की शक्ति "विष्णु" एवं सृष्टि संहार के समय की शक्ति "शिव" कहलाती है। इन्हीं ब्रह्मादि त्रिमूर्ति के द्वारा सृष्टि का कार्य होता है। सम्पूर्ण देव-समाज में इन्हीं त्रिदेवों की प्रधानता है।

ब्रह्मा —

ब्रह्मा रजोगुणयुक्त हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण का कथन है कि सृष्टि करने वाली ब्राह्मी मूर्ति राजसी कहलाती है—

ब्राह्मी तु राजसी मूर्तिस्तस्य सर्वप्रवर्तिनी।। (वि.ध० 45/2)

प्रपञ्चरचनाकार (श्लोक सं०13) तथा जगत्सृष्टिकर्ता (श्लोक सं० 15) ब्रह्मा को विरञ्चि, धाता, विधि, विधाता, कहा गया हैं। वैदिक साहित्य में सृष्टि कर्ता देवों में विश्वकर्मा, हिरण्यगर्भ, प्रजापति, ब्रह्मा, धाता, विधाता के नाम परिगणित हैं आगे चलकर ब्रह्मा नाम ही अधिक प्रचिलित हो गया। मङ्गलाचरणों में ब्रह्मा का जो स्वरूप उभर कर सामने आता है उसके अनुसार वो पुरातनमुनि, कर्पूरधवल, चतुर्मुख तथा पद्मनाभ है। वेदों का सतत उच्चारण करते रहते हैं (श्लोक सं० 3), उपवीत धारण किये हुये, पद्मासनस्थ, मीलितनेत्र हैं (श्लोक सं० 7)। वह आदि अन्त रहित है,

चराचर विश्व जिनका कुटुम्ब है, श्रुतियाँ जिनका विशिष्ट आहार है, वाणी की देवी सहचरी है (श्लोक सं0 1)। विद्या के ये स्वयंवरपत्ति हैं (श्लोक सं0 11)। इन्हें अपरधर्मराज, सुरपति तथा शिव के साक्षात् सखा कहा गया है (श्लोक सं0 12)। इनका जन्म नारायण की नाभि से उत्पन्न कमल से हुआ। अपनें आप ही उत्पन्न होने के कारण ये स्वयंभू कहलाये।

विष्णु :

मङ्गलाचरणों में विष्णु का निर्गुण तथा सगुण दोनों ही रूप वर्णित है (श्लोक सं0 152)। वह ओंकारवाच्य है (श्लोक सं0 122), उन्हें *"भगवान् पुराणोऽव्ययः"* कहा गया है (श्लोक सं0 277)। विष्णु को *"सवितृमण्डलमध्यवर्ती"* कहा गया है। विष्णु का शरीर हिरण्यमय है, केयूर, किरीट, कनककुण्डल तथा अपने दो हाथों में शंख तथा चक्र धारण किये हुये हैं (श्लोक सं0 210) यहाँ वेदों में वर्णित विष्णु का सूर्य से सम्बन्ध स्मरणीय है। युग का अविर्भाव व लय उन्हीं में है (श्लोक सं0 150), वह परमपद है जिनकी नाभि से जगत्कर्ता ब्रह्मा तथा पदनख से गंगा का आविर्भाव हुआ। (श्लोक सं0 149)। ब्रह्माण्ड का ऊर्ध्वाण्ड विष्णु के नखँ से निर्भिण्ण हुआ और वहीं से गङ्गा प्रवाहित हुई (श्लोक सं0 154)। विष्णु यज्ञमय महापुरुष है(श्लोक सं0 251)। चतुर्भुज विष्णु के हाथों में शंख, चक्र, गदा तथा पद्म है, कहीं-कहीं इनके क्रम में भिन्नता भी दिखाई देती है जैसे कभी गदा, रथाङ्ग, अब्ज, शंख (श्लोक सं0 115) कभी शंख, चक्र, असि, गदा (श्लोक सं0 127) कभी शंख, असि, कौमोदकी गदा (श्लोक सं0 269) कभी गदा, शंख, चक्र, अक्षमाला (श्लोक सं0 290) कभी चक्र, शंख, अम्बुज, अभयमुद्रा (220), कभी कमल, असि, गदा, चक्र (श्लोक सं0251) कभी शंख, चक्र, कौमोदकी, कमल (श्लोक सं0 256) कभी शंख, चक्र, पद्म, गदा (श्लोक सं094)। चक्र धारण करने के कारण चक्रधर और शार्ङ्ग धारण करने के कारण शार्ङ्गधर कहे जाते हैं। चक्र और शार्ङ्ग उनके आयुध हैं। (श्लोक सं0273)। चक्रायुध से विष्णु ने नक्र का हनन किया (श्लोक सं0 211)।

विष्णु के दोनों चरणों में उन्नीस महाचिह्न है, एक चरण में आठ तथा दूसरे में ग्यारह चिह्न हैं (श्लोक सं0 100)। श्यामवर्णी विष्णु पीताम्बर, कौस्तुभमणि धारण करते हैं (श्लोक सं0 127) किन्तु सर्वविघ्नोपशान्ति के लिए शुक्लाम्बरधर,

शशिवर्ण," चतुर्भुज विष्णु का ध्यान किया गया है (श्लोक सं0184)। वनमाला, मीनाकृतिसुवर्णकुण्डल, केयूर, किरीट, कौस्तुभ मणि को धारण करते हैं। विष्णु का वाहन या आसन गरुड या सुपर्ण है (श्लोक सं0 115) यही गरुड विष्णु के ध्वज का चिह्न है इसलिए विष्णु गरुडध्वज कहे गये है (श्लोक सं0103)। शयनस्थल क्षीरोदधि है जहाँ पन्नगराजभोगशय्या पर नीलवर्णी विष्णु को शयन करते हुये देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो एक समुद्र मे दूसरा समुद्र शयन कर रहा है— *"शयित इव समुद्रैकदेशे समुद्रः"* (श्लोक सं0 347)। एक स्थल पर विष्णु के लिए *"सप्ताद्रिक्षेत्रवासश्ः"* कहा गया है (श्लोक सं0 294)।

विष्णु के लिए प्रयुक्त लक्ष्मीनारायण, लक्ष्मीकान्त, श्रीपति, लक्ष्मीनृसिंह, श्रीवल्लभ आदि अभिधान लक्ष्मी का विष्णु से तथा विष्णु का लक्ष्मी से अपृथकता को सूचित करते हैं। लक्ष्मी को सागर मंथन से उत्पन्न बताया गया है। सागर के मंथन के समय रज्जु रूप में प्रयुक्त किये गये शेषनाग का मुखभाग विष्णु के हाथों में था, जिस समय सागर मंथन से लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ उस समय लक्ष्मी को देखकर विष्णु के हाथ से रज्जु छूट गई और वे व्यर्थ ही बाहुओं का गतागत करते रहे (श्लोक सं0 253)। समुद्रमंथन के समय ही विष्णु का विवाह लक्ष्मी के साथ सम्पन्न हुआ, जिसका सुन्दर वर्णन कवि ने किया है (श्लोक सं0261)। लक्ष्मी सदैव विष्णु के उरस्थल में निवास करती है। (श्लोक सं0 222) विष्णु के शयन के समय विष्णु के चरणों के समीप सदैव रहती है तथा उनकी सेवा में लीन रहती है (श्लोक सं0219)। भुजगेन्द्रभोगशैय्या पर शयनरत विष्णु के चरणों की सेवा में लक्ष्मी रत है (श्लोक सं0 229)। लक्ष्मी के सानिध्य में चतुर्भुज विष्णु शंख, चक्र, गदा, व कमल से युक्त, कमलस्थ पीताम्बरधारी है (श्लोक सं0 256)। विष्णु व लक्ष्मी के वार्तालाप तथा परिहास का भी सुन्दर चित्रण मङ्गलाचरणों में प्राप्त हैं। कवि एक श्लोक में वर्णन करता है कि विष्णु लक्ष्मी से परिहासपूर्वक पूँछते है कि हे लक्ष्मी समुद्र तुम्हारे पिता है, चन्द्र तुम्हारा भाई है लेकिन तुम्हारी माँ कौन है? (श्लोक सं0 239)। अनन्त-विष्णु की शैय्या चार समुद्र हैं, वे सहस्र शिरवाले हैं (360)। यह जलधिशायी विराट् रूप विष्णु का विशिष्ट रूप है अन्य किसी देवता का यह रूप नहीं प्राप्त होता। विष्णु के विराट् रूप में कई देवों की स्थिति बताई गई है। विश्वरूप विष्णु के शरीर में ब्रह्मा, दक्ष, कुबेर, यम, वरुण, मरुत, चन्द्र, इन्द्र, रुद्र, शैल, नदी, समुद्र,

ग्रहगण, मनुज, दैत्य, नागेन्द्र, नाग, द्वीप, नक्षत्र, तारा, रवि, वसु, मुनि, व्योम, भू, अश्विनौ को संलीन कहा है (358)।

विष्णु का हरिहर रूप जिसमें दाहिना भाग शिव के वस्त्रों , आभूषणों एवं आयुधों से तथा आधा वामभाग विष्णु की वेशभूषा, आभूषण तथा आयुधों से सुसज्जित है जो वैष्णव तथा शैव इन दोनों धर्मो की एकता को प्रकट करता है। यमुना के जल की छवि वाले विष्णु तथा चन्द्रमा के समान छवि वाले शिव दोनों ही लक्ष्मी और गिरिजा के आनन्द के बीज हैं, विष्णु के चरण और शिव का सिर गंगाजल से भीगा हुआ है, शिव के वाम स्कन्ध में स्थित शेषनाग विष्णु के नाभिपंकज के नालमूल में मिल जाने से स्थूल मृणालवल्ली के समान प्रतीत होती है। हरिहर रूप के कारण पार्वती और लक्ष्मी के मध्य सीमा का विवाद है जिसका सुन्दर चित्रण कवि इस प्रकार करता है—

प्रीतियोग के कारण एक में मिला हुआ स्फटिक मणि और मरकत मणि के समान शोभा वाले भगवान् शिव एवं विष्णु के एकीभूत शरीर में कण्ठ की छवि एक समान नीली ही थी जिसके कारण पार्वती और लक्ष्मी का सीमा विवाद हुआ कि कितना अंश शिव का है और कितना अंश विष्णु का है।

हरिहर रूप में विष्णु वामाङ्ग हैं। शिव विष्णु के मोहिनी रूप को देखने की इच्छा से उनके स्थान पर पार्वती जी के साथ गये। शिव की इच्छा जानकर विष्णु उसी क्षण एक सुन्दर मोहिनी रूप में उनके समक्ष आ गये, प्रेमवशीभूत होकर शिव ने मोहिनी का आलिंगन कर लिया, शीघ्र ही विष्णु अपने रूप में आ गये (श्रीमद्भा. 8/12/18-29)। एक सुन्दर एवं अद्भुत स्त्री का रूप विष्णु ने देवों का हित करने के लिए धारण किया। समुद्रमंथन से निकले अमृत को बाँटने के लिए दैत्यों के ऊपर रूप की मोहिनी डालकर देवों को अमृत पिला दिया (श्लोक सं० 349)। इसी प्रकार संसार पर ज़ब किसी प्रकार का कष्ट आता है तब विश्वरूप सर्वात्मा संसार का हित करने के लिए अपने शुद्ध सत्वांश से अवतरित होकर पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करते हैं। अपने को अवतार विशेष के आवरण में छिपाये हुये वे उसी के समान प्रतीत होते हैं। भगवान् ने कितने अवतारों को धारण किया? इस विषय में ऐकमत्य नहीं है। श्रीमद्भागवत के चार स्कन्धों में भगवान् के अवतारों की गणना दी गई है। प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में अवतारों की संख्या बाइस (22) दी गई है परन्तु साधारणतया

भगवान् के तो चौबीस (24) अवतार प्रसिद्ध हैं जिनका क्रमिक उल्लेख पुराणों में मिलता है। वस्तुतः श्रीहरि के अवतार असंख्य हैं — *"अवतारा ह्यसङ्ख्येया हरेः"* (भागवत 1/3/26)। पुराणों में विष्णु के अवतारों की संख्या अलग- अलग है अग्निपुराण (अध्याय 48) की तालिका में चौबीस विष्णुओं की नामावली इस प्रकार है— 1. वासुदेव, 2. केशव, 3. नारायण, 4. माधव, 5. पुरुषोत्तम, 6. अधोक्षज, 7. संकर्षण, 8. गोविन्द, 9. विष्णु, 10. मधुसूदन, 11. अच्युत, 12. उपेन्द्र, 13. प्रद्युम्न, 14. त्रिविक्रम, 15. नरसिंह, 16. जनार्दन, 17. वामन, 18. श्रीधर, 19. अनिरुद्ध, 20. हृषीकेश, 21. पद्मनाभ, 22. दामोदर, 23. हरि, 24. कृष्ण। सामान्यतया अवतारों की संख्या दश ही मान्य है, जिनमें मत्स्य, कूर्म, नृसिंह, वराह, वामन, भार्गवराम, राम, बलराम, बुद्ध तथा कल्कि की गणना होती है। बाकी सभी अवतार इनके बीच ही समाहित हैं। विष्णु के हयग्रीव रूप को लेकर जो मंगलाचरण प्राप्त हुये है उनमें वे *श्रीहयाश्वोमुकुन्दः* (317), *तुरङ्गमुखः* (316), *अश्ववक्त्रः* (315), *भोगप्रस्तरशायिनम् हरिग्रीवं* (319) आदि अभिधानों से अभिहित हैं। मधु नामक राक्षस के द्वारा अपहृत किये गये वेदों को वापस लाने के लिए विष्णु का यह अवतार हुआ (314)। अश्ववक्त्र विष्णु के नेत्र लाल है, श्वेतकमल आसन है, रथाङ्ग तथा शंख धारण किये हैं (315)। वे मधुकैटभदर्पहारि हैं (316)। दशावतारों में विष्णु के मत्स्यावतार को प्रथम स्थान दिया गया है।

मत्स्यावतार —

मङ्गलाचरणों में प्रयुक्त *आदिमत्स्यस्स,* मुरारिमीनः, तनुर्मीनाभिधानो हरिः, मीनतनोर्मुरारेः, चक्रपाणेः, प्रलयजलधिलीलाशीफरं शाफरं, क्रीडाझषः केशवः, एष भगवान् मीनाकृतिः, शौरेर्मीनतनोः, श्रीकान्तस्य मात्स्यं रूपं, मीनरूपी देवः श्रियःपतिः, मायामीनतनोः, वेदोद्धारपरायणस्य नारायणस्य, हरेर्मीनवपुषा, मात्सीम्मूर्तिम्, मीनतनो हरे, आदि सभी पदों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीनकाल में प्रलय के समय भगवान् विष्णु ने मत्स्य का रूप धारण कर वेदों का उद्धार किया था।

प्रलयकाल में जब सभी समुद्र एक हो गये उस समय मत्स्य का शरीर एक द्वीप के समान था (373), उसका शिरोभाग चन्द्र और सूर्य से चिह्नित सुमेरु पर्वत के शिखर के समान था (श्लोक सं0 377)। वेदों के उद्धार से सम्बन्धित कथा का वर्णन इस प्रकार है कि जब ब्रह्मा को जम्हाई आई तब उनके मुख से वेद जलधि में गिर गये

और उनको शंखासुर लेकर भाग गया, तब विष्णु ने मत्स्य का अवतार ग्रहण कर शंखासुर का वध कर वेदों को ग्रहण कर पुनः ब्रह्मा को सौंप दिया (श्लोक सं0 370) और *"दत्तवेदः"* कहलाये (श्लोक सं0 371)। शंखासुर के वध के बाद वेदों को ब्रह्मा को प्रदान करने के पश्चात् जलधि के किनारे मत्स्य ने शंखनाद किया (श्लोक सं0 371)। जिस यमय मत्स्य ने शंखासुर का वध किया उस समय उनके लाल नेत्रों से अग्नि की ज्वाला निकल रही थी, नीलमेघ के समान वर्ण था, (श्लोक सं0 383)। उनका शरीर इतना विशाल था कि उनकी श्वास से उछले जलधि जल से आकाश में समुद्र तथा समुद्र में आकाश बन गया (श्लोक सं0 366)। अपने पुच्छाभिघात से जलधिजल को तुच्छ बना दिया (श्लोक सं0 380)। एक श्लोक (385) में कवि कहता है कि प्रलय काल में मात्सीमूर्ति ने जलधि में ब्रह्माण्डो के अण्डो का सृजन किया उस प्रसवकाल में प्रसवखेद के चीत्कार स्वरूप ही ये वेद है-

"विसृजन्त्याः पुरा यस्य ब्रह्माण्डाण्डानि वारिधौ।
सूतिखेदारवो वेदास्तां मात्सीम्मूर्तिमाश्रये।।"

कूर्मावतार —

मङ्गलाचरणों में प्रयुक्त *कमठाकृतिं धृतवान् स हरिः, कूर्माकृतये हरये, क्रीडाकूर्मकलेवरः स भगवान्, कच्छपायिततनुः हरिः, क्रीडाकूर्मतनुः हरिः, कूर्मात्मकः स हरिः, कूर्मदेहः माधवः* आदि पदों से स्पष्ट है कि कूर्म विष्णु का अवतार है। अमृतमंथन के समय मन्थन दण्ड के रूप में प्रयुक्त किये गये मन्दराचल को कूर्म ने अपनी पीठ पर संभाला। मन्दराचल की चोट से भयभीत समुद्र के निवासी जीवजन्तुओं ने कूर्म भगवान् के उदर एवं पैरों में छिपकर अपनी रक्षा की (श्लोक सं0 400)। इस प्रकार त्रैलोक्य रक्षा के लिए विष्णु ने कूर्म का अवतार लिया। मन्दराचल व समुद्र की रक्षा के लिए अपने अंगों के साथ-साथ अपनी श्वासों को भी समेट लिया इस प्रकार कच्छपायित तनु हरि ने त्रैलोक्य की रक्षा की (श्लोक सं0 398)। कूर्म का आकार इतना विशाल था कि उसके पृष्ठभाग में मन्दराचल के घिसने से बने हुये दाग में लगी हुई मिट्टी के समान यह पृथ्वी प्रतीत हो रही थी (श्लोक सं0 390)। उनके श्वाससमीर के वेग से दूर फेंकी गई (उत्क्षिप्त) पृथ्वी शेषनाग के फणों पर तने हुये छत्र की शोभा पाती है तथा शेषनाग निष्प्रयास ही पृथ्वी के धारण में समर्थ होते है (श्लोक सं0 399)। उनकी पीठ पर मन्दराचल के स्पर्श से होने वाली खुजली के कारण निद्रालु

भगवान् के श्वासानिल के आवागमन से समुद्र की उत्ताल तरंगो का उठना गिरना जो शुरु हुआ वह आज भी थम नहीं रहा है (श्लोक सं0 397)। एक अन्य श्लोक में समुद्रमथन के समय धारण किये गये कमठाकृति की हेतूत्प्रेक्षा करते हुये कवि का कथन है कि लक्ष्मी को समुद्रमथन से पूर्व ही प्राप्त करने की इच्छा से पर्वताकार कमठरूपी भगवान् समुद्र के अन्दर प्रविष्ट हुये (श्लोक सं0 387)।

वराहावतार —

आदिवराहमूर्तिः, क्रोडावतारो हरिः, क्रोडाकृतिः केशवः, क्रीडावराहाकृतिः, भूत्वा वराहो स हरिः, कोलरूपं हरेः, विष्णोर्वाराहं वपुः, महाक्रोडः, सूकरतनुः, कोलः, कोलकलेवरः, प्रथमपोत्री, क्रीडाक्रोडाकृतेर्विष्णोः, देवोवराहमूर्तिः आदि पदो से विष्णु के वराहरूप का स्पष्ट संकेत मिलता है। कल्पान्त में जब पृथ्वी समुद्र में डूबी हुई थी तब उस पृथ्वी को वराहमूर्ति भगवान् ने अपने दाँतो के अग्र भाग में धारण किया (श्लोक सं0 446)। महाक्रोड हरि (श्लोक सं0 438) ने अपने दाहिने दंष्ट्र के अग्र भाग में पृथ्वी को धारणकिया (श्लोक सं0 424)। एक श्लोक में वर्णित है कि हैमाक्षदैत्य द्वारा हरण की जाती हुई पृथ्वी को देखकर हरि ने वराह का रूप धारण कर उस दानव को मारा तथा पृथ्वी को धारण किया (श्लोक सं0 410)। सप्तार्णवी पृथ्वी का उद्वहन् अपने दंष्ट्र के अग्र भाग से किया (श्लोक सं0 439)। उस वराह का शरीर इतना विशाल था कि सुमेरु पर्वत उसके खुरों के मध्य में था (श्लोक सं0 430)।

नृसिंहावतार —

हिरण्यकशिपु का वध तथा प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए विष्णु ने नृसिंह अवतार लिया *"भक्तार्तिदैत्यदमनाय कृतावतारो स नरहरिः"* (श्लोक सं0 531)। नृसिंहरूप हरि ने नखाङ्कुरों से दैत्य के वक्ष को विदारित किया (श्लोक सं0 505)। सिंह वपुष हरि के नख रक्त वर्ण के है (श्लोक सं0 512) हिरण्यकशिपु के वक्षःस्थल को विदीर्ण करने के कारण नख लाल रंग के हो गये है (श्लोक सं0 521) *सिंहो हरिः* (श्लोक सं0 524), *नरकेसरी* (श्लोक सं0526), *व्याजसिंहो* (श्लोक सं0 497), *नृसिहाकृतेर्देवस्य* (श्लोक सं0 520), *मायामृगेन्द्रो* (श्लोक सं0 522), *नृसिंहरूपं नारायणं* (श्लोक सं0 546), आदि अभिधान विष्णु के नृसिंह अवतार को ही समर्पित है। नरसदृश वपु तथा सिंह गुख वाले विचित्र रूपधारी विष्णु

ने न धनुषबाण न खड्ग अपितु अपने कुटिल नखों से ही दैत्यराज को मारा (श्लोक सं0 493) नख ही उनके अस्त्र थे (श्लोक सं0 500) दैत्यराज को मारकर प्रह्लाद को प्रसन्न किया (श्लोक सं0 495)। उग्रमूर्ति नृसिंह (श्लोक सं0 533) का वक्त्र विकराल है हाथों में शंख, गदा, असि तथा चक्र धारण किये हैं (श्लोक सं0 546)। स्तम्भ को तोड़कर नृसिंह उससे निकले और दैत्येश्वर को एक ही क्षण में नरहरि ने मार डाला (श्लोक सं0 498)। स्तम्भ से उत्पन्न विष्णु का मुख सिंह का है जो प्रह्लाद के लिये दया के सागर है (श्लोक सं0 539)। दानव को दोनों हाथो से तौलने वाले नृसिंह की आभा सुमेरु पर्वत के शृङ्गाग्र में निविष्ट सहस्रसूर्यो की किरणों वाली है (श्लोक सं0 556)। लक्ष्मी के द्वारा इनके क्रोध की शान्ति होती है (श्लोक सं0 510)। लक्ष्मी के सानिध्य के कारण विष्णु लक्ष्मीनृसिंह है जो क्षीरसागर में शेषनाग के द्वारा छत्रित शैय्या में वामाङ्काध्यासित लक्ष्मी के द्वारा आलिंगित है (508)। नखों से लक्ष्मी के कुचों में चित्र बनाते है (श्लोक सं0 548) नृसिंह भगवान् का एक स्वरूप वर्णन इस प्रकार भी है — क्षीर सागर के मध्य में रत्न के बने प्रासाद में स्थित सिंहासन में, शेषनाग की शैय्या में शेषनाग की फणरूपी छत्र से सुशोभित श्वेतकिरणों से युक्त हाथ में चक्र, कमल, धनुष लिये हुये तीन नेत्रों से युक्त है। (श्लोक सं0 499)। भगवान् नृसिंह आनन्द मुग्ध नयन वाले हो जाते है, जब लक्ष्मी उनके पास होती है (श्लोक सं0 490)। कृतयुग में भगवान् नरसिंह का वर्ण श्वेत (शंखवर्ण), त्रेता युग में पीत (काञ्चनाभ), द्वापर युग में लाल (रक्तवर्ण), तथा कलियुग में नीला (नीलमेघाम्बुनाभ) वर्णित है (श्लोक सं0 494)।

वाम्नावतार —

दैत्येन्द्र बलि को पाताल लोक का अखण्ड राज्य तथा इन्द्र को इन्द्रासन प्रदान करने के लिए भगवान् विष्णु ने व्रामन का रूप धारण किया। दैत्यराज बलि के यज्ञ में ब्रह्मचारी, विप्र, शिखाधारी रूप धारणकर (568) भगवान् विष्णु बलि से प्रार्थना करने के लिए वामनतनु वाले हुये (569)। भगवान् के वामन बनने पर उनके अन्दर स्थित त्रिलोकी का कलह कुछ इस प्रकार हो रहा है कि हे पृथ्वी तुम हटो, हे समुद्र तुम अपने जल को समेट लो, हे पर्वत तुम थोड़ा जाओ (565)। अपने तीन पदक्रमों से पृथ्वी को नापने के समय वामन रूपधारी मुरारी का वपु आश्चर्यजनक रूप से क्रमशः बढ़ गया (574)। विष्णु के चरण से निकली हुई गंगा को उनके चरण

से बहते हुये स्वेदरेखा के रूप में उत्प्रेक्षित किया गया है। त्रिलोकी को नापने के समय सूर्य के निकट विष्णु का पैर हो जाने से सूर्य के ताप के कारण पैर से जो स्वेद निकला मानो वह जाह्नवी है। (593) त्रिलोकी को नापने के समय ब्रह्मा जी ने वामन के चरणों को अर्घ्य अर्पित किया और उससे गिरा हुआ जल ही त्रिलोकी पावन गंगा के रूप में परिणत हुआ (582)।

परशुरामावतार —

अखिलराजकक्षयकरः (602), *राजान्तकः* (607) आदि अभिधानों से युक्त परशुराम ने भृगुवंश में जन्म लेकर (595) क्षत्रियों का अन्त किया तथा विप्र को पृथ्वी प्रदान किया (697)। परशुराम का आयुध कुठार है (605)। उनका शरीर गौराङ्ग तथा सुन्दर है वे पीतवस्त्रधारण करते हैं (606)।

बलरामावतार —

मदविह्वलः हली, (615), *मत्तस्य हलिनो* (611), *हलधरः* (612) *मदक्षीवः* (616) आदि अभिधान बलराम के मद से उन्मत्त स्वरूप पर प्रकाश डालते है। मदमत्त बलराम की वाणी स्खलित होती है वाणी के उस स्खलन को कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से काव्य में प्रस्तुत किया है (614)।

कल्कि अवतार —

" कल्कं स ते हरतु कल्किकुले भविष्यन् " (624)।, *"म्लेच्छानाम् अवसान् कृत स भगवान् कल्की हरिः"* (621), *"म्लेच्छान् हत्वा दलितकलिनाकारि सत्यावतारः"* (620), *कल्किहरिः* (619) आदि प्रयोगो से यह स्पष्ट होता है कि विष्णु का कल्कि अवतार कल्किकुल में होगा, यह विष्णु का सत्यावतार है जो म्लेच्छों के नाश के लिये होगा। वे तुरगाधिरूढः (624) कृपाणपाणिः (618) है। वेदद्वेषी, सत्पथ से विरत, मूढ तथा शठों के सिरों का छदेन अपने कृपाण से करेगें (618)।

रामावतार —

रघुपतिर्येनाकृतिः स्वीकृता त्रातुं राक्षसभारतोऽनवरतं खिन्नामलं मेदिनीम् (654) इस श्लोकांश के अनुसार राक्षसों के भार से निरन्तर दुःखी पृथ्वी की रक्षा के लिए विष्णु ने रघुपति राम के रूप मे अवतार लिया। खरविराध का विध्वंस (661) यज्ञों में विघ्न डालने वाले गाधिपुत्र का नाश, उल्बण, कबन्ध तथा कपीन्द्र बाली का वध

भी राम ने किया (736)। *देवता रामनामा* (651), *रामाभिधानो हरिः* (745), *रामं विष्णुरूपं* (703) *रामनामावतारः* (771) आदि पद विष्णु के रामावतार को स्पष्ट करते हैं। राम के रूप का वर्णन करते हुये कवि कहता है कि उनकी कान्ति केकी के कण्ठाभ के समान नील है, पीतवस्त्र धारण किये हैं, दोनों हाथों में धनुषबाण हैं, कपिसमूह से युक्त, भाइयों से सेवित तथा पुष्पकारूढ़ हैं (662)। अम्भोधरकान्ति वाले राम वीरासन मुद्रा में बैठे हैं, एक हाथ ज्ञानमुद्रा की स्थिति में है तथा दूसरा हाथ जाँघ पर स्थित है, विद्युत की कान्ति वाली कमलहस्ता सीता पार्श्व में विराजमान हैं (659)। ब्रह्मतेज रामचन्द्र के कलांश से मत्स्य, कूर्म, वराह, नरहरि, वामन, जमदग्नि, बलराम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि उत्पन्न हैं (717)। अहल्या का कल्याण करने वाले (634) राम करुणानिधान हैं। (810)। यज्ञ की रक्षा में तत्पर है (789)।

कृष्णावतार —

भागवान् श्रीकृष्ण भारतीय मनीषियों के अनादि काल से आराध्य रहे हैं। उनके सगुण और निर्गुण दोनों रूपों का कवियों ने वन्दन किया है। वे *परंब्रह्मसच्चिदानन्दविग्रहम्* (821), *परमाणुविग्रहम्* (822) तथा *श्रीकृष्णाख्यं परंब्रह्म* (881), *श्यामीभूतं ब्रह्म* (906) कहे गये हैं। वे जगत् की सृष्टि करके स्वयं उसमें प्रतिष्ठित होते हैं (946)। वे लीलापुरुषोत्तम हैं। उनकी दिव्य लीलायें भक्तजन मनोरञ्जनी हैं। लीला के लिये वृन्दावन विहारी आदि रूपों में भी वे शुद्ध परब्रह्म ही हैं तथा त्रिलोकी की मर्यादा सुरक्षित रखने के लिये मत्स्य, कूर्म, वराहादि रूपों में प्रकट होते हैं (856)। त्रिलोकी में धर्म की संस्थापना, साधुजनों का परित्राण, दुष्टों का निग्रह, गो, ब्राह्मण, तथा वेद प्रतिपालन ही उनके अवतार का मुख्य प्रयोजन है। उनके सगुण रूप के आराधकों ने उनके कृष्णावतार में की गई अघटितघटनायटीससी लीलाओं का सुन्दर चित्रण किया है। कृष्ण को हरि, वासुदेव, देवकीनन्दन, नन्दबाल, यदुनन्दन, केशव, कंसारि, मुरारि, वनमाली, वंशीधर, घनश्याम, दामोदर, गिरिधारी, मुकुन्द, माधव, गोविन्द, गोपाल, श्रीवल्लभ, मधुसूदन, मोहन, वृन्दावनविहारी आदि नामों से अभिहित किया गया है जो उनके स्वरूप व कृत्यों को दर्शाते हैं। कृष्ण का अवतार यदुकुल में हुआ (996), वे यदुनन्दन (840), यदुभागधेय (906), तथा यादवाधीश हैं (900)। पृथ्वीभारनाशी देवकीनन्दन मुकुन्द कृष्ण वृष्णि-वंश के दीपक हैं (882)।

घुंघराले बाल, तिलक, मौक्तिकमाला, हाथ में नवनीत ऐसा शिशु कृष्ण का रूप है (1017)। शिशु कृष्ण वटदलपुटशायी (979) होकर अपने ही पैर का अंगूठा मुँह में डाले हैं मानो वह यह जानना चाहते हो कि पीयूषरस को छोड़कर मुनिगण उनके चरणों का रसपान क्यों करते हैं। बालगोपाल की लीलास्थली गोकुल है, उनका मुख दधि विलिप्त है, पैरों में नवल किंकिणी है तथा गोकुल में नृत्यलीला में रत है (1018)। अतसी पुष्प के समान कान्ति वाले वनमाली कृष्ण बर्हावतंस, श्रीवत्स, कौस्तुभ, वेणु, पीताम्बर तथा दिव्याङ्गभूषण को धारण करते हैं (914)। यमुना किनारे कदम्बवृक्ष के नीचे नवगोपवधुओं के साथ विलास में रत है (817)। गोपालकृष्ण के ललाट मे कस्तूरीतिलक, वक्षःस्थल में कौस्तुभ, नासाग्र में नवमौक्तिक, करतल में वेणु, कर में कङ्कण, कण्ठ में मुक्तावली तथां सर्वाङ्ग में हरिचन्दन है (858)।

कृष्ण की बाललीलाओं में दधि-नवनीत चोरी, मृत्तिका-भक्षण, कालिय-मर्दन, पूतना-वध, गोवर्द्धनधारण, गोपीप्रेम, राधाप्रेम, रासलीला आदि अधिक चर्चित है। कृष्ण दधिप्रेमी (1034), नवनीतप्रेमी (827), घर-घर से नवनीत चुराने वाले (1027) तथा नवनीत-भिक्षु है (1030)। प्रांतः काल दधिमथन की आवाज से जाग जाते हैं और मुख की वायु से दीपक बुझा कर अँधेरा करके शीघ्रता से नवनीत खा लेते हैं (1033)। उनकी नवनीत चोरी इस प्रकार वर्णित है— श्रीकृष्ण किसी दूसरी गोपी के घर पर ऊँचे छींके पर रखे हुये दधि, दूध, नवनीत आदि को पाने के लिये बड़ा उपाय रचते हैं वे पहले एक सहायक को ऊँचे पीढ़े पर खड़ा करते है फिर उसके कंधे पर बैठ जाते हैं, छींके पर रखी हुई मटकियों के पास एक घण्टा भी बँधा हुआ है जिसे हाथ से पकड़ लेते है जिससे घण्टे की आवाज न होने पाये, एक कीले से दधिपात्र में छेद कर देते हैं और उसमें रखे हुये दधि को पीने लगते हैं तभी उसघर की स्वामिनी गोपिका के अचानक आ जाने पर उसके मुख में दूध दही का कुल्ला कर स्वयं भाग जाते हैं (1094)। नवनीत भाण्ड में हाथ डाले हुये स्थिति में पकड़ लिये जाने पर कई तरह के बहाने बनाते है कभी कहते हैं कि भाण्ड के अन्दर पिपीलिका थी उसे निकाल रहा था (1024) कभी कहते हैं कि हाथ में धारण किये गये कङ्कण का पद्मराग हाथ को तप्त कर रहा था उस ताप को दूर करने के लिए नवनीतभाण्ड में हाथ डाला था (1025)। नवनीत चुराने पर माता यशोदा ने कृष्ण को गौओं की रस्सी से बाँधा किन्तु ऐसी स्थिति में भी कृष्ण शान्त नहीं बैठे और बँधे-बँधे ही दो

यमजार्लुन वृक्षों का उद्धार कर दिया उन्हें देव बना दिया और स्वयं दामोदर संज्ञा से विभूषित हुये (1043)। पयःपान से तेरी शिखा बढ़ेगी ऐसा माँ यशोदा से सुनकर अर्धक्षीरपान के बाद ही कृष्ण अपनी शिखा का स्पर्श करते हैं और प्रसन्न होते हैं (1011)। मृत्तिका-भक्षण की शिकायत सुनकर माता यशोदा के कहने पर जब कृष्ण ने मुँह खोला तो उनके मुख के अन्दर समस्त ब्रह्माण्ड विद्यमान देखा जिससे माता अत्यन्त विस्मत हुई (1090)।

गोपालक कृष्ण का एक रूप यह भी है- वर्षाकालीन मेघ के समान श्यामल वर्ण के शरीर पर धारण किया गया पीतम्बर बादलों में बिजली के समान है, गले में गुञ्जा (घुँघुचियों) की माला, कानो में मकराकृति कुण्डल, सिर में मोरपंख, वक्षःस्थल में वनमाला, दाहिने हाथ में दही भात का कौर, बगल में बेंत और सींग दबाये हुये हैं तथा कमर के फेंटे में वंशी लटकी हुई है (1036)।

वृन्दावन में गाय चराने के लिए प्रातः काल से ही निकल जाते हैं, गाय के समूह के पीछे-पीछे वेत्रपाणि कृष्ण चलते हैं (1037)। गाय चराते समय कृष्ण वंशी बजाते हैं (1038) कंसारि कृष्ण की वंशी का स्वर ॐकार ध्वनि की व्याख्या, व्रजाङ्गनाओं के मानखण्डन के लिए कामदेव का तीक्ष्ण शर, सुरतक्रीडारूपी वृक्ष का अंकुर, कामदेव के राज्याभिषेक-लक्ष्मी का पटहध्वान है (1065) जिससे कालिन्दी का प्रबल प्रवाह थम जाता है, पर्वत पिघल उठते हैं, वन्यजीव विवश होकर सुनने लगते हैं, गायें आनन्दित होकर अपने कान ऊपर कर के एकतान भाव से सुनने लगती है, मुनिजनों का ध्यान टूट जाता है और उससे सातो स्वर प्रकट हो जाते हैं (1073)। कल्पतरु के मूल के पास वंशीवादन करते समय कृष्ण की छवि त्रिभङ्गी हो जाती है (1066)।

इन्द्र की प्रचण्ड वृष्टि से व्याकुल गोकुल की रक्षा के लिये गोपरूपी कृष्ण गोवर्द्धन जैसे विशाल पर्वत को खेल-खेल में उठाकर एक ऊँगली पर धारण कर लेते हैं (1052)। गोवर्द्धनपर्वत उठाने के पूर्व गोपियों ने गोरोचन और कुंकुम का तिलक, दधि लिप्त अक्षत तथा दूर्वांकुर और लाजा को कृष्ण के मस्तक पर लगाया (1048)। गोवर्द्धनधारण के समय राधा और कृष्ण को परस्पर एकटक देखते हुये किसी गोपी ने राधा से कहा कि अरी तू कृष्ण के सामने से हट जा, ये तुझे देखते-देखते कहीं गोवर्द्धन को गिरा न दें, जिसे सुनकर श्रीकृष्ण के दीर्घ निःश्वास निकलने

लगे जिनसे पर्वतवहन् के परिश्रम का भ्रम होने लगा (1055)। कृष्ण के राधाप्रिय रूप का अनेक भावों में वर्णन किया गया है। राधा के प्रणयी कृष्ण किशोर हैं (1136) गोपवेशधारण कर कृष्ण राधा को कुञ्जों में ले जाते हैं (1131), राधा के साथ क्रीडायें करने वाले कृष्ण क्रीडाविट कहलाये (1142)। मायाशिशु कृष्ण गर्भगृह में ही राधा का आलिंगन करते हैं (1150)। राधाकृष्ण की युगल उपासना में प्रेमभक्ति के बीज हैं। वृन्दावन में राधाकृष्ण के उन उन स्थलों से मंगलकामना की गई है जहाँ जहाँ उन्होंने क्रीडायें की हैं। कृष्ण की मोहिनी लीला का स्थल वृंन्दावन है (930), वृन्दारण्यों के निकुञ्ज कृष्ण के रासस्थल है (1182) जहाँ वे व्रजयुवतियों के रञ्जन के लिए रास करते हैं (1181)। रासोत्सव रसिक कृष्ण चन्द्र की ज्योत्स्ना वाली रात में केकीवन में गोप-गोपियों के साथ रास करते हैं (1183)। कृष्ण के रासविहारपरक श्लोकों में कहा गया है कि श्याम सुन्दर ने यमुना तट पर वृन्दावन् में समस्त जीवों को आकर्षित करने वाली वंशी बजाई जिसे सुनकर मन्त्राकृष्ट के समान गोपिकायें अपने समस्त कार्यों का परित्याग करके वहीं पर आ गईं तथा कृष्ण ने अपनी अन्तरंग रासलीला के द्वारा उन्हें अपना परमप्रेम्पात्र बना लिया। अर्जुन को जय दिलाने हेतु सारथि के रूप में श्रीकृष्ण रथ पर विद्यमान होते हैं (1187)। वे महाभारत के सूत्रधार हैं (997)। ज्ञानमुद्राधारी (1186) कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया (1188)। कृष्ण के विश्वरूप का चित्रण करते हुये कहा गया कि भगवान् के शरीर में असंख्य सूर्य, चन्द्र, समस्त चन्द्रादिक ग्रह, समस्त ब्रह्माण्ड विद्यमान है, उनके मुख, बाहु, चरण असंख्य हैं, इन्द्रादि देवगण उन्हीं में समाये हैं, उनके समस्त नेत्र सूर्य के समान दुर्निरीक्ष्य हैं। कृष्ण दशावतारी हैं। मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध तथा कल्कि आदि उनके अवतार हैं (1190)।

—बुद्ध —

स भगवान् श्रीधर्मचक्रः (1191), *स व्रजासनः* (1192), *बुद्धोऽजिनः* (1200), *निष्कारणवत्सलो बुद्धः* (1197), *तपोनिधिः, तथागतः* (1198), *महाकाश्यपः* (1202), *शक्योमुनिः* (1203), *सिद्धार्थस्य* (1217) आदि अभिधान बुद्ध के स्वरूप को स्पष्ट करते है। भगवती तारा के पुत्र (1191), काम और क्रोध को शान्ति से शमन करने वाले (1194) बुद्ध साक्षात् शुद्ध, धर्म, और शर्म (कल्याण) के

पर्याय है (1201)। बुद्ध ने पद्मासनस्थ होकर दोनों नेत्रों को नासिकाग्र पर न्यस्त करके किसी विशुद्ध परमज्योति के ज्ञान का बोध करने के कारण बुध स्वरूप को प्राप्त किया (1204)। बोधि को प्राप्त करके ही वो बुद्ध हुये (1205)। *बुद्ध इति ... स विष्णुः* (1210) इस कथन से स्पष्ट है कि वह विष्णु ही बुद्ध है। मंगलाचरणो में भगवान् जगन्नाथ को *श्रीपुरुषोत्तमो नीलाद्रिचूडामणिः* कहा गया है (1221) जो श्रीविष्णु के ही अंश हैं। नीलाचल पर स्थित इनका वर्ण नवजलधर के समान है (1228)। कामदेव को समर्पित मङ्गलाचरणों में *मकरकेतुः* (1231), *असमसायकः* (1236), *सुरतलीलानाटिकासूत्रधारः* (1240), *रतिपतिः* (1243), *मदनः* (1247) आदि सभी अभिधान कामदेव के स्वरूप का स्पष्ट चित्रण कराते हैं। ये कामदेव जन जन में शक्तिमान् (1237) हैं। अनिरुद्ध को समर्पित मङ्गलाचरण शिलालेखों में ही प्राप्त हुये हैं। उन मङ्गलाचरणों में अनिरुद्ध उषा के पति तथा धवल स्वच्छ कान्ति वाले चित्रित किये गये है। कुछ ऐसे भी मङ्गलाचरणात्मक श्लोक है जिनमें दो देवों की स्तुति एक साथ एक ही श्लोक में की गई है किन्तु प्रायः वे सर्वथा प्रसिद्ध युग्म नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रतीत होता है कि कवि को दोनों देव समान रूप से अभीष्ट होगें। ऐसे द्विदेवपरक मङ्गलाचरणों को "द्विदेवौ" शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। यही बात "मिश्रदेवाः" शीर्षक के साथ भी घटित है जहाँ कवि एक साथ कई देवों की वन्दना एक ही श्लोक में करता है।

मङ्गलमणिमाला के प्रथम भाग में गणेश, शिव, कार्त्तिकेय, हनुमान् के मङ्गलाचरणों का संकलन प्रकाशित हो चुका है, जिसका विमोचन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम डॉ० विष्णुकान्त शास्त्री के करकमलों से दिनाङ्क 31 जुलाई 2001 को हुआ। इस द्वितीय भाग में परब्रह्म, विष्णु, विष्णु के अवतार के मंगलाचरण समाहित हैं।

इस योजना के निदेशक एवं विद्यापीठ के पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर गयाचरण त्रिपाठी ने प्रारम्भ से ही जिस वैदुष्यपूर्ण निर्देशों और परामर्शों से मुझे लाभान्वित किया, वे निश्चय ही मेरे लिये अत्यधिक गौरव की बात है, उसका मूल्य आभार प्रदर्शन के कोरे शब्दों में नहीं चुकाया जा सकता। मैं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक प्रो० वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सत्प्रयास से ग्रन्थ का प्रकाशन संभव हो सका। विद्यापीठ के वर्तमान प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोपराजू

रामा का आभार व्यक्त करती हूँ जिनका ग्रन्थप्रकाशन में कृपापूर्ण सहयोग रहा।

परिवार के लोगों का आभार भरित हृदय से स्मरण करती हूँ जिन्होंने सर्वदा प्रोत्साहित किया व अनुकूल अवसर प्रदान किया जिससे यह दुरूह कार्य सम्पन्न हो सका।

अन्त में मैं श्री विनोद कुमार द्विवेदी की आभारी हूँ जिन्होंने अथक परिश्रम से अल्पकाल में ही ग्रन्थ का सुन्दर मुद्रण किया। ग्रन्थगत त्रुटियों के लिये अल्पमति मैं सहृदय पाठकों से क्षमा चाहूँगी। यदि विद्वज्जनों और सहृदय पाठकों को मेरा यह सारस्वत प्रयास किञ्चिन्मात्र भी उपादेय लगा तो मैं अपने इस लघु प्रयास को सर्वथा सार्थक समझूँगी।

गङ्गानाथ झा केन्द्रीय-संस्कृत विद्यापीठ — सविनय
आजादपार्क, प्रयाग-2 — डॉ0 वीना मिश्रा
27.02.2002

ग्रन्थसङ्केत-सूची

शा०प०	शार्ङ्गधरकृत- *शार्ङ्गधरपद्धतिः* संपादकः पीटर पीटर्सन, पुनर्मुद्रणम्, देहली- १९८७
सदुक्ति०	श्रीधरदासकृत- *सदुक्तिकर्णामृतम्*, संपादकः सुरेशचन्द्र बैनर्जी, कलकत्ता- १९६५
सुभा०	वल्लभदेवकृत- *सुभाषितावलिः* संपादकः पीटर पीटर्सन, पुनर्मुद्रणम्, पुणे- १९६१
सुभा०सुधा०भा०	शिवदत्त कविरत्न-संगृहीतः *सुभाषितसुधा-रत्नभाण्डागारः* मुम्बई, संवत् - १९८५
सुभा०सुधा०	सायणकृत- *सुभाषित-सुधानिधिः*, संपादकः के० कृष्णमूर्त्तिः, धारवाड़- १९६८
सूक्तिमु०	भगदत्तजल्हणकृत- *सूक्तिमुक्तावली*, संपादकः एम्बर कृष्णमाचार्य, बडोदरा- १९३८
स्तुतिकु०	जगद्धरकृत- *स्तुतिकुसुमाञ्जलिः*, अच्युत-ग्रन्थमाला- कार्यालय, काशी- १९६४

परब्रह्म

1. अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम्।
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ।।

— वेदान्तसिद्धान्तसारसङ्ग्रहे सदानन्दसरस्वत्याः

2. अचरचरपतेश्शुद्धविद्योदधेः
विमलगुणनिधेर्ज्ञानभद्रावधेः।
भवति खलु दया यस्य सर्वार्थदा
परमसुखमयन्तन्नाममीश्वरम्।।

— वर्णभानौ गुरुदयालशर्मणः

3. अणोरणीयान्महतोमहीयानेकः पुमान्विश्वजनीनवृत्तिः।
जगत्प्रसूतिस्थितिभङ्गबीजमस्माकमन्तःकरणे चकास्तु।।

— खण्डनोद्धारे वाचस्पतिमिश्रस्य

4. अथ स्वस्थाय देवाय नित्याय हतपाप्मने।
त्यक्तक्रमविभागाय चैतन्यज्योतिषे नमः।।

— महावीरचरिते भवभूतेः

5. अध्यस्तान्ध्यमपूर्वमर्थधिषणैर्ग्राह्यं पुमर्थास्पदं
लक्ष्यं लक्षणभेदतः श्रुतिगतं निर्धूतसाध्यार्थकम्।
आम्नायान्तविभातविश्वविभवं सर्वाविरुद्धं परं
सत्यं ज्ञानमनर्थसार्थविधुरं ब्रह्म प्रपद्ये सदोम्।।

— सुभा० सुधा० भा०

:

6. अव्यक्तमव्ययं शान्तं नितान्तं योगिनां प्रियम्।
सर्वानन्दस्वरूपं यत्तद्वन्दे ब्रह्म सर्वगम्।।

— नरपतिजयचर्यायां नरपतिकवेः

7. इदं च भवनाटकं सृजति सर्वदा मायया
सहैव समवस्तुभिः सपदि चित्रपात्राकुलम्।
यदीश्वरसुनायकोल्लसितभूमिकाभासुरं
सुरञ्जितसुहृज्जनं जनमुदेऽस्तु तद्वै महः।।

—कस्यचिदज्ञातनाम्नो नाटकस्य
प्रस्तावनाभागे शङ्करदीक्षितस्य

8. गगनमिव विकारैर्हीनमाप्तं च विष्वक्
प्रतिविषयमनन्यस्फूर्त्तिमत्स्वात्मरूपम्।
श्रुतिशिरसि महीयः सत्प्रमोदैकहेतु
सकलवृजिनभङ्गं ज्योतिरेकं सदाद्यम्।।

— सुभा० सुधा० भा०

9. चरीकर्ति बरीभर्ति सञ्जरीहर्ति लीलया।
तमहं परमानन्दं वन्देऽपूर्वं सनातनम्।।

— अश्विनीकुमारस्तुतिव्याख्यायां सदाशिवस्य

10. चित्सदानन्दरूपाय सर्वधीवृत्तिसाक्षिणे।
नमो वेदान्तवेद्याय ब्रह्मणेनंतरूपिणे।।

— अध्यात्मविद्योपदेशविधौ शङ्करस्य

11. चिद्घनोपि जगन्मूर्त्त्याशान्तो यः स जयत्यजः।
स्वात्मप्रच्छादने क्रीडाविदग्धः परमेश्वरः।।

— अभिनवगुप्तकृत—परमार्थसारस्य टीकायां योगराजाचार्यस्य

12. चेतो नः स्पृहया तु सन्ततमपि त्र्यन्तस्सञ्चारिणे
श्रद्धाभक्तिविरक्तिशान्तिकरुणावृन्देन संसारिणे।
कामक्रोधमुखारिवर्गसकलक्लेशोपसंहारिणे
तस्मै विस्मयकर्मणे भगवतो नाम्ने परब्रह्मणे।।

— कर्णामृतमातृकायां स्फुटश्लोकः

13. जयत्यमूलमम्लानमौत्तरं तत्त्वमद्वयम्।
स्पन्दास्पन्दपरिस्पन्दमकरन्दमहोत्पलम्।।

— महार्थमञ्जर्याः परिमलाख्यटीकायां महेश्वरानन्दस्य

14. तन्नमामि परञ्ज्योतिरवाङ्मनसगोचरम्।
उन्मूलयत्यविद्यां यद्विद्यामुन्मीलयत्यपि।।

— धनञ्जयकोशे धनञ्जयस्य

15. तं स्तुवीमहि यदीयविलासाडम्बराभयचमत्कृतिमन्ति।
विस्फुरत्स्फटिकभूधरकान्तिभ्रान्तिभृन्ति च भवन्ति जगन्ति।।

— रसार्णवे शङ्करमिश्रस्य

16. त्रिभुवनविकाशनिदानं निरुपममनन्तररूपम्।
परिहृतविकारमनन्तं सदनुभवमात्रमुपासे।।

— सुभा० सुधा० भा०

17. धर्माधर्माप्यसंसृष्टं कार्यकारणवर्जितम्।
कालादिभिरविच्छिन्नं ब्रह्म यत्तन्नमाम्यहम्।।

— अथर्वणवेदोपनिषत्सु

18. न पीतं नापीतं नहि परिमितं नापरिमितं
न रक्तं नारक्तं नहि धवलितं नाधवलितम्।

निराकारं नित्यं त्रिगुणरहितं देवमजडं
तमात्मानं वन्दे परमसुखसन्ताननिलयम्।।

— श्रीतत्त्वचिन्तामणौ पूर्णानन्दस्य

19. नमो निखिलमालिन्यविलायनपटीयसे।
महाप्रकाशपादाब्जपरागपरमाणवे।।

— महार्थमञ्जर्याः परिमलाख्यटीकायां महेश्वरानन्दस्य

20. न यस्य जन्मादिविकारलिङ्गं तद् यस्य सत्तावशतः सदाभम्।
मायाविहीनं तदुदारमोदं स्वात्मस्वरूपं ननु तच्चकास्तु।।

— स्तुभा० सुधा० भा०

21. नित्यानन्दचिदात्मकस्य कलया यस्याच्युतस्याखिलं
विश्वं चेतितमप्यचेतनमिव द्राग् भ्राम्यति श्राम्यति।
यो गृह्णात्यकरश्चलत्यचरणः पश्यत्यचक्षुःशृणो-
त्यश्रोत्रो मनसो गिरोऽप्यविषयो भक्तेर्वशोऽव्यात्स वः।।

— पुरञ्जनचरितनाटके कृष्णदत्तमैथिलस्य

22. निराशंसात्पूर्णादहमिति पुरा भासयति यद्
द्विशाखामाशास्ते तदनु च विभक्तुं निजकलाम्।
स्वरूपादुन्मेषप्रसरणनिमेषस्थितिजुषस्-
तदद्वैतं वन्दे परमशिवशक्त्यात्मनिखिलम्।।

— उत्पलदेवाचार्यकृत–ईश्वरप्रत्यभिज्ञायाः
विमर्शिन्याख्यायां टीकायां अभिनवगुप्तस्य

23. निश्शेषदोषगुणसङ्गविवर्जितं य-
न्नित्यं निरञ्जनमनन्तमुशन्ति सन्तः।
वन्दामहे तमजमेकमनन्यबोधं
नारायणं निखिलकारणमादरेण।।

— तत्त्वशुद्ध्याम्

24. निषेधे कृते नेतिनेत्यादिवाक्यैः
समाधिस्थितानां यदाभाति पूर्णम्।
अवस्थात्रयातीतमेकं तुरीयं
तदेकं स्वमात्रप्रकाशं प्रपद्ये।।

– सुभा० सुधा० भा०

25. नैदाघभानुकिरणेष्विववारिपूरः
सर्वो विभाति यदबोधवशात्प्रपञ्चः।
मालाफणीव च निमीलति यत्प्रबोधात्
तद्ब्रह्म नौमि सुखमद्वयमात्मरूपम्।।

– सर्वश्रुत्यर्थप्रकाशिकायाम्

26. परात्परो यः पुरुषः पुराणः सनातनो योऽपि च विश्वकर्त्ता।
यस्यान्तपारं न विदांदयोपि विदुर्हि देवास्तमहं स्मरामि।।

– चिकित्सासारे गोपालदासस्य

27. प्रज्ञानांशुप्रतानैः स्थिरचरनिकरव्यापिभिर्व्याप्य लोकान्
भुंक्त्वा भोगान् स्थविष्ठान् पुनरपिधिषणोद्भासितान् व्योमजन्यान्।
पीत्वा सर्वान्विशेषान् स्वपिति मधुरभुङ्मायायाभोजयन्नो
मायासंख्यातुरीयं परममृतमजं ब्रह्मयत्तन्नतोस्मि।।

– माण्डूक्यकारिकायाम्

28. ब्रह्माण्डोदरमध्यगावनिजलान्यूर्ध्वेन्दुपूर्वग्रह-
क्षोर्ध्वस्थंप्रवहान्तगोलरचनासृष्टिर्यथावस्थिता।
कालेऽस्मिन् गहने व्ययेऽस्ति सततं यस्मादिदं तज्जय-
त्याद्यं निर्गुणमीशमव्ययपरब्रह्मैकतत्त्वं शुभम्।।

– तन्त्वविवेके कमलाकरदैवज्ञस्य

29. मज्जन्तो मृगतृष्णिकाजलनिधौ मुक्ताजिघृक्षारसा-
द्वन्ध्यापत्यकलादशुक्तिरजताकल्पेषु सङ्कल्पिनः।
व्यावल्गन्त्यविमर्शिनो यदवधि ज्योतिः परं ज्योतिषां
तत्सेतुर्जगतोऽखिलस्य तमसः पारं परं भातु वः।।

— विद्यापरिणयने आनन्दरायमखेः

30. मध्याह्नार्कमरीचिकास्विव पयःपूरो यदज्ञानतः
खं वायुर्ज्वलनो जलं क्षितिरिति त्रैलोक्यमुन्मीलति।
यत्तत्त्वं विदुषां निमीलति पुनः स्रग्भोगिभोगोपमं
सान्द्रानन्दमुपास्महे तदमलं स्वात्मावबोधं महः।।

— प्रबोधचन्द्रोदये कृष्णमिश्रयतेः

31. यच्छ्रोत्रादेरधिष्ठानं चक्षुर्वागाद्यगोचरम्।
स्वतोध्यक्षं परंब्रह्म नित्यमुक्तं भजामि तत्।।

— केनोपनिषद्भाष्ये शङ्कराचार्यस्य

32. यतः सर्वाणि भूतानि प्रतिभान्ति स्थितानि च।
यत्रैवोपशमं यान्ति तस्मै सत्यात्मने नमः।।

— चित्रकूटमाहात्म्ये

33. यत्त्रेधा जनि दशधा द्विधागतं यद्
यज्जातं दशविधमेति षोडशत्त्वम्।
यद्गीतं सममहदादिकस्य चाद्यं
तेजस्तज्जयति हिमोष्णरूपमग्र्यम्।।

— अभिज्ञानशाकुन्तलस्य टीकायां अर्थद्योतनिकायां राघवभट्टस्य

34. यदविद्यावशाद्विश्वं दृश्यते रशनाहिवत्।
यद्विद्यया च तद्धानिस्तं वन्दे पुरुषोत्तमम्।।

— बृहदारण्यकभाष्ये आनन्दगिरेः

35. यद्‌विद्याविलासेन भूतभौतिकसृष्टयः।
तन्नौमि परमात्मानं सच्चिदानन्दविग्रहम्।।

— वेदान्तपरिभाषायां धर्मराजदीक्षितस्य

36. यद्देहादिविकल्पकल्पितभिदा सम्भेदमाभासते
यद्वा तत्तदुपाधिभेदभजनात् कार्यव्यस्थास्पदम्।
भूयस्तद्विलये सति स्वयमखण्डानन्दचिन्मात्रतः
यच्चाभाति तदस्तु वस्तु दुरितध्वंसाय वः शाश्वतम्।।

— पञ्चपादिकायाः तात्पर्यार्थद्योतिन्यां
टीकायां विज्ञानात्मनः

37. यन्नोत्पन्नं न विपरिणतं नो विवृद्धं न हीनं
नैबोच्छिन्नं न खलु भवति स्पष्टचैतन्यमेकम्।
किं त्वज्ञानात्सकलजगतामुद्भवस्थित्यभावान्
कुर्वद्भाति श्रुतिशतपदं नौमि तद्ब्रह्म नित्यम्।।

— तत्त्वशुद्धौ

38. यन्मायावशवर्त्तिनो विदधते जीवानि मर्त्यां तनुं
द्वैतज्ञानमवाप्य कामवसिते घोरे भवे कामुकाः।
दस्युक्रोधगणैर्विखिन्नहृदया दावाग्निसम्मर्द्दिता
नित्यानन्दचिदात्मकञ्च सकलं नेच्छन्ति यस्मिन् जगत्।।

— चक्रकौमुद्यां बदरीनाथस्य

39. यन्मायाविष्टरूपं विविधविधिविधेयादिभेदावभासं
लोके हानादिलिङ्गैर्विधियुतबचसां गृह्यते वाच्यरूपम्।
तद्वद्वक्त्रप्रसादप्रभृतिबहुविधाल्लिङ्गितस्सिद्धरूपं
वाच्यं नाम्नामनन्यप्रभमजममृतं ब्रह्म तन्नौमि शुद्धम्।।

— तत्त्वशुद्धौ

40. यस्माज्जातं जगत्सर्वं यस्मिन्नेव प्रलीयते।
येनेदं धार्यते चैव तस्मै ज्ञानात्मने नमः।।

– तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्ये शङ्कराचार्यस्य

41. यस्मात् सर्वमिदं जगत् समुदितं स्वोत्सृष्टभूतैः पुरं
कृत्वा तत्र निविश्य मानसगुणान् स्वस्मिन् वृथा मन्यते।
स्वाज्ञानादिव बद्धमुक्त इति यं वेदो निषेधावधिम्
ब्रह्मेत्याह न वेद कश्चिदपि यं प्रेमास्पदं तं भजे।।

– भास्कराचार्यकृत–सिद्धान्तशिरोमणेष्टीकायां
नृसिंहदैवज्ञस्य

42. यस्माद् विश्वमुदेति यत्र रमते यस्मिन् पुनर्लीयते
भासा यस्य जगद्विभाति सहजानन्दोज्ज्वलं यन्महः।
शान्तं शाश्वतमक्रियं यमपुनर्भावाय भूतेश्वरं
द्वैतध्वान्तमपास्य यान्ति कृतिनः प्रस्तौमि तं पूरुषम्।।

– सुभा० सुधा० भा०

43. यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च।।

– अमरकोशे अमरस्य

44. यस्येषद्दर्शनात्स्यात् कुमतिरपिजनो मान्यधन्यो वरेण्यो
यस्य श्रीपादपद्मं सततमपिसुरैश्चिन्तितं भक्तियुक्तैः।
योगीन्द्रा यस्य रूपं बहुविधतपसा सन्ततं द्रष्टुकामाः
केषान्तस्याश्रये स्याद्भुवि च सुरनृणां वाञ्छनापूरणन्न।।

– आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

45. येनेदं परयां विभक्तमखिलं पञ्चाशदर्णं महः
ब्रह्माख्यं निजभूतमेतदखिलं विश्वाधिकं राजते।
क्षेत्रज्ञादिसमस्तवर्णजनितं वाग्ब्रह्म श्रुत्यादिकं
विश्वोत्पत्तिविनाशसंस्थितिकृते तस्मै नमो ब्रह्मणे।।

— वातुलशुद्धागमे

46. यो विश्वात्माविधिजविषयान् यश्च भोगान् स्थविष्ठान्
पश्चाच्चान्यान्स्वमतिविभवान् ज्योतिषा स्वेन सूक्ष्मान्।
सर्वानेतान् पुनरपिशनैः स्वात्मनि स्थापयित्वा
हित्वा सर्वान् विशेषान् विगतगुणगणः पात्वसौ नस्तुरीयः।।

— माण्डूक्यकारिकायाम्

47. यः सृष्टिस्थितिसंहृतीर्वितनुते ब्रह्मादिमूर्त्तित्रिकै-
र्यस्याधीनतया स्थितानि सदसत्कर्म्माण्यपि प्राणिनाम्।
नित्येच्छाकृतिबुद्धिमानथ परो जीवात्परात्मा स्वयं
सोऽयं वो विदधातु पूर्णमचिराच्चेतोगतं यद्भवेत्।।

— सुभा० सुधा० भा०

48. विद्यासन्ध्योदयोद्रेकादविद्यारजनीक्षये।
यदुदेति नमस्तस्मै कस्मै चिद्विश्वतस्त्विषे।।

— किरणावल्यां उदयनस्य

49. विश्वस्मिन् जगति समन्ततः प्रकाशस्याधाने कुशलमनन्तरं प्रभूतम्।
उद्दीप्तं विकृतिविहीनमेकमाद्यं किञ्चित्तत्प्रकृतिपरं चकास्ति वस्तु।।

— सुभा० सुधा० भा०

50. विश्वेशो वः स पायात् त्रिगुणसचिवतां योऽवलम्ब्यानुवारं
विश्वद्रीचीनसृष्टिस्थितिविलयमजः स्वेच्छया निर्मिमीते।

यस्येयत्तामतीत्य प्रभवति महिमा कोऽपि लोकव्यतीतं
त्यक्तो यश्चक्षुराद्यैरपि निपुणतमैर्वीक्षणादिक्रियासु।।

— सुभा० सुधा० भा०

51. विश्वेशं सच्चिदानन्दं वन्देऽहं योऽखिलं जगत्।
चरीकर्ति बरीभर्ति सञ्जरीहर्ति लीलया।।

— शब्दकौस्तुभे भट्टोजिदीक्षितस्य

52. विश्वेषां करणैरगोचरमपि प्रज्ञादृशा पश्यतां
यत्प्रत्यक्षमपश्चिमं कृतिरिह स्वश्रेयसे योगिनाम्।
आरभ्याणु महत्तमावधि परं यद्व्यापकं सर्वतो
वन्दे निर्गुणमेष पाणियुगलं बद्ध्वाऽनतस्तन्महः।।

— अमरकोषस्य टीकायां मणिप्रभाख्यायां
हरगोविन्दशास्त्रिणः

53. विश्वं यः कुरुते विभर्त्ति हरते शैलूषवत्प्रत्यहं
यच्छ्वासप्रभवानुमन्ति निगमान् साङ्गान्ससूत्रागमान्।
संसारार्णवतारणाय जगतां यन्नाम नौका दृढा
तद्वन्दे सहजप्रकाशममलं चैतन्यरूपं महः।।

— श्रीरामपूजाविधौ

54. शक्यं यन्न विशेषतो निगदितुं प्रेम्णैव यच्चिन्तितं
मृद्वङ्गीवदनेन्दुमण्डलमिव स्वान्ते विधत्ते मुदम्।
यन्मुग्धानयनान्तचेष्टितमिवाध्यक्षेऽपि नो लक्षितं
तत्तेजो विनयादमन्दहृदयानन्दाय वन्दामहे।।

— सुभा० सुधा० भा०

55. शब्दार्थत्वविवर्तमानपरमज्योतीरुचो गोपते-
रुद्गीथोऽभ्युदितः पुरोऽरुणतया यस्य त्रयीमण्डलम्।

भास्वद्वर्णपदक्रमेरिततमः सप्तस्वराश्वैर्विय-
द्विद्यास्यन्दनमुन्नयन्निव नमस्तस्मै परब्रह्मणे।।

— साम्बपञ्चाशिकायां साम्बकवेः

56. शान्तं शुद्धं पुराणं त्रिभुवनभवनं भावि भूतं भवच्च
नित्यं बुद्धं प्रभूतं सकलमनवरं भव्यमेकं प्रसिद्धम्।
पूर्णं विष्वक्प्रकाशं शरणमनुपमं निष्क्रियं निर्विकारं
रुद्रं सन्तुष्टमद्धा करणविषयताशून्यमद्धाति शश्वत्।।

— सुभा० सुधा० भा०

57. शुभ्रं क्वचित्क्वचिदतीव सितेतराभम्
क्वापि प्रफुल्लनवपङ्कजसंनिकाशम्।
तप्तं क्वचित्क्वचन शीतलमस्तु वस्तु
कैवल्यसंसृतिपथानुगतं मुदे वः।।

— भावशतके नागराजकवेः

58. स्फुरन्ति शीकरा यस्मादानन्दस्याम्वरे वनौ।
सर्वेषां जीवनं तस्मै ब्रह्मानन्दात्मने नमः।।

— चित्रकूटमाहात्म्ये

59. स्फूर्त्तये विश्वशिल्पस्य श्रीशिवानन्दमूर्त्तये।
नित्योन्मेषनिमेषायै निस्तुषायै नमस्त्विषे।।

— महार्थमञ्जर्याष्टीकायां परिमलाख्यायां
महेश्वरानन्दस्य

60. स्वयंप्रकाशमन्यसत्प्रकाशकप्रकाशकं
सुराध्वंवत्समस्तगं विकारसङ्गवञ्चितम्।
निरीहमक्रियं क्रियाकलापकारणं परं
परात्परं प्रकृत्यपेतमेकमर्थमाश्रये।।

— सुभा० सुधा० भा०

ब्रह्मा

61. आगस्कारिणि कालनेमिदलने तत्ताडनार्थं रुषा
नाभीपङ्कजमस्त्रतां गमयितुं जाते प्रयत्ने श्रियः।
आवासोन्मथनोपपादितभयभ्रान्तात्मनः सम्भ्रमा-
दब्रह्मण्यपराः पुरातनमुनेर्वाचः प्रसीदन्तु वः।।

– सदुक्ति० भट्टश्रीनिवासस्य

62. कर्पूराद्भुतधवलं केवलमीशानकीर्त्तितं ब्रह्म।
वेदाविदितरहस्यं सकलनमस्यं नमस्यामः।।

– तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां तत्त्वदीपिकाख्यायां रघुदेवस्य

63. चतुर्भिरास्यैश्चतुरोऽपि वेदान्नुच्चारयन्न क्रमतो विरञ्चिः।
पाठाग्रपश्चात्त्वविशेषमोषसंतोषशिष्यः शिवमातनोतु।।

– तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां आलोकदर्पणाख्यायाम्

64. चिरं विरञ्चिर्नचिरं विरञ्चिः साकारता सत्यसतारकासा।
साकारतासत्यसतारकासा चिरं विरञ्चिर्नचिरं विरञ्चिः।।

– रामकृष्णविलोमकाव्ये

65. जातस्तेऽधरखन्डनात्परिभवः कापालिकादम्ब यः
स ब्रह्मादिषु कथ्यतामिति मुहुर्वार्णी गुहे जल्पति।
गौरी हस्तयुगेन षण्मुखवचो रोद्धुं निरीक्ष्याक्षमां
वैलक्ष्याच्चतुरास्यनिष्फलपरावृत्तिश्चिरं पातु वः।।

– सदुक्ति०

66. तं वन्दे पद्मसद्मानमुपवीतच्छटाच्छलात्।
गङ्गास्रोतस्त्रयेणैव यं सदैव निषेवते।।

– शा० प० राजशेखरस्य

67. नाभीकमलनिवासश्चतुर्मुखश्चिन्तया मुग्धः।
पुरुषायिते रमायाः सम्मीलितलोचनो विधिर्जयति।।

—शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

68. पायाद्वो मधुकैटभासुरवधे विष्णुप्रबोधोद्धुरो
धाता वक्त्रचतुष्टयं तु युगपद् यस्याभवत्सार्थकम्।
एकं स्तौति मुखं शिवामितरदप्यार्तं वरान् याचते
दैत्यं प्रत्यपरं वितर्जति हरत्यन्यच्छ्रियः सम्भ्रमम्।।

— सदुक्ति० वसन्तदेवस्य

69. मूर्त्तिः स्मर्तृतमोहरा सहचरी वाचां परा देवता
व्याहाराः श्रुतयः कुटुम्बकमिदं विश्वं चरस्थावरम्।
यस्यैतच्छ्रुतिमूलमूलकतया सन्दर्शितप्रक्रियं
स्वारम्भं भगवन्तमन्तरहितं ब्रह्माणमीडामहे।।

— सूक्तिमु०

70. यन्नक्षुण्णं कदाचित् तुहिनकणचयस्यन्दिभिश्चन्द्रपादै-
र्नापि व्यालीनमुस्रैर्नवनलिनसरोबन्धुभिर्भानवीयैः।
तत्कल्पान्तानुषङ्गिद्रुतमतनुतमः पाटयन्त्यः समन्ता-
दाद्याधीतौ विधातुर्मुखशशिविसृताः पान्तु वो दन्तभासः।।

—सदुक्ति० बीजकस्य

71. विश्वं सृजन् करुणया परिपालयन् यः
विश्वक्रियासु यमयत्यखिलान्तरात्मा।
विद्यास्वयंवरपतिर्विदधातु सोऽयं
विश्वस्य मङ्गलममेयमहाविभूतिः।।

— जयन्तभट्टकृत–न्यायमञ्जर्याः टीकायां
न्यायसौरभाख्यायां वरदाचार्यस्य

72. शम्भोः साक्षात्सखैकः सुरपतिरपरो धर्मराजस्तथान्यः
प्राणा विश्वस्य कस्य प्रथमतरमतः को नु सम्भाषणीयः।
कार्यायातान् विदित्वा मुहुरिति चतुरो लोकपालांश्चतुर्भि-
र्वक्त्रैराभाषमाणः सममुदितरवः पातु पद्मोद्भवो वः।।

– सदुक्ति॰ पालितस्य

73. श्रीकान्तस्य निजोदरान्तरचरब्रह्माण्डषण्डावन-
व्यापाराभिरतस्य वेदशिरसामावासभूमेर्हरेः।
नाभ्यम्भोरुहगह्वरापवरकादाविर्बभूवात्मभू-
र्भूतादिप्रकटप्रपञ्चरचनादक्षः पुराणोऽव्ययः।।

– पीठपुरम्– अभिलेखे पृथ्वीशवरस्य

74. स्वाधिष्ठानाम्बुजरजः पुञ्जपिञ्जरमूर्त्तये।
इच्छाधीनजगत्सृष्टिकर्मणे ब्रह्मणे नमः।।

– राघवपाण्डवीये कविराजपण्डितस्य

विष्णुः

75. अतसीनवकुसुमनिभं मन्दरपर्वतघृष्टकेयूरम्।
अपहरतु दुरितमखिलं मधुमुरनरकारिबाहुयुगम्॥

- पेशावरसङ्ग्रहालयस्थाभिलेखे वन्हडकस्य

76. अनन्तकल्याणगुणैकराशिमशेषदोषोज्झितमप्रमेयम्।
मुमुक्षुभिः सेव्यमनन्तसौख्यप्रदं रमेशं प्रणमामि नित्यम्॥

- तर्कताण्डवे व्यासतीर्थस्य

77. अनन्तकोटिब्रह्माण्डेष्वखिलेष्वाततः क्रमात् ।
निःशेषविश्वकर्ता यः स जीयान्मधुसूदनः॥

- शिल्परत्ने श्रीकुमारस्य

78. अब्जाहृत्पद्ममध्ये विलसति लपने शारदा सारदात्री
मुक्ताकुन्देन्दुकान्तिर्नयनकुवलये पुष्पवन्तौ धरित्री।
अद्धा यस्याग्रदन्ते तिलकमिव पदे सिद्धिसंघा लुठन्ति
प्रह्लादव्रातदाता स दिशतु जगतां मंगलं चक्रपाणिः॥

- वास्तुरत्नावल्यां जीवनाथस्य

79. अरुणकमलोपमानं सुरुचिरपद्माङ्कुशादिशुभरेखम् ।
दुरितान्धकारभानुं स्मरामि हरिचरणमार्यजनहृद्यम् ॥

- आर्यभटवाण्यां कोदण्डरामस्य

80. अशेषविश्ववैचित्र्यरचनारुचये नमः।
मायागहनगूढाय नानारूपाय विष्णवे॥

- दशावतारचरिते क्षेमेन्द्रस्य

81. आदावम्बुजसम्भवादिविनुतः शान्तोऽच्युतश्शाश्वतः
उत्फुल्लामलपुण्डरीकनयनः पुण्यः पुराणः पुमान् ।
लोकेशः श्रुतिचोदितो मुरहरो मत्स्यावतारो हरिः
श्रीमत्सिंहगिरीश्वरः करुणया दद्यात्सदा मङ्गलम् ॥

दशावतारमङ्गलाष्टके

82. आलिङ्गितजलधिभुवं रुचिराधरपानभावनारसिकम्।
विकसितमुकुलितमन्दप्रहसिततनयं हरिं वन्दे॥

- ताम्रपत्राभिलेखे

83. ईषन्मीलितलोचनो दृढतरप्राबद्धयोगासनो
यद्ब्रह्मादिसुरेन्द्रवन्दितपदः शंभुः स्वयं ध्यायति।
वैकुण्ठैकनिकेतनं जगदभिव्याप्य स्थितँल्लीलया
तद्ब्रह्माख्यवपुः सदैव मुदितं चेतः समालम्बताम् ॥

- विद्वन्मोदतरङ्गिण्यां मातृकायां
कालीकृष्णबहादुरस्य

84. उद्घाट्य योगकलया हृदयाब्जकोशं
धन्यैश्चिरादपि यथारुचि गृह्यमाणः।
यः प्रस्फुरत्यवितरं परिपूर्णरूपः
श्रेयः स मे दिशतु शाश्वतिकं मुकुन्दः॥

- सुभा० सुधा० भा०

85. उन्निद्रनीलकमलाकरकायकान्तिः
स्वर्णाभिरामरुचिरद्युतिपीतवासाः।
उद्भास्यमान इव चञ्चलया घनौघो
विष्णुः प्रियाद्वयवरेण युनक्तु युष्मान् ॥

- अभिलेखे

86. उपदिदेश जगद्वृजिनच्छिदं
प्रतिकृतिं प्रतिकृत्य य उद्धवम् ।
सुखचिदात्ममतिं करुणानिधिम्
नमत तं सततं कमलापतिम् ॥

- टीकासारसंग्रहे

87. एक एव भुवनत्रयेपि स-
श्रीपतिर्भवतु वो विभूतये।

विष्णुः

यस्य मध्यमपदाश्रिता अमी
भास्कर प्रभृतयश्चकासति॥

- नागपुर-प्रस्तराभिलेखे

88. ओंकारं श्रीकामविप्रस्य सायं वव्रे रंतुं चंद्रभित्तं प्रसूय।
अँगुल्या खे दर्शयन्बालवेषः पायाद्युष्मान् नीरदाभो मुकुंदः॥

- हरिदानचन्द्रिकायाम्

89. अंहः संहरदखिलं सकृदुदयादेव सकललोकस्य।
तरणिरिव तिमिरजलधिं जयति जगन्मंगलं हरेर्नाम॥

- श्रीमद्भगवन्नामकौमुद्यां लक्ष्मीधरस्य

90. कमलाकुचकनकाचलजलधरमाभीरसुन्दरीमदनम्।
अधिगतशेषफणावलिकमलवनभृङ्गमच्युतं वन्दे॥

- सुभा० सुधा० भा०

91. करशिरसाच्युतमीशं भव भवपुष्टिक्षयालयमुपायम्।
स्वर्गापवर्गयोरपि तापत्रयनाशनार्थमभिवन्दे॥

- शार्ङ्गधरसंहितायाष्टीकायां दीपिकाख्यायां आढमल्लस्य

92. कालिन्द्याः किं जलौघो घनतिमिरनिभो जाह्नवीस्पर्द्धया नः
प्रोद्यातः किं नु भूयो गगनतलगतिं विन्ध्यसानुर्विहन्तुम्।
चित्कंसोर्यस्य दृष्ट्वा चरणमिति चिरं सप्तयो नैव पूष्णो
जग्मुः क्षोभादिवोच्चैर्न्नभसि स मधुजिद्धन्तु वः कल्मषाणि॥

- वैल्लभट्टस्वामिन् -देवालयस्थ-अभिलेखे

93. किरीटमणिकुण्डलोल्लसितचारुगण्डालकं
प्रफुल्लजलजेक्षणं दरगदाब्जचक्रान्वितैः।

भुजैर्विलसितं नवांबुधरसौभगं भावयेत्
क्वणत्कनककिंकिणीकलितपीतपट्टांशुकम् ॥

- विष्णुमन्त्रे

94. किरीटहारमकरकुण्डलाद्यैरलंकृतम् ।
नमामि तं हरिं चक्रशंखपद्मगदाधरम् ॥

- महाभास्करीयस्य टीकायां कर्मदीपिकाख्यायां परमेश्वरस्य

95. कृतानन्तवृन्दारकद्वेषिशिक्षाः
प्रदत्तामरेन्द्रादि सौभाग्यभिक्षाः।
जगज्जन्मरक्षोपसंहारदक्षाः
सदा पान्तु नः कैटभारेः कटाक्षाः ॥

- स्मृतिप्रकाशे हरिभट्टसुत- आपाजिभट्टसुतभास्करस्य

96. क्रीडाभिन्नहिरण्यशुक्तिकुहरे रक्तात्मनावस्थितान्
हारंहारमुदारकुङ्कुमरसानव्याजसिद्धान्नखैः।
वीरश्रीकुचकुम्भसीम्नि लिखतो देवस्य पत्रावली-
स्तत्कालोचितभावबन्धुमधुरं मन्दस्मितं पातु नः ॥

- वसन्ततिलकभाणे वात्स्यवरदाचार्यस्य

97. क्षीरोदार्णवसारसंग्रहकलालीलासमालिङ्गितो
भ्राम्यन्मन्दरकूटकोटिघटनानिर्घृष्टरत्नाङ्गदः।
उन्मीलन्नवनीलनीरजदलश्रेणिप्रभामण्डल-
श्लाघालङ्घनजाङ्घ्रिकच्छविरसौ पायादपायाद्धरिः॥

- चतुर्वर्गचिन्तामणौ हेमाद्रिसूरिणः

98. गुणातीतोपीशः सकलभुवनानां नगधरो
घनश्यामो रामो ललितनटलीलासु चतुरः।
पुमर्थानां दाता जलधितनयानन्दजनकः
कृपापारावारो भवतु मम भव्याय सततम् ॥

- ताजिकदर्पणे जीवनाथस्य

99. चक्रे चक्रेण दैत्यप्रकरमतिवलं यस्समस्तं समस्तम्
पाता पातालमूलाहितवलिरनिशं भासुराणां सुराणाम्।
सद्यस्स्द्यत्वघं वो हरिरखिलजगद्रक्षणेन क्षणेन
स्वैरं स्वैरं सलेशैरिव धरणिगतैस्सम्भवद्भिर्भवद्भिः॥

- कन्याकुमारी-अभिलेखे वीरराजेन्द्रदेवस्य

100. चन्द्रार्द्धं कलशं त्रिकोणधनुषीरवं गोष्पदं प्रोष्टिकां
शंखं सव्यपदेऽथदक्षिणपदेकोणाष्टकं स्वस्तिम्।
चक्रच्छत्रयवांकुशंध्वजयवीजंबूर्ध्वरेखाम्बुजं
बिभ्राणं हरिमूनविंशतिमहालक्ष्म्यार्चितांङ्घ्रिं भजे॥

- रूपचित्तामणौ विश्वनाथचक्रवर्तिनः

101. चराचरमिदं जगद्यदुदरैकदेशस्थितं
शिरस्त्रिदिवमम्बरं जलधिरम्बरं यद्वपुः।
शशिद्युमणिलोचना हुतभुगाननना दिक्छ्रुतिः
परात्परतरा हृदि स्फुरतु कापि मूर्त्तिर्मम॥

- मीमांसार्थप्रकाशे भट्टकेशवस्य

102. जगज्जन्मस्थितिध्वंसमहानन्दैकहेतवे।
करामलकवद् विश्वं पश्यते विष्णवे नमः॥

- आगमप्रामाण्ये यामुनमुनेः

103. जयति विभुश्चतुर्भुजश्चतुरर्णवविपुलसलिलपर्यङ्कः।
जगतः स्थित्युत्पत्तिव्ययादिहेतुर्गरुडकेतुः॥

-एरन्-प्रस्तराभिलेखे बुधगुप्तस्य

104. जयति स नाभिसरोरुहमधुकरपटलैरिवासिताकारः।
शौरिः श्रीमुखचन्द्रे यत्कान्तिर्लाञ्छनच्छाया॥

- सूक्तिमु०

105. जयत्यभिनवादित्यरुचिपादतलं हरेः।
उदितम्मातुमवनीं सुरारातितमोपहम् ॥

- नेलकुण्ड-दानपत्राभिलेखे चालुक्य-अभिनवादित्यस्य

106. ताम्बूलप्रतिमा नखक्षतसमा या बिम्बसादृश्यगा
गुञ्जाप्रान्तमनोहरा ज्वलनभा सौन्दर्यधिक्कारिका।
बन्धूकद्युतिशासिका शतदलप्रोद्यच्छवेस्तर्जिका
सा विष्णोश्चरणप्रभा विजयते प्रद्योतयन्ती दिशः॥

- भक्तसुदर्शननाटके मथुराप्रसादस्य

107. ताः पान्तु वः शिखरदन्तुरमन्दराद्रि-
व्यालोडनव्यतिकराद्भ्रमयोऽम्बुराशेः।
यद्वेगविक्लवतया गलितापवादं
श्रीर्निर्भरं मधुरिपोः परिरम्भमाप॥

- समुद्रमथने अमात्यवत्सराजस्य

108. दिशतु वः श्रियमम्बुजलोचनस्त्रिदशमौलिनिघृष्टपदाम्बुजः।
सकललोकभयंकरराक्षसप्रलयहेतुरजो मधुसूदनः॥

- बहुर-पत्राभिलेखे नृपतुङ्गवर्मणः

109. दीर्घायुरुन्नततरप्रतापः पृथिवीमिमां
रक्षतादक्षताचारः प्रजानाथः प्रजाहितः।
निर्विघ्नं पातु विश्वस्य गोप्ता स धरणीधरः
धर्मद्रुहां दमयिता देवस्त्यागचतुर्भुजः॥

-संस्कृत-अभिलेखे

110. देयाद्वो मङ्गलानां ततिमनवरतं यस्य दृक्पातमात्र-
प्रादुर्भूतप्रभावाद्रचयति भुवनं विश्वयोनिः समग्रम्।
क्षोणीभारं विधत्ते शिरसि फणिपतिः शंभुरत्तिप्रपञ्चं
सोयं विष्णुः समस्तामरनिकरशिरोरत्ननीराञ्जिताङ्घ्रिः॥

- अनूपविवेके अनूपसिंहस्य

111. धन्वी धुन्वीत कोऽप्यंहस्संगरे यस्य दस्युभिः।
चक्री बभूव चापोऽपि तद्गुणेऽपि शरोऽपि च॥

- कविकौमुद्यां कल्यलक्ष्मीनृसिंहस्य

112. धर्माधर्मौ तद्विपाकास्त्रयोपि
क्लेशाः पञ्च प्राणिनामायतन्ते।
यस्मिन्नेतेर्नो परामृष्ट ईशो
यस्तं वन्दे विष्णुमोंकारवाच्यम्॥

- याज्ञवल्क्यस्मृतेष्टीकायां मिताक्षराख्यायां विज्ञानेश्वरभट्टारकस्य

113. नमस्त्रिभुवनोत्पत्तिस्थितिसंहृतिहेतवे।
विष्णवेऽपारसंसारसिन्धूत्तरणसेतवे॥

- सुभा० सुधा०

114. नमामि भास्वत्पदपंकजं तन्मौलौ विधायाञ्जलिमादरेण।
क्षीराब्धिजावासनिकेतनं यद्विष्ण्वीशरात्मप्रभवस्वरूपम् ॥

- प्रतिष्ठामयूखे नीलकण्ठस्य

115. नमामि लक्ष्मीपतिमिंन्द्रवन्द्यमुपेन्द्रमिन्द्रावरजं चतुर्भुजम् ।
गदारथाङ्गाब्जसुशङ्खहस्तं सुपर्णपृष्ठोपरिगं वरप्रदम् ॥

- भास्कराचार्यकृत-सिद्धान्तशिरोमणेः भाष्ये
वासनाख्यायां नृसिंहदैवज्ञस्य

116. नमोऽनवसितासक्तचित्क्रियाशक्तिसम्पदे।
विष्णवे त्रिजगद्व्यापिंपरमाश्चर्यमूर्तये॥

- न्यायमञ्जरीग्रन्थिभङ्गे चक्रधरस्य

117. नाथ त्वदङ्घ्रिनखधावनतोयलग्ना-
स्तत्कान्तिलेशकणिका जलधिं प्रविष्टाः।
ता एव तस्य मथनेन घनीभवन्त्यो
नूनं समुद्रनवनीतपदं प्रपन्नाः॥

- सुभा० सुधा० भा०

118. नाभीपद्मवसच्चतुर्मुखमुखोद्गीतस्तवाकर्णन-
प्रोन्मीलत्कमनीयलोचनकलाखेलन्मुखेन्दुद्युतिः।
सक्रोधं मधुकैटभौ सकरुणस्नेहं सुतामम्बुधेः
सोत्प्रासप्रर्णयं सरोजवसतिं पश्यन्हरिः पातु वः॥

प्रसन्नराघवे जयदेवकवेः

119. नित्यं निवसतु हृदये चैतन्यात्मा मुरारिर्नः।
निरवद्यो निर्वृत्तमान् गजपतिरनुकंपया यस्य॥

- ब्रह्मसूत्रभाष्ये

120. निरतिशयनिरंतानन्दचित्सत्स्वरूपः
प्रबलविमलसत्त्वस्वीकृतव्यक्तशक्तिः।
परमरमणमङ्गं मङ्गलानां निधानं
दधद्घटितसेव्यः सेव्यतां शार्ङ्गपाणिः॥

- पुरुषोत्तमपुरी-पत्राभिलेखे रामचन्द्रस्य

121. निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवतः कौमोदकीलक्ष्मणः
कोकप्रीतिचकोरपारणपटू ज्योतिष्मती लोचने।
याभ्यामर्द्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्द्धनिद्रायितो
नाभीपल्वलपुण्डरीकमुकुलः कम्बोः सपत्नीकृतः॥

- अनर्घराघवे मुरारेः

122. पपुं चक्रं देवं हरमचलमाराध्यममरैः
सहोराप्यं बीधंखरुजंनदुरापं शुभकरम् ।
परेशं सर्वेषामतसममृतं सर्वमतुलं
भजेऽहं तं विष्णुं शिवमखिलवेदान्तविदितम् ॥

- वेदान्तपरिभाषायाष्टीकायां दीपिकाख्यायां शिवदत्तस्य

123. परमहिमविलासः स्वीकृतानंतवासः
कलितविविधमूर्तिर्मित्रताख्यातकीर्तिः।
हृदयजलजनिद्राभंगमासंगिचक्रो
विरचयतु स पद्मानंदकन्दो हरिर्मे॥

- स्मृतिप्रकाशे आपाजिभट्टात्मजभास्करस्य

124. परामृष्टः क्लेशैः कथमपि न यो जातु भगवान् ।
न धर्माऽधर्माभ्यां त्रिभिरपि विपाकैर्न च तयोः।
परं वाचां तत्त्वं यमधिगमयत्योमिति पदं
नमस्यामो विष्णुं तममरगुरूणामपि गुरुम् ॥

-विधिविवेकस्य टीकायां न्यायकर्णिकाख्यायां वाचस्पतिमिश्रस्य

125. परं परस्याः प्रकृतेरनादि-
मेकं निविष्टं बहुधा गुहासु।
सर्वालयं सर्वचराचरस्थम्
त्वामेव विष्णुं शरणं प्रपद्ये ॥

- परमार्थसारे आदिशेषस्य

126. पश्यन्ति गच्छन्ति गृणन्त्यभीक्ष्णशो
नित्यास्वमुक्तास्सकलागमाश्च यम् ।
विन्दन्ति वै तत्करणैकगोचरास्तं-
श्रीमुकुन्दं शरणम्व्रजाम्यहम् ॥

- शास्त्रसंग्रहे

127. पाकोत्तीर्णसुवर्णवर्णरुचिरच्छायं वसानोम्बरम्
भास्वत्कौस्तुभकान्तिकर्बुरपरिभ्राजिष्णुवक्षःस्थलः।
शंखं चक्रमसिं गदामविरतं बिभ्रच्चतुर्भिः करै-
रारूढो गरुडं नवीनजलदश्यामो हरिः पातु वः॥

- अनेकार्थसमुच्चये शाश्वतस्य

128. पाण्डुपंकजसंलीनमधुपालीसमङ्गलम् ।
यो विभर्त्ति विधेयात्ते नाकपाली समङ्गलम् ॥

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

129. पान्तु वो जलदश्यामाः शार्ङ्गज्याघातकर्कशाः।
त्रैलोक्यनगरस्तम्भाश्चत्वारो हरिबाहवः॥

- सदुक्ति० श्रीव्यासपादानाम्

130. पायाद्वः करणोरणोरणरणोराणोरणोवारणो
दत्ता येन रमारमारमरमारामारमासारमा।
स श्रीमानुदयोदयोदयदयोदायोदयोदेदयो
विष्णुर्जिष्णुरभीरभीरभिरभीराभीरभीसारभीः॥

- चतुरङ्गविनोदे

131. पुनातु पादान्तपतद्धरित्री सीमन्तरत्नप्रतिबिम्बितो वः।
तन्मस्तकारूढसुरारिभारनिरस्तिहेतोरिव चक्रपाणिः॥

- चक्रपाणिविजये महाकाव्ये लक्ष्मीधरभट्टस्य

132. प्रकृतिसुभगगात्रं प्रीतिपात्रं रमाया-
र्दिशतु किमपि धाम श्यामलं मङ्गलं वः।
अरुणकमललीलां यस्य पादौ दधाते -
प्रणतहरजटालीगाङ्गरिङ्गत्तरङ्गैः॥

- वैद्यजीवने लोलिम्बराजस्य

133. प्रज्ञां कामपि सम्पदं च कुरुते यत्पादसंवाहनं
नित्यं शाम्यति विष्वगन्धतमसं यच्चक्षुरुन्मीलनात्।
यत्पादार्घ्यपयो विधूय दुरितं निःश्रेयसं यच्छति
स्वान्ते नः स वसत्वनारतमनाख्येयस्वरूपो हरिः॥

- सदुक्ति०

134. प्रतिपादयति संमुदे लक्ष्मीमान्तःपटे धृते गुरुबुधाभ्याम्।
तद्वदनदर्शनोत्कः प्रपदालम्बी हरिर्जयति॥

- शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

135. प्रत्यग्रोन्मेषजिह्मा क्षणमनभिमुखी रत्नदीपप्रभाणा-
मात्मव्यापारगुर्वी जनितजललवा जृम्भणैः साङ्गभङ्गैः।
नागाङ्कं मोक्तुमिच्छोः शयनमुरुफणाचक्रवालोपधानं
निद्राच्छेदातिताम्रा चिरमवतु हरेर्दृष्टिराकेकरा वः॥

- सूक्तिमु0 विशाखदेवस्य

136. प्रथयतु मुदं पादाम्भोजद्वयं कमलापते-
र्नतरिपुशिरः श्रेण्यास्सद्यावतीर्णजयश्रियः।
विनमदमरीधम्मिल्लास्तप्रफुल्लसुरद्रुम-
प्रसरपटलीवेष्टीभूतप्रमोदपराक्रमम्॥

- रघुदेवपुर- दानपत्राभिलेखे रघुदेवस्य

137. प्रस्फारानन्दकन्दस्फुरदतुलतमोघस्मरो ज्योतिरोघ-
स्सत्यो नित्यावदातः श्रुतिशतशिरसां मानभावैकभूमिः।
योऽखण्डः खण्डनानामविषयविषयिप्रत्यगात्मैकमूर्त्ति-
र्वध्यादध्यासमानो भवदहितमसौ स्वं पदं पद्मनाभः॥

- वेदान्तकौमुद्यां रामाद्वयाचार्यस्य

138. भक्तिप्रह्वविलोकनप्रणयिनी नीलोत्पलस्पर्धिनी
ध्यानालम्बनतां समाधिनिरतैर्नीते हितप्राप्तये।
लावण्यस्य महानिधी रसिकतां लक्ष्मीदृशोस्तन्वती
युष्माकं कुरुतां भवार्तिशमनं नेत्रे तनुर्वा हरेः॥

- सूक्तिमु0 अमृतदत्तस्य

139. भक्तिप्रह्वेण मनसाऽभवद्भूषणलीलया।
दोष्णा च यो भुवो भारञ्जीयात्स श्रीभरश्चिरम् ॥

- पल्लवाभिलेखे

140. मन्थक्ष्माधरघूर्णितार्णवपयः पूरान्तरालोल्लस-
ल्लक्ष्मीकन्दलकोमलाङ्गदलनाप्रादुर्भवत्संभ्रमाः।
हर्षोत्कण्टकितत्वचो मधुरिपोर्देवासुराकर्षण-
व्यापारोपरमाय पान्तु जगतीमाबद्धवीप्सा गिरः।।

- सुभा० रत्नाकरस्य

141. मातः पातकपातकारिणि तव प्रातः प्रयातस्तटम्
यःकालिन्दिमहेन्द्रनीलपटलस्निग्धां तनुं वीक्षते।
तस्यारोहति किं न धन्यजनुषः स्वान्तं नितान्तोल्लस-
न्नीलाम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिर्देवो रमावल्लभः।।

- अमृतलहर्य्यां जगन्नाथस्य

142. मुग्धे मुञ्च विषादमत्र बलजित्कम्पो गुरुस्त्यज्यतां
सद्भावं भज पुण्डरीकनयने मान्यानिमान्मानय।
लक्ष्मीं बोधयतः स्वयंवरविधौ धन्वन्तरेर्वाक्छला-
दन्यत्र प्रतिषेधमात्मनि विधिं शृण्वन्हरिः पातुः वः।।

- सुभा०

143. यत्पादाब्जयुगं सुगंधतुलसीलोभाद्व्रजंतोप्यहो
योगिप्रार्थ्यगतिं प्रयांति मधुपायद्भक्तिहीनास्त्वधः।
अब्भक्षाः पवनाशिनोपिमुनयः संसारचक्रे भृशं
भ्राम्यंतेवगतागतैरिहमुहुस्तस्मै नमो विष्णवे।।

- हरिभक्तिशुद्धादये

144. यत्प्राप्तये विधिमवोचदनन्यशक्त्या
यद्वत्तथैव परिनिष्ठितमप्यथाह।

तत्त्वं निरस्तपरिमाणमियं श्रुतिर्यत्
तस्मै नमो भगवते मधुविद्विषेऽस्तु॥

- तत्त्वशुद्धौ

145. यदङ्घ्रिरेणुबीजानि जनैरुप्तानि मूर्द्धसु।
सद्यः सुरद्रुमायंते श्रीधरः सश्रियेस्तुनः॥

- श्रीमद्भगवन्नामकौमुद्यां लक्ष्मीधरस्य

146. यद्द्वेधा स्थितमव्ययं परमपि ज्योतिश्चिदंशुप्रभं
सूर्याख्यः स च भास्वरप्रभृतयो यस्य स्फुरत्यूर्मयः।
सर्वज्ञानमयो बभूव भगवांस्तस्मात्तनुर्मानसो
यस्मात्सृष्टिरभूदियं गुणवती स्त्रीपुन्निमित्ता ततः॥

- ताम्रपत्राभिलेखे कर्णदेवस्य

147. यद्बीजं जगतां लयस्थितिविधौ यच्चैकमालम्बनं
देवो दैत्यनिषूदनः स भगवान् ब्रह्माणमग्रेऽसृजत्।
तेनाशु त्रिजगत् प्रपञ्चरचनाचातुर्यविद्यौकसा
सप्तात्रिप्रमुखाः प्रजाधिपतयो ध्यात्वा समुत्पादिताः॥

- कलचुरि -प्रस्तराभिलेखे

148. यद्योगिभिर्भवभयार्तिविनाशयोग्य-
मासाद्य वन्दितमतीव विविक्तचित्तैः।
तद्वः पुनातु हरिपादसरोजयुग्म-
माविर्भवत्क्रमविलङ्घितभूर्भुवस्स्वः॥

- कालिकापुराणे

149. यन्नाभीसरसीरुहे समजनि ब्रह्मा जगत्सृष्टिकृत्
यत्पादाम्बुजतो ववाह जगतामालम्बिनी स्वर्नदी।

विष्णुः

येनाधारि धरा वराहवपुषा दंष्ट्राग्रकेनोच्चकैः
प्रत्युद्यन्नवनीरदायिरुचये तस्मै परस्मै नमः॥

- अभिलेखे नेपालतः

150. यस्मादाविर्भवति परमाश्चर्यभूताद् युगादौ
यस्मिन्नेव प्रविशति पुनर्विश्वमेतद् युगान्ते।
तद्वश्छन्दोमयतनुवयोवाहनन्दैत्यघाति
ज्योतिः पातु द्युतिजितनवाम्भोदमम्भोजनेत्रम्।

- अभिलेखे

151. यस्मिन्न स्तः कर्मविपाकौ यत आस्तां
क्लेशा यस्मै नालमलङ्घ्या निखिलानाम्।
नावच्छिन्नः कालदृशा यः कलयन्त्या
लोकेशस्तं कैटभशत्रुं प्रणमामि॥

- पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरणे श्रीमच्छङ्करभगवत्पादस्य

152. यस्मिन् विशन्ति भूतानि यतस्सर्गस्थितां मते।
स वः पायाद्धृषीकेशो निर्गुणस्सगुणश्च यः॥

- जोधपुर -अभिलेखे प्रतीहारबौकस्य

153. यस्य पूः प्राणिनः सर्वे यो हेतुर्जगतां सताम्।
तं यज्ञपुरुषं वन्दे स्वर्गादिफलदायिनम्॥

- आपस्तम्बशुल्बसूत्रस्य व्याख्यायां गोपालस्य

154. यस्य श्रीपादपङ्केरुहनखलिखितोर्ध्वाण्डनिर्भिण्णभित्ते-
र्गङ्गा मङ्गल्यभङ्गप्रबलतरजलोद्यत्तरङ्गा जगाल।

तस्यासावङ्घ्रिदण्डस्त्रिभुवनभवनस्तम्भदण्डः प्रकामम्
कामं वामो मुरारेरशुभचयहरश्चिन्त्यमानं क्रियाद्वः॥

- तत्त्वप्रदीपिकायां भागवतव्याख्यायाम्

155. यस्यानन्दभवेन मङ्गलकलासंभावितेन स्फुरद्
धाम्ना सिद्धरसामृतेन करुणावीक्षा सुधासिंधुना।
भक्तानां प्रभवप्रसंहृति जरारागादिरोगाः क्षणाद्
ध्वंसं यान्ति जगत्प्रधानभिषजे तस्मै परस्मै नमः॥

- रसरत्नसमुच्चये

156. यस्यांशभूतो वपुरब्जयोनिमुखासुराः सन्ततमर्चयन्ति।
कोऽहं कुतो वेति विनिर्णियाय नमोऽस्तु तस्मै जगदीश्वराय॥

- वर्णकोशे गोविन्दभट्टस्य

157. यस्याः साम्यपदाय विद्रुमगणोऽम्भोधौ तपस्वीयते
मञ्जिष्ठाऽपि धराधरस्य शिखरे गाढं तपश्चर्यते।
बान्धूकं कुसुमं त्वधोमुखतया स्थित्वा तपस्यत्यलं
सा विष्णोश्चरणप्रभा विजयते त्रैविष्टपे मण्डले॥

- वीरपृथ्वीराजनाटके मथुराप्रसाददीक्षितस्य

158. यान्तं सूर्यमुपाययौ विदधती सन्ध्याऽतिरागान्विता
त्यक्त्वा तां समुपागमत्तव पदे छायापतिर्यद्रविः।
अन्विष्यन्त्यथ तं प्रियं समगमत्त्वत्पादपङ्केरुहे
दृष्ट्वैनं विकसत्प्रभासुररुचिः सैवात्र सन्तिष्ठते॥

- केलिकुतूहले मथुराप्रसाददीक्षितस्य

159. येन ध्वस्तमनोभवेन बलिजित्कायः पुरास्त्रीकृतो
यश्चोद्वृत्तभुजङ्गहारवलयो गङ्गां च योऽधारयत्।

विष्णुः

यस्याहुः शशिमच्छिरो हर इति स्तुत्यं च नामामराः
पायात्स स्वयमन्धकक्षयकरस्त्वां सर्वदो माधवः॥

- सूक्तिमु०

160. येनोत्थाप्य समूलमन्दरगिरिश्छत्रीकृतो गोकुले
राहुर्येन महाबलो सुररिपुः कार्यादशेषीकृतः।
कृत्वा त्रीणि पदानि येन वसुधा बद्धो बलिर्लीलया
सोऽयं पातु युगे-युगे युगपतिस्त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

- सुभा० सुधा० भा०

161. ये मुक्तावपि निःस्पृहाः प्रतिपदप्रोन्मीलदानन्ददां
यामास्थायसमस्तमस्तकमणिं कुर्वन्ति यं स्वे वशे।
तान् भक्तानपि तां च भक्तिमपि तं भक्तप्रियं श्रीहरिं
वंदे संततमर्थयेऽनुदिवसं नित्यं शरण्यं भजे॥

- भक्तिरत्नावल्यां श्रीधरस्वामिनः

162. योगीन्द्रमानसतडागविकासमान-
गङ्गाच्छलेन विगलन्मकरन्दधारी।
तद्भक्तवृन्दनयनभ्रमरैर्निपीतम्
वन्दे हरेः सकलकामदुघं पदाब्जम् ॥

- जुमरकौमुद्यां यदुनन्दनस्य

163. यं भान्तं सवितानुभाति विततज्योतिस्तथा चन्द्रमा
नक्षत्राणि विभावसुश्च न च यं ते भासयन्ति क्वचित्।
येनेदं निखिलं विभाति भुवनं तस्मै परंज्योतिषे
सर्वज्ञाय सदद्वितीयवपुषे शश्वन्नमो विष्णवे॥

- तत्त्वशुद्धौ

164. यं विश्वप्रभवं चतुर्युगचतुर्भूतोद्भवं यं विदु-
र्यो वर्णांश्चतुरस्तथैव चतुरो यो कल्पयच्चाश्रमान् ।
यस्याहुश्चतुराननोदितचतुर्वेदागिरः पौरुषं
पायाद् वः स चतुर्भुजोऽखिलचतुर्वर्गार्थिकल्पद्रुमः।।

- सिलिमपुर-अभिलेखे

165. यः कर्त्ता भुवनत्रयस्य तनुभिर्विश्वं पृथिव्यादिभि-
र्यस्येदं ध्रियते य ईश्वर इति ख्यातो भवन्नापरः।
यः संज्ञात्रयमेक एव भजति त्रैगुण्य भेदाश्रितो
ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरेति जगतामीशाय तस्मै नमः।।

- भटेल-ताम्रपत्राभिलेखे, गोविन्दकेशवस्य

166. रक्षन्तु लक्ष्मीकुचशातकुम्भकुम्भस्थलीकुङ्कुमपङ्किलाङ्काः।
बालातपाताम्रकलिन्दकन्याकल्लोललोला मुरवैरिबाहाः।।

- सूक्तिरत्नहारे

167. रोमावली मुरारेः श्रीवत्सनिवेशिताग्रभागा वः।
उन्नालानाभिनलिनच्छायेवोत्तापमपहरतु।।

- सुभा० सुधा० भा०

168. वत्से मागा विषादं श्वसनमुरुजवं सन्त्यजोर्ध्वप्रवृत्तं
कम्पः को वा गुरुस्ते भवतु बलभिदा जृम्भितेनात्र याहि।
प्रत्याख्यानं सुराणामिति भयशमनच्छद्मना कारयित्वा
यस्मै लक्ष्मीमदाद्वः स दहतु दुरितं मन्थमूढां पयोधिः।।

- सूक्तिमु०

169. वन्दारुवृन्दारकमौलिवृन्दमन्दारनिष्यन्दमरन्दपानात् ।
इन्दिन्दिरो विन्दति वन्दिभावममन्दमानन्दमुपेत्य यस्य॥

- रामचन्द्रविजये वेंकटकृष्णस्य

170. वन्दे जगत्कारणमादिदेवं विज्ञानदं विघ्नविनाशदक्षम् ।
तापत्रयोन्मूलनमादिनाथं मायापतिं पूर्णमपारपारम् ॥

- रामार्णवे

171. वन्देऽतिसुन्दरमुकुन्दपदारविन्दं
मन्दाकिनीगलदमन्दमरन्दधारम् ।
इन्दिन्दिरीभवदनिन्द्यपुरन्दरादि-
वन्दारुवृन्दमुरुमन्दिरमिन्दिरायाः॥

- पारिजातहरणचम्प्वाम्

172. वन्दे मन्दाकिनीवारिमकरन्दपरिप्लुतम् ।
सानन्दसुरनेत्रालिमुकुन्दपदपङ्कजम् ॥

- अवन्तिसुन्दरीकथासारे

173. वन्दे मुकुन्दस्य पदारविन्दं वन्दारुवृन्दारकवृंदवंद्यम् ।
मंदाकिनीयन्मकरन्दबिन्दुसंदोहसंदेहधियं दधाति॥

- दानवाक्यावल्याम्

174. वागीश्वरीसरसगीतगुणप्रवाहं
सारस्वतीसततंसेवितपादपद्मम् ।
हेमाद्रिमारकतशेखरकान्तमीशम्
वन्दे खगेन्द्रभुजमौलिगतं मुकुन्दम् ॥

- विश्वनाथकविराजप्रणीत साहित्यदर्पणस्य
विवृत्तौ रामचरणतर्कवागीशस्य

175. वाग्देवी यन्मुखसरसिजे पादपद्मे स्थिता श्री-
ह्र्यदिन्ध्वान्तर्हृदि जलरुहे संविदा लिंगितो यः।
ब्रह्मेशानामरपतिमुखैर्यः सुरैर्वन्दिताङ्घ्रि -
स्तं प्रत्यञ्चं श्रुतिमतिमतं नौमि वैकुण्ठनाथम् ॥

- प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां प्रभाख्यायां सदानन्दस्य

176. विरमति महाकल्पे नाभीपदैकनिकेतन-
स्त्रिभुवनपुरीशिल्पी यस्य प्रतिक्षणमात्मभूः।
किमिह करणं कीदृक् कस्य व्यवस्थितिरित्यसा-
वुदरमविशद्द्रष्टुं तस्मै जगन्निधये नमः॥

- सूक्ति-मु०

177. विलसच्चितिबलतः स्फुरदखिलः स्वकतमसा
परिनिर्मितविपुलद्वयविहितस्वकमहिमा।
व्यवहारकवपुषा विधिवचनादिकविषयो
मम मानसनिलयो हरिरवताज्जगदखिलम् ॥

- श्रुतिसारसमुद्धरणे तोटकाचार्यस्य

178. विश्वं व्याप्य स्थितो यः सकलसुरनरैर्वन्दितः श्रीनिवास -
स्तेजोमूर्त्तिः कृपालुर्मुनिवरनिकरैर्ज्ञानदृष्ट्यैव गम्यः।
ध्वान्तं हत्वा स बोधं सुखकरममितं सच्चिदानन्दरूपः
स्वान्ते तद्भक्तियुक्ते व्यपगतदुरिते सर्वदा मे व्यनक्तु॥

- सिद्धान्तसार्वभौमे मुनीश्वरस्य

179. विष्णोस्तत्परमं धाम द्योतमानं निजश्रिया।
अनन्तामितमद्वैतमात्मभूतं पुनातु नः॥

- सुरेश्वराचार्यकृत- नैष्कर्म्यसिद्धिचन्द्रिकायाष्टीकायां ज्ञानोत्तममिश्रस्य

180. वृन्दारका यस्य भवन्ति भृङ्गा-
मन्दाकिनी यन्मकरन्दबिन्दुः।
तवारविन्दाक्षपदारविन्दं
वन्दे चतुर्वर्गचतुष्पदं तत् ॥

- वृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

181. व्याकृष्टरत्नखचितायतशार्ङ्गचापो
यश्चेन्द्रकार्मुकविनीलपयोदवृन्दम्।
निर्भर्त्सयन्निव विभाति सकृष्णकान्ति-
र्विष्णुश्शिवन्दिशतु वोऽवधृतत्रिलोकः॥

- मसुलिपत्तम-पत्राभिलेखे अम्मराजस्य

182. शय्या यस्य दृशा शृणोति भवतिच्छन्दांसि यद्वाहनम्
लीला यस्य जगन्ति कालकलनामूलं च यल्लोचनम्।
निद्रा जाग्रत एव यस्य निगमस्तोमोऽवतंसोत्पलम्
देवः पुष्यतु रङ्गमङ्गलनिधिः श्रेयांसि भूयांसि नः॥

- यतिराजविजये श्रीवात्स्यवरदाचार्यस्य

183. शशिरुचिरहरार्द्धव्यक्तसक्तार्द्धदेहो
दिशतु घनघनाभः पद्मनाभः श्रियं वः।
त्रिदशसरिदशीतद्योतजावारिमध्य-
भ्रमिभवमिव नाभौ वारिजं यस्य रेजे॥

- माधवनिदानस्य टीकायां मधुकोशाख्यायां
विजयरक्षितश्रीकण्ठदत्तयोः

184. शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

- चित्रदीपस्य व्याख्यायां तात्पर्यबोधिन्याख्यायाम्

185. शेषाहितल्पधवलाधरभागभासि-
वक्षःस्थलोल्लसितकौस्तुभकान्तिशोणम्।
श्यामं वपुः शशिविरोचनबिम्बचुम्बि-
व्योमप्रकाशमवतान्नरकद्विषो वः॥

- अभिलेखे

186. श्रियममर्त्यमनुष्यनुतं मह-
ज्जलजचक्रभृदंबुधिमन्दिरम्।
सुरधुनीवनवन्मुरजिद्वपु-
र्दिशतु वो विमलं कमलालयम् ॥

- मन्दकिल-तल-अभिलेखे

187. श्रिया स पायादयुतेन्दुशुभ्रया
बहिस्स्रवन्त्या दययेव यः सताम् ।
जयप्रदाता जगतामधीश्वरः
प्रसन्नवक्त्रो जयति प्रभुः पुमान् ॥

- देवावतरणे शिवानन्दस्य

188. श्रियः करारोपितरत्नमुद्रिका
मरीचिमालातपलोहितीकृतम् ।
सतामुपास्यं सुरशेखरीकृतम्
करोतु शं वो हरिपादपंकजम् ॥

- कालादर्शे आदित्यसूरिणः

189. श्रीधाम्नि दुग्धोदधिपुण्डरीके
यश्चञ्चरीकद्युतिमातनोति।
नीलोत्पलश्यामलदेहकान्तिः
स वोऽस्तु भूत्यै भगवान्मुकुन्दः॥

- विक्रमाङ्कदेवचरिते विद्यापतिबिल्हणस्य

190. श्रीपादान्तिकमेयुषामुरसि यत्सेवासु देवासुर-
स्तोमानामवभाति हारतरलालम्बानुबिम्बाकृतिः।
लीलार्थं प्रकटीकृतश्रुतिशिरोभाषाविभूषायित-
स्वान्तर्भाव इवाच्युतः स दिशतु श्रेयांसि भूयांसि नः॥

- अलङ्कारचन्द्रिकायां श्रीनिवासकवेः

191. श्रीपीताम्बरमालम्बे निरालम्बावलम्बदम् ।
अजिष्णुमतयः शब्दब्रह्मरूपं वदन्ति यम् ॥

- कोषकल्पतरौः विश्वनाथस्य

192. श्रीब्रह्मेशेन्द्रदेवैः सनकप्रभृतिभिर्योगिवृन्दैश्च सेव्यः
सृष्टिस्थित्यत्ययादीन् स्थिरचरजगतो लीलया यः करोति।
संसारोच्छेदहेतोर्हृदि विमलतरे चिन्त्यते यश्च सद्भिः
स स्ताद् भक्तप्रियोऽहोवनदहनपटुः श्रेयसे नो मुकुन्दः॥

- दण्डीकृत-दशकुमारचरितस्य बालबोधिनी
इत्याख्यायां टीकायां राजेन्द्रगडकस्य

193. श्रीशं शङ्खगदारिपङ्कजधरं ब्रह्माणमब्जासनम्
योगीन्द्रं कपिलं द्विजिह्वनृपतिं पद्मं ससंवर्तकम् ।
कण्वं सर्वमुनीन्द्रसंस्तुतपदाम्भोजं समस्तान् गुरून्
श्रीविष्ण्वागमसारसिन्धुकलशीडिम्भानदम्भान् भजे॥

- आगमप्रदीपे

194. सतां सन्निहितो नित्यं पाखण्डपथदूरतः।
स श्रीपतिः परामृद्धिं सर्वसिद्धिं च यच्छतु॥

- मिथ्याज्ञानखण्डने रविदासस्य

195. सदानन्दं सर्गस्थितिप्रलयहेतुं त्रिजगतो
हृदिस्थं ध्यायन्ति द्रुहिणहरमुख्या दिविषदः।
यमाद्यं योगेशं निगमतरमव्यक्तमपरं
नमस्तस्मै कस्मै चिदपि भवविध्वंसपटवे॥

- शतानन्दकृत- भास्वत्याष्टीकायां विवरणाख्यायां माधवमिश्रस्य

196. सद्वैद्यं श्रीहरिं वन्दे भवरोगभयापहम्।
तापत्रयैकशमनं यत्पादसलिलं हिमम्॥

- वैद्यानुभवविनोदे राघवस्य

197. समन्तादुद्दामद्युतिनिहतघोरान्धतमसे
कलानाथश्रेणीकृतरुचिरभूपे निरूपमे।
शरण्ये सम्पूज्ये निरवधिपरानन्दसदने
हरेः पादाम्भोजे तव हृदयभृङ्गो विहरतु॥

- चित्रचम्प्वां बाणेश्वरभट्टाचार्यस्य

198. समस्तगुणपूर्णाय दोषदूराय विष्णवे।
नमः श्रीप्राणनाथाय भक्तेभ्योऽभीष्टदायिने॥

- काठकोपनिषद्व्याख्यायाम्

199. सर्वः शुभान्यादिपुमान् प्रदेयाद्
यदीयनाभीनलिने निलीनः।

विष्णुः

विश्वक्रियाकौशलबीजपूर्ण-
वराटकच्छत्रमिवात्मजन्मा।।

- मेरा-विष्णु-देवालयाभिलेखे हरिधर्मणः

200. सशंखाश्चत्वारः स्फुरदुरुगदाचक्रविषमा
घनश्यामा दैत्यक्षयजनितसत्कीर्त्तिगुरवः।
अलङ्घ्याः श्रीमन्तश्चलदलघुमाणिक्यवलयाः
शिवं हस्ताः शौरेर्विदधतु महाम्भोधय इव।।

- अभिलेखे

201. सुररिपुसुदृशामुरोजकोकान् मुखकमलानि च खेदयन्नखण्डः।
चिरमखिलसुहृच्चकोरनन्दी दिशतु मुकुन्दयशः शशी मुदं वः।।

- ललितमाधवे रूपगोस्वामिनः

202. संसृष्टार्थे जगति निखिलस्याभिधानस्य शक्तिं
दृष्ट्वा यस्मिन् निखिलजगतामीश्वरे तद्वदेव।
स्वच्छानन्दे परमपुरुषे वैदिकीनां च वाचां
ज्ञाता वृत्तिस्तमहमभयं नौमि विष्णुं वरेण्यम्।।

- तत्त्वशुद्धौ

203. स्तुमस्ते लोचने विष्णोर्विना याभ्यां जगन्त्यपि।
अन्धीयन्त्यप्रतीकारं चारुलोचनवन्त्यपि।।

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

204. स्तोष्ये भक्त्या विष्णुमनादिं जगदादिं
यस्मिन् नेतत्संसृतिचक्रं भ्रमतीत्थम्।

यस्मिन्दृष्टे नश्यति तत्संसृतिचक्रं
तं संसारध्वान्तविनाशं हरिमीडे॥

- हरितत्त्वमुक्तावल्यां शङ्कराचार्यस्य

205. हृदन्तरगतासतां स्मृतवतां दरोन्मूलिनी
सुवांछितसुदायिनीप्रणमतां त्रिलोकेश्वरी।
स्रवन्नमृतमञ्जुलद्रवजगच्चमत्कारिणी
हरेर्नयनचंद्रिका विवरतां चिरं चेतसि॥

- कविकल्पद्रुमसन्दर्भे वेणीदत्तस्य

206. हेलालालितलोकपालमुकुटश्रेणीलसत्कोटयो
लोलालम्बितहेतिजालविलसद्दिक्चक्रवालान्तराः।
आकल्पं कलयन्तु वो वलिमखव्याजृम्भमाणाहरे-
श्श्रेयांसि त्रिदशेशनीलशिखरिश्रेणीश्रियो वाहवः॥

- अन्बिल पत्राभिलेखे सुन्दरचोलस्य

नारायणः

207. आरूढो गरुडं भुजान्ततरलश्रीवन्यमालावलिः
क्ष्मामान्दोलितचामरान्तरगतः प्रोद्गीयमानोऽमरैः।
चञ्चन्मीनंसुवर्णकुण्डलधरो धाराधरश्यामलः
काले मे चरमे, ममाक्षिपदवीमायातु नारायणः॥

- धातुकाव्ये

208. उत्क्षिप्तां सानुकम्पं सलिलनिधिजलादेकदंष्ट्राग्ररूढा-
माक्रान्तामाजिमध्ये निहतदितिसुतामेकपादावधूताम्।

नारायणः

सम्भुक्तां प्रीतिपूर्वं स्वभुजवशगतामेकचक्राभिगुप्ता
श्रीमान् नारायणस्ते प्रदिशतु वसुधामुच्छ्रितैकातपत्राम् ॥

- अविमारके भासस्य

209. कान्ताय कल्याणगुणैकधाम्ने नवद्युनाथप्रतिमप्रभाय।
नारायणायाखिलकारणाय श्रीप्राणनाथाय नमस्करोमि॥

- मध्वविजये नारायणपण्डिताचार्यस्य

210. ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् कनककुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरणमयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

- भक्तिरत्नावल्यां श्रीधरस्वामिनः

211. नक्रग्रस्तपदं समुद्धृतकरं ब्रह्मादयो भोः सुरा
रक्षन्तामिति दीनवाक्यकरिणं देवेष्वशक्तेषु यः।
मा भैषीरिति तस्य नक्रहनने चक्रायुधः श्रीधरो
विश्वत्राणपरायणो विजयते नाथः स नारायणः॥

- सुभा० सुधा० भा०

212. नारायणस्त्रिभुवनैकपरायणो वः
पायादुपायशतयुक्तिकरः सुराणाम् ।
लोकत्रयाविरतनाटकतन्त्रवस्तु-
प्रस्तावनप्रतिसमापनसूत्रधारः॥

- दूतघटोत्कचे भासस्य

213. यद्भक्तिप्रचयात्मके दिनमुखे दृष्टिक्षमः क्षेत्रिणः
क्षिप्रं संसृतिशर्वरीं क्षिपति यत्सङ्कल्पसूर्योदयः।

तत्त्वैरस्त्रविभूषणैरधिगतस्स्वाधीननित्योन्नतिः
श्रीमानस्तु स मे समस्तदुरितोत्ताराय नारायणः॥

- संकल्पसूर्योदये डी0 कृष्ण आयंगरस्य

214. यस्य श्रीनखकान्तिनाकसरितश्चूडायतेऽङ्घ्रिद्वयम्
सेवानम्रसुरेन्द्रवज्रमकुटीमाला मरालायते॥
पश्यन्निर्जरयोषिदम्बकततिर्मीनप्रपञ्चायते
क्षोणीशाञ्जलयः पयोजमुकुलन्त्यव्यात्स नारायणः॥

- शतकोटिखण्डने

लक्ष्मीनारायणः

215. अतिविपुलं कुचयुगलं रहसि करैरामृशन् लक्ष्म्याः।
तदपहृतं निजहृदयं जयति हरिर्मृगयमाण इव॥

- सूक्तिमु0 अरसिठक्कुरस्य

216. अनन्तसौख्याख्यमहात्मविष्णो चित्सांद्रतुर्यात्मकगोपकृष्ण।
कोयंसविष्णोऽखिलमंत्रमूर्त्ते लक्ष्मीधराख्येश नमो नमस्ते॥

- मन्त्रदेवप्रकाशिकायां देवदत्तशर्मणः

217. आताम्रे नयने स्फुरत्कुचभरः श्वासो न विश्राम्यति
स्वेदाम्भः कणदन्तुरं तव मुखं हेतुस्तु नो लक्ष्यते।
धिक् को वेद मनः स्त्रिया इति गिरा रुष्टां प्रियांभीषयं-
स्तस्यास्तत्क्षणकातरेक्षणपरिस्पृष्टो हरिः पातु वः॥

- पञ्चायुधप्रपञ्चभाणे त्रिविक्रमपण्डितस्य

218. आम्नायगीतचरितौ सुरराजमौलिमाणिक्यबालरविरञ्जितपादपद्मौ।
वन्दामहे दुरितनिर्द्दलनायलक्ष्मीनारायणौ संकलतंत्ररहस्यभूतौ।।

- लक्ष्मीनारायणार्चापारिजाते भवानीशंकरस्य

219. आराधनीयममरैरपि पातु युष्मान् -
पादारविन्दयुगलं गरुडध्वंजस्य।
विन्यस्तकौस्तुभमणेरुरसोवरुह्य
लक्ष्मीर्नखांशुखचितं भजते भृशं यत् ॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

220. उत्पत्तिस्थितिसंहृतिप्रणियतिज्ञानानिबंधावृती
मरेक्षश्चेति यतो भंवन्ति जगतो भावात्स्वतंत्रात्परात्।
तं वन्दे निरवद्यसद्गुणतनुं लक्ष्मीधरालिंगितं
दोर्भिश्चक्रदराम्बुजाभयभृतं भक्तैकगम्यं हरिम् ॥

- आनन्दतीर्थकृत- द्वादशस्तुतिव्याख्यायां गङ्गोदकमिश्रस्य

221. उपलशकलकल्पः कौस्तुभो यामिको मे
हृदि तव रमणीनां वार्यते केन यात्रा।
त्वमसि कुवलयाभस्तत्कटाक्षोपमर्दै-
र्भणितिभिरिति लक्ष्म्याः पातु मूको मुरारिः।।

- रुक्मिणीहरणईहामृगे वत्सराजस्य

222. उरसि निहितलंक्ष्मीबाहुवल्लीयुगेन
स्वकरयुगलमेकीकृत्य केलीविनोदे।
कुवलयदलदामानद्धमन्दोरमालां
दधदिव वितनोतु श्रीकलां काकुलेशः।।

- मङ्गलगिरि-स्तम्भाभिलेखे कृष्णदेवरायस्य

223. ओमित्येकाक्षराख्येयं वन्दे वाङ्मनसातिगं
पश्यन्ति सूरयो यद्धितद्विष्णोः परमं पदम् ।
लक्ष्मीसहायमतसीकुसुमच्छविशाश्वतं
ज्योतिर्मे हृदये भूयात्सदा राजीवलोचनम् ॥

- आपस्तंबशुल्बदीपिकायां अरविन्दस्वामिनः

224. कचकुचचिबुकाग्रे पाणिषु व्यापृतेषु
प्रथमजलधिपुत्रीसङ्गमेऽनङ्गधाम्नि।
ग्रथितनिबिडनीवीबन्धनिर्मोक्षणार्थं
चतुरधिककराशः पातु वश्चक्रपाणिः॥

- सुभा० सुधा० भा०

225. कमलकुमुदबन्धू लोचनेवारयन्त्या
रहसि जलधिपुत्र्यालिङ्गिताङ्गः सलज्जम् ।
हृतवसनसुपीनोत्तुङ्गवक्षोजमीक्ष्य-
क्षुधित इव दिशत्वानन्दकन्दं मुकुन्दः॥

- मुकुन्दविजये परममिश्रस्य

226. कमलादयितं कृष्णं कमलासनवंदितम् ।
कमलाक्षमहं वंदे कमलालकशायिनम् ॥

- हेमाद्रिप्रायश्चित्तनिर्णये

227. कस्तूरीयन्ति देहे नयनसरसिजे कज्जलीयन्ति कर्णे
लीलानीलाम्बुजीयन्त्यपि हरिदुपलीयन्ति हारेऽत्युदारे।
ग्रैवेयीयन्ति कण्ठे महति कुचतटे कञ्चुकीयन्ति लक्ष्म्या
यासां भासां विलासा मधुमथनतनोस्ता ममान्तःस्फुरन्तु ॥

- जानराजचम्प्वां कृष्णदत्तस्य

228. कस्ते वक्षसि वारिराशिमथनोत्पन्नो मणिः कौस्तुभः
सोऽयं त्वत्सहजस्ततः सुतनु ते वासस्थले स्थापितः।
इत्थं व्याहरतोः परस्परमुखप्रेक्षानमन्नेत्रयो-
र्लक्ष्मीकैटभवैरिणोर्विहसितं त्वामापदस्त्रायताम् ॥

- कर्णभूषणे गंगानन्दस्य

229. कावेरीहृदयाभिरामपुलिने पुण्ये जगन्मंगले
चन्द्राम्भोजवतीतटीपरिसरे धात्रा समाराधिते।
श्रीरङ्गे भुजगेन्द्रभोगशयने लक्ष्मीमहासेविते
शेते यः पुरुषोत्तमः स भगवान्नारायणः पातु वः॥

- श्रीरङ्गमभिलेखे देवरायस्य

230. किं मत्स्याकृतिमाश्रितोऽसि दयिते! त्वन्नेत्रमैत्रीरसात्
किं ते तोयगतिः सुखाय भवती तत्सम्भवेस्यात्तदा।
शोच्या नन्वनिमेषता तव कथं त्वां पश्यतो नो भवे-
दित्थं सल्लपितं मुकुन्दरमयोर्मुग्धं शिवायास्तु वः॥

- मत्स्यावतारप्रबन्धे नारायणभट्टस्य

231. क्षीराब्धेरुज्जिहानां त्रिदशपरिषदि प्रोल्लसद्भ्रूविभङ्गी -
मङ्गीकुर्वन्कटाक्षैस्त्रिभुवजननी व्रीडयानम्रमौलिः।
देवः पायादपायात्कुसुमशरपरीरम्भसञ्जातभावः
सद्यः स्विद्यन्तरेणस्मितकमलमुखीमाददानः करेण॥

- विवादचिन्तामणौ वाचस्पतेः

232. गाढोपगूढकमलाकुचकुम्भपत्र-
मुद्राङ्कितेन वपुषा परिरभ्यमाणः।

मा लुप्यतामभिनवा वनमालिकेति
वाग्देवतोपहसितोस्तु हरिः श्रिये वः॥

- भुवनेश्वराभिलेखे

233. चक्रं नियुज्य समदासुरभंजनाय
बुद्धिं नियम्य भुवनत्रयरंजनाय।
संक्रीडते जगति यस्सुरमौलिरत्न-
नीराजितांघ्रिकमलः कमलासहायः॥

- अभिलेखे

234. चत्वारः प्रथयन्तु विद्रुमलतारक्ताङ्गुलिश्रेणयः
श्रेयः शोणसरोजकोरकरुचस्ते शार्ङ्गिणः पाणयः।
भालेष्वब्जभुजो लिखन्ति युगपद्ये पुण्यवर्णावलीः
कस्तूरीमकरीः पयोधरयुगे गण्डद्वये च श्रियः॥

- प्रसन्नराघवे जयदेवकवेः

235. जगन्मङ्गलरूपाय सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे।
नमो लक्ष्मीसमेताय कृष्णाय परमात्मने॥

- तैत्तिरीयोपनिषद्भाव्याख्यायां वनमालाख्यायां
अच्युतकृष्णानन्दतीर्थस्य

236. जयति जलधिकन्यावक्त्रपद्मांशुमाली
सकलभुवनसृष्टित्राणसंहारहेतुः।
उपनिषदवगम्यो योगिविज्ञानवेद्य-
स्त्रिदशवरवचोभिः स्तूयमानो मुकुन्दः॥

- चित्तुर-पत्राभिलेखे कुलोत्तुङ्गछोडदेवस्य द्वितीयस्य

237. जाग्रत्त्रैलोक्यराज्योद्भवविभवपरीरम्भसम्भावितार्ङ्घ्रि-
क्षीराकूपारकन्याललितकरतलोन्मृष्टपादारविन्दम्।
काञ्चीश्रीवत्सहाराङ्गदमुकुटलसत्कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं प्रसन्नं हृदयसरसिजान्तःस्थितं संस्मरामि॥

- काव्यप्रकाशस्य टीकायां सुधासागराख्यायां भीमसेनदीक्षितस्य

238. जीयादम्बुधितनयाधररसमास्वादयन्मुरारिरयम्।
अम्बुधिमथनक्लेशं कलयन्विफलं च सफलं च॥

- सुभा०सुधा०भा०

239. तातस्तेमकरालयः प्रियतमे रत्नाकरः सप्रभो
भ्राता ते शशलाञ्छनस्तमनिशं धत्ते हरो मूर्धनि।
का तेम्बेत्यभिधायसस्मितमुखे कान्ते चिरादुत्तरा
स्फूर्त्तिर्व्रीडितमानसामुपहसन् लक्ष्मीं हरिः पातु नः॥

- द्वैतपरिशिष्टे केशवमिश्रस्य

240. तं मेघमेदुरमहोमहनीयमूर्त्तिं
तापत्रयव्यपनाय वयं श्रयामः।
यः शातकुम्भनिभया विभया स्फुरन्ती-
मंकेन विद्युतमिव श्रियमाबिभर्त्ति॥

- अभिलेखे

241. त्वं तावन्मुदिरोरसि क्षणरुचे संरोचसे प्रत्यय-
स्त्वय्यस्य त्वनवग्रहक्षणरुचौ कः किन्विहेयं चरेत्।
विभ्रान्ते मरुतां वशात्क्षणरसोल्लासे च नाथश्रियो -
रित्यन्योन्यविलासहाससरसा सूक्तिर्व्यनक्तु प्रियम्॥

- अन्योक्तिमुक्तावल्यां रामशास्त्रिणः

242. दधाति पद्मामथ चक्रकौस्तुभे
गदामथो शंखमिहैव पङ्कजम् ।
हरिः स पातु त्रिदशाधिपो भुवं
रसेषु सर्वेषु निषण्णमानसः ।।

- संस्कृत-दानपत्राभिलेखे

243. दीक्षितो रणयज्ञेषु विवुधानन्ददायिषु।
हरिरब्धिसुतावक्त्रसोमपीती पुनातु वः।।

- प्रयोगरत्ने

244. दीप्त्या यस्येन्द्रनीलोपलशकलरजोनीलया नीलिताभाम्
लक्ष्मीमुत्तप्तभास्वत्कनकरुचिमपि स्पर्शरोमाञ्चिताङ्गीम् ।
कालीमाशङ्कमानः स्फुरदधरपुटश्चक्रपाणिः किलाभूत्
भर्ता लोकस्य शश्वत् स भवतु भवतां भूतये पद्मनाभः।।

- अष्टाङ्गहृदयस्य व्याख्यायां सर्वाङ्गसुन्दर्याख्यायां अरुणस्य

245. दृक्पातः कमलासनेऽस्तु भवतु ज्ञानं मनाङ्मारुते
श्रीकण्ठोऽयमितः सुरानिति नतांस्तार्क्ष्येण विज्ञापितः।
प्रेयस्याः क्व तदासनं क्व च रुतं कण्ठः क्व चेत्युल्लपन्
लक्ष्म्यावासितमानसो विजयते सुप्तप्रबुद्धो हरिः।।

- सूक्तिमु०

246. देवि त्वं कुपिता त्वमेव कुपिता कोऽन्यः पृथिव्या गुरु-
र्माता त्वं जगतां त्वमेव जगतां माता न, विज्ञोऽपरः।
देवि त्वं परिहासकेलिकलहेनन्ता त्वमेवेत्यथ
ज्ञातानन्दपदो नमज्जलधिजां शौरिश्चिरं पातु वः।।

- सदुक्ति० वाक्पतेः

247. ध्यात्वा यं मुनयो मनःसरसिजे संसारपाथोनिधेः
पारं यान्ति जनुः सुखादिकमहानक्राहिभीमस्थितेः।
तं क्षीराब्धिशयानमम्बुजदृशं लक्ष्मीसमेतं विना
कं देवं शिरसा नमामि सततं विघ्नौघविच्छित्तये॥

- साहित्यकण्टकोद्धारे

248. नमो नवघनश्याममकामकामितदेहिने।
कमलाकामसौदामकणकामुकगेहिने॥

- अद्वैतसिद्धेष्टीकायां लघुचन्द्रिकाख्यायां ब्रह्मानन्दभिक्षोः

249. नमोऽस्तु कमलालोलदृगञ्चलविलासिने।
विचित्रविश्वनिर्माणकारिणे मुरवैरिणे॥

- न्यायसिद्धान्तमालायां जयरामन्यायपञ्चाननभट्टाचार्यस्य

250. निरर्थकं तीर्थकदर्थनाभिः
किं येन कार्यं किमपायपात्रम्।
सुखेशयानं शयने शरण्यं
भजे श्रियः कान्तमनन्ततत्त्वम्॥

- शङ्कराचार्यकृत-प्रबोधसुधाकरे मातृकायां स्फुटश्लोकः

251. नीलाम्भोरुहकान्तिकान्तमनिशं क्षीराब्धिकन्यालस-
द्वक्षोभ्यन्तरमम्बुजासिदगदाचक्रानुरज्यद्भुजम्।
भक्ताभीष्टदमब्जताम्रनयनं भक्त्या महापूरुषं
वन्दे यज्ञमयं विरिञ्चिप्रमुखैर्बर्हिर्मुखैराधितम्॥

- तन्त्रसिद्धान्तरत्नावल्यां ए० चिन्नस्वामिशास्त्रिणः

252. पद्मापयोधरतटीपरिरम्भलग्नकाश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्गखेदस्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रकामान्॥

- सुभा० सुधा० भा०

253. पातु त्रिलोकीं हरिरम्बुराशौ
प्रमथ्यमाने कमलां विलोक्य।
अज्ञातहस्तच्युतभोगिनेत्रः
कुर्वन् वृथा बाहुगतागतानि॥

- सदुक्ति०

254. पाथोधेः परिमथ्यमानसलिलादर्द्धोत्थितायाः श्रियः
सानन्दोल्लसितभ्रुवा कुटिलया दृष्ट्यैव पीताननः।
अज्ञातस्वकरद्वयीविगलितव्यालोलमन्थोरग-
श्शून्ये बाहुगतागतानि रचयन्नारायणः पातु वः॥

- सूक्तिमु०

255. पान्तु पद्माङ्गसंसर्ग-चञ्चद्रोमांचवीचयः।
श्यामाः कलिन्दतनयापूरा इव हरेर्भुजाः॥

- अभिलेखे

256. पीताम्बरं करविराजितशङ्खचक्र-
कौमोदकीसरसिजं सरसीरुहस्थम्।
विश्वम्भसम्बुधिसुतापरिरभ्यमाणम्
नारायणं प्रणतकल्पतरुं भजामः॥

- मन्त्रकल्पतरोः

257. प्रत्यक्षादिपराक् प्रमाणमखिलं प्राचीनवाचां वचः
प्रत्यङ्मात्रमितिप्रसूतिकरणं प्रक्षीणदोषं परम्।

लक्ष्मीनारायणः

बाधित्वापरिमुष्टभेदनिचये यस्मिन्ययौ मानतां
तं वन्दे परिवर्जितावधिसुखं लक्ष्मीनृसिहं हरिम् ॥

- संक्षेपशारीरिकस्य टीकायाम् सर्वज्ञमुनेः

258. प्रियायाः पद्मायाः प्रणयकुपितायाः स्तुतिपरः
प्रसादं निर्मित्सुर्जलधिजनिवाणीपरिवृढः।
परस्याः कौटिल्यात्कटुनि वचसि प्रोद्यति च तत्
प्रदीप्तायां तस्यां जयति विनमद्वक्त्रकमलः॥

- काव्यप्रकाशस्य टीकायां विस्तारिकाख्यायां परमानन्दचक्रवर्त्तिनः

259. भद्रं वो विदधातु वारिधिसुतावक्षोजकुम्भोज्वलैः
काश्मीरैरतिखण्डिताः सुरवपुर्व्याकीर्णरक्तैरिव।
रागं वक्षसि बिभ्रदम्बुजभवाद्युत्तंसिताङ्घ्रिशुभैः
रक्तौघैरिव वारिधिर्गुणगणैर्युक्तो वृषाद्रीश्वरः॥

- इन्दिरापरिणये वीरराघवाचार्यस्य

260. भूयासुर्भवतां भूत्यै भव्या भगवतो हरेः।
लक्ष्मीमुखाब्जभ्रमराः कटाक्षाः क्षपितांहसः॥

- कमलिनीकलहंसे नीलकण्ठस्य

261. मन्थक्ष्माधरमथ्यमानलहरीझंकारतूर्यस्वने
मुक्ताजालकलापवर्षिणि गलन्मन्दारपुष्पस्रजि।
अभ्यर्णज्वलदौर्व तेजसि दलन्माणिक्यदीपाङ्कुरे
पारे वारन्निधेः श्रियं परिणयन्नारायणः पातु वः॥

- सुभा० सुधा०

262. मन्दं मन्दममन्दविभ्रमवता मन्दाक्षवीक्षाजुषा
पद्माक्षेण चलाङ्गुलौ करतले चेलाञ्चलासञ्जिते।
ह्रीमत्याः पुलकोद्गमाङ्कितततनोर्लक्ष्म्या नवे संगमे
चेतस्तोषसमुद्गतं प्रदिशताच्छ्रेयांसि वः सीत्कृतम्।

- कमलिनीकलहंसे नीलकण्ठस्य

263. यदीय करुणाद्भुतस्फुटकटाक्षलक्ष्मीलवं
जनः सुखमुपाश्रितस्त्रिविधमेव तापं तरेत्।
अशेषभुवनोद्भवस्थितिलयाश्च यल्लीलया-
वृतं कमलया मुदा कुवलयाक्षमीडे हरिम् ॥

- पुराणपारिजाते

264. यस्य लक्ष्मीभुजाश्लेषः कण्ठे कङ्कणराजयः।
मणिमाला इवाभान्ति स वः पायाज्जनार्दनः॥

- किरातार्जुनीयस्य टीकायां सुखबोधिन्याख्यायां देवराजभट्टस्य

265. यस्य श्रीर्गृहिणी गृहं त्रिभुवनं भोग्यं सुधा कौस्तुभो-
ऽलंकारोमणिरासनं खगपतिः शय्यात्वनंताधरा।
वाणी वेदमयी चराश्च विबुधाः पादोदकं स्वर्धुनी
तस्मै श्रीपतये किमस्ति भुवने देयं प्रदेयं हि यत् ॥

- भामिनीविलासस्य मातृकायां स्फुटश्लोकः

266. यस्याहुरागमविदः परिपूर्णशक्ते -
रंशे कियत्यपि निविष्टममुं प्रपञ्चम्।
तस्मै तमालरुचिभासुरकन्धराय
नारायणीसहचराय नमश्शिवाय॥

- शारीरकन्यायरक्षामणौ अप्पयदीक्षितस्य

267. ये लक्ष्मीस्तनलालनाविधिविदः संसारबन्धच्छिदः
सेवाप्रह्वजनोपकारसुखदा दैत्येन्द्रवक्षोभिदः।
दैत्यारेः करजाङ्कुरास्त्रिजगतां सर्वस्य संरक्षण-
व्यापारैकपरायणस्य परितः कुन्तश्रियः पान्तु वः॥

- शोभरामपुर-पत्राभिलेखे दामोदरदेवस्य

268. लक्ष्मीकपोलसंक्रान्तकान्तपत्रलतोज्ज्वलाः।
दोर्द्रुमाः पान्तु वः शौरेर्घनच्छाया महाफलाः॥

- सुभा० हर्षदत्तस्य

269. लक्ष्मीकौस्तुभवक्षसं मुररिपुं शङ्खासिकौमोदकी-
हस्तं पद्मपलाशताम्रनयनं पीताम्बरं शार्ङ्गिणम्।
मेघश्याममुदारपीवरचतुर्बाहुं प्रधानात्परं
श्रीवत्साङ्कमनाथनाथममृतं वन्दे मुकुन्दं मुदा॥

- शास्त्रदीपिकायां पार्थसारथेः

270. लक्ष्मीनेत्रोत्पलश्रीसततपरिचयादेष संवर्धमानो
नाभीनालीकरिङ्गन्मधुकरपटलीदत्तहस्तावलम्बः।
अस्माकं संपदोघानविरलतुलसीदामसंजातभूमा
कालिन्दीकान्तिहारी कलयतु वपुषः कालिमा कैटभारेः॥

- तत्त्वमुक्ताकलापे वेङ्कटनाथमहादेशिकस्य

271. लक्ष्मीपतिः कमलसम्भवमुख्यलेखैः
संसेविताङ्घ्रिकमलः कमलायताक्षः।

श्रीवत्सकौस्तुभमणिद्युतिरञ्जिताङ्गो
नारायणो मनसि नो वसतिं करोतु॥

- होराप्रदीपे नारायणस्य

272. लक्ष्मीपाणिद्वयपरिचितं मूलमूर्द्ध्वश्रुतीनां
व्यक्तं वन्दे कमलचरणद्वन्द्वमाद्यस्य पुंसः।
यत्रैकस्य व्यधित बलिना पाद्यतोयैर्वितीर्णै-
रार्द्रस्यैव प्रणतितरलः क्षालनं पद्मयोनिः॥

- सूक्तिमु०

273. लक्ष्मीपीनपयोधरद्वयतटीकाश्मीरपङ्काङ्किता
भ्राम्यन्मन्दरतुङ्गश्रृङ्गकषणभ्राजिष्णुहेमाङ्गदाः।
रक्षन्तो हरिनीलनीलवपुषो लोकत्रयं शार्ङ्गिण-
श्शार्ङ्गाद्यायुधशोभिनश्श्रियमलं पुष्णन्तु वो वाहवः॥

- पत्राभिलेखे राजराजस्य

274. लक्ष्मीभर्त्तुश्चरणनलिनद्वन्द्वमातारकं वो
दिश्याल्लक्ष्मीं कमलनिलयाभूतधात्रीकराब्जैः।
यत्सम्पर्कद्विगुणजनितां कान्तिमुच्चैर्दधानं
यद्वा शम्भोः करसरसिजेष्विन्दुलीलान्दधाति॥

- एन्बिल-पत्राभिलेखे सुन्दरचोलस्य

275. लक्ष्मीमक्षीणरूपां पुलकमुकुलकैर्दन्तुरीमूतधन्वो-
र्लक्ष्मीपद्माक्षयोस्स प्रदिशतु भवतां प्रौढमन्दाक्षभाजोः।
मन्दं मन्दं प्रवृत्तः प्रसृमरमदनाचार्यकः प्रेमभारा-
दुद्यन्नानाविलासाङ्कुरमधुरदृशोरादिमोऽयं प्रसङ्गः॥

- इन्दुमतीराघवे

276. लक्ष्मीमालोक्य लुभ्यन्निगममुपहसन् शोचयन्यज्ञजन्तून्
छत्रं शोणाक्षिपश्यन् समिति दशमुखं वीक्ष्य रोमाञ्चमञ्चन् ।
हत्वा हैयङ्गवीनं चकितमपसरन् म्लेच्छरक्तैर्दिगन्तान्
सिञ्चन्दन्तेन भूमिं तिलमिव तुलयन्पातु मां पीतवासाः।।

- रसतरङ्गिण्यां भानुदत्तस्य

277. लक्ष्मीर्यस्य वशा प्रिया सहचरी दोषाकरस्याग्रजा
सूनुश्चातनुविग्रहस्तदपरो यो नाभिजातो मतः।
वासो यस्य भुजंगभोगरचितो बल्यंचितांगः सदा
युष्मान् पुष्पवदीक्षणः स भगवान् पायात् पुराणोऽव्ययः।।

- विनोदलहर्य्यां माधवस्य

278. लक्ष्मीर्यस्य विलासिनी मुररिपोर्यो दक्षिणं वीक्षणं
शम्भोर्यः शिरसो मणिश्च जननी कन्यापि विश्वम्भरा।
चन्द्रो यस्य पिता गुरुर्वलरिपोर्दैत्यस्य यो भास्करा-
ज्जातो यश्च तमःशिखीति च ययोराख्ये सदा पान्तु ते।।

- भास्वतीविवृत्तौ गणपतिभट्टस्य

279. लक्ष्मीलतासमाश्लिष्टं कौस्तुभस्तबकोज्ज्वलम् ।
स्वर्गापवर्गफलदं हरिकल्पद्रुमं नुमः।।

- सूक्तिमु0

280. लक्ष्मीलीलोपधानं प्रलयजलनिधिस्थायिनो गण्डशैला
दर्पोद्वृत्तासुरेन्द्रद्रुमगहनवनच्छेददक्षाः कुठाराः।
संसारापारवारिप्रसररयसमुत्तारणे बद्धकक्ष्या
दोर्दण्डाः पान्तु शैरेस्त्रिभुवनभवनोत्तम्भनस्तम्भभूताः।।

- उदयपुर - अभिलेखे अपराजितस्य

281. लक्ष्मी विहृतविलासावलोकिता नन्दितस्वान्तः।
पश्यति गुरौ विधातरि लज्जानतकंधरो हरिर्जयति।।

- शृङ्गारकलिकायां कामराजदीक्षितस्य

282. लक्ष्मीं वक्षसि तारहारवलये तस्याः प्रियं सोदरं
बिभ्रच्छुभ्रमणिं परं च नयने नाभौ च भद्रासनम्।
ऊरुभ्रूगलनाभिरोमलतिकामित्राणि पञ्चायुधा-
न्याश्लिष्यन् करपङ्कजैरवतु नः कश्चिन्महाकामुकः।।

- साहित्यरत्नाकरे धर्मसूरिणः

283. लक्ष्म्या चञ्चत्कनकनिकषच्छायया चारुवक्षा-
स्सौदामन्या गतचपलतासौम्ययेवाम्बुवाहः।
निर्मर्यादाद्विपरथहयोद्रिक्ततादृक्समृद्ध्यै
भूत्यै नित्यं भवतु पुरुषः पुण्डरीकेक्षणो वः।।

- दानपत्राभिलेखे गनपतिदेवस्य

284. लक्ष्म्याः कुङ्कुमपङ्केन लिखितः कुचसीमनि।
पत्राङ्कुरो मुकुन्दस्य पातु नः करकौशलम् ।।

- तरुणभूषणभाणे शठकोपकवेः

285. लक्ष्ये यत्र श्रुतिमितगुणाकृष्टिलब्धावधानैः
प्रत्यग्बाणः प्रणवधनुषा सत्त्ववद्भिः प्रयुक्तः।
मध्ये वक्षःस्फुरति महसा पत्रलः कौस्तुभात्मा
पद्माकान्तः स तु भवतु दयादुग्धसिन्धुः श्रियै वः।।

- सङ्कल्पसूर्योदये डी० कृष्ण-आयंगरस्य

286. वक्षःस्थली रक्षतु सा जगन्ति
जगत्प्रसूतेर्गरुडध्वजस्य।
श्रियोऽङ्गरागेण विभाव्यते या
सौभाग्यहेम्नः कषपट्टिकेव॥

- विक्रमाङ्कदेवचरिते विद्यापतिबिल्हणस्य

287. वरदं द्विरदाद्रिशेखरं कमलाया दयितं दयानिधिम् ।
सकलार्थिजनार्थितप्रदं प्रणमामि प्रणतार्तिहारिणम् ॥

- ब्रह्मसूत्रभाष्यव्याख्यायां श्रुतदीपिकाख्यायां सुदर्शनसूरिणः

288. विद्वन्मण्डलकल्पपादपवनं विद्योतिवाग्देवता
संकेतायतनं नितांतकमलालीलाविलासास्पदम् ।
लक्ष्मीवल्लभभक्तिभाण्डभवनं भूमंडलीमंडनं
कीर्तिः केलिनिकेतनं दलंपतिर्गोविन्दनामाभवत् ॥

- नृसिंहचम्पूकाव्ये केशवस्य

289. विश्वस्योदयमातनोति तदनुत्राणं विधत्ते पुनः
सौख्याप्तीतरहानिसाधनमलं वक्तिश्रुतीर्व्यञ्जयन् ।
स्वापं प्रापयति श्रमापहतये कल्पावसाने च यः
तं देवं पितरं पतिं गुरुतमं वन्दे रमावल्लभम् ॥

- विष्णुतत्त्वनिर्णयटीकायां जयतीर्थमुनेः

290. विश्वोदग्रप्रभावस्त्रिभुवनभवनं भूरिकारुण्यशाली
पद्मासद्माभिरामः करकलितगदाशङ्खचक्राक्षमालः।
बालार्कप्रोज्ज्वलद्धाटकमकुटतटीकूटमाणिक्यरत्न-
श्रीमानानन्दसौख्यं दिशतु सुजनतासङ्गमे सङ्गमेशः॥

- रसरत्नाकरभाणे जयन्तस्य

291. शेषाद्रिशरणो नित्यतरुणो रमणः श्रियः।
कौस्तुभाभरणो विश्वारणस्त्रायतां हरिः॥

- वृत्तमणिकोशे लक्ष्मीवेंकटसुतश्रीनिवासस्य

292. श्रियं ददातु स्वयमिन्दिरापतिः कृपापरीवाहतरङ्गितेक्षणः।
अशेषसेवार्हममेयवैभवं वहन्वपुः शेषगिरीन्द्रभूषणम् ॥

- रघुनन्दनविलासे पाट्ट्राचार्यस्य

293. श्रीकण्ठादिसुरप्रधानपरिषत्प्रह्वीभवान्मस्तक-
श्रीमन्मौलिमणिप्रभाभिरभितः किर्मीरितांघ्रिद्वयः।
वक्षःपीठनिषण्णकौस्तुभरुचा रक्ताम्बरश्रीरिव
श्रेयो वस्तनुताद्रमासहचरः पीताम्बरोऽपि स्वयम् ॥

- अलङ्कारमञ्जर्याम्

294. श्रीकान्तः शङ्खचक्राभयवरदवराङ्कोल्लसच्चारुमूर्तिः
सप्ताद्रिक्षेत्रवासश् चिदचिदधिपतिः शाश्वतो धर्मगोप्ता।
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपः परममुनिनुतो योगविद्याप्रकाशः
भक्ताभीष्टप्रदायी स भवतु भवतां श्रेयसे श्रीनिवासः॥

- विक्रान्तभारते बी० आर० शास्त्रिणः

295. श्रीमद्भानुसहस्रकोटिसदृशः पीताम्बरालङ्कृतः
चञ्चत्कुण्डलशोभिगण्डयुगलः श्रीवत्सवक्षा हरिः।
लक्ष्मीभूमिकटाक्षवीक्षणलसच्छृङ्गारभानोज्ज्वलः
पायात् पन्नगराजभोगशयनः श्रीपद्मनाभस्सदा॥

- बालरामभरते बालरामकुलशेखरस्य

296. श्रीमन्माधवपादपङ्कजयुगं पायादपायात्सदा
पारावारसुताकराम्बुजमृदुस्पर्शेन संलालितम्।
गङ्गा यन्नखनिर्गता समभवत्कल्याणदा सर्वदा
सर्वेषां भविनां भवाब्धितरणित्रैलोक्यचिन्तामणिः॥

- नलानन्दे जीवस्य

297. श्रीमानखिललोकानां नायकः करुणाकरः।
करोतु मङ्गलं पुंसां कमलानायको हरिः॥

- तत्त्वत्रये नारायणमुनेः

298. श्रीमान् पूर्णस्थितेशो दिशतु करुणया तुन्दिलं मङ्गलं वो।
लक्ष्मीवक्षोजराजन्मृगमदमकरीमुद्रिकालक्ष्यवक्षाः॥

- वरवरमुनिचम्प्वां वकुलाभरणसूरिणः

299. श्रीलक्ष्मीरमणं नौमि गौरीरमणरूपिणम्।
स्फोटरूपं यतः सर्वं जगदेतद्विवर्त्तते॥

- वैयाकरणभूषणे कोण्डभट्टस्य

300. श्रीवासुदेवं सुरवैरिभङ्गं रमाधरलिङ्गितसुन्दरांगम्।
पादाब्जसंभूतपवित्रगङ्गं नमामि तं वारित दोषसङ्गम्॥

- यतिधर्मप्रकाशे वासुदेवपरमहंसस्य

301. श्रीशार्ङ्गिणोः सृजतु वो नवसन्निवेशः
क्लेशव्ययं चलवलन्नयनांचलश्रीः।
यत्रांचलग्रथनमङ्गलमाचचार
शृङ्गारहारमणिकौस्तुभरश्मिगुम्फः॥

- विवाहवृन्दावने केशवार्कदैवज्ञस्य

302. श्रेयः सदा दिशतु सालसपक्ष्मपाते निद्रायते अपि दृशो भृशमुन्नमय्य।
संवाह्यमानचरणाम्बुजजातहर्षो लक्ष्मीमुखेक्षणपरः परमेश्वरो वः।।

- सुभा० सुधा० भा०

303. स जयति जगदुत्सवप्रवेशप्रथनपरः करपल्लवो मुरारेः।
लसदमृतपयः कणांकलक्ष्मीस्तनकलशाननलब्धसंनिवेशः।।

- द्योली पत्राभिलेखे

304. सन्ध्याताांडवकर्मणि स्मररिपोराकर्ण्य चण्डध्वनिम्
क्षोणीवारि ययौ तदेव गहनं तेजस्तदेवाशुगम् ।।
इत्यादिस्थितिवैपरीत्यविकलब्रह्माण्डखण्डेश्वरम्
लक्ष्म्या नाभिगतं निरीक्ष्य सभयं शिलष्टो हरिः पातु वः।।

- हलायुधविजये

305. सम्भावयन् विधिशिवौ सकृदिन्दिरायाः
वक्त्रारविन्दपरिरम्भकरस्सुरस्पृक् ।
मज्जन् मुहुः स्वशरणेषु निपत्य मग्नो
दीनेषु रक्षतु स मां भगवत्कटाक्षः।।

- कटाक्षषोडश्याम्

306. सर्गस्थितिप्रलयहेतुमचिन्त्यशक्तिम्
विश्वेश्वरं विदितविश्वमनंतमूर्त्तिम् ।
निर्मुक्तबन्धनमपारसुखाम्बुराशिम्
श्रीवल्लभं विमलबोधघनं नमामि ।।

- वाक्यवृत्तेर्वृत्तौ शङ्कराचार्यस्य

307. सान्द्रैः श्रीस्तनभारभूमिमकरीकाश्मीरसम्मिश्रितैः
प्रोन्मज्जद्गजराजगैरिकरजः पुञ्जद्रवैः पिञ्जराः।
क्षीराब्धेः क्षुभितस्य मन्दरगिरिव्यावर्त्तनादुद्गताः
कल्लोला जनयन्ति यस्य पुलकं पायत्स वः केशवः॥

- अन्दुर-पत्राभिलेखे गोविन्दस्य

308. सुश्यामो नवनीरदच्छदरुचिः पीताम्बरः सुन्दरो
दीप्ताङ्गो वनमालयेव जलदो विद्युल्लतामण्डितः।
योऽध्यास्ते कुलदेवता मम गृहं संसेवितः पूर्वजै-
र्भद्रं नः स तनोतु मङ्गलमयो लक्ष्मीशनारायणः॥

- काव्यकुसुमाञ्जल्यां विश्वेश्वरस्य

वेंकटेशः

309. अखिलचिदचिदीशः श्रीनिवासो दयालुः
स्वपदकमलयुग्मप्रापकः संश्रितानाम्।
निगमशिखरगम्यो नित्यमव्याजबन्धु-
र्विलसतु मम चित्ते वेंकटेशो मुकुन्दः॥

- पराशरभट्टकृत-अष्टश्लोकी-टीकायां वैष्णवदासस्य

विट्ठलः

310. श्रीविट्ठल सुकरुणार्णवमाशुतोषं
दीनेष्टपोषमघसंहतिसिन्धुशोषम्।
श्रीरुक्मिणीमतिमुषं पुरुषं परं तं
वन्दे दुरन्तं चरितं हृदि सञ्चरन्तम्॥

- धर्माब्धिसारे काशीनाथोपाध्यायस्य

पाण्डुरङ्गः

311. पीताम्बरांवृतमुरस्थलकौस्तुभाख्य-
माणिक्यमण्डितमनर्घकिरीटदीप्तम् ।
सव्यापसव्यकमनीयकलत्रगात्रं
श्रीपाण्डुरङ्गममलं शिरसा नमामि॥

- साहित्यकण्टकोद्धारे

हयग्रीवः

312. आद्यं विद्यानिदानं विधिविबुधवरैर्वन्द्यमानाङ्घ्रिपद्मं
धाम्नां धामैन्दवानां दनुजभुजरुजां जन्मना छद्मजिह्मम् ।
प्रज्ञाऽऽलोकार्कमूर्तिप्रतिकृतिममतिध्वान्तदन्त्येणशक्रं
वक्रं भक्ताघचक्रे हरिमिह तुरगग्रीवमुग्रं प्रपद्ये॥

- पार्थसारथिकृत-शास्त्रदीपिकायाष्टीकायां प्रकाशाख्यायां सुदर्शनाचार्यस्य

313. ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलस्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे॥

- भार्गवतन्त्रे

314. रमाप्रेमाऽऽमज्जज्जगदवनदक्षं मधुहृत-
श्रुतिस्तोमाऽऽहृत्यापरिजनितवेदाननमुदम् ।
अखण्डानन्दाढ्यं निखिलजनहृत्कञ्जनिलयं
हयग्रीवं वन्दे प्रकृतकृति-विघ्न-क्षतिकृते॥

- कौण्डभट्टकृत-वैयाकरणभूषणसारस्य टीकायां दर्पणाख्यायां वल्लभसूनोः
हरिवल्लभस्य

315. वन्दे सुन्दरमिन्दुमन्दरमहं वन्दारुबृन्दारका-
मन्दानन्दकरं सुधाब्धिवपुषं रक्तारविन्देक्षणम् ।

चिन्मुद्रोरुरथाङ्गशङ्खपरमश्रीपुस्तकाञ्चत्करम्
शुभ्राब्जासनमश्ववक्त्रमतुलं मत्कार्यसंसिद्धये॥

- रामायणमहिमादर्शे हयग्रीवशास्त्रिनः

316. वेदापहारि मधुकैटभदर्पहारि वेधोमुखार्तिपरिहारि विहारि लक्ष्म्या।
तत्किञ्चिदच्छसरसीरुहधाम धाम तुङ्गं तुरङ्गमुखं शुभमातनोतु॥

- न्यायकुसुमाञ्जल्यां उदयनाचार्यस्य

317. सदमितगुणसिन्धुः सर्ववेदाभिधेयो
विगतविमतिधामा हेयशून्यो रमेशः।
विधिशिवसुरराजैः सेव्यमानाङ्घ्रिकञ्जः
स्फुरतु मनसि मे स श्रीहयास्यो मुकुन्दः॥

- मध्वमुखालङ्कारे वनमालिदासस्य

318. समाहार; साम्नां प्रतिपदमृचां धामयजुषां
लयः प्रत्यूहानां लहरिविततिर्बोधजलधेः।
कथादर्पक्षुभ्यत्कलिकथककोलाहलभवं
हरत्वन्तर्ध्वान्तं हयवदनहेषाहलहलः॥

- शतदूषण्यां वेदान्तदेशिकस्य

319. हयग्रीवमुखोद्गीर्णगीर्भिर्देवीरमापतिम्।
अस्तु वद्धिस्तृतगुणं भोगिप्रस्तरशायिनम्॥

- छान्दोग्योपनिषद्भाष्ये

हरिहरौ

320. एकावस्थितिरस्तु वः पुरमुरप्रद्वेषिणोर्देवयोः
प्रालेयाञ्जनशैलशृङ्गसुभगच्छायाङ्गयोः श्रेयसे।

ताक्ष्यत्रासविहस्तपन्नगफटा यस्यां जटापालयो
बालेन्दुद्युतिकोशसुप्तजलजो यस्यां च नाभीह्रदः॥

- सदुक्ति० तुङ्गोकस्य

321. गङ्गाम्बुस्तिमिताङ्घ्रिमौलिदिनकृत्कन्याम्बु तुल्यं प्रभम्
तत्त्वां पातु समुद्रजागिरिजयोरानन्दबीजं महः।
नाभीपङ्कजनालमूलमिलनात्सव्यांसकूलस्थितो
यत्र स्थूलमृणालवल्लितुलंनामालम्बते भोगिराट्॥

- प्रवरसेनमहीपतिकृत् सेतुबन्धस्य टीकायां
रामसेतुप्रदीपाख्यायां रामदासभूपतेः

322. देवस्यैकतमालपत्रमुकुटस्यार्धं पुरद्वेषिणो
देहार्धेन समस्यमानमसमं श्वःश्रेयसायास्तु वः।
यस्मिन् भूधरकन्यकाब्धिसुतयोरप्राप्तसंभोगयो-
रन्योन्यप्रतिकर्मनर्मभिदुरो भूयाननङ्गज्वरः॥

- सदुक्ति० हरेः

323. धात्रा सौहृदसीमविस्मितमुखं भेदभ्रमापासना-
त्सानन्दं मुनिभिः सनिर्वृति सुरैरेकत्र सेवासुखात् ।
पार्वत्या स्वपदावकृष्टिकुटिलभ्रूभङ्गमालोकितः
पायाद्वो भगवांश्चराचरगुरुर्देहार्धहारी हरिः॥

- सदुक्ति० आर्याविलासस्य

324. नियमितजटावल्लीलीलाप्रसुप्तमहोरगं
चरणकमलप्रान्ते मुक्तस्वविक्रमगोवृषम्।
विततफणिभुक्पत्रच्छत्रं गदालगुडश्रियं
हरिहरवपुर्ब्रह्मोपास्यं पुनातु जगत्रयम् ॥

- सदुक्ति० भवानन्दस्य

325. निराधाराधारं निखिलजगतां पारमुदधे-
र्भवस्यप्राकारं विमलसुखलक्ष्याः सुरुचिरम् ।
चिरं धारं धारं मनसि गुरुगीर्वाणकृपया
परं वन्दे वन्दे हरिहरमहं श्रीकरवरम् ॥

- भावप्रकाशे

326. नीलामेकं श्रयतु सुषमामैन्दवीं वा द्वितीयं
गंगामेकं वहतु शिरसा पादमूलेन चान्यत् ।
सच्चिद्रूपं द्विविधमसदाभासतो भिन्नरूपं
दिव्यं धाम प्रणमतु शिरः शांभवं वैष्णवं वा॥

- विनोदलहर्य्यांमाधवस्य

327. पातां गोगरुडध्वजौ हरहरी शुक्लासिताङ्गावजौ
शूलारिप्रहताहितौ त्रिभुवनस्योच्छेदरक्षाकरौ।
शंखद्भस्मपरार्ध्यकुङ्कुमरुची दिक्पीतवस्त्राम्बरौ
संयत्यन्धकभौमदर्पदलनौ युष्मानुमामापती॥

- हरिहरौ अभिलेखे

328. पृथ्वीसुतानगसुतानयनाब्जसूर्यो
रक्षःपतेरनुजपूर्वजयोः सखायौ।
श्यामाभ्राशुभ्रघनवृन्दसमानकांती
तौ श्रीयुतौ हरिहरौ सततं नमामि॥

- लक्ष्मीश्वरभूषणालङ्कारप्रबन्धे मथुराप्रसादसुतशिवप्रसादस्य

329. प्राभूद्यस्मात्कुमारः कुवलयवदसौ लीलयो वाहगंगा
वामा.यस्यांगसंगापिहितजनचयोभूविशेषाश्रयोपि।
लंकेशाद्येकनाथो हिमकररुचिभृद्योगवीशध्वजोसा-
वेकस्याद्यस्यलोपात्परिहरतु हरिः पातकं वः स्मरारिः॥

- श्रीरामकल्पद्रुमे

330. यज्जम्बूकम्बुरोचिः फणधरपरिषद्धोजिभोगीन्द्रकान्तं
नन्दच्चन्द्रारविन्दद्युतिचरणशिरःस्यन्दि मन्दाकिनीकम् ।
रक्षासंहारदक्षं मदनसमुदयोद्दीपनं शश्वदव्या-
दव्याघातं विबोधेऽप्युदधिगिरिसुताकान्तयोर्देहमेकम् ॥

- सदुक्ति० जलचन्द्रस्य

331. यद्बद्धार्धजटं यदर्धमुकुटं यच्चन्द्रमन्दारयो-
र्धत्ते धाम च दाम च स्मितलसत्कुन्देन्द्रनीलश्रियोः।
तत्खट्वाङ्गरथाङ्गसङ्गविकटं श्रीकण्ठवैकुण्ठयो-
र्वन्दे नन्दिमहोक्षतार्क्ष्यपरिषन्नामाङ्कमेकं वपुः॥

- सदुक्ति० राजशेखरस्य

332. वन्दे कल्याणयोरकेमिन्दुचूडमुकुन्दयोः।
अङ्गं कलिन्दहिमवत्सुतयोरिव संगमम् ॥

- नीतितत्वाविर्भावे चिदानन्दपण्डितस्य

333. वपुरवतु जटाकिरीटमिश्रं, पुरमुरसूदनयोर्विमिश्रितं वः।
गिरिजलधिसुतास्वभर्तृकण्ठग्रहचलिताहृतबाहुवल्लरीकम् ॥

- सदुक्ति० त्रिपुरारिपालस्य

334. वपुस्तदस्तुनस्तुष्ट्यै शिवकेशवयोर्मिलन् ।
सितासिते यत्र महान्मोदते यमिनां मनः॥

- कृत्यरत्ने हरिभट्टसुत- खण्डेरायभट्टस्य

335. संभोगस्पृहयालुमन्मथपुनर्जन्मास्पदं भूर्भुवः
स्वः पायात्पुरुषोत्तमक्रतुभिदोरर्धार्धपूर्णं वपुः।
यल्लक्ष्मीगिरिजाकटाक्षकुटिलक्रीडाहठाकृष्टिभिः
स्यादेव त्रुटितं परस्परगुणस्यूतं न चेदन्तरा।

- सदुक्ति० त्रिपुरारिपालस्य

336. स्फटिकमरकतश्रीहारिणोः प्रीतियोगात्
तदवतु वपुरेकं कामकंसद्विषोर्वः।
भवति गिरिसुतायाः सार्द्धमब्धेर्दुहित्रा
सदृशमहसि कण्ठे यत्र सीमाविवादः॥

- सूक्तिमु० कविरत्नस्य

337. हरिशङ्करयोः सितासितं भुजगारातिभुजंगलांछनम् ।
वपुरस्तु मुदे विरुद्धयोरपि संसर्गिनभिन्नतां गतम् ॥

- खण्डनखण्डखाद्यटीकायां शंकरमिश्रस्य

शेषाङ्कशायी विष्णुः

338. आयुर्दीर्घमरोगतामविकलामैश्वर्यमव्याहतं
पुत्रान्भद्रगुणान्ददातु भवतः सुत्रामतुल्यं पदम् ।
पारावारसुधापयोधरतटीपाटीरपङ्काङ्कितः
श्यामः कामपिता पितामहपिता शेषाङ्कशायी हरिः॥

- सुभा० सुधा०

339. कनकरुचिदुकूलः कुण्डलोद्भासिगल्लः शमितभुवनभारः कोपि लीलावतारः।
त्रिभुवनसुखराशिः शेषशायी मुकुन्दः परिकलितरमांगो मङ्गलं नस्तनोतु॥

- केशवीयपद्धत्यां केशवस्य

340. क्षीरोदम्मथितुं मनोभिरतुलं देवासुरैर्मन्दरं
हित्वाक्षिप्त इवाञ्जनाद्रिरिव यस्तत्राधिकं राजते।
यो भोगीन्द्रनिविष्टमूर्त्तिरनिशं भूयोमृतस्याप्तये
रक्षेद् वः सुरवृन्दवन्दितपदद्वन्द्वः स नारायणः॥

- दानपत्राभिलेखे विक्रमादित्यस्य द्वितीयस्य

341. जगज्जननपालनप्रलयकेलिकारोमुहु
र्महादनुजनाकिनां विहितनिग्रहानुग्रहः।
विहङ्गपतिवाहनो भुजगराजतल्पे शयः
श्रिये भवतु वो भवाम्बुनिधिकर्णधारो हरिः॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

342. नमोऽस्तु लक्ष्मीपतये शेषपर्यङ्कशायिने।
त्रैलोक्यकण्टकोत्खाति विष्णवे विश्वरूपिणे॥

- गोरखपुर-ताम्रपत्राभिलेखे जयादित्यस्य

343. योगीन्द्रभक्तिपरिशोधनकारकेण
पूजान्तरे नटनमातनुतातिहृष्टः।
यो बालवेषमुपगम्य स पद्मनाभो
नृत्तप्रियो जयतु तुङ्गफणीन्द्रशायी॥

- बालरामभरते बालरामवर्मणः

344. हरिद्राभद्राभाद्भुतवसनभृद्राघवविभु-
र्महेन्द्राद्याराध्यः सुरविमतकृद्रावणरिपुः।
द्युचन्द्रातन्द्राभाधिकवदनमुद्राभिलसितः
स तन्द्रानिद्रां मे दलयतु फणीन्द्राधिशयनः॥

- मनोदूते तैलङ्गव्रजनाथस्य

क्षीरोदधिशायी विष्णुः

345. आरादुद्धतदुग्धमङ्गलहरीनिष्यन्दमन्दोत्पत-
द्बिन्दुव्रातयुतं च तारकवियच्छायं तदीयं वपुः।

मुक्ताभिर्विरलाभिरञ्चितमिवाभातीन्द्रनीलस्थलम्
श्रेयः क्षीरसमुद्रमध्यशयनो विष्णुश्च पुष्णातु वः॥

- चातुर्मास्यव्रतकल्पवल्यां विरूपाक्षस्य

346. याते यामवतीपतौ शिखरिषु क्षामेषु सर्वात्मना
ध्वस्ते ध्वान्तरिपौ जने विघटिते स्त्रस्ते च तारागणे।
भ्रष्टे भूवलये गतेषु च तथा रत्नाकरेष्वेकता-
मेको यस्स्वपिति प्रधानपुरुषः पायात्स वः शार्ङ्गभृत् ॥

- अभिलेखे

347. वीचीस्थाने सहस्त्रं मरकतपरिघस्पर्द्धिबिभ्रद्भुजाना-
मुत्फेनो हारजालैररुणरुचिरनन्ताहिरत्नप्रभाभिः।
बिभ्राणः सङ्क्रमन्तश्चरमचरमनिर्वापणीयं च तेजः
पायाद्वः शार्ङ्गधन्वा शयित इव समुद्रैकदेशे समुद्रः॥

- आश्चर्यचूडामणौ शक्तिभद्रस्य

स्त्रीरूपी विष्णुः

348. एकस्थं जीवितेशे त्वयि सकलजगत्सारमालोकयामः
श्यामे चक्षुस्तवास्मिन्वपुषि निविशते नाल्पपुण्यस्य पुंसः।
कस्यान्यत्रामृतेऽस्मिन्नतिरतिविपुला दृष्टिरेवामृतं ते
दैत्यैरित्युच्यमानो मुनिभिरपि हरिः स्त्रैणरूपोवताद्वः।

- सुभा० आनन्दवर्धनस्य

349. देवानाममृतप्रदानसमये संप्राप्तकान्ताकृति-
र्लीलाचङ्क्रमवल्गितस्तनभरो भास्वद्विभूषावलिः।

सान्तर्हासवचः प्रपञ्चचतुरस्निग्धालसालोकनैः
पश्यन्नासववञ्चितासुरगणो नारायणः पातु नः॥

- कुहनाभैक्षवे तिरुमलनाथस्य

350. पीयूषाभिनिवेश एष रभसादस्माकमद्यानया
बन्धूकद्युतिबान्धवाधररसस्यन्देन मन्दीकृतः।
इत्थं दैत्यचयः समुद्रमथने येन क्षणाद्वञ्चित-
स्तस्मै सादरमोंनमोऽस्तु कपटस्त्रीरूपिणे विष्णवे॥

- मुग्धोपदेशे जल्हणस्य

दशावतारी विष्णुः

351. देवः पायादपायात्त्रिभुवनभवनस्तम्भभूतः स युष्मा-
नायुष्मान्यस्य भक्त्या प्रभवति पुरुषः स्वर्गमार्गेऽपवर्गे।
मत्स्यः कूर्मो वराहः पुरुषहरिवपुर्वामनो जामदग्न्यः
काकुत्स्थः कंसहन्ता स च सुगतमुनिः कर्किनामा च विष्णुः॥

- दशावतारचरिते क्षेमेन्द्रस्य

352. पाठीनः कमठः किटिर्नरहरिः खर्वाकृतिर्भार्गवो
रामः कंसनिषूदनो दशबलः कल्की च नारायणः।
युष्माकं स विभूतयेऽस्तु भगवान्सेतुर्भवाम्भोनिधा-
वुत्ताराय युगे युगे युगपतिस्त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

- सुभा० सुधा० भा०

353. ब्रह्मत्राणप्रवीणो धृतधरणिधरः क्ष्मासमुत्क्षेपदक्षः
प्रह्लादह्लादकारी मथितबलिबलो भग्नराजन्यजन्यः।

लङ्कालङ्कारंहारी हलहतकलहो वल्लवोल्लासकारी
भावी पाषण्डशत्रुः भवतु मधुरिपुः श्रेयसे भूयसे नः॥

- यतिराजविजये श्रीवात्स्य-वरदाचार्यस्य

354. यस्यालीयत शल्कसीम्नि जलधिः पृष्ठे जगन्मण्डलं
दंष्ट्रायां धरणी नखे दितिसुताधीशः पदे रोदसी।
क्रोधे क्षत्रगणः शरे दशमुखः पाणौ प्रलम्बासुरो
ध्याने विश्वमसावधार्मिककुलं कस्मै चिदस्मै नमः॥

- सुभा० सुधा० भा०

355. यो धत्से सुगतात्मतामतितमां यः सोमकायोऽभवो
यो भूदारवपुर्बभूविथ नवो यो जामदग्न्याकृतिः।
पुंस्पञ्चानन वामनोहरतनो मीनत्वमापो भवः
श्रीरुद्राघवताश्रिताकमटता कल्कित्वयुक्तेन च॥

- शब्दचित्रावल्यां योगदेवमालवीयस्य

356. वेदा येन समुद्धृता वसुमती पृष्ठे धृताप्युद्धृता
दैत्येशो नखरैर्हतः फणिपतेर्लोकं बलिः प्रापितः।
क्ष्माऽक्षत्रा जगती दशास्यरहिता माता कृता रोहिणी
हिंसा दोषवती धराप्ययवना पायात्स नारायणः॥

- सुभा०सुधा०भा०

357. वेदोद्धारकृते गिरिं धृतवते पृथ्वीतलोद्धारिणे
दैत्योरःस्थलदारकाय ददते त्रैलोक्यराज्यं सुरान्।
राजन्यान्वयशत्रवे हतवते रक्षोऽर्कजां कर्षते
कारुण्यं दधते कृतं भृतवते भूयो नमः शार्ङ्गिणे॥

- सुभा० सुधा० भा०

विश्वरूपः विष्णुः

358. ब्रह्मा दक्षः कुबेरो यमवरुणमरुद्वह्निचन्द्रेन्द्ररुद्राः
शैला नद्यः समुद्रा ग्रहगणमनुजा दैत्यनागेन्द्रनागाः।
द्वीपा नक्षत्रताराविवसुमुनयो व्योम भूरश्विनौ च
संलीना यस्य सर्वे वपुषि स भगवान् पातु वो विश्वरूपः॥

- मेठि-अभिलेखे यादवकृष्णस्य

359. भूः पादौ यस्य खं चोदरमसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वासोऽयमब्धिः।
अन्तस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यै-
श्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नतोऽस्मि॥

- श्रुतिसारसमुद्धरणे तोटकाचार्यस्य

360. सहस्त्रशिरसे तस्मै पुरुषायामितात्मने।
चतुस्समुद्रपर्य्यङ्कतोयनिद्रालये नमः॥

- मन्दसोर-अभिलेखे

361. सहस्त्रसंख्यैश्चरणैः शिरोभि-
र्नेत्रैःकरैर्व्याप्य जगद्वसन्तम्।
विलोचनीभूतरवीन्दुबिम्बं
विभुं महात्मानमजीजनद्यत्॥

- रघुदेवपुर-दानपत्राभिलेखे रघुदेवस्य

विष्णोः शङ्खः

362. पायात्स वः कुमुदकुन्दमृणालगौरः
शंखो हरेः करतलांबुजराजहंसः।
नादेन यस्य सुरशत्रुविलासिनीनां
नीव्यो भवन्ति शिथिला जघनस्थलीषु॥

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

363. भिन्दन्नरातिहृदयानि हरेः पुनातु
निःश्वासवातमुखरीकृतकोटरो वः।
सङ्क्रान्तकुक्षिकुहरास्पदसप्तसिन्धु-
संघट्टघोरतरघोष इवाशु शङ्खः॥

- सुभा०

364. हर्यक्षी हैमवत्याः किमिति दश दिशः प्रेक्षते क्षीणदर्पः
त्रासादाच्छिद्य दाम भ्रमति गिरिपतौ गोपतिः शूलपाणेः।
जम्भारेर्भाति चित्रार्पित इव तुरगो मन्दुराभित्तिलग्नः
तारं तत्राहवेषु ध्वनित जयति स श्रीपतेः पाञ्चजन्यः॥

- रामकीर्तिकुमुदमालायां त्रिविक्रमत्रिवेदिनः

विष्णोः सुदर्शनम्

365. जीयात्सुदर्शनं विष्णोः करपल्लवभूषणम्
यत्स्पर्शादेव संशुद्धिं यात्येतदखिलं जगत् ॥
प्रणमामि पदाम्भोजं प्राज्ञानां पञ्चरात्रिणाम्
यद्विकासयति प्रज्ञां भक्तानां स्मरणक्षणात् ॥

- परार्थयजनाधिकारनिर्वहे सुन्दरवीरराघवस्य

मत्स्यावतारः

366. आदिमत्स्यस्स जयताद्यः श्वासोल्लासितैर्जलैः।
विदधे गगनेऽम्भोधिं गगनं च महोदधौ॥

- सूक्तिमु० क्षेमेन्द्रस्य

367. उद्वर्त्तनप्रतिनिपातवशात्पयोधा-
द्वेदाविदीर्णसलिले जलशायिना यः।
स्वस्यैव मूर्त्तिरपराहतयोगनिद्र-
मालोकितो विजयते स मुरारिमीनः॥

- सिरसाभिलेखे

368. चन्द्रादित्योरुनेत्रः कमलभवभवस्फारपृष्ठप्रतिष्ठो
भास्वत्कालाग्निजिह्वः पृथुलगलगुहादृष्टनिःशेषविश्वः।
'अद्भिः पुच्छोत्थिताभिश्चकितसुरवधूनेत्रसंसूचिताभि-
र्मत्स्यश्छिन्नाब्धिवेलं गगनतलमलं क्षालयन्वः पुनातु॥

- सुभा०सुधा०भा०

369. जीयासुः शकुलाकृतेर्भगवतः पुच्छच्छटाच्छोटना-
दुद्यन्तः शतचन्द्रिताम्बरतलास्ते बिन्दवः सैन्धवाः।
यैरुत्पत्य पतद्भिरौर्वशिखिनस्तेजोजटालं वपुः
पानाध्मानवशादरोचकरुजां चक्रे चिरायास्पदम्॥

- सूक्तिमु० हनूमतः

370. जृम्भाविस्तृतवक्त्रपङ्कजविधेर्हत्वा श्रुतीः सागरे
लीनं त्रस्तसमस्तनक्रनिकरं शङ्खं जघानाजिरे।

मत्स्यावतारः

पुच्छोत्क्षिप्तजलोत्करैः प्रतिदिशं संतर्प्य यो वै धरां
पायाद्वः स मृणालकोमलतनुर्मीनाभिधानो हरिः॥

- सुभा०सुधा०भा०

371. दिङ्मूढं तं सुरारिं किल शितदशनैः पीड्यमानं रटन्तं
हत्वा तीरे पयोधेः करतलकलितं पूरयामास शङ्खम्।
नादेनाक्षोभ्य विश्वं प्रमुदितविबुधं त्रस्तदैत्यं स देवै-
र्दत्तार्घः पद्मयोनेः प्रहसितवदनः पातु वो दत्तवेदः॥

- सुभा०सुधा०भा०

372. दिश्याद्वः शकुलाकृतिः स भगवान्नैःश्रेयसीं संपदं
यस्य स्फूर्जदतुच्छपुच्छशिखरप्रेङ्खोलनक्रीडनैः।
क्षुभ्यद्वार्धिसमुच्छलज्जलभरैर्मन्दाकिनीसंगतै-
र्गङ्गासागरसंगमप्रणयिनी जाता विहायःस्थली॥

- सुभा०सुधा०भा०

373. देव्याः श्रुतेर्दनुजदुर्णयदूषिताया
भूयःसमुद्गमविधाववलम्बभूमिः।
एकार्णवीभवदशेषपयोधिमध्य-
द्वीपं वपुर्जयति मीनतनोर्मुरारेः॥

- सदुक्ति० उमापतिधरस्य

374. निगमहरणगर्वाध्मातदुर्वारदैत्य-
क्षपणनिपुणघोरप्रक्रमं चक्रपाणेः।
वपुरधिकविशालव्यायतं त्रायतां तत्
प्रलयजलधिलीलाशीफरं शाफरं वः॥

- मत्स्यावतारप्रबन्धे नारायणभट्टस्य

375. पातु त्रीणि जगन्ति पार्श्वकषणप्रक्षुण्णदिङ्मण्डलो
नैकाब्धिस्तिमितोदरः स भगवान् क्रीडाझषः केशवः।
त्वङ्गन्निष्ठुरपृष्ठरोमखचितब्रह्माण्डभाण्डावधे-
र्यस्योत्फालकुतूहलेन कथमप्यङ्गेषु जीर्णायितम् ॥

- सदुक्ति० रघुनन्दनस्य

376. पुच्छं चेदहमुन्नयाम्यनवधिस्तुच्छो भवेदम्बुधिः
क्रीडां चेत्कलये मनागपि जले पीडा परं यादसाम् ।
निष्पन्दो भृशमामृशन्निति भरब्रह्माण्डभाण्डक्षय-
क्षोभाकुञ्चितवेष एष भगवान्प्रीणातु मीनाकृतिः॥

- सुभा० सुधा० भा०

377. ब्रह्माण्डोदरदर्पणे भ्रमिरयोत्क्षिप्ताम्बुधिक्षालिते
संक्रान्तामनिमेषलोचनयुगेनोत्पश्यतः स्वां तनुम् ।
शौरेर्मीनतनोः कृशानुकपिशं पार्श्वद्वयं प्रोल्लस-
च्चन्द्रार्काङ्कितकाञ्चनाद्रिशिखराकारं शिरः पातु वः॥

- सदुक्ति० वसन्तदेवस्य

378. मग्ने मेरौ पतति तपने तोयबिन्दाविवेन्दा-
वन्तर्लीने जलधिसलिले व्याकुले देवलोके।
मात्स्यं रूपं मुखपुटतटाकृष्टनिर्मुक्तवार्धि-
श्रीकान्तस्य स्थलजलगतं वेत्यलक्ष्मी पुनातु॥

- सुभा० सुधा० भा०

379. मज्जत् समुज्वलतनुर्भवभारभेदी
यो वेदवृन्दमुदधाविदमुज्जहार।

शंखासुरासुहरणः किल मीनरूपी
देवः श्रियः पतिरघं भवतां विहन्तु॥

- अभिलेखे

380. मत्स्यः पुच्छाभिघातेन तुच्छीकृतमहोदधिः।
अपर्याप्तजलक्रीडारसो दिशतु वः शिवम् ॥

- सदुक्ति०

381. मत्स्यः पुनातु जगदोङ्कृतिकुञ्चितास्यो
ब्रह्माद्वयप्रणयपीवरमध्यभागः।
क्रीडन्नसौ जलधिवीचिभिरेव नेति
नेत्यादरादिव विभावितपुच्छकम्पः॥

- सदुक्ति० आवन्त्यकृष्णस्य

382. मायामीनतनोस्तनोतु भवतां पुण्यानि पङ्कस्थितिः
पुच्छाच्छोटसमुच्छलज्जलगुरुप्रारम्भरिक्तोदधेः।
पातालावटमध्यसंकटतया पर्याप्तकष्टस्थिते-
र्वेदोद्धारपरायणस्य सततं नारायणस्य प्रभोः॥

- सुभा० सुधा० भा०

383. यं दृष्ट्वा मीनरूपं स्फुरदनलशिखायुक्तसंरक्तनेत्रं
लोलद्विस्तीर्णकर्णक्षुभितजलनिधिं नीलजीमूतवर्णम् ।
श्वासोच्छ्वासानिलौघैः प्रचलितगगनं पीतवारिं मुरारिं
दिङ्मूढोऽभूत्स शङ्खः स भवतु भवतां भूतये मीनरूपः॥

- सुभा० सुधा० भा०

384. वियत्पुच्छातुच्छोच्छलितजलगर्भं निधिरपा-
मपांनाथः पाथः पृथुललवदुःस्थो वियदभूत्।
निधिर्भासामौर्वो दिनपतिरभूदौर्वदहन-
श्चलत्काये यस्मिन्स जयति हरिर्मीनवपुषा॥

- सुभा० सुधा० भा०

385. विसृजन्त्याः पुरा यस्या ब्रह्माण्डाण्डानि वारिधौ।
सूतिखेदारवो वेदास्तां मात्सीम्मूर्तिमाश्रये॥

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

386. हंहो मीनतनो हरे किमुदधे किं वेपसे शैत्यतः
स्विन्नः किं वडवानलात्पुलकितः कस्मात्स्वभावादहम्।
इत्थं सागरकन्यकामुखशशिव्यालोकनेनाधिक -
प्रोद्यत्कामजचिह्ननिह्नुतिपरः शौरिः शिवायास्तु वः॥

- सुभा० सुधा० भा०

कूर्मावतारः

387. कलशाम्बुधिकन्यकां श्रियं मथनात्पूर्वमभीत्सुरादरात्।
कमठाकृतिमद्रिणा समं धृतवान्यः स हरिः श्रियै भवेत्॥

- वराहमिहिरहोराशास्त्रस्य टीकायां
अपूर्वार्थप्रकाशिकाख्यायाम्

388. कुर्मः कूर्माकृतये हरये मुक्तावलम्बनाय नमः।
पृष्ठे यस्य निषण्णं शैवलवल्लीरूपं विश्वम्॥

- सदुक्ति० भवानन्दस्य

389. क्षीराब्धौ मथ्यमाने त्रिदशदनुसुतोन्मुक्तकोलाहलौघे
ब्रह्माण्डाकाण्डचण्डस्फुटनगुरुरवभ्रान्तिभाजि त्रिलोक्याम् ।
सद्यो निद्रावबोधादुपरि रयवशक्षिप्तदीर्घक्षितिधा-
लग्नग्रीवाप्रकाण्डो जयति कमठराट्चण्डविष्कम्भतुल्यः॥

- सदुक्ति० वसुसेनस्य

390. तं स्तुमः कमठं यस्मिन्नास्ते सगिरिसागरा।
मन्थाचलकिणक्रोडमग्ना मृदिव मेदिनी॥

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

391. दृग्भ्यां यस्य विलोकनाय जगतो द्रागीषदुत्तोलित-
ग्रीवाग्रोपरि विस्फुरद्ग्रहगणे छत्रायितायां भुवि।
हा दिग्भूः किमभूदभूतदितरात्किंचेति पर्याकुलो
हन्यादेष हठादघानि कमठाधीशः कठोराणि मे॥

- सुभा० सुधा० भा०

392. नमस्कुर्मः कूर्मं नमदमरकोटीरनिकर-
प्रसर्पन्माणिक्यच्छविमिलितमाञ्जिष्ठवपुषम् ।
जरीजृम्भज्जिम्भद्युमणिरमणीयांशुलहरी-
परीरम्भस्फूर्जद्बलभिदुपलाद्रिप्रतिभटम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

393. निरवधि च निराश्रयं च यस्य स्थितमनिवर्तितकौतुकप्रपञ्चम् ।
प्रथम इह भवान्स कूर्ममूर्त्तिर्जयति चतुर्दशलोकवल्लिकन्दः॥

- सुभा० सुधा० भा०

394. निष्प्रत्यूहमनल्पकल्पचलितस्त्रैलोक्यरक्षागुरः
क्रीडाकूर्मकलेवरः स भगवान्दिश्यादमन्दां मुदम् ।

कल्पान्तोदधिमध्यमज्जनवशाद्व्यासर्पतः संलुठ-
त्पृष्ठे यस्य बभूव सैकतकणच्छायं धरित्रीतलम् ॥

- शा० प० हनूमतः

395. पायाद्वो मन्दराद्रिभ्रमणनिकषणाकृष्टपृष्ठाग्रकण्डू-
लीनानिद्रालुरब्धेः क्षुभितमगणयन्नद्भुतः कूर्मराजः।
यस्याङ्गैर्मर्दहेलावशचलितमहाशैलकीला धरित्री
त्वङ्गत्कल्लोलरत्नाकरवलयचलन्मेखला नृत्यतीव॥

- सदुक्ति० सूरेः

396. पार्श्वास्फालातिवेगाज्झगिति च विरहादुच्छलद्भिः पतद्भि-
र्भूयोभूयः समुद्रैर्मिहिरमतिरयादापिवद्भिर्वमद्भिः।
कोटीरस्तोयदानां क्षणमिव गगने दर्शयन् वः पुनीता-
दीषद्गात्रावहेलाचलितवसुमतीमण्डलः कूर्मराजः॥

- सदुक्ति० धरणीधरस्य

397. पृष्ठभ्राम्यदमन्दमन्दरगिरिग्रावाग्रकण्डूयना-
न्निद्रालोः कमठाकृतेर्भगवतः श्वासानिलाः पान्तु वः।
यत्संस्कारकलानुवर्तनवशाद्वेलाच्छलेनाम्भसां
यातायातमयन्त्रितं जलनिधेर्नाद्यापि विश्राम्यति॥

- सदुक्ति० केशटाचार्यस्य

398. मेघीभूय महाब्धिमन्थनविधौ पृष्ठे निजे भ्राम्यतो
माऽभून्मन्दरपर्वतस्य च परिभ्रंशः समुद्रस्य च।
इत्यङ्गैः सह सञ्जहार किल यः श्वासान् स वो रक्षतात्
स्वेच्छावर्त्तितकच्छपायिततनुस्त्रैलौक्यरक्ष्यो हरिः॥

- सूक्तिमु०

399. यन्निःश्वाससमीरमेदुरतया दूरं समुल्लासिता
धत्ते शेषभुजङ्गभोगकलिता भूरातपत्रश्रियम् ।
स्तोत्रे यस्य चतुर्मुखी श्रुतिकवेः कुण्ठत्वमभ्यस्यति
क्रीडाकूर्मतनुर्जगन्ति स विभुः पायादपायाद्धरिः॥

- सूक्तिमु०

400. यस्य त्रसद्भिरवनीधरताड़नेभ्यो
यादोगणैरुदरपादतले निलीनैः।
पीयूषमन्थनविपत्तिरतीर्यताब्धौ
कूर्मात्मकः स हरिरस्तु विभूतये वः॥

- अभिलेखे

401. यो धत्ते शेषनागं तदनुवसुमतीं स्वर्गपातालयुक्तां
युक्तां सर्वैः समुद्रैर्हिमगिरिकनकप्रस्थमुख्यैर्नगेन्द्रैः।
एतद्ब्रह्माण्डमस्यामृतघटसदृशं भाति वंशे मुरारेः
पायाद्वः कूर्मदेहः प्रकटितमहिमा माधवः कामरूपी॥

- सुभा० सुधा० भा०

402. संवर्त्तविन्यस्ततटे जलानां
रेमे निधौ यः खलु योगयुक्त्या।
जगद्गतिः संस्थितचिद्रुचिश्रीः
स वो विभूतिं कमठः करोतु॥

- अभिलेखे

वराहावतारः

403. अम्बरमानस्तम्भः कुम्भः संसारबीजरक्षायाः।
हरिदन्तरमितमूर्त्तिः क्रीड़ापोत्री हरिर्जयति॥

- दानपत्राभिलेखे वैद्यदेवस्य

404. अव्याज्जगंति विभुरादिवराहमूर्त्ति-
र्भर्त्ता भवो रुचिर-बालतमाल-नीलः।
आविर्वभूव किल यस्य महाम्बुलीने
दंष्ट्रामृणालशिखरे धरणीसरोजम् ॥

- प्रोलवर्म-दानपत्राभिलेखे कापय-नायकस्य

405. अव्यादादिवाराहो वस्सरसामुद्वहन्महीम् ।
निजाङ्गसङ्गसञ्जातसांद्रखेदोदयामिव॥

- मङ्गलगिरि-स्तम्भाभिलेखे

406. अव्याद्विभुः करिवपुर्भुवमुद्धरन्य-
श्मेषस्पटामणिसहस्त्रगत स्वबिम्बः।
सुव्यक्तमाश्रितजनाय तदादरेण
स्वीयं विभाति कथयन्निव सर्व्वगत्वम् ॥

- वनपल्लि-पत्राभिलेखे अन्न-वेमस्य

407. अव्याद्वः प्रथमः पोत्री सरसामुद्वहन् रसाम् ।
प्रियाङ्गसङ्गसञ्जातसान्द्रस्वेदोदयामिव॥

- श्रीरङ्गम् -पत्राभिलेखे मल्लिकार्जुनस्य

408. अष्टौ यस्य दिशो दलानि विपुलः कोशः सुवर्णाचलः
कान्तं केसरजालमर्ककिरणा भृङ्गा पयोदावली।
नालं शेषमहोरगः प्रविततं वारांनिधेर्लीलया
तन्नः पातु समुद्धरन्कुवलयं क्रोडाकृतिः केशवः॥

- सुभा० सुधा० भा०

वराहावतारः

409. अस्तु मुदे वराहं वपुरनिशं वसुमतो यस्य।
विशदे दंष्ट्राशिखरे विलसति भृङ्गीव केतकीमुकुले।।

- पेन्तपड्ड-दानपत्राभिलेखे छोडभक्तिराजस्य

410. आलोक्य वार्धाववनिं निपतितां
हैमाक्षदैत्येन च यो दयाम्बुधिः।
भूत्वा वराहो विनिहत्य दानवं
दधार भूमिं स तनोतु शं हरिः।।

- वराहमिहिरहोराशास्त्रस्य टीकायां
अपूर्वार्थप्रकाशिकाख्यायाम्

411. ॐकाराकारदंष्ट्राय क्रीड़ते श्रुतिपल्वले।
स्थिरांन्धारयते शक्तिं नमः प्रथमपोत्रिणे।।

- अलमपुन्दि-पत्राभिलेखे विरूपाक्षस्य

412. ॐकाराङ्कुरदंष्ट्राय सकलाम्नायघोषिणे।
आद्यायास्तु नमस्तस्मै वराहाय महौजसे।।

- सोरैक्कवुर-पत्राभिलेखे विरूपाक्षस्य

413. कल्याणमाकलयतादयमाधिपोत्री
धात्रीमुदूह्य सरसां सरसातिरेकात् ।
सश्लेषसंभ्रमवशात्सहसा निगृह्य
दन्तेन किञ्चिददुनोदधरं धराया:।।

- मङ्गलगिरि-स्तम्भाभिलेखे कृष्णदेवराजस्य

414. कल्याणानि तनोतु नः स भगवान् क्रीडावराहाकृति-
दंष्ट्राग्रेण नवप्ररोहपुलकां देवीं धरामुद्वहन् ।

यस्याङ्गेषु वहन्ति रोमविवरालग्ना महाऽम्भोधयः
कान्तास्पर्शसुखादिव प्रकटितां स्वेदोदबिन्दुश्रियम् ॥

- वामनकृत-काव्यालङ्कारसूत्राणां टीकायां
कामधेनु इत्याख्यायां गोपेन्द्रत्रिपुरहरभूपालस्य

415. कल्याणं जगतां तनोतु स विभुः कादम्बिनीमेचकः
क्रीड़ाक्रोड़तनुः पयोधिपयसो विश्वंभरामुद्वहन् ।
भारापेतफणाविवर्तनवशान्मोदाय यस्याभवन् -
निर्यत्ना भुजगेन्द्रमौलिमणिभिर्नीराजनप्रक्रिया ॥

- अभिलेखे

416. कोलश्चकास्ति भुवनत्रयमूलकन्दः
पातालकर्द्दमिषु वारिजलेषु यस्मात् ।
स्वर्णाद्रिकेसरकरालमरालदंष्ट्रा-
नालं महीवलयमुत्पलमाविरासीत् ॥

- काकतीयाभिलेखे

417. क्रीडाक्रोडाकृतेर्व्विष्णोर्दंष्ट्रादण्डो जयत्यसौ।
धात्री हेमाद्रिकलशा यत्रच्छत्रानुकारिणी॥

- येनमदल-अभिलेखे गणपतेः

418. क्रोड़ीकृत्य विशालनिष्ठुरतरां दंष्ट्रां वहन्मुद्वहो
मूर्त्तिर्व्विस्तृतधर्म्मकर्म्मनियतिर्वासीं धियां माधवः।
औग्राप्तिपिण्डितपङ्कपेशलरुचिं विश्वम्भरामुद्दधे
शं वो वर्द्धयतां स विश्ववसतिर्न्नित्याधिनाशोदितः॥

- अजयगढ़-प्रस्तराभिलेखे नानस्य

419. घोणाघोराभिघातोच्छलदुदधिजलासारसिक्ताग्ररोमा
रोमाग्रप्रोतताराानिकर इति सुरैर्धीरमालोकितो वः।
श्वासाकृष्टावकृष्टप्रविशदपसरद्ब्रध्नविम्बानुबन्धा-
दाविर्नक्तं दिनश्रीः स दिशतु दुरितध्वंसमाद्यो वराहः॥

- सदुक्ति० नरसिंहस्य

420. जयति इरिवराहः प्रेमसंभ्रान्तपृथ्वी-
स्तनभरपरिंरंभारंभदृप्तस्य यस्य।
पुलकचुलुकितांभस्संचयस्तोयराशिः
पुनरविरलनिर्य्यत्स्वेदपूरैरपूरि॥

- चेब्रोलु-अभिलेखे जयस्य

421. जयति धरण्युद्धरणे घनघोणाघातचूर्णितमहीधरः।
देवो वराहमूर्त्तिस्त्रैलोक्यमहागृहस्तम्भः॥

- एरन् -प्रस्तराभिलेखे तोरमाणस्य

422. जयति विदितसत्वः श्रीपतिः स्तब्धरोमा
जलधिजलनिमग्नां सादरं लीलया यः।
सकलगुणसमेतां गामुदुह्यात्तसौख्या-
मकृतविकृतिदूरश्लाघनीयानुभावः॥

- कन्दुकुर-प्रस्तराभिलेखे

423. जयत्यमलबालेन्दुकोटिप्रकाशदंष्ट्रोत्कटम्
रसातलजपङ्कशङ्कितस्कन्धदेशमुत्केसरम् ।
जालालुलिंतघोणाप्रमुक्तप्रभञ्जनोत्सारित-
ध्वनेर्ज्जलधिमध्योपलब्धोर्व्विकोलरूपं हरेः॥

- लोहनेर-पत्राभिलेखे चालुक्यपुल्केशियन्द्वितीयस्य

424. जयत्याविष्कृतं विष्णोर्वाराहं क्षोभितार्णवम् ।
दक्षिणोन्नतदंष्ट्राग्र-विश्रान्तभुवनं वपुः॥

- ताम्रपत्राभिलेखे चालुक्यविजयादित्यस्य

425. दृप्यद्दैत्यनितम्बिनीजनमनःसंतोषसंकोचनः
कुर्याद्विश्वमनश्वरं स भगवान्क्रोडावतारो हरिः।
यद्दंष्ट्राङ्कुरकोटिकोटरकुटीकोणान्तरस्थेयसी
पृथ्वी भात्यवदातकेतकदलालीनेव भृङ्गाङ्गना॥

- सुभा० सुधा० भा०

426. देवः पातु महेन्द्रनीलनिविड़ज्योतिस्सुदंष्ट्राङ्कुरः
प्रान्तोद्भिन्नसुधांशुखण्डविलसत्कालाम्बुवाहोपमः।
अम्भोधेर्विपदाम्भराद्वसुमती भक्तानिवोभ्युद्धरन्
किञ्चित्खिन्न इवात्मलीनजलधिः क्रीड़ावराहो जगत् ॥

- कन्डुकुर-अभिलेखे

427. देवः श्रीकमनीययौवनवनक्रीड़ायिताम्रेडन-
स्वातन्त्र्यानुगृहीतसूकरतनुः पुष्णातु वो वाञ्छितम् ।
क्षोणीमुद्धरतो महाब्धिजठराद् विक्रांतनीराजनां
चक्रे यस्य फणीश्वरो निजफणामाणिक्यदीपोत्करः॥

- मोटुपल्लि-स्तम्भाभिलेखे गणपतेः

428. दंष्ट्रा पिष्टेषु सद्यः शिखरिषु न कृतः स्कन्धकण्डूविनोदः
सिन्धुष्वङ्गावगाहः खुरकुहरविशत्तोयतुच्छेषु नाप्तः।
प्राप्ताः पातालपङ्के न लुठनरतयः पोत्रमात्रोपयुक्ते
येनोद्धारे धरित्र्याः स जयति विभुतावृंहितेच्छो वराहः॥

- सदुक्ति० वराहमिहिरस्य

429. न पङ्कैरालेपं कलयति धरित्रीव्ययवशा-
न्न मुस्तामन्विष्यत्युरगनगरभ्रंशचकितः।
न धत्ते ब्रह्माण्डस्फुटनभयतो घुर्घुररवं
वराहो माहात्म्यादिति जयति सङ्कोचितवपुः॥

- सूक्तिमु० हनूमतः

430. नमस्तस्मै वराहाय लीलयोद्धरते महीम्।
खुरमध्यगतो यस्य मेरुः कणकणायते॥

- सुभा० सुधा०

431. पातालपल्वलतलाद्दिवमुत्पतिष्णो-
र्विष्णोः पुनातु कृतघृष्टितनोस्तनुर्वः।
यत्तुण्डखण्डधृतभूनलिनीदलस्य
शालूकनालसदृशौ कमठोरगेन्द्रौ॥

- असम-पत्राभिल्लेखे वल्लभदेवस्य

432. पातु त्रीणि जगन्ति संततमकूपारात्समभ्युद्धरन्
धात्रीं कोलकलेवरः स भगवान्यस्यैकदंष्ट्राङ्कुरे।
कूर्मःकन्दति नालति द्विरसनः पत्रंति दिगदन्तिनो
मेरुःकोशति मेदिनी जलजति व्योमोपि रोलम्बति॥

- धारवाड़-पत्राभिलेखे

433. पातु नः कपटकोलकेशवो यस्य निश्वसितमारुतोद्धता।
उच्छ्रितिप्रपतनैरचीक्लृपत्केलिकन्दुकतुलामिला मुहुः॥

- सुभा०सुधा०भा०

434. पातु वो मेदिनीदोला बालेन्दुद्युतितस्करी।
दंष्ट्रा महावराहस्य पातालगृहदीपिका॥

- सुभा० मातङ्गदिवाकरस्य

435. पातु श्रीस्तनपत्रभङ्गिमकरीमुद्राङ्कितोरःस्थलो
देवो नः स जगत्पतिर्मधुवधूवक्त्राब्जचन्द्रोदयः।
क्रीडाक्रोडतनोर्नवेन्दुविशदे दंष्ट्राङ्कुरे यस्य भू-
र्भाति स्म प्रलयाब्धिपल्वलतलोत्खातैकमुस्ताकृतिः॥

- सुभा०सुधा०भा०

436. पायादाद्यः स वः पोत्री यद्दंष्ट्राप्रतिबिम्बिता।
अगादिव धृता धात्री हर्षाद्द्विगुणपुष्टताम् ॥

- ताम्रपत्राभिलेखे कृष्णस्य

437. पायाद्वराहवपुषः परमस्य पुंसो
दंष्ट्रा जगन्ति शिखरे धरणीं दधाना।
शृङ्गाग्रभागपरिचुम्बितमेघबिम्बा
संलक्ष्यमाणसुषमेव शशाङ्करेखा॥

- कोडुरु-दानपत्राभिलेखे अनन्वोट-रेड्डिनः

438. पायाद्वः स महाक्रोडः क्रीडन्नम्बुधिपल्वले।
यद्दंष्ट्रादण्डमालम्ब्य मग्नाभूः पुनरुत्थिता॥

- देवुलपल्ली-पत्राभिलेखे इम्माडि भरसिंहस्य

439. पारावारविशृङ्खलोर्मिपटलीपथ्यानिमग्नां भुवं
दंष्ट्राग्रेण समुद्धरन् सपुलकैः स्वेदोद्गमामात्मनः।
संसर्गानुभवेन रोमपटलीस्वेदोदबिन्दूनिव
क्रीडाक्रोडकलेवरोवतु सदा सप्तार्णवीमुद्वहन्॥

- वेलिचेर्ल दानपत्राभिलेखे प्रतापरुद्रगणपतेः

440. पुष्टिं कृषीष्ट वः पोत्री पुराणःपुरुषोत्तमः।
यद्दंष्ट्राहरणांकस्य वसुधा लाञ्छनायते।।

- विलास-दानपत्राभिलेखे प्रोलयनायकस्य

441. बिभ्राणस्तुहिनाद्रिमौलिविलसन्नीलाभ्रलीलां भुवं
दंष्ट्राग्रेण जगत्त्रयीमवतु स क्रीडावराहो हरिः।
यस्याङ्गव्यतिषङ्गिणीप्रसृमरा सा क्वापि सप्तार्णवी
नव्योन्निद्रतमश्रमाम्बुकणिकासन्देहमभ्यस्यति।।

- थान-पत्राभिलेखे रामचन्द्रस्य

442. बिंभ्राणोऽभिनवेन्दुकोटिकुटिलं दंष्ट्राङ्कुरं लीलया
क्रोडाकारधरो हरिः स भवतां भूयाद्विभूतिप्रदः।
यस्योत्क्षिप्तवतः क्षमाकमलिनीमालम्बमानः क्षणं
लोलद्वालमृणालतन्तुतुलनां भेजे भुजङ्गेश्वरः।।

- सूक्तिमु०

443. ब्रह्मरात्र्यां व्यतीतायां विबुद्धे पद्मसम्भवे
विष्णुः सिसृक्षुर्भूतानि ज्ञात्वा भूमिं जलानुगां।।
जलक्रीडारुचिशुभं कल्पादिषु यथा पुरा
वाराहमास्थितोरूपमुज्जहार वंसुन्धराम्।।

- वैष्णवधर्मशास्त्रे

444. भूतये भवतु वस्स वराहो
भूर्भुवः स्वरधिदैवतमेकम् ।
एकदापि यजनप्रवणानां
भूपतित्वमुपपादयते यः।।

- गर्वपाडु-दानपत्राभिलेखे गणपतिदेवस्य

445. भूयादेष सतां हिताय भगवान्कोलावतारो हरिः
सिन्धोः क्लेशमपास्य यस्य दशनप्रान्ते नटन्त्या भुवः।
तारा हारति वारिदस्तिलकति स्वर्वाहिनी माल्यति
क्रीडादर्पणति क्षमापतिरहर्देवश्च ताटङ्कति॥

- सुभा०सुधा०भा०

446. मग्नां धरित्रीं जलधौ युगक्षये
दंष्ट्राग्रभागेन समुद्दधार यः।
क्रीडारतायादिवराहमूर्तये
तस्मै नमो भूतलभारहारिणे॥

- आरण्यकविलासे यादवेन्द्रनाथस्य

447. महीयस्यामही यस्य दंष्ट्रया प्रोद्धतोदधेः।
श्रियै भूयाद्वराहोऽसौ जगतां जगतां निधिः॥

- भोज-दानपत्राभिलेखे कार्त्तवीर्यस्य

448. मुक्तैर्यासति कुत्रचिद्वसुमती दंष्ट्राग्रसंसर्गिणी
कुक्षौ क्षोभमवाप्स्यति त्रिभुवनं रुद्धैरमीभिर्भृशम्।
इत्यस्वल्पविकल्पमीलितमतेः कण्ठे लुठन्तो मुहुः
कोलाकारधरस्य कैटभजितः श्वासोर्म्मयः पान्तु वः॥

- कैरव-अभिलेखे समरसिंहस्य

449. मेरूरुकेसरमुदारदिगन्तपत्र
मामूललम्बिचलशेषशरीरनालम्।
येनोद्धतं कुवलयं सलिलात्सलील-
मुत्तंसकार्थमिव पातु स वो वराहः॥

- वृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

450. यद्देहे तनुलोमकूपविवरे शैला नगा दिग्गजा-
नद्यस्सप्तसमुद्रमुद्रितमही विस्तारमध्यासिते।
दंष्ट्रादण्डकरालकालवदनः स्त्रीलंघिताग्रासनो
लीलाकोलकलेवरस्स मुरभित् पायादपायद्ध्रुवम् ॥

- अरुलल-पेरुमल-अभिलेखे प्रतापरुद्रस्य

451. यस्मिन्नुद्वहति क्षितिं यवनिकावार्द्धिस्तदीयोध्वनिः
प्रोद्यन्मङ्गलवृन्दवाद्यनिनदो मौहूर्त्तिकः पद्मभूः।
शेषाशेषफणामणिद्युतिशतैर्नीरांजनं चाभवत्
भूधाराधिपतिस्सविष्णुरखिलश्रेयांसि पुष्णातु वः॥

- अभिलेखे

452. यूथायितमवतु हरेः क्ष्मामुद्धरतो वराहवपुषो वः।
शेषफणामणिमण्डलसहस्त्रसङ्क्रान्तबिम्बस्य॥

- सूक्तिरत्नहारे

453. येनाधोमुखपद्मिनीदलधिया कूर्मश्चिरं वीक्षितो
घ्रातो येन मृणालमुग्धलतिकाबुद्ध्या फणिग्रामणीः।
यः शालूकमिवोद्दधार धरणीबिम्बं पुनीतादसौ
त्वामेकार्णवपल्वलैकरसिकः क्रीडावराहो हरिः॥

- सदुक्ति०

454. लक्ष्मीपादसरोरुहद्वयमदः श्रेयांसिदासीष्ट वः
प्रस्फूर्ज्जन्नखरश्मिकेशरसटाभास्वन्नखालीदलम् ।
विस्पष्टं प्रतिबिम्बतः प्रणमनः क्रीडापराधोद्भवैः
कृष्णो यन्नखदीप्तिषु भ्रमरतान्धते स लक्ष्मीप्रियः॥

- असंखली पत्राभिलेखे नरसिंहदेवस्य द्वितीयस्य

455. लक्ष्मीं पक्ष्मलितां तनोतु भवतां लक्ष्मीपतिस्संततं
केलीकोलतनुस्समस्तजगतां रक्षाविधौ दक्षिणः।
स्नेहार्द्रां धरणीं निजैकरमणीं कर्तुं रसादुद्वहँ-
स्तत्संश्लेषकुतूहलात्पुलकितो यः स्तब्धरोमा भवत् ।।

- कोण्डुरु-पत्राभिलेखे अल्लयडोडस्य

456. लीने श्रोत्रैकदेशे नभसि नयनयोस्तेजसि क्वापि याते
श्वासग्रासोपभुक्ते मरुति जलनिधौ पादरन्ध्रार्द्धपीते।
पोत्रप्रान्तैकरोमान्तरविवरगतां मार्गतः शार्ङ्गपाणेः
क्रोडाकारस्य पृथ्वीमविकलविभवं वैभवं वः पुनातु।।

- सूक्तिमु० वराहमिहिरस्य

457. लीलावराहो जयति दंष्ट्राग्रे यस्य मेदिनी।
भाति तत्कान्तिरक्तार्द्रावन्यस्ताञ्जनबिम्बवत् ।।

- फ्रेगमेन्ट्री-अभिलेखे अर्द्धापुरस्य

458. वाराहं वपुरुद्धतं घनघनध्वानं दधानो हरि-
श्चातुर्वर्ण्यपदैश्चमत्कृतिकरैरंगैरुपाङ्गैः स्फुरन् ।
अव्यात्वामतिभव्यनव्यहिमरुग्रेखाग्रमेघाकृति-
र्यद्दंष्ट्राशिखरे सुखामृतसरित्संवेदिनी मेदिनी।।

- कण्डुकुरु-अभिलेखे

459. विविधसकललोकव्रातजन्मादिहेतुम्
निरवधिभवरूपापायवाराशिसेतुम् ।
निखिलनिगममूलं निर्मलानन्दबोधम्
श्रितदुरितविदारं श्रीवराहं नमामि।।

- न्यायसंग्रहदीपिकायां श्रीनिवासबुद्धस्य

460. विश्वंभरोऽव्यद्भूदारः केलिपल्वलितांबुधिः।
विश्वंभराभवत्सापि येनोद्वाहमवाप्य भूः॥

- टोट्टरमुडि- पत्राभिलेखे काट्यवेमारेड्डिनः

461. वेदपादो यूपदंष्ट्रः क्रतुदन्तः चितीमुखः
अग्निजिह्वो दर्भरोमा ब्रह्मशीर्षो महातपाः।
अहोरात्रे क्षणो दिव्यो वेदाङ्गश्रुतिभूषणः
आज्यनासः स्रुवस्तुंडः सामघोषस्वनोमहान् ॥

- वैष्णवधर्मशास्त्रे

462. श्रीकान्तश्श्रियमातनोतु भवतां क्रीड़ाकृतिर्व्वारिधे-
रङ्गात्राशु समुद्धृतां लघुतयोद्धर्त्तुं क्षितिं दंष्ट्रया।
यस्तावद्ववृधे निपीड़िततनुर्ब्रह्माण्डखण्डे भृशं
स्वस्थानस्थितियाचनोचितपदैस्तुष्टाव यावन्न सा॥

- गनपेश्वरम् -अभिलेखे गणपतेः

463. श्रीनाथस्य वराहदिव्यवपुषो वः पातु दंष्ट्रा चिरं
स्यूतोन्नीतमहीतलोपरितटीनिर्य्यातशृङ्गाङ्कुरा।
यामात्मीयजलोदितां शशिकलामाशंक्य जातः क्षणं
सौहार्देन विजृम्भमाणसलिलारम्भो महाम्भोनिधिः॥

- पच्चनि-तन्दिपरु-दानपत्राभिलेखे अन्नवेमस्य

464. श्रीनाथोवतु वः पुरा बलिगृहे यस्मिन् वराहांकृतौ
दंष्ट्राग्रेण भुवोधरं नुदति सत्युद्वाहलीलोत्सुके।
प्रौढ़ेव प्रतिभाति सा खलु नवोढापि भूरुमज्झती
पाथःप्रावरणं प्रदर्शितवती सर्वं वपुः सौष्ठवम् ॥

- अन्नवरप्पड्-पत्राभिलेखे काट्यवेमरेड्डिमहोदयस्य

465. श्रीमत्कोमलनीलनीरजरुचिर्लीलावराहश्श्रिरं
नातिप्रौढ़मृणालकन्दललसद्दंष्ट्राङ्कुरः पातु वः।
यस्मिन्नुद्वहति क्रमेण विमलत्पाथोधिनीलांशुका
रागादार्द्रतनूरिव क्षणमभूदामोदिनी मेदिनी।।

- मद्रास-सङ्ग्रहालयस्थ-पत्राभिलेखे

466. श्रीमानगाधजलराशिपयःप्रपूरा-
द्दंष्ट्राङ्कुरेण धरणीं तरसोद्धरिष्णुः।
नीलांबुजातनिभनिर्मलनित्यमूर्त्तिः
पायादपायनिलयादयमादिपोत्री।।

- कनिगिरि-प्रस्तराभिलेखे

467. श्रीमानवराहवपुरावहतु श्रियं वो
येनाशु कौतुकवतोद्वहता धरित्र्याः।
दंष्ट्राभिघातपरिकम्पितमेरुशृङ्ग-
निर्मुक्तरत्ननिकरैरुदपादि रेखा।।

- नडुपुरु-दानपत्राभिलेखे अन्नवेमारेड्डिनः

468. श्रीमानादिमभूदारः श्रेयसे भूयसेस्तु वः।
येनोद्वाहमवाप्यासीद्रत्नगर्भा वसुन्धरा।।

- त्रिप्लिकेन-पत्राभिलेखे पन्तमैलरस्य

469. श्रीमान् स क्रोड़रूपो जयति वसुमतीमण्डलालीढ़दंष्ट्रः
पोत्रोत्कीर्णाद्रिचक्रः खुरयुगशिखरक्षुण्णपातालपङ्कः।
वेगव्याक्षिप्तविश्वप्रलयजपवनैर्यस्य निःश्वासवातै-
र्भूयो भूयः प्रताम्यत्तिमिमकरकुलाः पीतभुक्ताः समुद्राः।।

- पुष्पभद्र-दानपत्राभिलेखे धर्मपालस्य

470. श्रीविष्णुरस्तु भवदिष्टफलप्रदाता
वाराहमूर्त्तिरखिलागमगीतकीर्त्तिः।
यो दंष्ट्रया स्वरमणीमरमब्धिमग्नां
सम्भोगलम्पटमनाः क्षितिमुद्दधार॥

- दोनपुन्दि-दानपत्राभिलेखे नामयनायकस्य

471. श्रीशः क्रीड़ावराहात्मा पायाद्वो नित्यकौतुकम् ।
सगोत्रामपि गोत्री यः श्लाघनीयस्समुद्वहन् ॥

- कन्दुकुर-अभिलेखे

472. श्रीः अव्याद् वः प्रथमः पोत्री सरसामुद्वहन् रसाम् ।
प्रियाङ्गसङ्गसञ्जातसान्द्रखेदोदयामिव॥

- नेल्लोर-ताम्रपत्राभिलेखे रामचन्द्रस्य

473. श्वेतश्शुभं दिशतु शश्वदसौ वराहः
पातालसद्मनि ततो गहने रहो यः।
औत्सुक्य नून धृतिरुद्वहनोत्सवात् प्राग् -
दंतेन किञ्चिददुनोदधरं धरायाः॥

- अक्कलपुन्दि-दानपत्राभिलेखे सिंगय-नायकस्य

474. स क्रोडः क्रीडतादन्तःक्रान्तकल्पाब्धिपल्वलः।
यद्दन्तलग्नजम्बालक्षोदालम्बा जगत्त्रयी॥

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

475. स जयति महावराहो जलनिधिजठरे चिरं निमग्नोऽपि।
येनान्त्रैरिव सह फणिगणैर्बलादुद्धृता धरणी॥

- सुभा० सुधा० भा०

476. स पायात्सततं मायावराहो वदनेन यः।
जगदात्मा जलनिधेर्ज्जगतीमुददीधरत् ॥

- श्रीरङ्गमस्थ-पत्राभिलेखे देवरायस्य द्वितीयस्य

477. स पायादादिपोत्रीं यद्दंष्ट्रोढ़ा सरसारसा।
केतकीदलतुङ्गाग्रसंगाभृङ्गीव राजते॥

- दानपत्राभिलेखे कोण्डाविडुशर्मणः

478. सिन्धुष्वङ्गावगाहः खुरविवरविशत्तुच्छतो येषु नाप्तः
प्राप्ताः पातालपङ्के न लुठितरुचयः पोत्रमात्रोपयोगात् ।
दंष्ट्राविष्टेषु नाप्तः शिखरेषु च पुनः स्कन्धकण्डूविनोदो
येनोद्धारे धरित्र्याः स जयति विभुताविघ्नतेच्छो वराहः॥

- सुभा० सुधा० भा०

479. सूर्य्याधिष्ठितदक्षिणाक्षिकरणैः सम्वर्त्तवात्योल्वणैः
संशोषं मुखमारुतैश्च सुतरामेकार्ण्णवे गच्छति।
पृथ्वीं फेन-कृतास्वदामिव दधद्दंष्ट्रांशुलिप्तां हरिः
कोलात्मा वितरत्वपूर्णसलिलक्रीड़ास्पृहो वः शिवम् ॥

- अजमेरस्थ-प्रस्तराभिलेखे

480. सेयं चन्द्रकलेति नागवनितानेत्रोत्पलैरर्चिता
मद्धारापगमक्षमेति फणिना सानन्दमालोकिता।
दिङ्नागैः सरलीकृतायतकरैः स्पृष्टा मृणप्रलाशया
भित्त्वोर्वीमभिनिःसृता मधुरिपोर्दंष्ट्रा चिरं पातु वः॥

- सदुक्ति० केशवस्य

481. स्वस्ति श्रीधरणीधरों वितरतादाचक्रवालं किरि-
र्विश्वस्मै वसुधावधूप्रियवरः यस्तांञ्झिहीर्षुर्मुदा।

यस्यै स्वीय विशालकोमलसितां द्रंष्ट्रामरिष्टापहां
केतक्याः कुसुमं यथातिसुभगं कुर्वन् पुरोपायनम् ॥
- शार्ङ्गपुरम् -दानपत्राभिलेखे शार्ङ्गधरस्य

482. हरिरवतु किरतनुर्वो भुवमुद्वोढुंगतस्य वरुणपुरीम् ।
यस्याखिलजलधिजलं पाद्यायाभूदनर्घ्याय॥
- अभिलेखे

483. हरिः किरितनुः पातु लोकोद्धतिविलासभाक् ।
सरसाया भुवस्संगादेव रोमांचनाञ्चितः॥
- चिरुव्रोली- दानपत्राभिलेखे हम्बीरस्य

484. हरेर्लीलावराहस्य दंष्ट्रादण्डस्स पातु वः।
हेमाद्रिकलशा यत्र धात्रीच्छत्रश्रियं दधौ॥
- बित्रगुन्ट-दानपत्राभिलेखे सङ्गमस्य द्वितीयस्य

नृसिंहावतारः

485. अग्न्याधाननिदानमंतरसुरस्त्रीणां यदीयेक्षणे
किंचित् पाटलिमातथापि सुदृशामानन्दसंजीविनी।
तत्रास्निग्धदृशाचराचरजगत्सृष्टिस्थितिप्रक्रिया
लीलानाटकसूत्रधारमपरं तं श्रीनृसिहं नुमः॥
- सोमादिसप्तसंस्थापद्धतौ

486. अन्तःक्रोधोज्जिहानज्वलनभवशिखाकारजिह्वावलीढ-
प्रौढब्रह्माण्डभाण्डः पृथुभुवनगुहागर्भगम्भीरनादः।
दृप्यत्पारीन्द्रमूर्त्तिर्मुरजिदवतु वः सुप्रभामण्डलीभिः
कुर्वन् निर्धूमधूमध्वजविचितमिव व्योमरोमच्छटानाम् ॥
- सुभा० सुधा० भा०

487. अव्याद्वो वज्रसारस्फुरदुरुनखरक्रूरचक्रक्रमाग्र-
प्रोद्भिन्नेन्द्रारिवक्षःस्थलगलदसृगासारकाश्मीरगौरः।
प्रस्फूर्जत्केशराग्रग्रथितजलधरश्रेणिनीलाब्जमाल्यः
सूर्याचन्द्रावतंसो नरहरिरसमाबद्धशृङ्गारलीलः॥

- सदुक्ति० प्रजापतेः

488. अस्त्रस्रोतस्तरङ्गभ्रमिषु तरलिता मांसपङ्के लुठन्तः
स्थूलस्थूलास्थिभङ्गैर्धवलविलसताग्रासमाकल्पयन्तः।
मायासिंहस्य शौरेः स्फुरदरुणहृदम्भोजसंश्लेषभाजः
पायासुर्दैत्यवक्षःस्थलकुहरसरोराजहंसानखा वः॥

- सदुक्ति० मयूरस्य

489. आदित्याः किं दशैते प्रलयभयकृतः स्वीकृताकाशदेशाः
किंवोल्कामण्डलानि त्रिभुवनदहनायोद्यतानीतिभीतैः।
पायासुर्नारसिंहं वपुरमरगणैर्बिभ्रतः शार्ङ्गपाणे-
र्दृष्टा दृप्तासुरोरस्तलदरणगलदरक्तरक्ता नखा नः॥

- सुभा० सुधा० भा० कलशस्य

490. आनन्दमुग्धनयनां श्रियमङ्कभित्तौ
बिभ्रत्पुनातु भवतो भगवान् नृसिंहः।
यस्यावलोकनविलासवशादिवासी
दुत्सन्नलाञ्छनमृगः कमलामुखेन्दुः॥

- सदुक्ति० उमापतिधरस्य

491. कयाधुसूनुपालकं हिरण्यनागमर्दिनम् ।
श्रिया युतं गुहाशयं भजे नृसिंहमक्षरम् ॥

- वराहमिहिरकृत-होराशास्त्रटीकायां
अपूर्वार्थप्रदर्शिकाख्यायाम्

492. कररुहकुलिशैर्द्विशता चरणाम्बुजनखकान्तिभिर्भजताम् ।
हृदयग्रन्थीन् भिन्दन् मनसि नृसिंहः समुल्लसतु॥
- श्रीमद्भगवन्नामकौमुद्यां लक्ष्मीधरस्य

493. क्विं किं सिंहस्ततः किं नरसदृशवपुर्देव चित्रं गृहीतो
नैवं धिक् कोत्र जीव द्रुतमुपनय तं सोपि संप्राप्त एव।
चापं चापं न खड्गं झटिति हहह हा कर्कशत्वं नखाना-
मित्येवं दैत्यराजं निजनखकुलिशैर्जघ्निवान् सोऽवताद्वः ॥
- सदुक्ति० श्रीव्यासपादानाम्

494. कुन्देन्दुः शङ्खवर्णः कृतयुगभगवान् पद्मपुष्पाविधातुं
त्रेतायां काञ्चनाभः पुनरपि समये द्वापरे रक्तवर्णः।
शम्भुः संप्राप्तिकाले कलियुगसमये नीलमेघाम्बुनाभः
प्रद्योतः सृष्टिकर्ता परबलमथनः पातु मां नारसिंहः॥
- नरसिंहाष्टके

495. कुर्वन् गर्वाट्टहासं घुपुघुपुघुपिति प्रस्फुरत्केसराग्रे
आक्रम्याकाशमुच्चैरमररिपुपतिः भानुदण्डैर्गृहीत्वा।
उत्तानीकृत्य शेषान्निशितनखमुखैर्दारयन् तस्य वक्षः
प्रह्लादाह्लादकारी मधुभिदवतु वः पञ्चवक्त्रो मुरारिः॥
- सुभा० सुधा०

496. कोपाटोपनटत्सटोद्भटमटद् भ्रूभीषणभ्रूकुटि-
भ्राम्यद्भैरवदृष्टिनिर्भरनमद्दर्वीकरोर्वीधरम् ।
गीर्वाणारिवपुर्विपाटविकटाभोगत्रुटद्भाटक-
ब्रह्माण्डोरुकटाहकोटिनृहरेरव्याद‌पूर्वं वपुः॥
- वीरमित्रोदये मित्रमिश्रस्य

497. क्रोधोदग्रैस्सटाग्रैश्शिथिलितविगलत्तारकाहारहारी
नक्षत्रस्वच्छमुक्तावलिवलितविधुच्छत्रसच्छायकायः।
रक्षोवक्षो विनिर्यत्क्षतजनिघुसृणालेपजातावलेपः
सोऽव्यान्नो व्याजसिंहो मिलितजयरमोवीरशृङ्गारधारी॥

- परतत्त्वप्रकाशिकायां विजयीन्द्रतीर्थश्रीपादस्य

498. क्वेदं गर्जितमेषु किन्नु दलति स्तम्भो नृसिंहस्तत-
स्सोऽत्राधावति कोऽत्र भो धनुरसी हुंहेति दैत्येश्वरम्।
जल्पन्तं निजगर्जितेन बलवत् स्तम्भान्निरीयावधी-
देकस्मिन् क्षण एव हा नरहरिस्त्राता स एवास्तु वः॥

- सूक्तिमु०

499. क्षीराम्भोनिधिमध्यरत्नविलसत्प्रासादसिंहासने
शेषाहीशगतस्तदीयफणया छत्रेण संशोभितः।
श्वेतांशुः कमलान्वितस्त्रिनयनोऽभीष्टारिचापान्दधत्
सार्थं मच्छ्रममातनोतु नृहरिर्ग्रन्थं प्रविस्तारयन्॥

- महीधरकृत-वेददीपमातृकायां स्फुटश्लोकः

500. चक्र ब्रूहि विभो गदे जय हरे कम्बो समाज्ञापय
भो भो नन्दक जीव पन्नगरिपो किं नाथ भिन्नो मया।
को दैत्यः कुमतो हिरण्यकशिपुः सत्यं भवद्भ्यः शपे
केनास्त्रेण नखैरिति प्रवदतः शौरेर्गिरः पान्तु वः॥

- सदुक्ति० केशटस्य

501. चञ्चच्चण्डनखाग्रभेदविगलद्दैत्येन्द्रवक्षःक्षर-
द्रक्ताभ्यक्तसुपाटलोद्भटसटासंभ्रान्तभीमाननः।
तिर्यक्कण्ठकठोरघोषघटनासर्वाङ्गखर्वीभवद्दिङ्-
मातङ्गनिरीक्षितो विजयते वैकुण्ठकण्ठीरवः॥

- सुभा० सुधा० भा०

502. चटञ्चटिति चर्मणि च्छमिति चोच्छलच्छोणिते
धगद्धगिति मेदसि स्फुटतरोऽस्थिषु ष्ठादिति।
पुनातु भवतो हरेरमरवैरिनाथोरसि
क्वणत्करजपञ्जरक्रकचकार्षजन्मा रवः॥

- सदुक्ति० वाक्पतिराजस्य

503. चन्द्रार्धायितशुभ्रतीक्ष्णदशनो व्योमायितान्तर्मुखो
बालार्कायितलोचनः सुरधनुर्लीलायितभ्रूलतः।
अन्तर्नादनिरोधपीवरगलन्यक्कापनिर्यत्तडि-
त्तारस्फारसटावरुद्धगगनः पायान्नृसिंहो जगत् ॥

- सूक्तिमु० हनूमतः

504. जयन्ति नरसिंहस्य स्फुरन्नखशिखाङ्कुराः।
हरिणक्रोधकृष्टेन्दुकलाखण्डैरिवाङ्किताः॥

- सूक्तिमु०

505. जयन्ति निर्दारितदैत्यवक्षसो
नृसिंहरूपस्य हरेर्नखाङ्कुराः।
विचिन्त्य येषां चरितं सुरारयः
प्रियानखेभ्योऽपि रतेषु बिभ्यति॥

- सदुक्ति०

506. जृम्भाविकासितमुखं नखदर्पणान्त-
राविष्कृतप्रतिमुखं गुरुरोषगर्भम् ।
रूपं पुनातु जनितारिचमूविमर्श-
मुद्वृत्तदैत्यवधनिर्वहणं हरेर्वः॥

- हरविजये राजानकरत्नाकरस्य

507. दधानानेकां यः किरिपुरुषसिंहोभयजुषं
तदाकारोच्छेद्यां तनुमसुरमुख्यानजवरात्।
जघान त्रीनुग्राञ्जगति कपिलादीनवतु वः
स वैकुण्ठः कण्ठध्वनिचकितनिःशेषभुवनः॥

- स्टेन-अभिलेखे यशोवर्मनः

508. दिश्यद्भद्रं नृसिंहो युगपदुदितसूर्येन्दुकोटिप्रकाशो
मध्ये दुग्धाम्बुराशिं द्विरसनपतिना हृत्रितोद्भासिभोगः।
प्रह्लादोदीरिताद्यस्तुतिवदनकृतप्रीतिरुत्तंसितेन्दुः
वामाङ्काध्यासिलक्ष्म्या पुलकमुकुलशाल्यङ्गया लिङ्गितो वः॥

- दैवज्ञकल्पद्रुमे वीरभद्रस्य

509. दिश्यात् सुखं नरहरिर्भुवनैकवीरो
यस्याहवे दितिसुतोद्दलनोद्यतस्य।
क्रोधोद्धतं मुखमवेक्षितुमक्षमत्वं
जानेऽभवन्निजनखेष्वपि यन्नतास्ते॥

- सुभा० सुधा० भा०

510. देवः स पातु दितिजनिनायकनिधनैधिताधिकक्रोधः।
लक्ष्मीवदनसुधाकरदर्शनसञ्जातसौम्यसद्भावः॥

- शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

511. दैत्यानामधिपे नखाङ्कुरकुटीकोणप्रतिष्ठात्मनि-
स्फारीभूतकडारकेसरसटासङ्घातघोराकृतेः।
सक्रोधं च सविस्मयं च सगुरुव्रीडं च सान्तःस्मितं
क्रीडाकेसरिणो हरेर्विजयते तत्कालमालोकितम्॥

- सूक्तिमु० इन्द्रकवेः

512. दैत्यास्थिरपञ्जरविदारणलब्धरन्ध्र-
रक्ताम्बुनिर्जरसरिद्घनजातपङ्काः।
बालेन्दुकोटिकुटिलाः शुकचञ्चुभासो
रक्षन्तु सिंहवपुषो नखरा हरेर्वः॥

- वृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

513. दैत्येन्द्रं वरदर्पितं सरभसं भित्वाऽट्टहासे कृते
दृष्ट्वा यं कमलालया कुशलिनं जैत्रश्रियाऽलंकृतम्।
संहृष्टा परिषस्वजे सुरगणैस्संस्तूयमानं विभुं
तं लक्ष्मीकुचकुङ्कुमाङ्कितततनुं लक्ष्मीनृसिंहं नुमः॥

- आभोगे लक्ष्मी-नृसिंहस्य

514. दंष्ट्रासंकटवक्त्रघर्घरललज्जिह्वाभृतो हव्यभुग्
ज्वालाभास्वरभूरिकेसरसटाभारस्य दैत्यद्रुहः।
व्यावल्गद्बलवद्धिरण्यकशिपुक्रोडस्थलीपाटन-
स्पष्टप्रस्फुटदस्थिपञ्जररवक्रूरा नखाः पान्तु वः॥

- सदुक्ति० दक्षस्य

515. नमस्तस्मै नृसिंहाय दैत्यराजान्तकारिणे।
अन्तःक्रोधशिखा यस्य समुत्पन्नाः सटामिषात्॥

- सुभा०सुधा०भा०

516. नमो नरहरिं घोरदंष्ट्रानखरदारुणम्।
सन्मार्गोत्सादिदुर्दान्तदैत्यनिर्मूलनोद्यतम्॥

- लौगाक्षिगृह्यसूत्राणां भाष्ये देवपालस्य

517. नरमृगपतिवर्ष्मालोकनभ्रान्तनारी-
नरदनुजसुपर्वव्रातपाताललोकः।

507. दधानानेकां यः किरिपुरुषसिंहोभयजुषं
तदाकारोच्छेद्यां तनुमसुरमुख्यानजवरात् ।
जघान त्रीनुग्राञ्जगति कपिलादीनवतु वः
स वैकुण्ठः कण्ठध्वनिचकितनिःशेषभुवनः।।

- स्टेन-अभिलेखे यशोवर्मनः

508. दिश्यद्भद्रं नृसिंहो युगपदुदितसूर्येन्दुकोटिप्रकाशो
मध्ये दुग्धाम्बुराशिं द्विरसनपतिना द्वित्रितोद्भासिभोगः।
प्रह्लादोदीरिताद्यस्तुतिवदनकृतप्रीतिरुत्तंसितेन्दुः
वामाङ्काध्यासिलक्ष्म्या पुलकमुकुलशाल्यङ्गया लिङ्गितो वः।।

- दैवज्ञकल्पद्रुमे वीरभद्रस्य

509. दिश्यात् सुखं नरहरिर्भुवनैकवीरो
यस्याहवे दितिसुतोद्दलनोद्यतस्य।
क्रोधोद्धतं मुखमवेक्षितुमक्षमत्वं
जानेऽभवन्निजनखेष्वपि यन्नतास्ते।।

- सुभा० सुधा० भा०

510. देवः स पातु दितिजनिनायकनिधनैधिताधिकक्रोधः।
लक्ष्मीवदनसुधाकरदर्शनसञ्जातसौम्यसद्भावः।।

- शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

511. दैत्यानामधिपे नखाङ्कुरकुटीकोणप्रतिष्ठात्मनि-
स्फारीभूतकडारकेसरसटासङ्घातघोराकृतेः।
सक्रोधं च सविस्मयं च सगुरुव्रीडं च सान्तःस्मितं
क्रीडाकेसरिणो हरेर्विजयते तत्कालमालोकितम् ।।

- सूक्तिमु० इन्द्रकवेः

512. दैत्यास्थिरपञ्जरविदारणलब्धरन्ध्र-
रक्ताम्बुनिर्जरसरिद्घनजातपङ्काः।
बालेन्दुकोटिकुटिलाः शुकचञ्चुभासो
रक्षन्तु सिंहवपुषो नखरा हरेर्वः॥

- वृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

513. दैत्येन्द्रं वरदर्पितं सरभसं भित्वाऽट्टहासे कृते
दृष्ट्वा यं कमलालया कुशलिनं जैत्रश्रियाऽलंकृतम् ।
संहृष्टा परिषस्वजे सुरगणैस्संस्तूयमानं विभुं
तं लक्ष्मीकुचकुङ्कुमाङ्कितततनुं लक्ष्मीनृसिंहं नुमः॥

- आभोगे लक्ष्मी-नृसिंहस्य

514. दंष्ट्रासंकटवक्त्रघर्घरललज्जिह्वाभृतो हव्यभुग्
ज्वालाभास्वरभूरिकेसरसटाभारस्य दैत्यद्रुहः।
व्यावल्गद्बलवद्धिरण्यकशिपुक्रोडस्थलीपाटन-
स्पष्टप्रस्फुटदस्थिपञ्जररवक्रूरा नखाः पान्तु वः॥

- सदुक्ति० दक्षस्य

515. नमस्तस्मै नृसिंहाय दैत्यराजान्तकारिणे।
अन्तःक्रोधशिखा यस्य समुत्पन्नाः सटामिषात् ॥

- सुभा०सुधा०भा०

516. नमो नरहरिं घोरदंष्ट्रानखरदारुणम्।
सन्मार्गोत्सादिदुर्दान्तदैत्यनिर्मूलनोद्यतम् ॥

- लौगाक्षिगृह्यसूत्राणां भाष्ये देवपालस्य

517. नरमृगपतिवर्ष्मालोकनभ्रान्तनारी-
नरदनुजसुपर्वव्रातपाताललोकः।

करजकुलिशपालीभिन्नदैत्येन्द्रवक्षाः
सुररिपुबलहन्ता श्रीधरोऽस्तु श्रिये वः॥

- कर्णभारे भासस्य

518. नरहरिवपुषा यो दारयन् दानवीरः।
प्रकटयति समर्थोऽभेददृष्टावितीशः॥

- अद्वैतदीपिकायां नृसिंहाश्रमस्य

519. नारसिंहवपुः कृत्वा सर्व्वलोक-भयङ्करम्।
हिरण्यकशिपुं निघ्नन् तस्मै सिंहात्मने नमः॥

- अभिलेखे

520. न्यञ्चत्केसरमुत्तरङ्गपुलकस्त्रङ्नद्धमर्धस्खल-
द्हुन्ह्वालापमपास्तगर्जनमटद्भ्रूभङ्गमार्द्रेक्षणम्।
स्विद्यत्पाणि विनीतदृप्तिकरजं पायान्नृसिंहाकृते-
र्देवस्य श्रियमङ्कसीम्नि दधतो विश्रान्तरौद्रं वपुः॥

- सदुक्ति० वैद्यगदाधरस्य

521. पान्तु वो नरसिंहस्य नखलङ्गुलकोटयः।
हिरण्यकशिपोर्वक्षःक्षेत्रस्सृक्कर्दमारुणाः।

- अभिलेखे

522. पायान्मायामृगेन्द्रो जगदखिलसौ यत्तनूदर्चिरर्चि-
ज्वालाजालावलीढं वत भुवि सकलं व्याकुलं किं न्न भूयात्।
न स्याच्चेदाशु तस्याधिकविकटसटाकोटिभिः
पाट्यमानादिन्दोरानन्दकन्दात्तदुपरि तुहिनासारसंदोहवृष्टिः॥

- सुभा०सुधा०भा०

523. पुनन्तु भुवनत्रयं दलितदैत्यवक्षःस्थल-
प्रसर्पिरुधिरच्छटाच्छुरणबालसूर्यत्विषः।
दृढास्थिचयचूर्णनाघटितशब्दसारा हरे-
र्नृसिंहवपुषश्चिरं पिशितपिण्डगर्भा नखाः।

- सदुक्ति० धूर्जटिराजस्य

524. पूर्यन्ते जलराशयो वसुमती मज्जत्यधो लुप्यते
पातालं शतधा गतं निपतति ब्रह्माण्डखण्डं दिवः।
निक्षिप्तेन सुरद्विषोऽस्य वपुषा मत्वेति मन्ये वह-
न्नुत्सङ्गेन हतं हिरण्यकशिपुं सिंहो हरिः पातु वः॥

- सूक्तिमु०

525. प्रेङ्खद्भास्वरकेशरौघरचितत्रैलोक्यसन्ध्यातपो
ब्रह्माण्डोदररोधिघर्घरसघूत्कारप्रचण्डध्वनिः।
स्फूर्जद्वज्रकठोरघोरनखरक्षुण्णासुरोरःस्थली
रक्तास्वादविदीर्णदीर्घरसनः पायान्नृसिंहो जगत्॥

- सदुक्ति० वाक्पतिराजस्य

526. प्रोज्ज्वलज्वलनज्वालाविकटोरुसटाछटः।
श्वासक्षिप्तकुलक्ष्माभृत्पातु वो नरकेसरी॥

- सुभा०सुधा० भा०

527. प्रोद्भूतात्यन्तदर्पप्रबलितमनसां त्रासहेतुस्वभावं
कृत्वैतनारसिंहं स्फुटविकटसटं रूपमत्युग्ररौद्रम्।
येनोदीर्ण्णः पृथिव्यां खरनखरकरैर्भेदितो दैत्यराजः
श्रीमल्लोकैकनाथो भुवनहितकरः पातु युष्मान् स विष्णुः॥

- अभिलेखे

528. भद्रं पक्ष्मलयन्तु वो नरहरेरक्षुद्रशौर्या नखाः
स्तोकोन्मुद्रितपारिभद्रकलिकापाण्डित्यपाटच्चराः।
ये गर्वोच्छ्वसदिन्दिरास्तनतटीकाठिन्यसर्वं सहाः
क्रीडाकैतकपत्रलेखमलिखन्नेकातपत्रं द्विषाम् ।।

- काव्यप्रकाशस्य टीकायां साहित्यचूडामणि
इत्याख्यायां भट्टगोपालस्य

529. माता नृसिंहश्च पिता नृसिंहो भ्राता नृसिंहश्च सखा नृसिंहः
विद्या नृसिंहो द्रविणं नृसिंहः स्वामी नृसिंहस्सकलं नृसिंहः।
दूतो नृसिंहः परतो नृसिंहो यतो यतो याति ततो नृसिंहः
नृसिंहदेवाधिकं न जाने तस्मान्नृसिंहं शरणं प्रपद्ये।।

- हनुमद्व्रतकल्पे

530. यदर्पितं कर्म फलाय कल्पते यदर्पितं बन्धविमुक्तयेऽपि च।
सच्चित्सुखानन्तमनन्यमीश्वरं वन्दे नृसिहं दुरितेभदारणम् ।।

- श्रौतसूत्रे सत्याषाढस्य

531. यस्यांघ्रिकंजमकरंदलिहोलयोमी
व्यासादयो विविधवाङ्मयमाचिकीर्षुः।
भक्तार्त्तिदैत्यदमनाय कृतावतारो
विघ्नं स नो नरहरिर्निखिलं निहन्यात् ।।

- वैद्यजीवनस्य टीकायां हरिनाथस्य

532. ये बालेन्दुकलार्धविभ्रमभृतो मायानृसिंहाकृते-
र्नियाता इव ये सिरासरणिभिर्नाभ्यब्जकन्दाङ्कुराः।
ते वक्षःस्थलदारितांसुरसरित्कीलालधारारुणाः
पायासुर्नवकिंशुकाग्रमुकुलश्रीसाक्षिणः पाणिजाः।।

- सदुक्ति० वराहस्य

533. योऽनंतोऽनंतशक्तिः सृजति जगदिदं पालयत्यंतरात्मा
संविश्यान्ते निपीय स्वकमहिमगतः सत्यचिन्मूर्तिरास्ते।
योऽनुग्रः सज्जनानां परमहिततमः पापिनामुग्रमूर्त्तिः
सोऽस्माकं वाञ्छितानि प्रदिशतु भगवानात्मदः श्रीनृसिंहः।।

- छान्दोग्योपनिषद्व्याख्यायां मिताक्षराख्यायां नित्यानन्दस्य

534. रक्तारुणा नृसिंहस्य कुटिला विद्विषा वधे।
नखश्रेणी च दृष्टिश्च निहन्तुं दुरितानि वः।।

- दशमे लम्बके कथासरित्सागरे सोमदेवभट्टस्य

535. लक्ष्मीमुरःपरिसरे वहतः सलीलं
योगासनं च चरतो नृहरेर्जयन्ति।
एकक्षणोपनतमान्मथभावमुग्ध-
स्वात्मावबोधमसृणानि विलोकितानि।।

- सदुक्ति0

536. लक्ष्मीसेवितपादपद्मयुगलं विश्वेषु सारायितम्
लीलाविग्रहधारिणं सुविदुषामानन्दकन्दाङ्कुरम् ।
कारुण्यामृतनिर्झरं श्रुतिमनोवाचामगम्यं परम्
भक्ताभीष्टफलप्रदाननिरतं श्रीमन्नृसिहं भजे।।

- नृसिंहप्रसादे दलपतिराजस्य

537. लक्ष्म्या सशङ्कसरसीरुहलोचनाभ्याम्
दृष्टं चतुर्मुखमुखाऽखिलदेववन्द्यम् ।
प्रह्लादरक्षणपराङ्मुखविश्वकार्यम्
लक्ष्मीनृसिंहमनिशं प्रणमामि भक्त्या।।

- तत्त्वप्रकाशिकाव्याख्यायां भावबोधाख्यायां रघूत्तमयतेः

538. ललल्लक्ष्मीलोलस्खलितनयनप्रान्तकलित-
स्फुरत्सौवर्णाभद्युतिपटलसौभाग्यजलधे।
नृसिंह प्रत्यक्षीभव करुणया देहि शरणम्
निरालम्बं चेतो भ्रमति भुवने कातरतया।।

- नृसिंहप्रसादे दलपतिराजस्य

539. वधूटीवक्षोजद्वितयघुसृणालिप्तहृदयः
दयासिन्धुर्बन्धुर्दनुजशिशवे स्तम्भजननः।
मुखे सिंहः श्रेयस्सुरनरतिरश्चामपि विभुः।
स्वयं देवो देयाद्यदुशिखरिशृङ्गाग्रवसतिः।।

- निक्षेपरक्षाव्याख्यायां नृसिंहराजस्य

540. वपुर्दलनसम्भ्रमात् स्वनखरं प्रविष्टे रिपौ
क्व यात इति विस्मयात् प्रहितलोचनः सर्वतः।
वृथेति करधूतिभिर्निपतितं पुनर्दानवं
निरीक्ष्य भुवि रेणुवज्जयति जातहासो हरिः।।

- सूक्तिमु०

541. वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये संवित्तं नृसिंहमहं भजे।।

- शिवपुराणे

542. विदारयन् हरिः पातु हिरण्यकशिपोरुरः।
तदन्तर्गतमात्मीयन्द्वेषमन्वेषयन्निव।।

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

543. विद्युच्चक्रकरालकेसरसटाभिन्नाम्बुदश्रेणयः
शोणं नेत्रहुताशडम्बरभृतः सिंहाकृतेः शार्ङ्गिणः।

विस्फूर्ज्जद्गलगर्ज्जितर्ज्जितककुम्मातङ्गदर्पोदयाः
संरम्भास्सुखयन्तु वः खरनखक्षुण्णद्विषद्वक्षसः।।

- हर्सोल-दानपत्राभिलेखे परमारसियूकस्य

544. विशदयितुमर्थतत्त्वं विनिहन्तुं चान्तरीयसन्तमसम्।
मम मनसि सन्निधत्तां नरहरिशबलाकृतिर्ज्योतिः।।

- न्यायकुसुमाञ्जलिबोधिन्यां वरदराजस्य

545. विष्णोर्द्धारयतः सदाकवचितस्कन्धां नृसिंहार्द्धतां
देयासुः करपत्रयन्त्रनिशिताः शश्वत्सुखं वो नखाः।
यैर्वक्षःखनता हिरण्यकशिपोर्देवेन दत्तश्रिया-
मुत्खातः सुचिरोत्थितो हृदि महानदुःखद्रुमो नाकिनाम् ।।

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

546. व्याधूतकेसरसटाविकरालवक्त्रं
हस्ताग्रविस्फुरितशंखगदासिचक्रम् ।
आविष्कृतं सपदि येन नृसिंहरूपं
नारायणं तमपि विश्वसृजं नमामि।।

- कादम्बरीकथा-उत्तरार्द्धे बाणभट्टसूनोः

547. शत्रोः प्राणानिलाः पञ्च वयं दश जयोऽत्र कः।
इति कोपादिवाताम्राः पान्तु वो नृहरेर्नखाः।।

- सुभा०सुधा०भा०

548. श्रीकुचाम्भोजयुगले कस्तूरीमदसङ्कुले।
नखैर्लिखन्तं चित्राणि श्रीनृसिंहमहं भजे।।

- कच्छपुटतन्त्रे नागार्जुनस्य

549. श्रीपतिर्निजभक्तानां रक्षणे दत्तमानसः।
खादिरो नरसिंहोऽसौ पातु मां करुणाकरः।

- मणिकण्ठकृत न्यायरत्नस्य टीकायां
द्युतिमालिकायां नृसिंहयज्वस्य

550. श्रीवक्त्राम्बुजदर्शनोत्सवदरस्मेरं पुरस्तान्नम-
त्प्रह्लादाभयदानवाक्यचटुलं प्रान्तोच्चलत्केसरम्।
दंष्ट्राकान्तिविचित्रकुण्डलरुचिप्रस्फीतगण्डस्थलम्
देयान्मर्त्यहरेर्मुखाब्जमचिराच्छ्रेयांसि भूयांसि नः॥

- भिल्लकन्यापरिणये

551. सटाग्रव्यग्रेन्दुस्रवदमृतबिन्दुप्रतिबलन् -
महादैत्यारम्भस्फुरितगुरुसंरम्भरभसः।
लिहन्नाशाचक्रं हुतवहशिखावद्रसनया
नृसिंहो रंहोभिर्दमयतु मदंहो मदकलम्।

- वीरमित्रोदये मित्रमिश्रस्य

552. सद्योदलितदैत्यैन्द्रदलद्वयदिदृक्षया।
विस्फारितं दिक्षु चक्षुर्नारसिहं नमाम्यहम्॥

- न्यायलीलावतीटीकायां भगीरथठाकुरस्य

553. सन्ध्यारञ्जितशीतदीधिकलासौन्दर्यभाजो नखाः
प्रीतिं पीवरयन्तु कैटभरिपोः कीडानृसिंहस्य वः।
दैत्योरस्थलपीठकुण्ठिततया दानेन दम्भोलिना
सासूयं सकुतूहलं संविनयं माश्चर्यमालोकिताः॥

- सूक्तिमु0 बालसरस्वत्याः

554. ससत्वरमितस्ततस्ततस्ततविहस्तहस्ताटवी
निकृत्तसुरशत्रुहृत्क्षतजसिक्तवक्षःस्थलः।
स्फुरद्वरगभस्तिभिः स्थगिंत सप्तसप्तिद्युतिः
समस्तनिगमस्तुतो नृहरिरस्तु नः स्वस्तये॥

- सुभा०सुधा०भा०

555. सिन्धुसुताकुचकुङ्कुमपाटलवक्षःस्थलं किमपि।
उपवीणितं च निगमैः सटाजटालं महः कलये॥

- शृङ्गारामृतलहर्य्यां सामराजदीक्षितस्य

556. सुमेरुशृङ्गाग्रनिविष्टरश्मेः
सहस्त्रभानोः श्रियमाददानः।
सुदानवांतोत्तलितैः कराग्रैः
स वो नृसिंहो दुरितं भिनत्तु॥

- अजयगढ़-प्रस्तराभिलेखे नानस्य

557. सुरारिवक्षोविक्षोभप्रारम्भस्फारडम्बरः।
क्रीडासिंहस्वरूपस्य हरेः स्ताद्वो विभूतये॥

- काव्यप्रकाशस्य दीपिकाख्यायां टीकायां चण्डीदासस्य

558. सुरासुरशिरोरत्नकान्तिविच्छुरिताङ्घ्रये।
नमस्त्रिभुवनेशाय हरये सिंहरूपिणे॥

- सुभा०सुधा०भा०

559. सोमार्धायितनिष्पिधानदशनः सन्ध्यायितान्तर्मुखो
बालार्कायितलोचनः सुरधनुर्लेखायितभ्रूलतः।
अन्तर्नादगभीरपल्वलगलत्वग्रूपनिर्यत्तडित्
तारस्फारसटावरुद्धगगनः पायान्नृसिंहो जगत् ॥

- सदुक्ति० मुरारेः

560. सोऽहंमावमदाभिभूतमनसं मत्तोऽस्ति कोऽन्यो जग-
त्कर्तेति प्रसभं हिरण्यकशिपुं पृच्छन्तमार्य सुतम् ।
दासोऽहं मतिपूर्णभक्तिभरितप्रह्लादपालो मम
स्तम्भादेत्य रिपुं निगृह्य विजयी लक्ष्मीनृसिंहो गतिः।।

- तत्त्वप्रकाशिकायाष्टीकायां भावबोधाख्यायां रघूत्तमयतेः

561. स्तम्भाभ्यन्तरगर्भभावनिगदव्याख्याततद्वैभवो
यः पाञ्चाननपाञ्चजन्यवपुषा व्यादिष्टविश्वात्मतः।
प्रह्लादाभिहितार्थतत्क्षणमिलद्दृष्टप्रमाणो हरिः
सोऽव्याद्वः शरदिन्दुसुन्दरतनुः सिंहाद्रिचूडामणिः।।

- तत्त्वप्रदीपिकायां चित्सुखाचार्यस्य

562. स्वच्छन्दं वैरिवक्षःस्थलकुलिशभिदोवीक्ष्य कन्दर्पचाप-
क्रीडाभाजो नखाग्रान् समसमयभयानन्दलोलायताक्ष्याः।
लक्ष्म्या वक्षोजकुम्भं करिकलभशिरःशङ्कयावीक्ष्यमाणः
स्वैरं शान्ताक्षिरागो जयति नरहरिर्जातचित्तानुरागः।।

- सदुक्ति० जलचन्द्रस्य

563. स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।
त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः।।

- ध्वन्यालोके आनन्दवर्धनाचार्यस्य

वामनावतारः

564. अङ्घ्रिदण्डो हरेरूर्ध्वमुत्क्षिप्तो बलिनिग्रहे।
विधिविष्टरपद्मस्य नालदण्डो मुदेऽस्तु वः।।

- सुभा० सुधा० भा०

565. अपसर पृथिवि समुद्राः संवृणुताम्बूनि-भूभृतो नमत।
वामनहरिलघुतुन्दे जगतीकलहः स वः पातु॥

- सदुक्ति० भवानन्दस्य

566. अव्याद्वो वामनो यस्य कौस्तुभप्रतिबिम्बिता।
कौतुकालोकनी जाता जाठरीव जगत्त्रयी॥

- सुभा० सुधा० भा० विजयमाधवस्य

567. अहीन्द्रलोकं बलये प्रदाय
सुरेन्द्रराज्यं हरये ददौ यः।
खगेन्द्रकेतुं करुणाम्बुधिं तम्
उपेन्द्रसंज्ञं भगवन्तमीडे॥

- वराहमिहिरहोराशास्त्रस्य टीकायां अपूर्वार्थप्रकाशिकाख्यायाम्

568. आकृष्टः शिखया नखैर्विलिखितः स्पृष्टः कपोलस्थले
मौलौ दामभिराहतः प्रतिदिशं क्रामन् सलीलं पथि।
इत्थं वारविलासिनीकृतपरीहासस्य दैत्याध्वरे
विष्णोर्वामनवेषविभ्रमभृतो हासोर्मयः पान्तु वः॥

- सूक्तिमु० हनूमतः

569. इदं प्रायो लोके न परिचितपूर्वं नयनयो-
र्न याच्ञा यत्पुंसः सुगुणपरिमाणं लघयति।
विशद्भिर्विश्वात्मा स्ववपुषि बलिप्रार्थनकृते-
त्रपालीनैरङ्गैर्यदयमभवद्वामनतनुः॥

- सदुक्ति० वङ्गस्य

570. कस्त्वं ब्रह्मन्नपूर्वस्त्वदनुचरजनो नास्त्यनाथोऽहमेकः
किं दद्यामीप्सितं ते त्रिपदविहरणस्थानमेतत् कियत्ते।

त्रैलोक्यं तद्द्विजातेर्मम शमनिरतस्येति संमूढभावा
विष्णोर्वाचः सुरारौ कृतकपटपदन्यासमुग्धाः पुनन्तु।।

- सूक्तिमु० हनूमतः

571. कस्त्वं ब्रह्मन्नपूर्वः क्व च तव वसतिर्याखिला ब्रह्मसृष्टिः
कस्ते नाथो ह्यनाथः क्व च तव जनको नैव तातं स्मरामि।
किं तेऽभीष्टं ददामि त्रिपदपरिमिता भूमिरल्पं किमेतत्
त्रैलोक्यं भावगर्भं बलिमिदमवदद्वामनो नः स पायात् ।।

- सुभा० सुधा० भा०

572. किं छत्रं किं नु रत्नं किमु तिलकमिदं कुण्डलं कौस्तुभो वा
चक्रं वा वारिजं वेत्यमरयुवतिभिः यद्बलिद्वेषिदेहे।
ऊर्ध्वं मौलौ ललाटे श्रवसि हृदि करे नाभिदेशे च दृष्टं
पायात्तद्वोऽर्कबिम्बं स च दनुजरिपुर्वर्धमानः क्रमेण।।

- सुभा०सुधा०

573. कुतस्त्वमणुकः स्वतः स्वमिति किं न यत्कस्याचि-
त्किमिच्छसि पदत्रयं ननु भुवा किमित्यल्पया।
द्विजस्य शमिनो मम त्रिभुवनं तदित्याशयो
हरेर्जयति निह्नुतः प्रकटितश्च वक्रोक्तिभिः।।

- सदुक्ति० वाक्पतेः

574. खर्वग्रन्थिविमुक्तसन्धिविकसद्वक्षःस्फुरत्कौस्तुभं
निर्यन्नाभिसरोजकुड्मलकुटीगम्भीरसामध्वनि।
पात्रावाप्तिसमुत्सुकेन बलिना सानन्दमालोकितं
पायाद्वः क्रमवर्धमानमहिमाश्चर्यं मुरारेर्वपुः।।

- सदुक्ति० वाक्पतिराजस्य

575. चञ्चत्पादनखाग्रमण्डलरुचिप्रस्यन्दिगङ्गाजलो
विस्फूर्जद्बलिराज्यनाशपिशुनोत्पाताम्बुवाहद्युतिः।
पातु त्वां चरणो हरेः क्रमविधौ यस्याधिकं द्योतते
दूरादङ्गुलिमुद्रिकामणिरिव स्फारांशुजालो रविः।।

- सदुक्ति० विक्रमादित्यस्य

576. चन्द्रार्कौ यावदङ्घ्र्युद्भवदमरसरित्तोयताम्यत्त्रिलोकी-
केदारे देवलक्ष्मीपुनरुदयविधौ बीजभावं भजन्त्यः।
वित्रस्यद्भूर्भुवः स्वःक्रमणकुतुकिनो निष्पतन्त्यः समान्ताद्
देयासुर्दानवारेः पदकमलरजोराजयो मङ्गलं वः।।

- सूक्तिमु० देवबोधेः

577. जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो बिभित्सया यः क्षणलब्धलक्ष्यया।
दृशैव कोपारुणया रिपोरुरः स्वयं भयाद्भिन्नमिवास्रपाटलम् ।।

- सुभा०सुधा०भा०

578. त्रैलोक्याधिपतेःपदत्रयभुवं दैत्याधिपं याचतो
दत्तां सत्वमयेन तेन वसुधामेवाग्नतो गृह्णतः।
देवार्थे चलिनं बलिं छलयतोप्यस्मै हरेस्तुष्यतः
स्वं राज्यं प्रतिभूपविष्णुरूपरिस्वस्त्यक्षरं पातु वः।।

- दानवाक्यावल्याम्

579. नमाम वामनन्धाम त्रिभिस्त्रिभुवनं पदैः।
वामनीकृत्य कथिता येनात्मनि तदात्मता।।

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

580. पादः पायादुपेन्द्रस्य सर्वलोकोत्सवः स वः।
व्याविद्धो नमुचिर्येन तनुताम्रनखेन खे।।

- दूतवाक्ये भासस्य

581. पायात् स वोऽसुरवधूहृदयावसादः
पादो हरेः कुवलयामलखड्गनीलः।
यः प्रोद्यतस्त्रिभुवनक्रमणे रराज
वैदूर्यसंक्रम इवाम्बरसागरस्य॥

- मध्यमव्यायोगे भासस्य

582. पायासुर्बलिवञ्चनव्यतिकरे देवस्य विक्रान्तयः
सद्यो विस्मितदेवदानवनुतास्तिस्त्रस्त्रिलोकीं हरेः।
यासु ब्रह्मवितीर्णमर्घ्यसलिलं पादारविन्दच्युतं
धत्तेद्यापि जगत्रयैकजनकः पुण्यं स मूर्ध्ना हरेः॥

- प्रस्तराभिलेखे यशोवर्मणः

583. पूज्यो ब्रह्मविदां त्वमेव विमलज्ञानैकपात्रं भवा-
न्मद्भाग्येन गतोऽतिथित्वमधुना किं ते त्रिभिर्भूपदैः।
त्रैलोक्यं भवतः स्वमित्युपगतौ दैत्येश्वरेणादरा-
ज्ज्ञातोस्मीति सलज्जनम्रवदनः पायाज्जगद्वामनः॥

- सदुक्ति० वसुसेनस्य

584. ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः
क्षोणीनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः।
ज्योतिश्चक्राक्षदण्डस्त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डोऽङ्घ्रिदण्डः
श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः॥

- दशकुमारचरिते दण्डिनः

585. यत्काण्डं गगनद्रुमस्य यदपि क्षोणीतडागोदरे
देवस्यैव यशोम्बुशोभिनि महायष्टिः प्रतिष्ठाकरी।

तद्विष्णोः पदमन्तरालजलधेराधारतो भूतला-
त्पारं द्यामुपगन्तुमुद्यमवतां सेतूभवत्पातु वः॥

- सदुक्ति० चक्रपाणेः

586. याच्ञां चेतसि मत्सराद्विरहितस्येव श्रिया विभ्रतः
प्रत्यङ्गं लघुतां च वामनहरेः पादद्वयं पातु वः।
हंस्तानां विविधायुधप्रमथितामर्त्यद्विषाभीर्ष्यया
नूनं येन रसातलं प्रगमितो विक्रम्य वैराचनः॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

587. यः प्रादादसुराधिपो मखवरे दत्वार्घ्यमाद्याय गां
सद्वीपां सचराचराम्बुधिमुदा देवाय दैत्यद्विषे।
सोऽभूद् वामनरूपिणे बलिरिति ख्यातः सुरोपद्रव-
व्यापारैकरतः शिवांघ्रिकमलद्वन्द्वार्च्चनैकव्रतः॥

- दानपत्राभिलेखे-विक्रमादित्यस्य द्वितीयस्य

588. शुक्राक्षिविक्षेपमिषाद्रिपूणां
विरूपयन्नीतिमिवामिताभः।
बलिप्रमादोद्भववर्द्धमानः
स वामनो वोभ्युदयं ददातु॥

- अजयगढ़-प्रस्तराभिलेखे नानस्य

589. श्रियमभिमतभोग्यां नैककालापनीतां
त्रिदशपतिसुखार्थं यो बलेराजहार।
कमलनिलयनायाः शाश्वतं धामलक्ष्म्या
स जयति विजितार्त्तिर्विष्णुरत्यन्तजिष्णुः॥

जूनागढ- शिलालेखे स्कन्दगुप्तस्य

590. स्वस्ति स्वागतमर्थ्यहं वद विभो किं दीयतां मेदिनीं
का मात्रा मम विक्रमत्रयपदं दत्तं गृहीतं मया।
मा देहीत्युशना कुतोहरिरयं पात्रं किमस्मात्परं
यो हीत्थं बलिनार्चितो मखमुखे पायात्स वो वामनः॥

- सुभा०

591. स्वामी सन्भुवनत्रयस्य विकृतिं नीतोसि किं याञ्चया
यद्वा विश्वसृजा त्वयैव न कृतं तद्दीयतां ते कुतः।
दानं श्रेष्ठतमाय तुभ्यमतुलं बन्धाय नो मुक्तये
विज्ञप्तो बलिना निरुत्तरतया ह्रीतो हरिः पातुः वः॥

- सुभा०

592. स्वीकुर्वाणा त्रिलोकीमसुरपरिवृढध्वंसनायातिदूरो-
दञ्चद्विस्तारिहस्तातिथितरणिसुधारश्मिबिम्बच्छलेन।
काष्ठामात्रं गृहीतापररुचिरलसच्छङ्खचक्रेव शोभां
दध्रे मूर्त्तिर्यदीया वितरतु स हरिर्भूयसीमुन्नतिं वः॥

- अभिलेखे नरवर्मणः

593. हरिपादः स वः पायाल्लम्भितो यः स्वयम्भुवा।
यस्यासन्नरवेरासीत् स्वेदरेखेव जाह्नवी॥

- सूक्तिमु० राजशेखरस्य

594. हस्ते शस्त्रकिणाङ्कितोऽरुणविभाकिर्मीरितोरःस्थलो
नाभिप्रेङ्खदलिर्विलोचनयुगप्रोद्भूतशीतातपः।
बाहुर्मिश्रितवह्निरेष तदिति व्याक्षिप्य वाक्यं कवे-
स्तारैरध्ययनैर्हरन्बलिमनः ग्रायाज्जगद्वामनः॥

- सुभा०सुधा०भा०

परशुरामावतारः

595. किं दोर्भ्यां किमु कार्मुकोपनिषदा भर्गप्रसादेन किं
किं वेदाधिगमेन भास्वति भृगोर्वंशे च किं जन्मना।
किं वानेन ममाद्भुतेन तपसा पीडां कृतान्तोऽपि चेत्
विप्राणां कुरुतेऽन्तरित्यनुशयो रामस्य पुष्णातु वः।।

- सुभा० सुधा० भा०

596. कुलाचला यस्य महीं द्विजेभ्यः
प्रयच्छतः सीमदृषत्त्वमापुः।
बभूवुरुत्सर्गजलं समुद्राः
स रैणुकेयः श्रियमातनोतु।।

- सुभा० सुधा० भा०

597. कृत्वा लेखनिकां कुठारमुदयद्वारे नियिद्धाध्वरे
यः क्षत्रक्षतजातजातसुमषीं मेलाम्बुमम्भोनिधिम्।
पत्रं दिग्वलयं स्वमक्षरचणं निर्व्वर्त्तयन् शासनम्
विप्रेभ्यः पृथिवीमदादुदयिनीं रामाय तस्मै नमः।।

- मान्धाता-पत्राभिलेखे परमारजयसिंहजयवर्मनः

598. जीयात् परशुरामोऽसौ क्षत्रैः क्षुण्णं रणाहतैः।
सन्ध्यार्कबिम्बमेवोर्व्वी-दातुर्यस्यैति ताम्रताम्।।

- मान्धाता-पत्राभिलेखे देवपालस्य

599. त्रिभुवनगुरुशिष्यश्चापवेदे मनीषी
निशितपरशुलूनाशेषराजन्यवंशः।
जयति मुनिसमज्यारज्यदात्मा सहस्रा-
र्जुनभुजवनखण्डाङ्गारकृज्जामदग्न्यः।।

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

600. त्रि:सप्तावधि बाधिता क्षितिभुजामाजन्म वैखानसः
कर्ता मातृवधैनसः स सकलश्रुत्यर्थवीथीगुरुः।
विश्वस्याश्च भुवः क्रतौ वितरिता श्यामाकमुष्टिंपचो
रामः सोऽयमुदग्रगेयमहिमा कासां गिरां गोचरः॥

- सदुक्ति०

601. दिङ्मातङ्गघटाविभक्तचतुराघाटा मही साध्यते
सिद्धा सापि वदन्त एव हि वयं रोमाञ्चिताः पश्यत।
विप्राय प्रतिपाद्यते किमपरं रामाय तस्मै नमो
यत्रैवाविरभूत्कथाद्भुतमिदं यत्रैव चास्तंगतम् ॥

- सदुक्ति० केशटस्य

602. द्वारे कल्पतरुर्गृहे सुरगवी चिन्तामणीनङ्गदे
पीयूषं सरसीषु विप्रवदने विद्याश्चतस्त्रोदश।
एवं कर्त्तुमयं तपस्यति भृगोर्वंशावतंसो मुनिः
पायाद्वोऽखिलराजकक्षयकरो भूदेवभूषामणिः॥

- सुभा०सुधा०भा०

603. नाशिष्यः किमभूद्भवः किमभवन्नापुत्रिणी रेणुका
नाभूद्विश्वमकार्मुकं किमिति वः प्रीणातु रामत्रपा।
विप्राणां प्रतिमन्दिरं मणिगणोन्मिश्राणि दण्डाहते-
नाब्धीनां स मया मयोऽपि महिषेणाम्भांसि नोद्वाहितः॥

- सुभा० सुधा० भा०

604. नो सन्ध्यां समुपासते यदि तदा लोकापवादाद्भयं
सा चेत्स्वीक्रियते भविष्यति तदा राजन्यबीजे नतिः।
इत्थं चिन्तयतश्चिरं भृगुपतेर्निश्वासकोष्णीकृतो
नेत्रान्तःप्रतिबिम्बशोणसलिलः सन्ध्याञ्जलिः पातु वः॥

- सुभा० सुधा० भा०

605. पायाद्वो जमदग्निवंशतिलको वीरव्रतालङ्कृतो
रामो नाम मुनीश्वरो नृपवधे भास्वत्कुठारायुधः।
येनाशेषहताहिताङ्गरुधिरैः संतर्पिताः पूर्वजा
भक्त्या चाश्वमखे समुद्रवसना भूर्हन्तकारीकृता।।

- सुभा०सुधा०भा०

606. बालरूपं समं रामं भृगुवंशदिवाकरम्
सर्वाङ्गेषु च लावण्यं पीतवस्त्रं मनोहरम् ।
गौराङ्गं कमलनेत्रं कोटिमन्मथसुन्दरम्
दर्शनीयं मुखाब्जं च शारदेन्दुसमप्रभम् ।।

- अनुभवपुरा०

607. लीलोन्मूलितमौलिमस्तचरणं मूर्धस्वपि क्ष्माभृता-
मास्कन्धादपबाहुशाखमभितः कृत्वा सहस्रार्जुनम् ।
यश्चक्रे भुवने तमेव विजयस्तम्भं कुठारायुधो
दत्तां वः शिवमाहवैकरसिको रामः स राजान्तकः।।

- सूक्तिमु० हनूमतः

608. शौर्यं शत्रुकुलक्षयावधि यशो ब्रह्माण्डखण्डावधि-
त्यागः सप्तसमुद्रमुद्रितमहीनिर्व्याजदानावधिः।
वीर्यं यत्तु गिरां न तत्पथि ननु व्यक्तं हि तत्कर्मभिः
सत्यं ब्रह्मतपोनिधेर्भगवंतः किं किं न लोकोत्तरम् ।।

- सदुक्ति० भवभूतेः

609. स्तुमस्तमुद्यते यस्य त्रासात्त्रिस्सप्रधाव्यधात् ।
क्षत्रियक्षतजाम्भोधावन्तर्द्धानं वसुन्धरा।।

- सूक्तिमुक्तावली हरिहरस्य

610. हा तातेति न जल्पितं न रुदितं न स्वीकृतं तद्धनं
न स्नातं न च वीक्षितः परिजनः पित्रे न दत्तं जलम् ।
यावन्नक्रकचाभिघातविगलद्दाम्नामरीणामसृ-
ग्गण्डूषैर्घनघोरघर्घररवाः सन्तर्पिताः फेरवः॥

- सदुक्ति. केशटस्य

बलरामः

611. आघूर्णद्वपुषः स्खलन्मृदुगिरः किञ्चिल्लसद्वाससी
रेवत्यं सनिषण्णनिःसहभुजस्याताम्रनेत्रद्युतेः।
श्वासामोदमदान्धषट्पदकुलव्यादष्टकण्ठस्त्रजः
पायासुः परिमन्थराणि हलिनो मत्तस्य यातानि वः॥

- सदुक्ति० कोकस्य

612. निष्पात्याशु हिमांशुमण्डलमधः पीत्वा तदन्तं सुधां
कृत्वैनं चषकं हसन्निति हलापानाय कौतूहलात् ।
भो देव द्विजराजि मादृशि सुरास्पर्शोऽपि न श्रेयसे
मां मुञ्चेति तदार्थितो हलधरः पायादपायाज्जगत् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

613. फालाग्रेण समुद्धरन् कुरुपुरं दृप्तप्रमादं हरन्
स्मारं स्मारमनादरोक्तिमविदां तां तां किरन् सुस्मितम् ।
संहारोऽसमये कुतोऽयमिति तैर्निर्मुक्तदर्पैः स्तुतः
शान्तो दीनदयानिधिः स भगवान् पायात् प्रलम्बान्तकः॥

- सुभा० सुधा० भा०

614. भभभ्रमति मेदिनी लललम्बते चन्द्रमाः
कृकृष्ण ववद द्रुतं हहहसन्ति किं वृष्णयः।

शिशीधु मुमुमुञ्च मे पपपपानपात्रस्थितं
मदस्खलितमालपन् हलधरः श्रियं वः क्रियात् ॥

- सदुक्ति० पुरुषोत्तमदेवस्य

615. भ्रमति धरणीचक्रं चक्रे नभस्तलयन्त्रणात्
प्रभवति न मे गात्रं किंचित्क्रियासु विघूर्णते।
जलधिसलिले मग्नं विश्वं विलोक्य रेवति
त्रिजगदवताज्जल्पन्नेवं हली मदविह्वलः॥

- सदुक्ति० माधवस्य

616. रेवतीदशनोच्छिष्टपरिपूतपुटे दृशौ।
वहन् हली मदक्षीवः पानगोष्ठ्यां पुनातु वः॥

- सदुक्ति० माघभोजदेवयोः

617. सुरापीतो गोत्रस्खलनपरिवृद्धाधिकरूपः
प्रसादं रेवत्या जनयितुमनीशः कथमपि।
विचुम्बन् संश्लिष्यन् स्तनवसनमस्यन्नविरतं
मधून्मादाविष्टः स किल बलभद्रो विजयते॥

- सदुक्ति० लक्ष्मीधरस्य

कल्किः

618. आघ्राणश्रवणावलोकनरसास्वादादयश्चुम्बन-
श्रद्धा वाग्विषवर्षणं च शिरसो दोषा इमे यैर्जनः।
मूढो लङ्घित सत्पथोऽयमिति संक्रुद्धः शठानां हठाद्यः
शीर्षाणि कृपाणपाणिरलुनात्तस्मै नमः कल्किने॥

- सदुक्ति० कुलदेवस्य

619. उद्यतकरकरवालः शकतिमिरध्वंसने महानिपुणः।
कल्किहरिर्वः पायादपायतः कलिना शान्तोत्थः॥

- सुभा० सुधा० भा०

620. कल्की कल्कं हरतु जगतः स्फूर्जदूर्जस्वितेजा
वेदोच्छेदस्फुरितदुरितध्वंसने धूमकेतुः।
येनोत्क्षिप्य क्षणमसिलतां धूमवत्कल्मषेच्छान्
म्लेच्छान् हत्वा दलितकलिनाकारि सत्यावतारः॥

- सदुक्ति० जयदेवस्य

621. तार्क्ष्यारोहणनिःस्पृहस्य तुरगेनोढस्य वर्हं विना
कालो यस्य करे स्थितः कलिसमुच्छेदं करिष्यत्यसिः।
गोसंयुक्तवृषं विधास्यति कृतं सृष्ट्वा प्रकृष्टं युगं
म्लेच्छानामवसानकृत्स भगवान् कल्की हरिः पातु वः॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

622. तीर्थानां शतमस्ति किंतु फलति श्रद्धाभरादित्यसे-
र्धारातीर्थमपूर्वमेव कलयन् कल्की शिवायास्तु वः।
यत्प्राप्याखिलवेदभेदकधियः श्रद्धातिरस्कारिणः
शक्रस्यातिथयो भवन्ति भवनेष्वेनस्विनो जन्तवः॥

- सदुक्ति०

623. प्रेङ्खद्वाजितरङ्गमुन्मदगजग्राहप्रगल्भं भट-
व्यावल्गत्स्फुटपुण्डरीकनिलयं डिण्डीपिण्डावलिम्।
म्लेच्छानीकमहार्णवं सुविपुलं सङ्ग्रामकल्पावधौ
यश्चौर्वाग्निरिवाभवद्व्यतु स वः कल्कानि कल्की हरिः॥

- सुभा० सुधा० भा०

624. भ्रान्त्वा महीं तत इतस्तुरगाधिरूढो
वेदद्विषो विदलयन् दलिताखिलाशः।
देवो निवर्तितकलिः कृतमार्गदर्शी
कल्कं स ते हरतु कल्किकुले भविष्यन् ॥

- सदुक्ति०

625. वामनादणुतमादनु जीया
स्त्वं त्रिविक्रमतनूभृतदिक्कः।
वीतहिंसनपंथादथ बुद्धात्
कल्किताहतसमस्त नमस्ते॥

- सदुक्ति० श्रीहर्षस्य

रामः

626. अधिंपञ्चवटीकुटीरवर्तिस्फुटितेन्दीवरसुन्दरोरुमूर्तिः।
अपि लक्ष्मणलोचनैकसख्यं भजत ब्रह्मसरोरुहायताक्षम्।।

- सुभा० सुधा० भा०

627. अन्तः समस्तजगतां यदनुप्रविष्ट-
माचक्षते मणिगणेष्विव सूत्रमार्याः।
तं केलिकल्पितरघूद्वहरूपमाद्यम्
पङ्केरुहाक्षमनिशं शरणं प्रपद्ये।।

- वर्णमालास्तोत्रे रामभद्रदीक्षितस्य

628. अमलकमलनेत्रं भावितानन्दगात्रम्
शशधरनिभवक्त्रं योगिनां ध्यानपात्रम्।

जितदशमुखगोत्रं मोक्षमार्गेकसूत्रम्
दशरथहितपुत्रं नौमि सीताकलत्रम्।।

- भक्तिस्वरूपविवेके रामचन्द्रस्य

629. अव्यक्ताव्यक्तकर्ता वचनमभिदधे बालभावादनन्य-
स्तत्कन्यालम्बनार्थी प्रवलितुमभवद् दत्तविश्वावलम्बः।
मन्दं मन्दं पदानि न्यधितभुविपदैः क्रान्तलोकत्रयो यः,
स त्रैलोक्याधिपत्यं दिशतु दशरथापत्यमत्यद्भुतं वः।।

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

630. अव्यादर्ककुलाब्धिकौस्तुभमणिर्दिव्यारविन्देक्षणो
भव्याविष्कृतिलम्पटेषुपटलीलव्याशराधीश्वरः।
रव्यासादितदोः प्रतापतुलनो हव्याशभूसुन्दरः
सव्यासव्यकरात्तचापविशिखः क्रव्याशवैरी विभुः।।

-रामाष्टप्रासे रामभद्रदीक्षितस्य

631. अश्रान्तास्तपयोभिर्लङ्घनबन्धाभिमानजां जलधेः।
कृशतां-शमयितुमिव यो रक्षांस्यवधीन्नमामि तं रामम्।।

- मान्धाता-पत्राभिलेखे परमजयसिहंजयवर्मणः

632. असितमहसि सेतौ पङ्क्तिकायामुदञ्चत्तटयुगघनमुक्तावर्णपङ्क्तिद्वयेन।
अलिखदिव कठिन्या यत्प्रशस्तिं समुद्रः स जयति रघुवंशग्रामणी रामचन्द्रः।।

- प्रवरसेनमहीपतिकृत-सेतुबन्धस्य टीकायां
रामसेतुप्रदीपाख्यायां रामदासभूपतेः

633. अस्तु कल्याणदं वस्तु सीतारामात्मकं हि नः
यत्पादपभजनाल्लब्धं सारं सारस्वतं मया।
शम्पामध्यस्फुरन्नीलतोयदद्युतिविग्रहम्
सीतया लिंगितं रामं कलयेऽभीष्टसिद्धये।।

- रामायणस्य व्याख्यायां अहोबलस्य

634. अहल्याकल्याणं जनकदुहितुर्जीवितुमहो
तपः कौशल्यायाः सुकृतपरिपाकः सतपसां।
श्रुतीनां सर्वस्वं कविजनगिरां विस्मयपदं
रहस्यं सर्वस्य स्फुरतु पुरतः किञ्चनमहः।।

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां
विषमपदाख्यायां रामभट्टस्य

635. आकल्पं मुरजिन्मुखेन्दुमधुरोन्मीलन्मरुन्माधुरी-
धीरोदात्त मनोहरः सुखयतु त्वां पाञ्चजन्यध्वनिः।
लीलालङ्घितमेघनादविभवो यः कुम्भकर्णव्यथा-
दायी दानवदन्तिनां दशमुखं दिक्चक्रमाक्रामति।।

- प्रसन्नराघवे जयदेवकवेः

636. आनन्दकन्दममृतायनमीशितारम्
श्रीलक्ष्मणाग्रजमखण्डकलाभिरामम्।
अज्ञानरावणरिपुं सुकुमारदेहम्
सीतापतिं हनुमताश्रितमाश्रयेऽन्तः।।

- प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां प्रभाख्यायां सदानन्दस्य

637. आनन्दकन्दलितयच्चखारविन्द,
निष्यन्दमानमकरन्दनिपातपूता।
दिव्याङ्गनाजनिशिलाप्यभिवन्दनीया
वन्दामि तं रघुपतिं पतिमिन्दिरायाः।।

- उत्तरकाण्डचम्प्वां ब्रह्मसूरिणः

638. आनन्दितौ भूमितले हरीश-
विभीषणौ येन विशिष्यताभ्याम्।

नाम्ना च भक्त्या रघुनाथनेतु-
र्भद्राणि कुर्वीत स रामचन्द्रः।।

- रघुनाथाभ्युदये रामभद्राम्बायाः

639. आविर्भूतश्चतुर्द्धा यः कपिभिः परिवारितः।
हतवान्राक्षसानीकं रामं दाशरथिं भजे।।

- पारस्करगृह्यसूत्रभाष्ये गदाधरस्य

640. इन्दीवरेन्द्रमणिसुन्दरमिन्दिरेशं वंदीकृतेन्द्ररिपुवृन्दममन्दवीर्यम्।
मन्दस्मितं प्रसरनंदितलोकवृन्दं वन्दे दिनेन्द्रकुलनन्दनरामचन्द्रम्।।

- हरिस्तुतेः व्याख्यायां हरितत्त्वमुक्तावल्याख्यायां
मातृकायां स्फुटश्लोकः

641. उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामामनः
कामाय प्रथमाननिर्मलगुणाग्रामाय रामात्मने।
योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारवि-
ध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः।।२।।

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

642. उद्धर्त्ताऽसौ धरित्रींभरमिति भुजगाधीश्वरो वंशवृद्धिः
संवृत्तेत्यंशुमाली दलितपरिभवा भाविनी द्यौरितीन्द्रः।
हर्षोन्निद्राननश्रीरजनि जनिदिने यस्य लक्ष्मीवयस्यः
सोऽयं वः सर्वकालं सफलयतु मनः कामनां रामनामा।।

- रामशतके सोमेश्वरदेवस्य

643. उद्यद्धानुसपत्नरत्नखचितस्तम्भालिसम्भाविते
सोमस्तोमसमानमौक्तिकलतोन्मीलद्वितानोत्तमे।

रामः

तिष्ठन्माण्डलिके प्रकाशपटलैरज्ञाननक्तं दिने-
ऽयोध्यामण्डनमण्डपे दशरथोत्सङ्गे हसन्तम्भजे।।

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदाख्यायां रामभट्टस्य

644. उपास्महे महो रामनामकं यन्नियोगतः।
नियुक्तोऽधिकृतः कर्मकर्तेष्टफलमश्नुते।।

- वाक्यार्थरत्ने अहोबलसूरिणः

645. उपास्महे राम मनोज्ञवेषं श्रीनीलरत्नांकुरचारुरूपम्।
योगीश्वरस्वान्तविचारगम्यं ब्रह्मेन्द्ररुद्रानतपादपद्मम्।।

- ज्ञानमञ्जर्यां सोमनाथस्य

646. एतौ द्वौ दशकण्ठकण्ठकदलीकान्तारकान्तिच्छिदौ
वैदेहीकुचकुम्भकुङ्कुमरजः सान्द्रारुणाङ्काङ्कितौ।
लोकत्राणविधानसाधुसवनप्रारभ्ययूपौ भुजौ
देयास्तामुरुविक्रमौ रघुपतेः श्रेयांसि भूयांसि वः।।

- सुभा० सुधा० भा०

647. कनकनिकषभासा सीतयाऽलिङ्गिताङ्गो
नवकुवलयदामश्यामवर्णाभिरामः।
अभिनव इव विद्युन्मण्डितो मेघखण्डः
शमयतु मम तापं सर्वतो रामचन्द्रः।।

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

648. करकिसलयकर्णान्दोलिमङ्गल्यमाल्यं
दधदुरसि नतास्यं सीतया सज्यमानम्।
गुरुजनचलदक्षिप्रान्तमाव्रीड्यमानो
हृदयवलितभावो राघवो नः पुनातु।।

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

649. कर्त्तारं सर्वलोकानां दातारं सुखसम्पदाम्।
हर्त्तारं विघ्नानां श्रीरामं प्रणमाम्यहम्।।

- रामलीलातत्त्वभास्करे हरिहरप्रसादस्य

650. कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानाम्
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम।।

- हनुमन्नाटके हनुमतः

651. कल्याणोल्लाससीमा कलयतु कुशलं कालमेघाभिरामा
काचित्साकेतधामा भवगहनगतिक्लान्तिहारिप्रणामा।
सौन्दर्यह्रीणकामा धृतजनकसुतासादरापाङ्गधामा
दिक्षु प्रख्यातभूमा दिविषदभिनुता देवता रामनामा।।

- सुभा० सुधा० भा०

652. कल्याणं कलयन्तु शंकरधनुर्मौर्वीसमाकर्षणात्
काठिन्यप्रतिभासि पाणिलसिताभूजाङ्गुलिश्रेयणः।
शोणांभोरुहमध्यसंपुटमिलत्संवर्त्तिकासंभ्रमाः
यासूद्भृंगविभा विभाति महिजाजानेः कटाक्षच्छटाः।।

- आनन्दरघुनन्दने

653. कल्याणं कलयन्त्वपाङ्गनिवहाः कन्दर्पकोटिद्युतेः
सीतायाः कुचवक्त्रचन्द्रकबरीष्वन्योन्यमालोकने।
मुक्ताहारमरीचिफुल्लसुमनः शोभाकृतो लज्जिता
रामस्य स्मितचन्द्रिकासहचराः सीताविवाहोत्सवे।।

- रामस्तुतौ

654. कल्याणं कुरुतादयं रघुपतिर्येनाकृतिः स्वीकृता
त्रातुं राक्षसभारतोऽनवरतं खिन्नामलं मेदिनीम्।
विष्णुर्धिष्ण्यमुदञ्चितं धनचितो भेदो न यत्रोदितः
सीताशक्तिसमाश्रितः स्मितमुखः सञ्जातपाणिग्रहः।।

- राघवोल्लासे एकादशसर्गान्ते अद्वैतयतेः

655. कश्चिन्मायामृगवशगतः कर्मणा मुह्यमानो
भक्त्या शम्भोश्चरणभवया विप्रयुक्तो विषण्णः।
रामो यद्वज्जनकसुतया दण्डकारण्यभूमौ
क्षेत्रे प्राप्ते क्वचन पुरुषः कल्पयामास वासम्।।

- हंससन्देशे

656. कारुण्यसत्कर्बुरपत्रराजितं रामात्मभृङ्गीमुखचुम्बनोल्लसद्।
भूलोकसत्केसरकर्णिकालयं श्रीरामराजीवमहं भजे भजे।।

- श्रीहर्षकृत–खण्डनखण्डखाद्यस्य टीकायां विद्यासागरी–
इत्याख्यायां आनन्दपूर्णस्य

657. कारुण्यामृतनीरमाश्रितजनश्रीचातकानन्ददं
शार्ङ्गाखण्डलचापमम्बुजभवाग्नीन्द्रादिबर्हीष्टदम्।
चारुस्मेरमुखोल्लसज्जनकजासौदामिनीशोभितं
श्रीरामाम्बुदमाश्रयेऽखिलजगत्संसारतापापहम्।।

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां तत्त्वदीपिकाख्यायां
महेश्वरतीर्थस्य

658. कारुण्यैकनिकेतं रामं सीतालतायुक्तम्।
विश्वामित्रान्ववाय व्रतति समालम्बिशाखिनं वन्दे।।

- निर्णयसिन्धौ कमलाकरभट्टस्य

659. कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनेऽध्यासिनम्
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवम्
पश्यन्तं विविधाङ्गदादिमकुटाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे।।

- रामषडाक्षरीमन्त्रे

660. कूर्मो मूलवदालवालवदपां नाथो लतावद्दिशो
मेघाः पल्लववत्प्रसूनफलवन्नक्षत्रसूर्यादयः।
स्वामिन् व्योमतरुं ममाक्रमवतः श्रुत्वेति गां मारुतेः
सीतान्वेषणमादिशन् दिशतु वो रामः सलज्जः श्रियम्।।

- सूक्तिमु० हनूमतः

661. कृतार्थिततपोवनः कृतसमस्तलोकावनः
कृपाविलसिताननः कृपणवृन्दसञ्जीवनः।
कराञ्चितशरासनः कपिचमूसमुल्लासनः
करोतु कुशलानि नः खरविराधविध्वंसनः।।

- सङ्गीतराघवे तृतीयसर्गान्ते रामकवेः

662. केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्।।

- रामचरितमानसे मातृकायां

663. कोदण्डकोटिविनिवेशितबाहुदण्ड-
माखण्डलाद्यमरपातितपुष्पवर्षम्।
आयोधनक्षितिरजःपरिधूसराङ्ग-
मव्यात्स्थितं रघुपतेरवसन्नशत्रोः ॥

- सुभा० सुधा०

664. कोदण्डभूषितकरान्मणिनीलरूपात्
सत्कञ्जलोचनवराद्धरताग्रजातात् ।
सौमित्रिसेवितपदात्परमाभिरामात्
रामात्परं किमपि तत्त्वमहं न मन्ये ॥

- लक्ष्मीश्वरभूषणालङ्कारप्रबन्धे मथुराप्रसादसूनोः शिवप्रसादस्य

665. कौशलेन्द्रपदपंकजमञ्जुलौ कोमलावजमहेरावंदितौ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्य मनमृगसंगिनौ ॥

- रामचरितमानसे मातृकायां स्फुटश्लोकः

666. कौशल्यालसदालवालजनितः सीतालतालिंगितः
सिक्तः पंक्तिरथेनसोदरमहाशखाभिरभ्युन्नतः।
रक्षस्तीव्रनिदाघपाटनपटुश्छायाश्रितानन्दकृ -
द्युष्मद्वाञ्छितसत्फलकानि फलतु श्रीरामकल्पद्रुमः ॥

- श्रीरामकल्पद्रुमे

667. कौशल्यावदनेन्दुं दशरथहृदयारविन्दमार्तण्डम् ।
सीतामानसहंसं रामं राजीवलोचनं वन्दे ॥

- सुभा० सुधा०

668. क्रोधोद्रेकातिरेकश्रवणपरुषतापन्नहुङ्कारशब्दै -
र्दन्तानां पेषणैश्च प्रतिदिशमखिलानेडतां प्रापयन्तीम् ।
दृष्ट्वा लङ्केशसेनां स्मितमथ विदधद्धेलया स्प्रष्टुकाम -
श्चापं तापं च भिद्यात्त्रिविधमपि सदा श्रीमतां रामचन्द्रः ॥

- गणेशपरिणये वैद्यनाथशर्मणः

669. जगत्कर्ता विजयते करुणावरुणालयः।
राजरूपेण रमते यः प्रजानुग्रहेच्छया ॥

- राजविनोदमहाकाव्ये उदयराजस्य

670. जनकेन्द्रसुतामनोऽधनाथं रघुनाथं सुरनाथसेविताङ्घ्रिम् ।
शरणं करुणासमुद्रमेकं भजतां कल्पमहीरुहं भजेऽहम् ॥

- सोमश्वरदेवभट्टकृत-रामशतकस्य टीकायां
हृदयरञ्जनी-इत्याख्यायाम्

671. जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥

- अध्यात्मरामायणे

672. जयन्ति रघुनाथस्य पदपङ्कजपांसवः।
मूकोऽपि बावदूकोऽयमद्वैतो यदुपाश्रयात् ॥

- राघवोल्लासे अद्वैतयतेः

673. जानकीनयनयुग्मगोचरं
मानिनां नयनयोरगोचरम्।
नीलमेघरुचिरच्छविं सदा
भावये मनसि राघवं मुदा॥

- आचारार्के दिवाकरभट्टस्य

674. जानकीमुखपद्मार्कं जानकीकुचभूषणम् ।
जानकीरमणं वन्दे जगतां मङ्गलप्रदम् ॥

- पदार्थदीपिकायां गौरणार्यस्य

675. जानाति राम तव नाम रुचिम्महेशो
जानाति गौतमसतीचरणप्रभावम् ।
जानाति दोर्बलपराक्रममीशचापो
जानात्यमोघपटुबाणगतिम्पयोधिः ॥

- स्वर्णमुक्तासंवादप्रहसने महेशमनीषिणः

676. तर्तुं संसृतिवारिधिं त्रिजगतां नौर्नाम यस्य प्रभो -
येनेदं सकलं विभाति तं तं जातं स्थितसंहृतम् ।
यश्चैतन्यघनः प्रमाणविधुरो वेदान्तवेद्योविभुः
तं वन्दे सहजप्रकाशममलं श्रीरामचन्द्रं परम् ॥

- रामार्चनचन्द्रिकायां आनन्दवनस्य

677. तुष्टिं प्रयातु भगवान् यत् एव सृष्टिः
किञ्चानुकृष्टिरपि पुष्टिरमोघदृष्टिः।
व्यष्टिः समष्टिरतिदुष्टजनान् पिनष्टिः
श्रीपद्मवृष्टिभिरसौ रघुवंशदीपः ॥

- राघवोल्लासे द्वादशसर्गान्ते अद्वैतयतेः

678. तं भूसुतामुक्तिमुदारहासं वंदे यतो भव्यभवं दयाश्रीः।
श्रीयादवं भव्यभतोयदेवं संहारदामुक्तिमुतासु भूतं ॥

- रामकृष्णविलोमकाव्ये दैवज्ञसूर्यकवेः

679. तं रामं रावणारिं दशरथतनयं लक्ष्मणाग्र्यं गुणाढ्यं
पूज्यं प्राज्यं प्रतापावलयितजलधिं सर्वसौभाग्यसिद्धिम् ।
विद्यानन्दैककन्दं कलिमलपटलध्वंसिनं सौम्यदेवं
सर्वात्मानं नमामि त्रिभुवनशरणं प्रत्यहं निष्कलङ्कम् ॥

- हनुमन्नाटके हनुमतः

680. त्वदीयानां दुःखं क्षणमपि भवेन्नेति नियतम्
यशोऽब्धेरेवं ते विमलवसनस्येव मलिमा।
तवेति ब्रूयाद्यः परमपरतस्यापि लघिमा
भवेन्नैषा श्रीमच्चरणयुगले ख्यातिरधुना॥

- स्मृतिरामे रघुनाथभट्टाचार्यस्य

681. दशकंधरकरिसिंहः सीताचेतः सरोजरोलम्बः।
रघुकुलकैरवचन्द्रः पायादायासतो रामः॥

- नैषधीयचरितस्य टीकायां प्रकाशाख्यायां नारायणस्य

682. दशरथसुतरामं योगिचिन्त्याङ्घ्रियुग्म-
मजशिवसनकाद्यैः पूज्यमानं सदैव।
हृदि हृदि कृत वासं रामनामाख्यदेवं
तमहमखिलसेव्यं सर्वभावैर्नतोऽस्मि॥

- सत्योपाख्याने

683. दाता पदं शाश्वतमाश्रितानाम्
वातात्मजावेदितवाञ्छितार्थः।
जेता रिपूणां रजनीचराणाम्
सीतासहायः श्रियमातनोतु॥

- राघवचरिते शरभोजिराजस्य

684. दासोऽहं सदयावलोकनसुधासारेण लोकत्रया-
धारेणानुगृहीतवर्धितरुमादारेण मां तोषय।
इत्युच्चैर्वचसे द्विषोऽनुजनुषे सद्यो व्यतानीच्छ्रियं
लङ्कानायकपालितां रघुवरो यस्तं नमामीष्टदम्॥

- तत्त्वचिन्तामण्यालोकस्फूर्तौ अग्निहोत्रभट्टस्य

685. देवाग्रणीर्बद्धजटाकलापो धरात्मजा भूषितवामभागः।
मृगानुसारी गिरीकूटचारी दुःखद्रुमच्छेदनमातनोतु॥

- काव्यलक्ष्मीप्रकाशे शिवरामस्य

686. देवाधिदेवदेवेश कृपासिन्धो जनेश्वर
जगद्धाम जगद्वन्द्यो जगदानंददायक।

दीनबन्धो दयासिन्धो शरणागतवत्सल
श्रीरामचन्द्रपादाब्जनितरां तापनाशन॥

- चित्रकूटमाहात्म्ये

687. देवेन्द्रवन्द्यविलसच्चरणारविन्द-
मानन्दसान्द्रमुदितेंदिरमानमामः।
यस्यप्रसादरजसा सहसा शिलापि
बाला वभूव विमला कमलायताक्षी॥

- आनन्दरघुनन्दने

688. दोर्दण्डद्वितयेन खण्डपरशोः कोदण्डमारोपयन्
कुर्वाणः सहसा विदहेनृपतिं पूर्णप्रतिज्ञाभरम्।
सानन्दं कुशिकात्मजेन सुदृशां कृन्देन कौतूहलात्
सब्रीडं प्रियया विलोकितमुखो रामोऽस्तु नः श्रेयसे॥

- अनर्घराघवनाटकव्याख्याने रुचिपतेः

689. दोर्भिः खड्गं त्रिशूलं वरदमृगमसिं चन्द्रबाणं कुठारं
शङ्खं चक्रं भुसण्डिं हलमुसलगदाभिन्दिपालं च पाशम्।
उद्यद्वह्निं च मुष्टिं ह्यभयवरकरं साङ्कुशं शुभ्रवर्णम्
वन्दे रामं सदाहं त्वमररिपुकुलं मर्दयन्तं प्रतापैः॥

- रामवेदपादस्तवे महादेवकवेः

690. धनुर्बाणधरं धीरं दशाननविमर्द्दनम्।
प्रफुल्लनयनाम्भोजं भजे दशरथात्मजम्॥

- मुद्गलाचार्यकृत-रामार्याष्टीकायां पदार्थदीपिकाख्यायां
मुद्गलाचार्यस्य

691. धरात्मजारम्यमुखारविन्द-
मरन्दरोलम्ब उदारकीर्त्तिः।

शेषाख्यसंयोगविशेषशोभो
देवो मुदे वोऽस्तु शिवः स रामः॥

- नक्षत्रमालायां शिवरामत्रिपाठिनः

692. धरामरामरन्धराधरन्धराम्भरासुरा-
सुरं सुरापगाधराधरन्धराधरासनम्।
धराधरेन्द्रनन्दनन्धरासुतप्रमन्धरा-
म्बरान्तरालशायिनन्धरासुतापतिं भजे॥

- पुर्य्यष्टके रामचरणशर्मणः

693. ध्यायेदाजानबाहुं करखरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासोवसानं नवकमलदलस्पर्द्धिनेत्रं प्रसन्नं।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनरामभद्रम्॥

- कृष्णकौतुकमातृकायां स्फुटश्लोकः

694. नन्दद्वृन्दारकाणि क्षपितकुपितहृत्ताटकानाटकानि
क्रन्दत्सुन्दात्त्मजानि क्षणकृतवलवद्वालिकेलिक्षयाणि।
क्षुब्धस्तब्धाब्धिकानि क्षतनिशिचरराट् कण्ठकाण्डच्छटानि
प्रत्यूहव्यूहभङ्गं ददतु रघुपतेः पत्रिणां नर्त्तनानि॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

695. नमामि रामं परिपूर्णकामं रमाभिरामं रमणीयकान्तिम्।
चराचरेशं चरणाम्बुजप्रभं चञ्चच्चरित्रं जगतः पवित्रम्॥

- रामार्णवे

696. नमामि सर्वेष्टदमिष्टसिद्धये
श्रीरामचन्द्रं परिपूर्णसद्गुणम्।

निरन्तरं दूरनिरस्तदूषणं
भूमण्डलस्याभिनवं विभूषणम्॥

- अभिनवताण्डवे अनुमानखण्डे सत्यनाथतीर्थस्य

697. नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय
सीतासहायाय जगत्प्रियाय।
दुर्वृत्तरक्षोधिपनाशनाय
सदामृतानन्ददृशे नमोऽस्तु॥

- पुराणसङ्ग्रहे

698. नित्यानन्दं परेशानं चिद्घनं सततोदितम्।
योगिभिर्ध्येयपादाब्जं जानकीवल्लभं भजे॥

- सम्प्रदायभास्करे विजयरामाचार्यस्य

699. नित्यं किं धावसि चलविषयाननुभवितुं सुखलेशाभासान्
गुरुतरदुःखानतिदुस्साधानत्यन्तायासानंहोमूलान्।
उग्रभयङ्कररौरवादिनरकशतहेतूनेतानपि परिहर
सीतापतिमाशुपरिचरशं भो चेतः श्रीरामं भज शरणम्॥

- श्रीरामस्तवे

700. नीलांबुजविशालाक्षं नीलमेघसमप्रभम् ।
नीलरत्नसमाकीर्णंससीतं राममाश्रये॥

- प्रायश्चित्तनिरूपणे दिवाकरस्य

701. नुमो रामपदाम्भोजं रेणवो यत्र संततम् ।
कुर्वन्ति कुमुदप्रीतिमरण्यगृहमेधिनः॥

- सुभा० सुधा० भा०

702. परिणयविधौ भङ्क्त्वानङ्गद्विषो धनुरग्रतो
जनकसुतया दत्तां कण्ठे स्रजं हृदि धारयन् ।

कुसुमधनुषा पाशेनेव प्रसह्य वशीकृतोऽ-
वनतवदनो रामः पायात्त्रपा विनयान्वितः।।

- सुभा० सुधा० भा०

703. परिभग्नसमौर्विकेशचापं दृढगुणहारलसत् सुवृत्तबाहुम्।
सुफलप्रदमात्तनृप्रभं तत् स्मर रामं करणं च विष्णुरूपम् ।।

- ग्रहलाघवे गणेशदैवज्ञस्य

704. पायात् क्षीराब्धिशायी कमलभवनुतः कोसलेन्द्रस्यपुत्रः
रामस्सौमित्रियुक्तः कुशिकसुतगिरा ताटकाप्राणहारी।
यज्ञं निर्वत्य गङ्गासुचरितमुदितः पावयन् तामहल्याम्
सीतामुद्वाह्य जित्वा पथि भृगुतनयं प्राप हर्षादयोध्याम् ।।

- चिरञ्जीविरामायणे

705. पाशांकुशेषु कोदण्डं बिभ्रच्चारुचतुर्भुजैः।
जपाकुसुमसंकाशं महः किंचिदुपास्महे।।

- रामचन्द्रदीक्षितकृत-कुण्डरत्नावल्याष्टीकायां
मञ्जूषाख्यायां रामचन्द्रदीक्षितस्य

706. पितृवचनमवश्यमेवपाल्यं जगति जनानितिशासितुं वनान्तम् ।
गतमतिकरुणारसार्द्रचित्तं रघुपतिमेकमुपास्महे सदारम् ।।

- राधाविनोदकाव्ये

707. पुरतः प्रविलोक्य भर्गचापं परतः कामपि कामकार्मुकज्याम् ।
पुलकाञ्चितपीनबाहुदण्डं रघुबालं कलये दशास्यकालम् ।।

- रसप्रदीपे भट्टप्रभाकरस्य

708. प्रणामं मैथिलीजानिः प्रतिगृह्णातु मामकम् ।
यस्यांशलवसम्भूतो भगवान् भास्करः स्वयम् ।।

- वराहमिहिरकृतहोराशास्त्रस्य टीकायां अपूर्वार्थप्रदर्शिकाख्यायाम्

709. प्रस्तरा ऋषिपत्नीत्वं यान्ति वारितरन्ति च।
यत्कृपाचंद्रिकास्पर्शाद्रामचन्द्रं नतोस्मि तम् ॥

- हनुमन्नाटकस्य टीकायां दीपिकाख्यायां बालभद्रमोहनदासयोः

710. प्रह्वेन्द्रादिशिरोमणिच्छविरविप्रातर्मयूखारुणं
भूषावृत्रभिदश्मरश्मिलहरीभृङ्गालिश्रृङ्गालितम्।
मञ्जीरक्वणितैर्मरालवनिता मञ्जुस्वनैरञ्चितं
वन्दे रामपदारविन्दमनघं वन्दारुकल्पद्रुमम् ॥

- मङ्गलगिरि-स्तम्भाभिलेखे कृष्णदेवरायस्य

711. बालक्रीडनमिन्दुशेखरधनुर्भङ्गावधि प्रह्वता
ताते काननसेवनावधि कृपा सुग्रीवसख्यावधि।
आज्ञा वारिधिबन्धनावधि यशो लङ्केशनाशावधि
श्रीरामस्य पुनातु लोकवशता जानक्यपेक्षावधि ॥

- सुभा० सुधा० भा०

712. बाल्येऽप्याशु स्मरारेरपि धनुरतुलं येन भङ्क्त्वाऽञ्जसोढा
वैदेही भूमिपुत्री पितृवचनवशाद्दण्डकान्यः प्रतस्थे।
हत्वा यो दूषणादीन्कपिवरमपि च प्राप्य शुद्धिं प्रियायाः
सद्यः प्रध्वांसितारिर्लसति सह तया तं रघूत्तं समीडे ॥

- बोधैक्यसिद्धौ

713. बिसेनवंशजलधौ पूर्णः शीतकरोपरः।
प्रजाह्लादकरो विष्णुभूषणः कौस्तुभोपरः ॥

- अध्यात्मरामायणे

714. भद्राद्रेः शिखरे सुवर्णखचिते रत्नासने संस्थितम्
सुग्रीवादिकपीश्वरैरवरजैः संसेव्यमानं मुदा ।
भक्तानामभयप्रदं स्मितमुखं दूर्वादलश्यामलम्
वैदेह्या सह संचरन्तमनिशं श्रीरामचन्द्रं भजे ॥

- आह्निकभास्करे यज्ञनारायणस्य

715. भवभयहरमेकं भानुकोटिप्रकाशं करधृतशरचापं कालमेघाभभासम्।
कनकरचितवस्त्रं रत्नवत्कुण्डलाढ्यं कमलविशदनेत्रं सानुजं राममीडे॥

- रामरत्नस्तोत्रे मातृकायां स्फुटश्लोकः

716. भुवो हारं हारं रजनिचरभारं परमहो
मुहुः कारं कारं व्यसनपरिहारं दिविषदाम् ।
स्फुरन्मुक्ताहारं सजलजलदाकारमचिरान्
मनो वारं वारं दशरथकुमारं भज सारवे ॥

- न्यायसिद्धान्तमालायां जयरामन्यायपञ्चाननभट्टाचार्यस्य

717. मत्स्यः कूर्मो वराहो नरहरिरतुलोवामनोजामदग्न्यः
सभ्राता कंसशत्रुः करुणभयवपुर्म्लेच्छविध्वंसनश्च।
एते चान्येऽपि सर्वे तरणिकुलभुवो यस्य जाताः कलांशैः
तं व्याप्तं ब्रह्मतेजो विमलसुखमयं रामचन्द्रं नमामि ॥

- रामनवरत्ने

718. मध्ये स्मरामि दिवसस्य रघुप्रवीरम्
सन्ध्येयमूर्त्तिममरारिनिपातधीरम् ।
वध्येऽपि यो दशमुखे व्यतरत्तदिष्टम्
यद्ध्येकतानमतिभिर्यतिभिर्दुरापम् ॥

- उपचारमालायां महामुद्गलभट्टस्य

719. मय्याश्वस्य तयेदमर्पितमिति प्रभ्वात्मना जानकी -
चूडारत्नमुपाहितं चरणयोर्मूले मरुत्सूनुना ।
गृह्णन् सप्रणयं ससान्द्रकरुणं सावृत्ति सप्रत्ययं
सोत्साहं सत्रपं विजयते देवो दशास्यान्तकृत् ॥

- प्रस्तराभिलेखे

720. मारीचोपप्लवेगं बलविजयिसुतप्रेक्षितामोघभावं
पारावारावरोधव्रजविदितमहादुःसहार्चिः प्रभावम् ।
लीलालोलूयमानत्रिदशरिपुशिरोधोरणीदृष्टतैक्ष्ण्यम्
भक्तत्राणप्रवीणं शरणमशरणो रामबाणं प्रणौमि ॥

- रामबाणस्तवे रामभद्रदीक्षितस्य

721. मार्तण्डैककुलप्रकाण्डतिलकस्त्रैलोक्यरक्षामणि -
र्विश्वामित्रमहामुनेर्निरुपधिः शिष्यो रघुग्रामणीः ।
रामस्ताडितताडकः किमपरं प्रत्यक्षनारायणः
कौशल्यानयनोत्सवो विजयते भूकश्यपस्यात्मजः॥

-सदुक्ति० राजशेखरस्य

722. माहेश्वरं धनुरुदस्य विकृष्य दूरं
सञ्चूर्णयन् प्रमुदितो मुनिनाऽभिदृष्टः।
शालीनया जनककन्यकया स तिर्यग्
दृष्ट्या विलोकितवपू रघुनायकोऽव्यात् ॥

-कारिकावल्याष्टीकायां सिद्धान्तमुक्तावल्याख्यायां सूर्यनारायणशुक्लस्य

723. यत्कृपैव त्रिपुटं महीपतिं मन्दबुद्धिमतिपण्डितोत्तमम् ।
अक्षमं क्षममरं करोति तं शंकरं रघुवरम्वरम्भजे ॥

- श्रुतबोधस्य टीकायां मनोरमाख्यायां लक्ष्मीनारायणशर्मणः

724. यत्पादपंकजपरागपवित्रदेहा
हित्वाकलेवरमिदं किल दार्षदं सा।
जग्राह गौतमवधूः क्रमनीयरूपम्
तं जानकीपतिमजं मनसा स्मरामि।।

- आचारार्कमातृकायां स्फुटश्लोकः

725. यत्पादपंकजः श्रुतिभिर्विमृग्यं यत्राभिपंकजभवः कमलासनोऽथ।
यन्नामसांररसिको भगवान् पुरारिस्तं रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि।।

- प्रस्तावश्लोके

726. यद्रावणद्विगुणनिस्सृतवज्रपिण्डै-
रुच्चावचानि शिखराण्यपतन्सुमेरोः।
तस्योत्तमाङ्गनिकरोद्धरणप्रवीणो
रामो हरत्वनुदिनं तव दुष्कृतानि।।

- सुभा० सुधा०

727. यन्नामरूपजगदुद्भवसंप्रतिष्ठासंरोधकारणमनिर्वचनीयशक्ति।
सच्चित्सुखाद्वयवपुर्जगतो हिताय रामाभिधामुपगतं भुवि तन्नमामि।।

- पञ्चीकरणविवरणस्य टीकायां तत्त्वचन्द्रिकाख्यायाम्

728. यन्मूलो रघुनन्दनस्य जगतां त्रातेति कीर्त्यङ्कुरो
देवी चार्चति जानकी सविनयं यद्गन्धपुष्पाक्षतैः।
यत्कोट्या कृतलाञ्छनश्च जलधौ सेतुर्जगत्पावनो
भद्रायास्तु जगत्त्रयस्तुतिपदं तद्राघवीयं धनुः।।

- रामचापस्तवे रामभद्रस्य

729. यमिह कारुणिकं शरणं गतोऽप्यरिसहोदर आप महत्पदम्।
तमहमाशु हरिं परमाश्रये जनकजाङ्कमनन्तसुखाकृतिम्।।

- ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यस्य टीकायां रत्नप्रभाख्यायां गोविन्दस्य

730. यशोहेतुं सेतुं सुकृतिकृतिसेतुं जलनिधौ
सुबुद्धं यश्चक्रे धरणिधरचक्रेण रुचिरम्।
रुचाकामः कामं जनकतनयावामनयना-
सुविश्रामः कामं कलयतु स रामः कृतजयः॥

- राजप्रशस्ति-अभिलेखे

731. यस्य सम्पर्कपुण्येन नारीरत्नमभूच्छिला।
यदुपास्यं सुमनसां तद् वस्तुद्वन्द्वमाश्रये॥

- विलपाक-दानपत्राभिलेखे वेङ्कटप्रथमस्य

732. यस्याज्ञया प्रवर्त्तन्ते भुवनानि चतुर्दश।
येन सृष्टमिदं तं रामं विष्णुमाश्रये॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदाख्यायां रामभट्टस्य

733. येन मन्दोदरीवाष्पवारिभिः शमितो मृधे।
प्राणेश्वर्या वियोगाग्निः सः रामः श्रेयसेऽस्तु वः॥

- पत्राभिलेखे देवपालस्य

734. येनाकारि दशास्यो दशमुखहीनोपिबाणसंघेन।
वनजायाचौर्यकरो सो वोऽस्तु जानकीकान्तः॥

- गङ्गालहर्य्याष्टीकायां पीयूषलहर्याख्यायां सदाशिवस्य

735. येनोद्धृता स्वरजसा कुतुकादहल्या
प्राप्ता शिलात्वमतिशापवलाच्च पत्युः।
तद्राघवस्य विततं कलितं कलाभिः
पादारविन्दयुगलं विमलं नतोऽस्मि॥

- राघवोल्लासे सप्तसर्गारम्भे अद्वैतयतेः

736. यो गाधिपुत्रमखविघ्नकराभिहन्ता
युद्धे विराधखरदूषणवीर्यहन्ता।
दर्पोद्यतोल्बणकबन्धकपीन्द्रहन्ता
पायात् स वो निशिचरेन्द्रकुलाभिहन्ता॥

- अभिषेकनाटके भासस्य

737. योद्धा योद्धावधीत्तान्सपदि पलभुजः संपराये पराये
येनायेनाश्रितानां स्तुतिरवनमितेशानचापेन चापे।
लङ्कालंकारहर्त्ता ककुभि ककुभि यः कान्तया सीतयासी-
दूनो दूनोऽथ हृष्टः स विभुरवतु वः स्वः सभार्यः सभार्यः॥

- सुभा० सुधा० भा०

738. यो रामो न जघान वक्षसि रणे तं रावणं सायकै-
र्ह्यस्य प्रतिवासरं वसति सा तस्या ह्यहं राघवः।
मय्यास्ते भुवनावली परिवृता द्वीपैः समं सप्तभिः
स श्रेयो विदधातु नस्त्रिभुवनत्राणैकचिन्तापरः॥

- सुभा० सुधा० भा०

739. यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः सम्प्रार्थितश्चिन्मयः
सञ्जातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः।
निश्चक्रे हतराक्षसः पुनरगाद् ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिराम्
कीर्तिं पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे॥

- अध्यात्मरामायणे

740. यः शत्रुञ्जयकुञ्जरेश्वरशिरः संघट्टनाकर्कशे
वैदेहीकुचकुम्भपत्रमकरीविन्यासवैज्ञानिके।

चञ्चत्पञ्चवटीकुटीरजटिलव्यूहाय दत्ताभये
पाणौ कौणपवैरिणौ विजयते चापाय तस्मै नमः॥

- रामचापस्तवे रामभद्रदीक्षितस्य

741. रक्षोमण्डलखण्डपण्डितमहावेतण्डशुण्डालसं
द्वोर्दण्डं निखिलाण्डपिण्डनकृतौ शौण्डं तथा मुण्डिभिः।
ध्येयं दण्डकमण्डलूपकरणैश्चण्डांशुवंशोद्भवं
गण्डे कुण्डलमण्डितं रघुपतिं कोदण्डपाणिं भजे॥

- हरिस्तुतेः व्याख्यायां हरितत्त्वमुक्तावल्यां
मातृकायां स्फुटश्लोकः

742. रघुनाथाभिधं ब्रह्मजिह्मभावविदारणम्।
नमामि विततानन्तभवभीतिनिवारणम्॥

- राघवोल्लासे अद्वैतयतेः

743. रघुवरचरणद्वन्द्वं तरणिं करवाणि संसृतेस्तरणे।
यत्पांसुलेशसङ्गाद् ग्रावाप्यभवद्विकल्मषा योषा॥

- वेदान्तकारिकावल्याष्टीकायां वेंकटाचार्यस्य

744. राघवमेघोऽमोघो विद्युत्पीताम्बरप्रवरः।
जीवनदाता सविता हृदयाकाशे सदा ममोल्लसतु॥

- मुद्गलाचार्यकृत-रामार्याष्टीकायां पदार्थदीपिकाख्यायां मुद्गलाचार्यस्य

745. राज्यं येन पटान्तलग्नतृणवत् त्यक्तं गुरोराज्ञया
पाथेयं परिगृह्य कार्मुकवरं घोरं वनं प्रस्थितः।
स्वाधीनः शशिमौलिचापविषये प्राप्तो न वै विक्रियाम्
पायाद्वः स विभीषणाग्रजनिहा रामाभिधानो हरिः॥

- संस्कृतभाषाप्रदीपे सखारामस्य

746. रामचन्द्रमसः श्रीमच्चरणद्वंद्वरेणवः।
जयश्रियं नः कल्याणीं वितरन्तु निरन्तरम् ॥

- न्यायलक्षणे

747. रामचन्द्रसुकलामृतपाने
लालसं निभृतपक्ष्म सुकान्ति।
जानकीनयनरम्यचकोर-
द्वन्द्वमादिशतु मे कमनीयम् ॥

- अलङ्कारमञ्जूषायां देवशङ्करभट्टस्य

748. रामरामेति रामेति वागियं ललिता लता।
धर्मार्थकामविश्रामं फलं सूते पदे पदे॥

- रामपद्धतौ

749. रामो दाशरथिर्मुदे वसतु मे रामं सरामं नुमो
रामेणाध्वकारि वानरपदोत्तीर्णप्रकीर्णोदकः।
रामायास्तु मम प्रणामत्शतकं रामान्नकोपीश्वरो
रामस्योचित एव रावणजयो रामोऽस्तु मे मानसे ॥

- प्रस्तावश्लोके

750. रामो मेऽभिहितं करोतु सततं रामम्भजे सादरम्
रामेणापहृतं समस्त दुरितं रामाय दत्तं धनुः।
रामान्मुक्तिरभीप्सितासरभसं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे रज्यतु मे मनः करुणया भो राम मां पालय ॥

- प्रबोधचन्द्रिकायां वैजलभूपतेः

751. रामं कामसहस्रसुन्दरतनुं वीरासने संस्थितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं सुरवरैस्संसेव्यपादाम्बुजम् ।

पाणौ बाणसरासनं नरवरं वन्दे जगद्वन्दितम्
वेदैर्गेयपरातियूथदलनं दासानुकूलं प्रभुम् ।

- रामार्णवे

752. रामं कामाभिरामं रघुकुलतिलकं सीतया शोभमानम्
श्यामं भाक्तार्तिनाशं स्वजनभयहरं वामदेवादिवन्द्यम् ।
कांमं कामार्त्तिनाशं कलिकलुषहरं कामदं कामदानाम्
वन्दे लोकाभिरामं दशरथतनयं रावणारिं रमेशम् ॥

- चित्रकूटमाहात्म्ये

753. रामं राजमणिं रघोः कुलमणिं वेदैकनिष्ठामणिं
मन्त्रारूढमणिं जगन्मणिमणिं संसारशोभामणिम् ।
तत्त्वज्ञानमणिं महन्मुनिमणिं शान्तं दयासन्मणिं
सौर्य्यं धैर्य्यमणिं महद्गुणमणिं वन्दे स्ववाञ्छामणिम् ॥

- रामार्णवे

754. रामं वामघनश्यामं निकामहृदयंगमम् ।
कामं वन्दे जगद्धामविश्रामं जगतां सताम् ॥

- नागेशकृत-वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषायाष्टीकायां
कलाख्यायां वैद्यनाथपायगुण्डेमहोदयस्य

755. रामं श्यामसरोजसुन्दरवपुं वामाङ्गसीतान्वितं
राज्याभूषणभूषिताङ्गमधिकं कन्दर्पकान्तिप्रदम् ।
सुग्रीवादिहरीश्वरैः परिवृतं सिंहासनस्थं प्रभुं
लोकान्निर्भयकारकं रघुपतिं राजेन्द्रराजं भजे॥

- रामार्णवे

756. लक्ष्मीधामविशालनेत्रयुगलं त्वां नौमि सीतापतिं
पद्मोद्भासितवक्षसं गुणनिधिं श्रीवत्ससंशोभितम् ।

भक्ताभीष्टदमम्बुदाभमनिशं त्वत्पादभक्तीप्सया
तां मे देहि सरोरुहाङ्घ्रियुगल! श्रीराम! राज्याधिप!।।

- सीतारामचरित्रे

757. लङ्कातङ्कविधायिनं कपिकुलाहङ्कारसन्दायिनम्
पङ्काविष्टनृचित्तदूरगमिनं तं कामकायं प्रभुम् ।
क्ष्माङ्काविर्भवविशालिमैथिलसुताटङ्काय यो यत्नवान्
तं काकं नयनेन काणमकरोदोङ्कारवाच्यं भजे।।

- तन्त्रसिद्धान्तसङ्ग्रहे

758. वज्राम्भोजयवध्वजेन्दुकुसुमच्छत्राणिजम्बूदरौ
वेदीपर्वतकुण्डलाङ्गदगदाकुंभत्रिकोणानि च।
चक्रस्वस्तिककङ्कणाङ्कुशरथप्रोष्ठी धनुर्न्नागको-
णानिश्रीधरणीसुतापतिपदोर्ल्लक्ष्माणि वन्दामहे।।

- रामचरणकृत-रामपञ्चदशीस्तोत्रस्य टीकायां
कलापालिकाख्यायां लक्ष्मीनारायणस्य

759. वन्दामहे महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम् ।
जानकीहृदयानन्दचन्दनं रघुनन्दनम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

760. वन्दे क्लेशाद्यसंपृष्टं पुराणपुरुषं हरिम् ।
प्रकृत्या सीतया जुष्टं योगेशं योगदायिनम् ॥

- योगमणिप्रभावृत्तौ रामानन्दसरस्वत्याः

761. वन्दे रामं जगज्जन्मस्थितिसंयमकारणम् ।
विज्ञानानन्दवपुषं त्रय्यन्तमणिमन्दिरम् ॥

- वाक्यार्थरत्नस्य टीकायां सुवर्णमुद्रिकाख्यायां अहोबलसूरिणः

762. वन्दे वन्द्यं रामनामाभिधं तद्ध्येयं धन्यैर्योगिभिर्योगमार्गैः।
वेद्यं वेदैर्विश्वविश्रामरूपं रूपं रूपं रूप्यते तस्य रूपम् ॥

- रामपद्धतौ

763. वन्देऽहं रघुनन्दनाङ्घ्रिसरसीजातद्वयीमद्वया-
मन्दानन्दमरन्दबिन्दुलहरी संदोहनिष्यन्दिनीम् ।
यत्रेन्दिन्दिरजातवन्मुनिमनोवृन्दं कृतस्वाश्रयं
काञ्चित्तुन्दिलतामविन्दत परानन्दावबोधोदयात् ॥

- भर्तृहरिकृत-सुभाषितत्रिशत्यां टीकायां सहृदयानन्दिनी इत्याख्यायां रामचन्द्रबुधेन्द्रस्य

764. वामाङ्के जनकात्मजातिविमला सौन्दर्यवर्यापरा
दक्षे यस्य विराजते दृढधनुर्द्धारी सुमित्रात्मजः।
वीरः श्रीपवनात्मजोपि पुरतः कृत्वा शिरस्यञ्जलिं
तं श्रीमद्रघुनन्दनं परिकरैर्युक्तं सदा भावये।

- लक्ष्मीश्वरभूषणालङ्कारप्रबन्धे शिवप्रसादस्य

765. वामाङ्गे जनकात्मजां कटितटे वासस्तडित्सन्निभं
चञ्चत्काञ्चनकुण्डले श्रवणयोर्वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
कस्तूरीतिलकं दधानमलिके विज्ञानमुद्रान्वितं
रामं सान्द्रपयोदसुन्दरतनुं ध्यायाम्ययोध्यापतिम् ॥

- रामशतककाव्ये

766. वामाय भ्रुविरोमराजिऋजवे क्षामाय मध्ये हृदि
व्यामाय प्रपदेरुणाय वपुषि श्यामाय वामानने।
कामाय स्मयने सुधारसपरीणामाय कामार्पणे
ग्रामाय द्युमहीरुहां नतिरिलारामाय रामाय ते॥

- सीयूरामध्यानरसमञ्जर्यां शिवलालपाठकस्य

767. वामे भूमिसुता पुरस्तु हनुमान् पश्चात्सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्चपार्श्वदलयोर्वायव्यादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्चविभीषणश्चयुवराट्तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलाम् ॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

768. विद्यात्कोटिदिवाकरद्युतिं जन-
कादिभिः परिवृतं कैलासनाथप्रियम् ।
युक्तारत्नकिरीटकुण्डलधरं सं-
निवासमनिशं सीतासमेतं भजे॥

- रामस्तोत्रे

769. विमलकमलनेत्रं विष्णुमानीलगात्रं
तपनकुलपवित्रं दानविध्वान्तमित्रम् ।
भुवनकुलचरित्रं भूमिपुत्रीकलत्रं
अमितगुणसमुद्रं रामचन्द्रं नमामि॥

- रामस्तवराजे

770. विश्वत्राणपरायणस्त्रिजगतां संकल्पकल्पद्रुमो
लङ्कातङ्कविधायको रघुपतिर्देवेन्द्रवामभुवः।
चोलीकज्जलकण्ठसूत्रसुमनः सौभाग्यरक्षामणि-
र्देवः पातु दुरन्तदैत्यदलनव्यापारपारङ्गमः ॥

- रसेन्द्रचूडामणौ सोमदेवस्य

771. विश्वामित्रातिविश्वाध्वरहरविहरद्यामिनीचारहारी
सीताशृङ्गारलीलाङ्कितभुजविलसत्कार्मुकज्याकृताङ्कः ।
पारावारान्तरुत्तारितदृशदतुलस्फीतसद्गीतकीर्ति -
र्लङ्केशातङ्ककारी स जयति भुवने रामनामावतारः ॥

- गङ्गादासप्रतापविलासनाटके गङ्गाधरस्य

772. विश्वेशानामधीशश्चिदचिदुदितयास्वीयवृत्त्याखिलांत-
र्यामीस्वामीजनानां सुरचितसकलः सर्वकर्त्ताप्यकर्त्ता।
उद्धर्त्ताभृत्यमृत्योः करयुगविलसद्बाणबाणासनश्री-
च्चापं भङ्क्त्वाऽथशैवं सपदि धरणिजाजानिरव्यादभव्यात् ॥

- आनन्दरघुनन्दने रघुनाथसिंहजूदेवस्य

773. विश्वोद्भवस्थितिलयादिषु हेतुमेकम्
मायाश्रयं विगतमायमचिन्त्यमूर्तिम् ।
आनन्दसान्द्रममलं निजबोधरूपम्
सीतापतिं विदिततत्त्वमहं नमामि ॥

- अध्यात्मरामायणे

774. वैदेही यस्य वामे जयति जयजनिर्दक्षिणे लक्ष्मणोऽपि
श्रीमानग्रे हनूमानतुलबलचयो हस्तविन्यस्ततत्त्वः।
कोदण्डं काण्डमेकं दधदहितकुलध्वंसकारी समन्ता-
दव्यादव्याजभव्याकृतिसलिलनिधिर्जानकीजानिरस्मान् ॥

- श्रीहर्षकृत-नैषधीयचरितस्य टीकायां प्रकाशाख्यायां नारायणस्य

775. वैदेहीवदनाब्जवासरमणिर्वन्दारुचिन्तामणि-
र्विस्फूर्जद्रघुवंशमौक्तिकमणिः पृथ्वीशचूडामणिः।
सोऽयं सारचिरन्तनोक्तिरमणीसीमन्तजाग्रन्मणिः
पौलस्त्योग्रभुजङ्गगारुडमणिः पायाच्चिरं चिन्मणिः ॥

- सङ्गीतराघवे रामकवेः

776. वैदेहीवदनेन्दुबन्धुरसुधाहृष्यच्चकोरार्भक-
स्त्रैलोक्याद्भुतजीवरत्नमवनीदेवैककल्पद्रुमः।

पौलस्त्योन्मदहस्तिमस्तकभिदा संरब्धसिंहश्चिरम्
ध्यायत्तापसचित्तचातकघनः श्रीराघवः पातु नः ॥

- सङ्गीतराघवे प्रथमसर्गान्ते रामकवेः

777. शब्दब्रह्मसमुद्रसंभवसुधागम्भीरकुम्भद्वयम्
शम्भोर्यद्रसनालसत्किसलयस्मेरप्रसूनद्वयम् ।
यत्प्राचेतससूक्तिमौक्तिकलतामध्यस्थरत्नद्वयम्
तच्चिंतामणिदाममामकमिति रामेति वर्णद्वयम् ॥

- सीयरामध्यानरसमञ्जर्यां शिवलालपाठकस्य

778. शम्पामध्यस्फुरन्नीलनीरदद्युतिविग्रहम् ।
सीतया लिङ्गितं रामं कलयेऽभीष्टसिद्धये ॥

- रामायणस्य व्याख्याने वाल्मीकिहृदयाख्यायाम्

779. शम्भोः कोदण्डभङ्गादविदितविभवः शक्रसूनोर्विनाशा -
दज्ञातः सेतुबन्धादपि न परिचितः कैकसीनन्दनेन ।
संवादादङ्गदस्याप्यनधिगतगतिः कारणान्मर्त्यमूर्त्ते -
र्भूयाद्भूत्यै जनानां जगति रघुपतेर्वैष्णवः कोऽपि भावः ॥

- दूताङ्गदे सुभटस्य

780. शान्तस्याप्यार्यबन्धोः पुलिनपरिसरे दर्भशाय्यास्थितायं
दर्पध्वस्तां समीक्ष्य प्रबलरिपुपुरीमार्गदानाभियाञ्चाम् ।
उद्यत् कोदण्ड चण्डप्रलयघनतडिद्व्योमबिभ्रतस्फुलिङ्गः
पायादुद्दामताप- क्वथितजलनिधी रामनाराचवह्निः ॥

- सेतुबन्धे बलभद्रशास्त्रिणः

781. शुचितरगुणपुष्पालङ्कृतालङ्कृतार्थ -
क्षितिविबुधवरिष्ठैः प्रार्थ्यते कर्मसिद्ध्यै ।

अमृतकिरणकान्तिस्वच्छकीर्त्तिप्रताना
तव नवतनुवल्ली राम ! मे मानसेऽस्तु ॥

- राघवोल्लासे दशमसर्गान्ते अद्वैतयतेः

782. शृङ्गारीक्षितिजामुखे सकरुणोऽहल्यासुवीरः खरे
वीभत्सुश्च जटीशरैश्च भयकृद्बद्धाब्धिरत्यद्भुतः।
रौद्रोरावणमर्द्दने कपिसखोहासः सुशान्तो गुरौ
भक्त्या सर्वरसात्मको रघुपतिर्व्वर्त्ति सर्वोपरि॥

- हनुमन्नाटकस्य टीकायां दीपिकाख्यायां बलभद्रमिश्रस्य

783. श्यामलं कोमलं लोललोचनं चलकुण्डलम्।
रामं मुनिहृदम्भोजभ्रमरं सततं भजे॥

- कणादनयभूषणे

784. श्यामावदातमरविन्दपलाशनेत्रम्
बन्धूकपुष्पसदृशाधरपाणिपादम् ।
सीतासहायमजितं धृतचापबाणम्
रामं नमामि शिरसा रमणीयवेषम् ॥

- नरसिंहपुराणे

785. श्यामं सहासवदनं सरसीरुहाक्षम्
केयूरकुण्डलकिरीटविराजमानम् ।
कामाभिराममुरुमौक्तिकदामदीप्तम्
पीताम्बरं किमपि धाम विचिन्तयामः ॥

- रामगीतगोविन्दे जयदेवस्य

786. श्यामं सुन्दरविग्रहं करललंद्वाणं लसत्कार्मुकं
सासिं तूणधरं सदा धरणिजा सौमित्रिसंसेवितम् ।

पुष्पाबद्धजटं सुवल्कलपरं त्रैलोक्यमोहाघटं
संसारैकनटं परं कमपि तं ध्यायेदरण्येभटम् ॥
- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदाख्यायां रामभट्टस्य

787. श्रीजानकीरमणमंबुजपत्रनेत्रम्
पीताम्बरं विविधभूषणभूषिताङ्गम् ।
रामं भजे ललितपाणिसरोरुहान्तम्
कोदण्डमार्गणमिषत्स्मितशोभितास्यम् ॥
- प्रश्नसारे विजयरामस्य

788. श्रीमद्रामरघूत्तंससच्चिदानन्दलक्षणं
भवन्तं कमलावन्तं गाये त्वां वचसा गिरा।
रामे दूर्वादलश्यामे जानकी कनकोज्ज्वला
भाति मद्दैवते मेघे विद्युल्लेखेव भास्वरा ॥
- रामवेदपादस्तवे भरद्वाजस्य

789. श्रीमान् मार्तण्डवंशे दशरथनृपतेरात्मजत्वं प्रपन्नः
साकं शेषारिशङ्खैर्निशिचरनिवहं संहरिष्यन् सुरार्थे ।
गुर्वादेशेन हत्वा पथि रजनिचरीं प्राप्य सिद्धाश्रमं यः
चक्रे यज्ञस्य रक्षां स दिशतु भगवान् मङ्गलं रामचन्द्रः ॥
- राममङ्गलाशासने

790. श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥
- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

791. श्रीरामचन्द्रः श्रितपारिजातः
समस्तकल्याणगुणैकराशिः ।

सीतामुखाम्भोरुहचञ्चरीको
निरन्तरं मङ्गलमातनोतु ॥

- नामलिङ्गानुशासनव्याख्यायां अमरपदविवृत्तौ लिङ्गयसूरिणः

792. श्रीरामचन्द्रः श्रियमातनोतु सीतासहायो मुनिधर्मपत्न्याः ।
यस्याङ्घ्रिपङ्केरुहरेणुरासीदश्मव्रतोद्यापनकर्महेतुः ॥

- कृष्णमिश्रकृत-प्रबोधचन्द्रोदयस्य टीकायां
चन्द्रिकाख्यायां नाण्डिल्लगोपप्रभोः

793. श्रीरामचरणद्वंद्वमद्वयानन्दसाधनम् ।
नमामि यद्रजोयोगात्पाषाणोऽपि सुखं गतः ॥

- ब्रह्मामृतवर्षिण्यां रामकिंकरस्य

794. श्रीरामं भरतोपेतं सौमित्रिभ्यां च सीतया।
हनूमतोपास्यमानं भावये हृदि सर्वदा ॥

- भाट्टार्के नीलकण्ठभट्टस्य

795. श्रुत्वा तातप्रणं सुदारुणतरं कामाभिरामाकृतिः
जानक्या निभृतानिकातरदृशा साकूतमालोकितः ।
श्रीरामः स पुनातु धूर्जटिधनुर्भङ्गे यदङ्गेऽभव -
द्रोमाञ्चस्य मिषेण गुप्तहृदयानन्दादमन्दाङ्कुरः ॥

- मन्त्रार्थदीपिकायां शत्रुघ्नस्य

796. सत्यं तारकतत्त्वमोमिदमणुस्थूलं चतुष्पादकं
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिगं स्मृतिवशाद्विश्वाद्यतातं विभुम् ।
भ्रूनासाग्र उपास्यमानममरैः स्तुत्यं तुरीयात्मकं
भक्तानुग्रहविग्रहं जनकजाजानिं भजे राघवम् ॥

- रामोत्तरतापिन्याष्टीकायीं आनन्दनिधीत्याख्यायां आनन्दवनस्य

797. सत्यं सत्यतया हि यस्य निखिलं रज्जौ यथाकुण्डली
यस्यानन्दतया प्रपञ्चरचना सानन्दथुर्भ्राजते।
यच्चिद्रूपतया चिदात्मकमिवाऽभाति प्रपञ्चादिकं
सत्यानन्दचिदात्मकं श्रुतिवचो गीतं भजे राघवम् ॥

- रामपूर्वतापिन्याष्टीकायां रामकाशिकाख्यायां आनन्दवनस्य

798. सन्ततं दृढसंसक्तं वन्दे द्वन्द्वं चिरन्तनम् ।
आदर्शे केवलं पश्यदाननाभां परस्परम् ॥

- जानकीपरिणये चक्रकवेः

799. समीरणापूरितबाणरंन्ध्रसम्पन्नसप्तस्वरसामरस्या।
यत्कीर्तिमुद्गायति सप्तशाली वीराय तस्मै विनतिर्ममास्तु॥

- आनन्दराघवे राजचूडामणिदीक्षितस्य

800. सर्वक्षत्रियवर्गगर्वमथनप्रोद्भूतकीर्तिं सदा
बिभ्राणं परशुं जिगाय भगवान् यो भार्गवं लीलया।
तं वन्दे जगतामभीष्टफलदं श्रीरामचन्द्रप्रभुं
विद्वत्स्वान्तषडङ्घ्रिसेवितपदाम्भोजं जगन्नायकम् ॥

- सामान्यनिरुक्तिप्रथमलक्षणविचारे

801. सर्वज्ञचूडामणिमीश्वराणामीशानमिन्दीवरकोमलाङ्गम् ।
कारुण्यलावण्यसुधासमुद्रं श्रीजानकीजानिमहं भजामि॥

- अद्वैतमकरंन्दस्य रसाभिव्यञ्जकाख्यायां टीकायां कैवल्यानन्दयोगीन्द्रस्य

802. सानन्दं मणिमञ्चसीमनि वसन्वक्षोजचेलाञ्चलम्
व्याकृष्याथ सलज्जमाशु विनतग्रीवं कृतस्वस्तिकम् ।

तत्कालस्पृहणीयपार्श्वनखविन्यासैर्यथावत्स्थिता -
मालिङ्गन्जनकात्मजां रघुपतिः पुष्णातु वः कौतुकम् ॥

- कान्तिमतीपरिणये चोक्कनाथस्य

803. सीताकराब्जमृदुलालितपादपद्मः
तस्यामुखं जलजसुन्दरमीक्षमाणः ।
रत्यन्वितस्य मदनस्य रुचिं दधानः।
श्रीमान् रघुप्रभववंशपतिर्विरेजे ॥

- रसरत्नहारस्य टीकायां लक्ष्मीविहाराख्यायां शिवरामत्रिपाठिनः

804. सीताकल्पलतान्वितं दशरथाम्भोराशिजं सोदरो-
दारस्कन्धमभीष्टदं सुमनसां श्रेणीभिरामोदितम् ।
नित्यं स्वाश्रितनन्दनं किसलयश्रीपञ्चशाखोज्ज्वलम्
श्रीरामामरभूरुहं हृदि सदा सेवेऽर्थसंसिद्धये ॥

- चम्पूरामायणस्य टीकायां साहित्यमञ्जूषाख्यायां रामचन्द्रबुधेन्द्रस्य

805. सीताकल्पलताशोभिरामचन्द्रसुरद्रुमः।
सुमनोनिलयः श्रीमान् कल्याणं वितनोतु नः॥

- सूर्यशतकस्य व्याख्यायां गोपीनाथस्य

806. सीताचर्चितपादपद्मयुगलं ध्यात्वाद्वितीयं विभुं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि ।
कुर्वे चन्द्रकलां शिवां शिशुहितां टीकामजंराघवं
सुग्रीवांगदमारुतिप्रभृतिभिः संस्तूयमानं पदम् ॥

- शब्देन्दुशेखरस्य टीकायां चन्द्रकलाख्यायाम्

807. सीताभवः पातु सुमन्त्रतुष्टः सुग्रीवरामः सहलक्ष्मणश्च ।
यो रावणार्यप्रतिमश्च देव्या विभीषणात्मा भरतोऽनुसर्गम् ॥

- प्रतिमानाटके भासस्य

808. सीतालतासमासक्तं रामं कल्पमहीरुहम्।
सफलं शीतलच्छायं श्रान्तिं विश्रान्तिदं भजे ॥

- मुद्गलाचार्यकृत-रामार्यायाष्टीकायां पदार्थदीपिकाख्यायाम् मुद्गलाचार्यस्य

809. सौन्दर्यवर्यमदनस्य समानकान्तिं
रक्षोधिपस्य वलसागरकुम्भयोनिम्।
आनन्दमूर्तिममलं कमलायताक्षं
श्री रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ॥

- लक्ष्मीश्वरभूषणालङ्कारप्रबन्धे शिवप्रसादस्य

810. संसारसागरतरीकृतनामधेयं
ध्येयं समाधिरसिकैर्मुनिभिः सदैव ।
दैवं विनाऽपि ददतं श्रियमानतेभ्यो
वन्दे विभुं रघुपतिं करुणैकसीमम् ॥

- रामगीतगोविन्दे जयदेवस्य

811. स्मरामो रामचन्द्रस्य पदपङ्कजमञ्जसा।
यद्रजो रञ्जिता लेभे शिलापि गिरमुज्बलाम् ॥

- सभ्याभरणे रामचन्द्रभट्टस्य

812. स्वर्णैणाजिनशयनो योजितनयनो दशास्यदिग्भागे।
मुहुरवलोकितचापः कोऽपि दुरापः स नीलिमा शरणम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

813. हेयनामगुणवर्जितोऽपि यो दिव्यनामगुणरूपरंजितः।
दीनबन्धुमिह तं रघूद्वहं भावये सततमात्मनि स्थितम् ॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

सीतारामौ

814. क्षमाभिनन्दितौ श्यामावनसूयाविभूषितौ।
जनकानन्दनौ वन्दे जानकीरघुनन्दनौ॥

- जानकीपरिणये चक्रकवेः

रामलक्ष्मणौ

815. नीलनीरजसुवर्णसुन्दरौ बिभ्रतौ रुचिरचापसायकौ।
जानकीविरहखिन्नमानसौ मानसे निवसतां सतांप्रियौ॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदाख्यायां
किष्किंधाकाण्डे रामभट्टस्य

816. प्राप्यमारुतसुताद्विदेहजावृत्तजातमतिजातसम्मदौ।
मानसस्य तमसो विधूतये भूतये च भवतां रघूत्तमौ॥

- वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषपदाख्यायां
सुन्दरकाण्डे रामभट्टस्य

कृष्णः

817. अतसीकुसुमोपमेयकान्तिर्यमुनाकूलकदम्बमूलवर्त्ती।
नवगोपवधूविलासशाली वनमाली वितनोतु मङ्गलं वः॥

- कौमुदीसारसिद्धान्ते वरदराजभट्टस्य

818. अधरनिहितवंशीनादपीयूषसारै-
र्व्रजयुवतिजानानां मोहयन्मानसानि।
हृदयकमलमध्ये योगिभिर्भावनीयो
हरतु दुरितजातं देवकीनन्दनो नः॥

- मन्त्रकौमुद्यां देवनाथठाकुरस्य

819. अनाकुलं गोकुलमुल्ललास यत्पालितं नित्यमनाविलात्मा।
तस्मै नमो नीरदनीलभासे कृष्णाय कृष्णारमणप्रियाय॥

- मध्वविजये नारायणपण्डिताचार्यस्य

820. अनादिभवसम्भूतपापप्रशमकारणम्।
स्मरणं वासुदेवस्य यस्य तस्मै नमोनमः॥

- प्रायश्चित्तनिरूपणे भवदेवस्य

821. अनाद्यन्तं परंब्रह्मसच्चिदानन्दविग्रहम्।
वल्लवीनयनाम्भोजचर्चितं कृष्णमाश्रये॥

- सम्प्रदायभास्करे विजयरामाचार्यस्य

822. अनाद्यविद्यापटनेत्रबन्धना
यमाहुरेके परमाणुविग्रहम्।
त्रयीशिरोवारिधिसम्भवामृतं
नमामि तं कृष्णमनन्तचित्सुखम्॥

- तत्त्वशुद्धौ

823. अनुगतजनपालः क्रूरभूपालकाल-
स्तरुणतरतमालश्यामलो नन्दबालः।
बहुकिरणकरालः सर्वशक्त्या विशालः
स जयति धृतमालश्चन्द्रकोद्भासिभालः॥

- तत्त्वमुक्तावल्यां गौडपूर्णानन्दचक्रवर्त्तिनः

824. अन्तरात्मवपुषाखिलं जगत्
प्रेरयन्नथ बहिश्च यः पुमान् ।
इष्टसाधनवपुः प्रवर्तकस् -
तं नमामि मुरवैरिणं सदा॥

- तत्त्वशुद्ध्याम्

825. अभिनवकौतुककारी गिरिवरधारी भवाब्धिसंहारी।
कुन्दनिकुंजविहारी मानसहारी हरिर्जयति॥

- रसमीमांसायाष्टीकायां गङ्गारामस्य

826. अभिनवघनकान्तिर्बर्हिपिच्छावचूडो
व्रजयुवतिजनानां जीवनं पीतवासाः।
मधुरमुरलिहस्तो राधिकाऽराधितः स
वितरतु जनसङ्घे सततं मंगलानि॥

- कालिदासकृत पुष्पबाणविलासस्य
टीकायां प्रकाशाख्यायां सोमनाथशास्त्रिणः

827. अभिनवनवनीतप्रीतमाताम्रनेत्रं
विकचनलिनलक्ष्मीस्पर्धिसानन्दवक्त्रम् ।
हृदयभवनमध्ये योगिभिर्ध्यानगम्यं
नवगगनतमालश्यामलं कंचिदीडे॥

- सुभा०सुधा०भा०

828. अभिनबमौक्तिकहारी विरचितनारी गणानन्दः।
वृन्दाविपिनविहारी श्रीगिरिधारीप्रभुर्जयति॥

- श्रीकृष्णविलासे हरिमिश्रस्य

829. अमन्दानन्दसन्दोहनिष्यन्दिपदपंकजम् ।
वन्दे वृन्दावनानन्दनिदानं नन्दनन्दनम् ॥

- भामतीप्रभायाम्

830. अम्बरगङ्गाचुम्बितपादः पदतलविदलितगुरुतरशकटः
कालियनागक्ष्वेलनहन्ता सरसिजनवदलविकसितनयनः।
कालघनालीकर्बुरकायः शरशतशकलितसुररिपुनिवहः
सन्ततमस्मान्पातु मुरारिः सततमसमजवखगपतिनिरतः॥

- कन्दुकस्तुतौ

831. अर्चितः संस्मृतोध्यातः कीर्तितः कथितश्रुतः।
यो ददात्यमृतत्वं हि स मां रक्षतु केशवः॥

- कृष्णामृतमहार्णवे महानन्दतीर्थस्य

832. अवतु वो जलजाननपंकजभ्रमर आमरकृत्यविचक्षणः।
व्रजकलत्रविविष्क्रिरवारिजो हरिरयं वृषभानुसुताधवः॥

- वृत्तकलिकायाम्

833. अवतु वः कंसारिः कुमुदरुचिर्भाति यत्करे शंखः।
क्षीराब्धिमथनसंभ्रमसंक्रान्तः फेनपुञ्ज इव॥

- गदगाभिलेखे भिल्लमस्य

834. अवेम व्यापाराकलनमतुरीस्पर्शमचिरा-
दनुन्मीलत्तन्तुप्रकरघटनायाऽसमसकृत्।
विषीदत्पाञ्चालीविपदपनयैकप्रणयिनः
पटानां निर्माणं पतगपतिकेतोरवतु नः॥

- सुभा० सुधा० भा०

835. अष्टौ प्रोक्ष्य दिगङ्गना घनंरसैः पत्राङ्कुराणां श्रिया
कुर्वन्मञ्जुलताभ्ररस्य च सदा रामावलीमण्डनम्।

कृष्णः

य: पीने हृदि भानुजामतुलभाञ्चन्द्राकृतिञ्चोज्वलां
रुन्धानः क्रमते तमत्र मुदिरं कृष्णं नमस्कुर्महे।।

- ललितमाधवे-रूपगोस्वामिनः

836. अस्ति स्वस्त्ययनं समस्तजगतामभ्यस्तलक्ष्मीस्तनं
वस्तुध्वस्तरजस्तमोभिरनिशं न्यस्तं पुरस्तादिव।
हस्तोदस्तगिरीन्द्रमस्तकतरुप्रस्तारविस्तारित
स्त्रस्तस्वस्तरुसूनसंस्तरलसत्प्रस्तारि राधास्तुतम्।।

- कर्णामृते बिल्वमंगलस्य

837. आकल्पं श्रियमातनोतु भवतामम्भोधरश्यामलं
वन्द्यं तज्जगतामनादिनिधनं श्रीवल्लभाख्यं महः।
स्वैरं यस्य मुखाम्बुजे परिलसच्छृङ्गारलीलारस
स्रोतस्युन्मदमीनविभ्रमजुषः खेलन्ति गोपीदृशः।।

- सुभा० सुधा०

838. आनन्दोदयहेतुरिन्दुदृषदामिन्दुर्मुनीनां धिया-
मावृन्दारकमापिपीलिकमिह स्त्रक्सूत्रनीत्या स्थितः।
श्रीवत्साद्भुतकौस्तुभोज्ज्वलवपुः श्रीवासुदेवः स्वयं
श्रीमत्सङ्गममन्दिरे विहरते श्रेयः प्रदायी नृणाम् ।।

- श्रीरामपञ्चशत्यां रामपारशवस्य

839. आभीरदारकमुदञ्चितकिङ्किणीक-
माताम्रपाणिचरणं पुरुषं पुराणम् ।
मञ्जीरमञ्जुमरुणाधरमम्बुजाक्ष-
मद्वैतचिन्मयमनन्तमनादिमीडे।।

- द्वैतनिर्णये वाचस्पतिमिश्रस्य

840. इन्दीवरदलश्याममिन्दिरानन्दकन्दलम् ।
वन्दारुजनमन्दारं वन्देऽहं यदुनन्दनम् ॥

- शिशुपालवधस्य टीकायां सर्वंकषाख्यायां मल्लिनाथस्य

841. ईषदीषदनधीतविद्यया तातमातृमुदमाविवर्द्धयन् ।
क्षेपणाय भवकर्मजन्मनां कोऽपि गोपतनयो नमस्यते॥

- कुसुमाञ्जलेर्ष्टीकायां न्यायकुसुमाञ्जल्याख्यायां हरिदासस्य

842. उदेतु हृदयाकाशे नन्दनन्दनचन्द्रमाः।
विकासयतु मच्चित्तवृत्तिकैरविणीकुलम् ॥

- श्रीकृष्णगीतौ सोमनाथकवेः

843. एको देवः सृजति सकलं पालयत्यत्ति चान्ते
यो विश्वात्मा गुणमयतनुः स्थूलसूक्ष्मादि भेदः।
यश्चान्तःस्थो यमयति जगत् प्रत्यगद्वैतबोधः
कृष्णं वन्दे तमहममृतध्येयमात्मप्रकाशम् ॥

- तत्त्वशुद्ध्याम्

844. ओंनमः परमानन्दवृन्दाविपिनवासिने।
श्रीकृष्णाय प्रपूर्णाय कल्याणगुणशालिने॥

- भेदजयश्रियाम्

845. अंसासक्तोत्तमस्रग्वनभुवि सततं योरिरंसानुरक्तो
गुञ्जोत्तंसाभिरामः प्रतिभयसमरे यो नृशंसारिहन्ता।
भक्ताशंसाभिपूर्त्तौ सकरुणहृदयो यो बलं सावलेपं
बिभ्रद्ध्वंसाभकीर्तिर्वितरतु विविधं शर्म कंसाहितस्ते॥

- सिंहसिद्धान्तसिन्धौ शिवानन्दभट्टस्य

846. कज्जलाविलगोपालबालानयनवासतः।
इव श्यामः श्रियं दिश्यान्मम केशीनिषूदनः॥
- कादम्बरी-उत्तरभागस्य टीकायां चन्द्रकलाख्यायां रामचन्द्रमिश्रस्य

847. कदम्बतरुमण्डिते विहगवृन्दसंसेविते
कलिन्दतनयाश्रिते मुरलिकारवान्दोलिते।
कदम्बितगवादृते बुधनुते च वृन्दावने
लसन्तमतुलद्युतिं सुरवरं मुकुन्दं नुमः॥
- दण्डीकृत-काव्यादर्शस्य टीकायां रङ्गाचार्यशास्त्रिणः

848. कनककमलमालः केशिकंसादिकालः
समरभुविकरालः प्रेमवापीमरालः।
अखिलभुवनपालः पुण्यवल्लीप्रवालः
तव भवतु मम विभूत्यै नंदगोपालबालः॥
- प्रस्तावश्लोके

849. कनकनलिनलक्ष्मीस्पर्धिराधाकुचाग्र-
ग्रथितनयनभृङ्गः स्मेरवक्त्राम्बुजश्रीः।
नवगगनतमालश्यामलामन्दगात्रः
क्षपयतु मम कर्म क्रूरमक्रूरमित्रः॥
- तीर्थविधौ वाचस्पतिमिश्रस्य

850. कमलरुचिरनेत्रं गोपिकाकेलिपात्रम्
कनकसदृशवस्त्रं नीलमेघालिगात्रम्।
करविकसितगोत्रं नागजालारिपत्रम्
कलुषदरचरित्रं नौमि गोपेन्द्रपुत्रम्॥
- वैद्यहृदयानन्दे योगिप्रहराजस्य

851. कमलाकुचकस्तूरीकलितोरसमाश्रये।
गोविन्दं गोकुलानन्दकन्दलं नन्दनन्दनम् ॥

- रघुवीरविजये कस्तूरीरङ्गनाथस्य

852. करतलधृतशैलं प्रौढ़िविध्वंसिनैतम्
समरशमितकंसं योगहृत्पद्महंसम् ।
मुकुलितनयनायास्सादरं राधिकाया
हृदयमधिवसन्तं नौमि कृष्णं हसन्तम् ॥

- तत्त्वकौमुद्यां भवदत्तस्य

853. कराम्भोजे कञ्ज़ी मदनमदभञ्जी पदजुषां
मनःपुञ्जारञ्जी मुखरमणिमञ्जीरचरणः।
कलाकूतव्यञ्जी व्रजयुवतिसञ्जी जलमुचां
गभीराभागञ्जी मम स परमं जीवनधनम् ॥

- आनन्दकन्दचम्प्वां मित्रमिश्रस्य

854. कलात्तमायालवकात्तमूर्त्तिः
करक्वणद्वेणुनिनादरम्यः।
श्रितो हृदि व्याकुलयंस्त्रिलोकीं
श्रियेस्तु गोपीजनवल्लभो वः॥

- क्रमदीपिकायां केशवभट्टस्य

855. कलितललितवंशीरंध्रसञ्चारणैक
प्रवणवलयचञ्चत्पल्लवाभाङ्गुलीकम् ॥
अभिनवजलजाक्षी वृन्दचन्द्राननश्री
नियमितनयनान्तं गोपिकाकान्तमीडे।

- भानुदत्तकृत-रसमञ्जर्याष्टीकायां व्यङ्ग्यार्थकौमुद्याख्यायां अनन्तपण्डितस्य

856. कल्याणं विदधातु गोपरमणीवक्षोजकुम्भद्वयी-
शुम्भत्कुङ्कुमपङ्कमुद्रितलसंद्वक्षास्सपक्षावनः।
दृप्तक्षत्रियवंशपांसनपरिक्षुण्णक्ष्मामण्डली-
भारोत्तारकृतावतारगरिमा श्रीमान् पुराणः पुमान् ॥

- पाञ्चालीपरिणये बालसूरिणः

857. कस्तूरीकोरभासः कमलदलदृशः कौस्तुभाङ्कः कृपालुः
कालिन्दीकूलकेलिः कुलिशकरक्रतुः कामिनीकण्ठमालः।
कंसारिः कैटभारिः कलिकलकदनः कौणपानां करालः
कल्पस्थाणुः वल्लीनां कलयतु कुशलं केशवः केशिकालः॥

- तत्त्वदीपके कवीन्द्रस्य

858. कस्तूरीतिलकं ललाटफलके वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे नवमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुविमलं कण्ठे च मुक्तावलीं
बिभ्रत् स्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

- सुभा०

859. कारुण्याद् गजपतिराशु यस्य भेजे
निर्धूताखिलवृजिनः परं प्रमोदम् ।
चैतन्याकृतिमजितं जितं स्वभक्तै-
स्तं वन्दे मधुरिमसागरं मुरारिम् ॥

- साहित्यकौमुद्यां बलदेवोपाध्यायस्य

860. कालिन्दी कठिना सरित्तरिरियं जीर्णा भवानक्रमो
नो जानामि तरीतुमस्मि वनिता यास्यामि पारं कुतः।

इत्युक्त्वा विमुखीमिवस्मितमुखीं धृत्वाञ्चले चञ्चले
नावं प्रापयते शनैर्विहसते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

- तत्त्वचिन्तामणिसारे गोपीनाथस्य

861. कालिन्दीकलकूलकेलिकलनानन्दाकुलैः संन्ततं
संवीतं शिशुवृन्दकैर्मुनिवरैर्गीतं गुणैकालयम्।
लीलाताडितविश्वविश्वभयदाशेषास्त्रपानीककं
संसारैकमहाद्रुमस्य रुचिरं कन्दं मुकुंदं भजे॥

- मन्त्रचन्द्रिकायाम्

862. कालिन्दीतटकुञ्जबद्धवसतिः सेयं प्रिया राधिका
स्मर्त्तव्यं ननु रुक्मिणी न भवतीहं चारुहासिन्यसि।
युक्तं नासि कलावती सुविदितं त्वं सत्यभामेन्यथा
नोक्तासीति विनिह्नुतोक्तमुदितश्लेषोच्युतः पातु वः॥

- चित्तौड़गढ़ाभिलेखे

863. कालिन्दीपुलिने मया न न मया शैलोपशल्ये न न
न्यग्रोधस्य तले मया न न मया राधापितुः प्राङ्गणे।
दृष्टः कृष्ण इतीरितस्य सभयं गोपैर्यशोदापते-
र्विस्मेरस्य पुरो हसंन्निजगृहान्निर्यन् हरिः पातु वः॥

- सदुक्ति० उमापतिधरस्य

864. कालिन्दीपुलिने लोलं नानालीलालसाननम्।
कलवेणुरवाकृष्टसत्त्वसत्त्वं भजे महः॥

- वाक्यार्थरत्ने अहोबलस्य

865. कालिन्दीपुलिने सुगन्धिपवने मन्दारमूले लसन्
नीलेन्दीवरसुन्दरः कटीतटप्रद्योतिपीताम्बरः।

कोऽपि श्रीमुखमारुतेन मुरलीमालापयन्मञ्जुलम्
लोलाक्षरिभिरञ्जयन्विजयते कंजस्फुरल्लोचनः॥

\- मनोनुरञ्जने नाम नाटके अनन्तदेवस्य

866. कूले मोदानुकूले दिनकरदुहितुर्मोदयन्मानवीयं
चेतश्चामीकराच्छच्छविनवलतया लिङ्गितो लीलयैव।
छांयाभिर्नीयमानः परमरुचिरतां चीयमानः फलौघै-
स्तीव्रं तापं तनोर्नस्तिरयतु ललितः कोपि बालस्तमालः॥

\- शृङ्गारसारिण्यां चित्रधरस्य

867. कृष्ण त्वं नवयौवनोसि चपलाः प्रायेण गोपाङ्गनाः
कंसो भूपतिरब्जनालमृदुलग्रीवा वयं गोदुहः।
तद्याचेञ्जलिना भवन्तमधुना वृन्दावनं मद्विना
मा यासीरिति नन्दगोपवचसा नम्रो हरिः पातु वः॥

\- शा० प०. बिल्वमङ्गलस्य

868. कृष्णः करोतु कल्याणं कालीयक्लेशकारकः।
कालिन्दीकूलकल्लोलकोलाहलकुतूहली॥

\- दैवज्ञबान्धवे हरदत्तठक्कुरस्य

869. कोटितीर्थावगाहेऽपि पदार्थो नाप्यते बुधैः।
तत्पूर्त्यै यश्चकारे मां तं श्रीनन्दात्मजं भजे॥

\- रासपञ्चाध्याय्यां मातृकायां स्फुटश्लोकः

870. क्वणत्किंकिणीजालकोलाहलाढ्यम्
लसत्पीतवासो वसानं चलन्तम्।
यशोदांगणे योगिनामप्यगम्यम्
भजेहं मुकुंदं घनश्यामवर्णम्॥

\- चमत्कारचिन्तामणौ नारायणभट्टस्य

871. गानैर्नारदगोपिकादिषु निजप्रेमाणमावर्द्धयन्
स्वे-स्वे कर्मणि योजयन्सुरमुखान् शुद्धात्मबुद्धिप्रदः।
नित्यं यः सनकादिकेभ्य उरुधा गीतः श्रुतौ राजते
सत्यज्ञानसुखात्मकं तमनिशं कृष्णाभिधानं नुमः॥

- शाण्डिल्यभक्तिसूत्रव्याख्यायां भक्तिचन्द्रिकाख्यायां नारायणतीर्थस्य

872. गुञ्जदलिमञ्जुवञ्जुलय़मुनाकुञ्जे किमपि तिमिरपुञ्जम्।
जयति समभासि ललितं हरिदम्बरशोभिचपलयाऽमिलितम्॥

- श्रीलक्ष्मीश्वरीचरिते बालकृष्णमिश्रस्य

873. गृहीतगोवेष भुवो भविष्यत्संत्राणसंप्रत्ययसाधनाय।
मुदा स देवः खलु वल्लवानां गोपालनोत्फुल्लकले कुलेपि॥

- प्रेमरसायने लक्षणखण्डे विश्वनाथपंडितस्य

874. गोगोपीगोपवृन्दारकततिमहितादर्शनीया सुवेषा
योगीन्द्रैराद्यगम्या सजलजलदभक्तैककारुण्यपात्री।
ईषत्सस्मेरवक्त्राम्बुजकमलगदाचक्रपीतांशुकाढ्या
कालिन्दीकेलिलोला दिशतु शमनिशं स्रग्धरा कापि मूर्त्तिः॥

- ज्योतिषतरंगिण्याम्

875. गोपस्त्रीवशकारिणी शशधरज्योत्स्नातिरस्कारिणी
सर्वामङ्गलहारिणी स्मररसप्रख्यातिसञ्चारिणी।
राधाजीवितधारिणी व्रजकुलस्यानन्दविस्तारिणी
हासश्रीर्व्रजसुन्दरस्य विशदः भूयान्मम श्रेयसे॥

- श्रीकृष्णगीतौ सोमनाथकवेः

876. गोवर्द्धनगिरिधारी गोकुलनारी स्फुरन्मनोहारी।
नवनीरदानुकारी कुंजबिहारी हितोपहारी मे॥

- स्मृतिप्रकाशे हरिभट्टसुत-आपाजिभट्टसूनोर्भास्करस्य

877. गोविन्दचरणद्वन्द्वमधुनो महदद्भुतम् ।
यत्पायिनो न मुह्यन्ति मुह्यन्ति यदपायिनः॥

- शाण्डिल्यशतसूत्रीयभाष्ये स्वप्नेश्वरसूरिणः

878. गोविन्दं गोपगोपीनां नन्दनं नन्दनन्दनम् ।
वृन्दारकमुनिव्रातैर्वन्द्यं वन्दामहे वयम् ॥

- पर्यायपदावल्यां वासुदेवस्य

879. चिरतरकृतयोगयोगिवृन्दै-
र्विपुलहृदिस्थिरचेतसा विमृग्यः।
शमयतु दुरितानि भावकानां
सुखसदनः कदनोऽसतां मुरारिः॥

- रागतरङ्गिण्यां लोचनस्य

880. जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो
यदुवरपरिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम् ।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मितश्रीमुखेन
व्रजपुरवनितानां वर्धयन् कामदेवम् ॥

- भक्तिरत्नावल्यां श्रीधरस्वामिनः

881. जयति तदनन्तमाद्यं ध्वान्तध्वंसं सुमंगलं विमलम्।
कृतिनयनभागधेयं श्रीकृष्णाख्यं परंब्रह्म॥

- सद्भक्तितोषणीसारसङ्ग्रहे

882. जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयम्
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशी मुकुन्दः।।

- रीवाँ-पत्राभिलेखे त्रैलोक्यमल्लदेवस्य

883. जातश्शीतमरीचिरस्य हृदयादित्यागमेषु श्रुतम्
भानुर्नूनममुं नुदन्नुदयते हार्दं तमिस्त्रं त्विति।
शङ्कामङ्कुरयन्तमाश्रिततततेर्यः कौस्तुभं वक्षसा
धत्ते स्मेरकृपाविपाकललितः कृष्णः स पुष्णातु नः।।

- शृङ्गारतरङ्गिण्यां वेंकटाचार्यस्य

884. जितमभीक्ष्णमेव जाम्बवतीवदनारविन्दोर्जितालिना।
दानवाङ्गनामुखाम्भोजलक्ष्मीतुषारेण विष्णुना।।

- तुसम्-शिलालेखे

885. तमालनीलं कमलालयालं विशालभालं निजलोकपालम् ।
प्रियालकालंकृतिकेलिलोलं प्रवालमालं भज गोपबालम् ।।

- हर्षकृत-रत्नावल्याष्टीकायां रत्नावलीप्रभाख्यायां
दत्तात्रेयशास्त्रिणः

886. तमोगणविनाशिनी सकलकालमुद्योतिनी
धरातलविहारिणी जडसमाजविद्वेषिणी।
कलानिधिसहायिनी लसदलोलसौदामिनी
मदन्तरवलम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी।।

- माधवचम्प्वां चिरंजीवभट्टाचार्यस्य

887. तरावालोलायां भयचकितगोपालतरुणी
दृगन्तैरुन्मीलत्कुवलयदलश्रेणिसुभगैः।
हठादापूर्णायां तपनतनयानीरनिवह-
भ्रमेण प्रक्षेप्तुं कृतकरपुटो रक्षतु हरिः॥

- मन्त्रार्थदीपिकायां शत्रुघ्नस्य

888. तृणमयदितिजारी रत्नकेयूरधारी
ललितयुवतिजारी भूयतच्चित्तहारी।
स्वजनदुरितहारी मञ्जुगुञ्जाच्छहारी
सुखयतु गिरिधारी गोपबालानुकारी॥

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

889. तैस्तैः पर्वतधारणप्रभृतिभिस्त्रैलोक्यजीवातुभिः
विस्मेराणि जगन्ति यस्य चरितैराम्रेडितक्रीडितैः।
तस्याभीरवयस्यताप्रकटितं सौलभ्यमाबिभ्रतः
कंसारेरवतंसयामि चरणौ संसारविध्वंसिनौ॥

- सुभा० सुधा०

890. दधद्वासः पीतं सजलजलदश्यामलरुचि-
र्मुदा पूर्णां कुर्वन्नधरसुधया सन्मुरलिकाम् ।
समन्तादाभीरीजनपरिवृतो भानुतनया
तटान्तःसंचारी मम हरतु हारी हरिरघम् ॥

- मनोदूते तैलङ्गव्रजनाथस्य

891. दृश्यते योऽनिशं नित्यैर्मुक्तैर्यो गम्यते हरिः।
धीयते योगिभिश्चित्ते तं श्रीकृष्णं समाश्रये॥

- कृष्णस्तवव्याख्यायां सुरद्रुमाख्यायां पुरुषोत्तमप्रसादस्य

892. देवकीनन्दनं कृष्णं जगदानंदकारकम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं वन्दे माधवं भक्तवत्सलम् ॥

- मार्गशीर्षमाहात्म्ये

893. देहो नाहं श्रोत्रवागादिकानि नाहं बुद्धिर्नाहमध्यासमूलम्।
नाहं सत्यानन्दरूपश्चिदात्मा मायासाक्षीकृष्ण एवाहमस्मि॥

- तत्त्वानुसन्धाने महादेवसरस्वत्याः

894. द्राग्द्वारस्थितदन्तिदन्तमुसलोत्पाटप्रतिष्ठोल्लस-
त्पौरस्त्रीपरिवेषपूरितमहाकीर्तिर्यशोदात्मजः।
गोपीवृन्ददृगन्तपीवरमहापीयूषधाराशत-
स्नानक्लिन्नकलेवरः कलयतां कल्याणमव्याहतम् ॥

- सुदर्शनचम्पूकाव्ये कृष्णानन्दकवीन्द्रस्य

895. धन्यं धन्वन्तरीतिप्रथितसुभिषजं योर्णवादुद्दधार
येन श्रीकण्ठकण्ठे नियमित उदितः कालकूटोब्धिमंथे।
नाम्नार्तिं चाहरद्यो मदनदहनजं गोपिकागोपतापम्
श्रीकृष्णो वैद्य आद्यो जयति स जगतीजीवजीवातुमूर्त्तिः॥

- चोबचीनीप्रकाशे व्रजराजसुतमधुसूदनशर्मणः

896. नन्दालये विलसितं श्रुतिभिर्विमृग्यं
ब्रह्मादिवन्द्यचरणं नवमेघवर्णम्।
संसारतापशमनं सुपुमर्थमाद्यं
कृष्णं श्रये दलितमोहमयान्धकारम् ॥

--प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां प्रभाख्यायां सदानन्दस्य

897. नवनीलनीरदनिभाभमञ्जुलम्
भुविभारभूतरिपुभूधराशनिम् ।
अनिशं स्वभक्तजनतापहारिणम्
प्रणमाम्यहं मधुरवल्लवीप्रियम् ॥

- शङ्करलालकृत-चन्द्रप्रभाचरितस्य टीकायां
पौर्णमसी-इत्याख्यायाम्

898. नवीनजलदच्छविः प्रवरगोपगोपीवृतः
प्रचण्डरिपुमर्द्दकः सकलभुक्तिमुक्तिप्रदः।
बकासुरविदारकः त्रिविधतापसंवारकः
स एव गरुडध्वजो जयति भक्तकल्पद्रुमः॥

- भावप्रकाशे जीवनाथस्य

899. नाम्नैव नाशयति यो भवपाशबन्धम्,
दाम्नैव यो व्रजवधूभिरयत्नबद्धः।
एवं दयाजलनिधिर्निजवर्गवश्यः
सेव्यः स मेऽस्तु सततं सुखसिन्धुरेकः ॥

- लक्ष्मीधरकृत-श्रीभगवन्नामकौमुद्याष्टीकायां
प्रकाशाख्यायां अनन्तदेवस्य

900. नित्यानन्दैकरसं सच्चिन्मात्रं परंज्योतिः।
पुरुषोत्तममजमीशं वन्दे श्री यादवाधीशम् ।

- प्रबोधसुधाकरे शङ्कराचार्यस्य

901. निसर्गभिदुरोऽपि सन्नखिलचेतनाचेतनात्
समस्तजगदात्मकस्सकलशब्दवाच्यस्स्वयम् ।
अशेषवपुरुज्ज्वलो हतसमस्तहेयाकृतिः
स ते भवतु केशवः शुभगुणाश्रयश्श्रेयसे ॥

- वेदार्थविचारे

902. नीलिमानमहं वन्दे तन्देवस्य मुरद्विषः।
तदाप्लवादिव प्राप्तं यमुनां यं न मुञ्चति॥

- सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

903. नीलोत्पलाभिरामं कामं गोपालबालानाम्।
नन्दानन्दनिधानं जगन्निदानं नमस्यामः॥

- न्यायरहस्ये

904. नूतनजलधररुचये गोपवधूटीदुकूलचौराय।
तस्मै कृष्णाय नमः संसारमहीरुहस्य बीजाय॥

- मुक्तावलीकारिकायां पञ्चाननभट्टाचार्यस्य

905. परिवीतपीतवसनं घनोपमम्
शतपत्रपत्रसदृशायतेक्षणम्।
धृतवेणुरेणुपरमण्डितं गवाम्
हृदि वोऽस्तु कौस्तुभविभूषणं महः॥

- शाण्डिल्यशतसूत्रीयभाष्ये स्वप्नेश्वरसूरिणः

906. पुञ्जीभूतं प्रेमगोपाङ्गनानां
मूर्तीभूतं भागधेयं यदूनाम्।
एकीभूतं गुप्तवित्तं श्रुतीनां
श्यामीभूतं ब्रह्म मे संनिधत्ताम्

- शा०प० राघवचैतन्यस्य

907. पुंसामर्त्तिभिदे कलानिधिकुलोत्तंसाय संसारभी-
विध्वंसाय मुनीन्द्रमानससरोहंसाय कंसारये।

अङ्कालम्बितशिक्यमुज्वलरुचिं गुञ्जावतंसादिना
यं साशङ्कमुपागमत्कमलभूः कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

- तत्त्वचिन्तमणेष्टीकायां आलोकदर्पणाख्यायां महेशठाकुरस्य

908. प्रकृष्टचलकुण्डलस्तवकघृष्टगंडस्थलं
महार्हमणिमेखलं मकरताङ्कुरश्यामलम्।
करोतु करुणां सदा कलितपंचषाब्दक्रमं
महः किमपि मोहनं कपटशैशवं केशवम् ॥

- महार्णवकर्मविपाके मान्धातुः

909. प्रणमदमरमौलिप्रोतमाणिक्यरश्मि-
च्छुरितनखदलाग्रं पादपद्मं मुरारेः।
मनसि निविशमानं मामकं तापजालम्
शमयतु वितरत्वामोदमश्रान्तमन्तः॥

- रामतापिन्युपनिषद्व्याख्यायां नागेश्वरसूरिणः

910. प्रतिज्ञया योऽवददर्जुनार्थं मद्भत्यनाशो न कदापि भावी।
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निनिवष्टः श्रीकृष्णनाथं तमहं प्रपन्नः॥

- विभावनायां अनन्तदेवसुतबाबादेवस्य

911. प्रत्येकं तनुरोमसुश्रितजगज्जालाय गोष्ठेशितु-
र्बालाय प्रविनाशितातिविपुलव्यालाय वृन्दावने।
गोपालाय महीभरक्षितिभृतां कालाय पद्मस्फुरन्
मालाय स्फुटपीतदावदहनज्वालाय नित्यं नमः ॥

- कृष्णभक्तिचन्द्रिकायां आपदेवसुत-अनन्तदेवस्य

912. प्रवितत तत थेई कृत्यकारी दयावान्
धननयकलितो यत्तत्त्ववर्गान्वितोऽपि।

विलसितनतवर्गस्फूर्जितश्चित्रकारी
सुखयतु गिरिधारी गोपवेशानुकारी॥

- अमरकाव्ये रणछोडभट्टस्य

913. प्राणान् कृशोदरीणां राधानयनान्तसर्वस्वम्।
तेजस्तमालनीलं शरणागतवज्रपञ्जरं वन्दे॥

- अलङ्कारशेखरे केशवमिश्रस्य

914. फुल्लेन्दीवरकान्तिकान्तमपरं बर्हावतंसाश्रयम्
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पत्यार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतम्।
गोविन्दं करवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषणं भजे॥

- गोपालाष्टादशाक्षरीमन्त्रे

915. बालार्कच्छविचक्रवाकविमलव्यालाहतावेष्टितः
कर्णालम्बितकुण्डलो जलधरच्छेदावदातच्छविः।
सत्कार्त्तस्वरकूटनिर्गत इव स्निग्धेन्द्रनीलोपल-
स्तम्भः स्कन्धगपद्मरागयुगलः कृष्णोस्तु वः श्रेयसे॥

- पथरी-स्तम्भाभिलेखे

916. बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां जीवं जडानां महदादिकानाम्।
आग्नेयमस्त्रं भवपातकानां किंचिन्महः श्यामलमाश्रयामि॥

- मदनविनोदनिघण्ट्वां मदनपालस्य

917. भक्तापायभुजङ्गगारुडमणिस्त्रैलोक्यरक्षामणिः
गोपीलोचनषट्पदांबुजमणिः सौन्दर्यमुद्रामणिः।

कृष्णः

यः कान्तामणिरुक्मिणीकुचमणिद्वन्द्वैकभूषामणिः
श्रेयो देव शिखामणिर्दिशतु मे गोपालचूडामणिः॥

- अनन्तदेवकृत-कृष्णभक्तिचन्द्रिकायां मातृकायां स्फुटश्लोकः

918. भक्ताभीष्टकरं वेदशास्त्रसिद्धान्तपारगम्।
परब्रह्ममहः किं चिद्वंशीधरमुपास्महे॥

- कुण्डरत्नावल्यां कृष्णदीक्षितसुत-रामचन्द्रदीक्षितस्य

919. भव्यं भव्यमितीरयन्ति वनिताः श्रुत्वा वचः सादरं
प्रच्छंत्या किमिदं सखीर्हरिरसौतातेत्यवोचत्पदम्।
आनन्दोदधिवीचिमग्नमनसा मात्रा पुनश्चुम्बिते
लीलोल्लासि नवोद्धविष्णुदशने कृष्णे सदा मङ्गलम्॥

- वृत्तरत्नावल्यां मणिराममिश्रस्य

920. भीष्मद्रोणतटां जयद्रथजलां गान्धारराजह्रदाम्
कर्णद्रौणिकृपोर्मिनक्रमकरां दुर्योधनस्त्रोतसम्।
तीर्णः शत्रुनदीं शरासिसिकतां येन प्लवेनार्जुनः
शत्रूणां तरणेषु वः स भगवानस्तु प्लवः केशवः॥

- उरुभङ्गे

921. भुजप्रभादण्ड इवोर्ध्वगामी स पातु वः कंसरिपोः कृपाणः।
यः पाञ्चजन्य-प्रतिबिम्बभङ्ग्या धाराम्भसः फेनमिव व्यनक्ति॥

- विक्रमाङ्कदेवचरिते बिल्हणस्य

922. भ्राम्यद्भास्वरमन्दराद्रिशिखरव्याघट्टनाद्विस्फुरत् -
केयूराः पुरुहूतकुञ्जरकरप्राग्भारसंवर्धिनः।

दैत्येन्द्रप्रमदाकपोलविलसत्पत्राङ्कुरच्छेदिनो
दोर्दण्डाः कलिकालकल्मषमुषः कंसद्विषः पान्तु वः॥

- सदुक्ति० योगेश्वरस्य

923. मण्डनं गोपवेषस्य गोपीगोरसलालसम्।
मयि वस्तुकिमप्यस्तु स्फुरन्नीरधरच्छविः॥

- आग्रायणप्रयोगे

924. मधुरवचनपारैः पार्थधन्योद्धवाभ्याम्
परमसुखदगोप्यज्ञानविज्ञानवृन्दम्।
जगति कथितवान् यः सोऽस्तु गोवर्धनेशः
सुखयतु निजभक्तं केशवो गोपवेशः॥

- अमरकाव्ये रणछोडभट्टस्य

925. मयूरपिच्छाभरणेन्द्रचापो राधातडित्संवलितांगयष्टिः।
कलिन्दजातीरविहारचुञ्चुः कृष्णाम्बुदो वर्षतु मङ्गलाम्भः॥

- श्रीकुवलयानन्दचन्द्रिकाचकोरे जगगूवेंकटाचार्यस्य

926. मल्लैः शैलेन्द्रकल्पः शिशुरखिलजनैः पुष्पचापोऽङ्गनाभि-
र्गोपैस्तु प्राकृतात्मा दिवि कुलिशभृता विश्वकायो प्रमेयः।
क्रुद्धः कंसेन कालो भयचकितदृशा योगिभिर्ध्येयमूर्ति -
र्दृष्टो रङ्गावतारे हरिरमरजनानन्दकृत्पातु युष्मान्॥

- सुभा०

927. मालीनो वलमाली मालीनो वनमाली।
मालीनो वनमाली मालीनो वनमाली॥

- राधाविनोदकाव्ये रामचन्द्रस्य

928. मुहुरपि वलितग्रीवं विनीतकर्णः स्वकिङ्किणीक्वणनात् ।
मुहुरपि जाल्मविहारी मुरवैरी मे प्रसन्नोऽस्तु॥

- कुमारसंभवस्य टीकायां अभिप्रायप्रकाशिन्याख्यायां गोविन्दकविकङ्कणस्य

929. मेघश्यामं निरवधिरसं पीतवासो दधानम्
कान्त्याक्रान्तत्रिभुवनवपुर्ध्येयपादारविन्दम् ।
सत्यज्ञानामितसुखमवाग्गोचरं बुध्यतीतम्
भक्तया सिद्ध्यै स्वमपि कलये श्रीमुकुन्दं स्मितास्यम् ॥

- प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणौ सदानन्दस्य

930. मौलौ केकिशिखण्डिनी मधुरिमाधाराधरे वंशिनी
पीतांसे वनमालिनी हृदि लसत्कारुण्यकल्लोलिनी।
श्रोण्यां पीतदुकूलिनी चरणयोर्व्यत्स्तविन्यासिनी
लीला काचन मोहिनी विजयते वृन्दावनावासिनी॥

- सुभा० सुधा० भा०

931. यत्कीर्त्तनं यत्स्मरणं यत्वीक्षणम्
यद्वंदनं यद्श्रवणं यदर्हणम्।
लोकस्य सद्यो विधुनोति कल्मषं
तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः॥

- भक्तिरत्नावल्यां श्रीधरस्वामिनः

932. यत्कृपालेशमात्रेण पुरुषार्थचतुष्टयम् ।
प्राप्यते तमहं वंदे गोविन्दं भक्तवत्सलम् ॥

- मीमांसान्यायप्रकाशे आपदेवस्य

933. यत्पादाब्जस्मृतिरभयदा शान्तिदान्त्यादिहेतु-
र्यद्धाम्नेदं स्फुरति सकलं कल्पितं यत्र सत्ये।
यं विश्वं सम्प्रविशति लये सर्वशक्तिप्रतिष्ठं
तं श्रीकान्तं स्वपदरतिदं संश्रये कृष्णमीशम् ॥

- प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणौ सदानन्दस्य

934. यद्भालनेत्रशोभायै गोपीचन्दननिर्मितम् ।
स्वीचक्रे तिलकं कृष्णःस मां पातु त्रिलोचनः॥

- काव्यलक्ष्मीप्रकाशे शिवरामस्य

935. यन्मौलौ निहितं चिराय निगमैर्ध्येयं च यद्योगिभि -
र्यल्लक्ष्मीमृदुपाणिपद्मयुगलीसंवाहनैर्लालितम् ।
जाता यत्र वियन्नदी त्रिजगतां सन्तापनिर्वापणी
तस्मात्कंसभिदः पदादुद्भवद्वर्णो गुणार्णोनिधिः ॥

- कोण्डविडु अभिलेखे

936. यमक्षरं ब्रह्म वदन्ति विज्ञाः सिद्धास्तुरीयं यमकर्तृसांख्याः।
तं सत्यमानंदनिधिं स्मरामि श्रीनंदसूनुं श्रुतिभिर्विमृग्यम्॥

- प्रश्नरत्नटिप्पण्यां संक्षिप्तार्थप्रकाशिनी इत्याख्यायाम्

937. यशोदया पयोधरामृतेन विश्वपालको
यशोदयां पयोधरामृतेनसोऽपि पालितः।
सतामबंधनोद्यतः सदामबंधनोदरः
सनंदनाभिवन्दितः सनन्दनंददो हरिः॥

- गणेशकृत मातृकायां स्फुटश्लोकः वृत्तरत्नावतंसवृत्तौ

938. यस्तर्कजालपटलप्रतिबद्धदृग्भिः
क्लृप्तप्रधानपुरुषप्रविभागभेदः।

कृष्णः

तं सर्वसर्गपरिपालनहानिलीलं
वन्दे मुकुन्दमखिलस्पृहणीयकीर्तिम् ॥

- तत्त्वशुद्धयाम्

939. यस्मिन्सम्भासते विश्वं शुक्तौ रूप्यवदुत्थितम् ।
सच्चिदानन्दरूपं तं श्रीकृष्णं परमाश्रये॥

- वेदान्तसिद्धान्तमतमार्तण्डे देवदत्तशर्मणः

940. यस्स्वामी सर्वलोकानां प्रेरको नितरां मम।
मद्धस्ताद्यो लिखितवान्स मे प्रीणातु केशवः ॥

- रासपञ्चाध्याय्यां मातृकायां स्फुटश्लोकः

941. ये गोवर्धनमूलकर्दमरसव्यादष्टबर्हच्छदा
ये वृन्दावनकुक्षिषु व्रजवधूलीलोपधानानि च।
ये चाभ्यङ्गसुगन्धयः कुवलयापीडस्य दानाम्भसा
ते वो मङ्गलमादिशन्तु सततं कंसद्विषो बाहवः॥

- सदुक्ति० शुभाङ्कस्य

942. यो वा मन्दरवपुषं ममर्द मातङ्गवरममन्दरवपुषम् ।
कान्तां चापधराद्यः क्षपितो येनाङ्गजोऽपि चापधराद्यः॥

- युधिष्ठिरविजये वासुदेवस्य

943. यं ध्यायन्ति सनातनं मुनिगणा अद्वैतबुध्या सदा
वैदैरप्यवगम्यतेऽथमहिमा यस्यातिलोकोत्तरः।
तस्मिन्सर्वसुपर्वपूजितपदांभोजे जगत्कारणे
मोहध्वान्तविधूननैकनिपुणे कृष्णेऽस्तु मे मानसम् ॥

- रामविलासकाव्ये विश्वनाथकवेः

944. यां वीक्ष्य व्रजपूर्णचन्द्रवदना यान्ति स्मराधीनता-
मायान्ति स्म सखेति गोपतनयाः कैशोररम्याश्चलाः।
बालोऽयं बहुदुःखभागिति जहात्यस्त्रं यशोदाकुला
सायं सा व्रजतो वनान्मुरभिदो मूर्तिस्सदा पातु वः॥

- कृष्णलीलामृते केशवस्य

945. यः पूतनामारणलब्धवर्णः काकोदरो येन विनीतदर्पः।
यशोदयालंकृतविग्रहोऽव्यान्नाथो रघूणामथवा यदूनाम्॥

- सुभाषितपद्धतौ श्रीपतेः

946. यः परात्मा जगत्सृष्ट्वा प्रविवेश पुनः स्वयम् ।
तं कृष्णं प्रत्यगात्मानं वन्दे गोपीमनोहरम् ॥

- अद्वैतचिन्ताकौस्तुभे

947. लक्ष्मीसहायं कल्पद्रुतरलं जितगोकुलम् ।
बर्हापीडं घनश्याममम्महः किञ्चिदुपास्महे॥

- निर्णयसिन्धौ कमलाकरभट्टस्य

948. ललितललनालीलोदञ्चद्विलोलविलोचनो-
त्पलवनरुचां चञ्चन्तीनां चयैरिव चर्चिता।
सुरभिसुहृदः पक्षच्छायावृतेव च षट्पदैः
कुसुमधनुषः श्यामामूर्तिस्तनोतु सुखानि वः॥

- चतुर्वर्गसंग्रहे क्षेमेन्द्रस्य

949. लोकत्रयस्य कर्त्ता भक्तानां पापवृन्दसंहर्ता।
गोवर्द्धनगिरिधर्ता-खगपतिसर्ता हरिः शरणम् ॥

- माधवस्वातन्त्र्ये गोपीनाथदाधीचस्य

950. वन्दारुवृन्दारकवृन्दवन्द्यो वृन्दावने तर्णकधेनुवृन्दैः।
चिक्रीड कोऽपीह स गोपरूपी गोपीभिरप्यत्र सदा मुदेस्तु॥

- भाट्टार्के नीलकण्ठभट्टस्य

951. वन्दे कृष्णपदारविन्दयुगलं यस्मिन् कुरङ्गीदृशां
वक्षोजप्रणयीकृते विलसति स्निग्धोऽङ्गरागः स्वतः।
काश्मीरं तलशोणिमोपरितनः कस्तूरिका नीलिमा
श्रीखण्डं नखचन्द्रकान्ति-लहरी निर्व्याजमातन्वते॥

- आनन्दवृन्दावनचम्प्वां कर्णपूरगोस्वामिनः

952. वन्दे गोपीदृगाक्षिप्तमानसं कामितप्रदम् ।
कंदर्पदर्पदलनं नन्दनन्दनमादरात् ॥

- रासपञ्चाध्यायाष्टीकायां नारायणी इत्याख्यायाम्

953. वन्दे नन्दकिशोरस्य चरणाम्बुजमद्भुतम् ।
यद्गोपिकाकराम्भोजभासुरश्रीविवर्धनम् ॥

- श्रीकृष्णगीतौ सोमनाथकवेः

954. वन्दे नन्दव्रजवधूवृन्दोपवनदेवताः।
यत्पयोधरशैलेषु कृष्णः कृष्णघनायते॥

- कृष्णस्तवे

955. वन्दे मुकुन्दमरविन्ददलायताक्षम्
कुन्देन्दुशङ्खदशनं शिशुगोपवेषम् ।

इन्द्रादिदेवगणवन्दितपादपीठम्
वृन्दावनालयमहं वसुदेवसूनुम् ॥

- मुकुन्दमालायां कुलशेखरस्य

956. वन्देयवृन्दारकवृन्दवन्द्यपादारविन्दं दलितारिवृन्दम्।
आभान्तमाभीरवधूभिरेतं गोपालभूपालमलं कृपालुम् ॥

- सारस्वतप्रसादे वासुदेवस्य

957. वन्दे वृन्दावनत्राणं प्राणं गोगोपसुभ्रुवाम् ।
इन्दिरानयनानन्दं गोविन्दं द्युतिमन्दिरम् ॥

- विश्वनाथकविराजकृत-साहित्यदर्पणस्य टीकायां
विमलाख्यायां शालग्रामशास्त्रिणः

958. वपुर्लीलालक्ष्मीजितमदनकोटिर्व्रजवधू-
जनानामानन्दं कमपि कमनीयं विरचयन् ।
स कोऽपि प्रेमाणं प्रथयतु मनोमन्दिरचर-
स्त्रिलोकीलोकानां सजलजलदश्यामलतनुः॥

- गौतमकृत-न्यायसूत्राणां वृत्तौ विश्वनाथस्य

959. वाग्देवी चतुरास्यपञ्चवदना नित्यं सहस्राननो-
प्युच्चैर्यत्र जडात्मतामुपगताः केन्ये वराकाः सुराः।
मर्त्याः स्वल्पधियः कथं नु कुशलास्तत्राप्यहं प्रज्ञया
हीनः किं करवाणिं तां व्रजकुलोत्तंसप्रशंसां तव॥

- आनन्दमन्दाकिन्यां मधुसूदनस्य

960. विद्युत्त्वानिव नीलकण्ठनिवहो यां द्रष्टमुत्कण्ठते
यां दृष्ट्वा यमुनां पिपासुरनिशं व्यूहो गवां गाहते।

उत्तंसाय तमालपल्लवमितिच्छिन्दन्ति यां गोपिकाः
कान्तिः कालियशासनस्य वपुषः सा पावनी पातु वः॥

- सुभा० सुधा० लीलाशुकस्य

961. विशालविषयाटवीवलयलग्नदावानल-
प्रसृत्वरशिखावलीविकलितं मदीयं मनः।
अमन्दमिलदिन्दिरे निखिलमाधुरीमन्दिरे
मुकुन्दमुखचन्दिरे चिरमिदं चकोरायताम् ॥

- शान्तविलासे जगन्नाथस्य

962. वृन्दारण्ये चरन्ती विभुरपि सततं भूर्भुवः स्वः सृजन्ती
नन्दोद्भूताप्यनादिः शिशुरपि निगमैर्लक्षिता वीक्षितापि।
विद्युल्लेखावनद्धोन्नमदमलमहाम्भोदसच्छायकाया
माया पायादपायादविदितमहिमा कापि पैताम्बरी वः॥

- कंसवधे शेषकृष्णस्य

963. व्रजधरणिविहारी गोपबालाधिहारी
दितिजहृतिविचारी मञ्जुगुञ्जाच्छहारी।
व्रजयुवतिविहारी गोपिकावस्त्रहारी
सुखयतु गिरिधारी गोपबालानुकारी॥

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

964. शङ्खक्षीरवपुः पुरा कृतयुगे नाम्ना तु नारायण-
स्त्रेतायां त्रिपदार्पितत्रिभुवनो विष्णुः सुवर्णप्रभः।
दूर्वाश्यामनिभः स रावणवधे रामो युगे द्वापरे
नित्यं योऽञ्जनसन्निभः कलियुगे वः पातु दामोदरः॥

- बालचरिते भासस्य

965. शब्दब्रह्ममयी च कास्ति मुरली यत्राद्भुता मोहिनी
यत्रास्ते शुकनारदादि निहितं प्रेमैव पीताम्बरम् ।
यत्राद्वैतसमाधिमग्नमनसां निद्रामयी श्यामता
गोपीलोचनचुम्बितं नरहरेः क्षेमाय धामास्तु तत् ॥

- शृंगारशतके नरहरेः

966. शान्तिकान्तिगुणमन्दिरं हरिं
स्थेम सृष्टिलयमोक्षकारणम् ।
व्यापिनं परमसत्यमंशिनं
नौमि नन्दगृहचंदिनं प्रभुम् ॥

- कृष्णस्तवव्याख्यायां पुरुषोत्तमप्रसादस्य

967. शाब्दे ब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माऽधिगच्छति।
इति वात्सल्यवान् बिभ्रद्रूपं मां पातु माधवः॥

- वादसुधाकरे देवीदत्तसुतरामसेवकसुतकृष्णाचार्यस्य

968. शिखण्डिपिञ्छोज्ज्वलकेश ईशः सुखण्डितारातिगणोगुणाढ्यः।
अखण्डसच्चित्सुखविग्रहो वः सकुण्डलीन्द्रो हरिरस्तु भूत्यै॥

- श्रीचिह्नकाव्ये कृष्णलीलाशुकस्य

969. शुभ्रांशुश्शिखरोत्करस्सुरतरुः श्रीपञ्चशाखाङ्गुलिः-
श्रेणी कामगवी-सुधा-सुरसरिच्चिन्तामणिर्दृश्यताम् ।
कादम्बिन्यतुलाङ्गकान्तिरमृतांभोधिः कृपा यस्य वः
शश्वत्पातु स यादवश्चिरमनाधारोप्युदाराकृतिः॥

- अमनब्रोलु-देवालयाभिलेखे

970. शेषाशेषमुखव्याख्याचातुर्य्यं त्वेकवक्त्रतः।
दधानमद्भुतं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥

- भगवद्गीतायाष्टीकायां सुबोधिनी इत्याख्यायां श्रीधरस्य

971. श्रियः पतिः श्रीमतिशासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि
वसन्ददर्शावतरन्तमम्बराद्धिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः॥

- शिशुपालवधे-माघस्य

972. श्रीकृष्णाय नमश्चिदात्मवपुषे राधामनोभूपुषे
विभ्राजन्नवनीतगोकुलमुषे गोपाङ्गनाहृन्मुषे।
भक्तानां बहुवारपूरितवृषे माराधिकश्रीजुषे
लोकाडम्बरजारचोरविदुषे कंसद्विषे श्रीजुषे॥

- सूत्रार्थामृतलहर्यां कृष्णावधूतपण्डितस्य

973. श्रीकृष्णं तं यशोदातनयमजमथोदेवकीगर्भभूतं
स्वक्रूराद्यैरुपास्यं दितिजचयरिपुं वासुदेवं परेशम्।
नन्दाद्यैर्गोपवृन्दैः सहचरसुहृदं घोषयोषित्सुसक्तं
देवं देवेन्द्रं वन्द्यं निखिलनिजमतिध्वान्तहत्यै नमामि॥

- रामानन्दमयूरकविकृत-श्रीकृष्णमुक्तामालार्यायाष्टीकायां
सुबोधिनी इत्याख्यायाम्

974. श्रीकृष्णं भक्ततृष्णं नवघनवपुषं बर्हिबर्हावतंसं
श्रीराधावक्त्रचन्द्रामृतरसरसिकं मन्दहासानुरक्तम् ।
कालिन्दीतीरकुञ्जाभिलषितविपिने पुष्पगन्धाभिपूर्णे
क्रीडन्तं गोपिकाभिः प्रमुदितहृदयं नन्दसूनुं नमामि॥

- कविचिन्तामणौ गोपीनाथकविभूषणस्य

975. श्रीनन्दात्मजविक्रमेणविजितास्सप्तैकवस्वेंदवो
श्रीमन्माधवकामश्यामशशिनो यत्रैव सत्संगताः।
तत्रेयं सरसी भवत्सुकृतिनामाह्लादिनी भूतले
पूर्णा तिष्ठतु नन्दसूनुजलदेनापूरिता सर्वदा॥

- रासपञ्चाध्यायां मातृकायां स्फुटश्लोकः

976. श्रीमद्ब्रह्मसनातनं श्रुतिनुतं ध्यानैकगम्यं सदा
सर्गाद्यस्य विधायकं त्रिजगतो मोदावहं यत्सदा।
सच्चिद्रूपतया यदर्थनिचयं व्याप्नोति तेजोमयम्
भूयात्तत्त्रिविधार्त्तिहारि जगतां श्रीवासुदेवाभिधम् ॥

- विश्वगुणादर्शचम्प्वां वेंकटाध्वरिणः

977. श्रीव्रजेश हृषीकेश कारुण्यादिगुणार्णव ।
वल्लवीप्रियगोविन्द पाहि मां नन्दनन्दन॥

- शास्त्रसंग्रहे

978. श्रीसद्म वृन्दारकपाणिपद्म
मुद्रां च नाशं तमसो मुनीनां।
हृच्चन्द्रकान्तद्युतिमादधानं
वन्दे मुकुन्दाङ्घ्रिनखेन्दुवृन्दम् ॥

- श्रीलक्ष्मणापरिणये भुवनेश्वररथशर्मणः

979. सकलभुवनबन्धोर्वैरमिन्दोः सरोजै-
रनुचितमिति मत्वा यः स्वपादारविन्दम् ।
घटयितुमिव मायां योजयत्याननेन्दौ
वटदलपुटशायी मङ्गलं नः कृषीष्ट ॥

- सुभा० सुधा० भा०

980. सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णाय क्लिष्टकारिणे
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे।
अहं हृदि नियन्तारं बहिश्च गुरुरूपिणम्
उभयत्रापि कृष्णाख्यं तं वन्दे देवकीसुतम् ॥

- वेदान्तसारसंग्रहमनने चिद्घनभारत्याः

981. स जयति वनमाली राधिकानन्दशाली
रिपुकुलबलहन्ता वीशगन्ता समन्तात् ।
हिमकरवदनाभिर्गोपिकाभिः श्रिताङ्गः
करकलितरथाङ्गो नीरदश्यामलाङ्गः॥

- वनमालायां जीवनाथझाशर्मणः

982. सजलजलदकालं सर्वलोकैकपालम्
व्रजयुवतिरसालं चन्दनाभ्यक्तफालम् ।
विहतदुरितजालं विकचराजीवनालम्
विलसितवनमालं नौमि गोपालबालम् ॥

- वृत्तिदीपिकायां कृष्णभट्टस्य

983. सजलजलदनीलः कामिनीप्रेमशीलः
कलितभुवनलीलः कंसचाणूरकालः।
सुललितवनमालः मोक्षमार्गैकसालः
भवतु मम मुदेऽसौ सर्वदा नन्दबालः॥

- अभिलेखे

984. सजलमुदिरनीलं पीतचेलं सुशीलम्
ललिततिलकभालं शेखरामुक्तबालम् ।

नयनसुभगमूलं भ्रूलताचापकूलम्
सकलभुवनपालं नौमि गोपालबालम् ॥

- पद्यावलीव्याख्यायां दामोदरस्य

985. सच्चित्सौख्यात्मदेहे प्रकृतिगुणकणेनाप्यसंसृष्टरूपे
शक्तित्रैविध्ययुक्तेऽनुपधिनिजकृपामात्रतो जीवलभ्ये।
दाम्ना बद्धे जनन्या प्रणयरशनया गोपसीमन्तिनीभिः
कृष्णे चैतन्यदेवे निरवधिरमलप्रीतिरस्माकमास्ताम् ॥

- गदाधरभट्टाचार्यकृत- शक्तिवादस्य टीकायां
विनोदिन्याख्यायां दामोदरशास्त्रिणः

986. सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मशिवादिस्तुतं भजत्।
रूपं गोविन्दं तमचिन्त्यं हेतुमदोषं नमस्यामः॥

- ब्रह्मसूत्रगोविन्दभाष्ये

987. सभामानीतामाकुलहृदयवामार्जुनवधू-
मकामामुद्दामाधिकजनितभामारिकलिम्॥
सुसामाभिप्रीतो दुरितहरभामा स्म दयते
प्रणामानां पात्रं स भवतु सुदामाभिमतदः॥

- मनोदूते तैलङ्गव्रजनाथस्य

988. समवसरणसम्मत्कर्म्मणे दुर्मुखेन
क्षणकलितकटाक्षप्रेक्षितेनैव रम्भाम्।
जयति रुचिरलास्यं तन्वतीं गीतवाद्यै-
रनुगतमनुपश्यन् वासुदेवोऽनिशं वः॥

- संगीतसमयसारे पार्श्वदेवस्य

989. सस्मिताननसरोजमङ्गणे
सञ्चरच्चलितचूर्णकुन्तलम्।
रोचनोल्लसितभालमस्तु मे
शैशवं मनसि शैशवं वपुः॥

- तत्त्वचिन्तामणिमयूखे जगदीशतर्कालङ्कारस्य

990. सीत्कृतसस्मितविलोकितजाततृष्णे
कृष्णे करस्पृशि सरोरुहमिन्दिरायाः।
लीलायितं नयनयोर्मनसोऽभिलाषो
डोलायितं श्रवणकुण्डलयोः पुनातु॥

- तर्कभाषाभावप्रकाशिकायां गोपीनाथस्य

991. सानन्दागान्दिनेये स्फुरदशनिसमावल्लवर्गे सगर्वाः
कंसे सासूक्षणं स्वप्रियकुलमतसीजन्मभास्वत्स्वरूपाः।
सम्मुग्धस्त्रीषु विभ्रन्मदनशररुचां राशयोरङ्गभूमौ
कल्याणं कल्पयन्तामलघुमधुपतेर्नैकलक्षाः कटाक्षाः॥

- रसमञ्जर्याष्टीकायां रसिकमञ्जरी इत्याख्यायां गोपालभट्टस्य

992. सान्द्रां मुदं यच्छतु नन्दको वः
सोल्लासलक्ष्मीप्रतिबिम्बगर्भः।
कुर्वन्नजस्रं यमुनाप्रवाह-
सलीलराधास्मरणं मुरारेः॥

- विक्रमाङ्कदेवचरिते विद्यापतिबिल्हणस्य

993. सायं गोपवधूविलोकनपथे नायन्तमग्रे गवाम्
गायन्तं मृदुवेणुना निगदितच्छायं सहायाग्रतः।
ध्येयं योगिजनस्य चोपनिषदां मेयं विधेयं श्रियो
मायामाधवमिन्द्रनीलशकलव्यासं श्रयामो वयम्॥

- हर्षकृत-नैषधस्य टीकायाम्

994. सुधानां चान्द्रीणामपि मधुरिमोन्माददमनी
दधाना राधादिप्रणयघनसारैः सुरभिताम्।
समन्तात् सन्तापोद्गमविषमसंसारसरणी
प्रणीतां ते तृष्णां हरतु हरिलीलाशिखरिणी॥

- विदग्धमाधवनाटके रूपगोस्वामिनः

995. सुभगसुरभिपुच्छोच्चामरोच्छालनाति
स्फुरित मुकुटकोटी मस्तकशस्तकान्तिः।
नरपतिरिव पायाद्गेयगोवर्धनाद्रि-
च्छविसमुदयदीव्यच्छत्रवानत्र कृष्णः॥

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

996. सुरसमूहसमीहितसिद्धये
धरणिधारणगोद्विजवृद्धये।
यदुकुलेऽवततार य एष नः
सततमस्तु मुदे मधुसूदनः॥

- हरिचरिते चतुर्भुजस्य

997. सोऽपीह गोपीशतकेलिकारः
कृष्णो महाभारतसूत्रधारः।
अर्घ्यः पुमानंशकृतावतारः
प्रादुर्बभूवोद्धृतभूमिभारः॥

- बेलवा-ताम्रपत्राभिलेखे भोजवर्मनदेवस्य

998. सौभाग्यं त्रिदशव्रजस्य विभवस्थेमा रतीशश्रिया-
मैश्वर्यं शिशिरांशुवंशजनुषामालम्बनं योगिनाम्।

कृष्णः

नन्दानन्दनिदानमस्तुपुरतस्तद्वस्तु मस्तुप्रियम्
किञ्चिद्गोपकिशोरता क्वचिदपि क्रीडानिरूढाशयम् ॥

- अभिनवकर्णामृते अण्णयार्यस्य

999. सौल्लासं परिपन्थिनः पटुशरासारैस्समुत्सारयन्
सम्प्राप्तानभितस्स्वयंवरकृते चेदीशमुख्यान् बहून् ।
प्रोन्मीलत्पुलकच्छलेन दधतीं निर्मग्नकामाशुगान्
श्रीमद्भीमसुतां सकौतुकमना गृह्णन् हरिः पातु नः॥

- पाञ्चालीपरिणयने बालसूरिणः

1000. संसक्तानिव पातुमौपनिषदव्याहारमाध्वीरसा-
नुन्मार्ष्टुं व्रजसुन्दरीकुचतटीपाटीररेणूनिव।
उन्मीलन्मुरलीनिनादबहलामोदेऽपि सीदद्गवी-
जिह्वालीढमलीकवल्लवशिशोः पादाम्बुजं पातुः नः॥

- जानकीपरिणये रामभद्रदीक्षितस्य

1001. स्थिराणां जङ्गमानां च येन वृष्टिर्निरूपिता
सर्वेशाय नमस्तस्मै कृष्णाय जगदात्मने।
भूयाद्भद्राय भवतां कृष्णः कमललोचनः
कालिन्दीकेलिसंहृष्टो मेघश्यामोऽति सुन्दरः॥

- गीतगोविन्दस्य टीकायाम्

1002. स्मरत मुकुन्दममायं स्मरतनुलावण्यसारसमुदायम् ।
विधुनुतहासविलासं विधुनुतसंसारसंकटायासम् ॥

- श्रीकृष्णलीलामृते अग्निचिन्नित्यानन्दस्य

1003. स्मृतापि तरुणातपं करुणया हरन्ती नृणा-
मभङ्गुरतनुत्विषां वलयिता शतैर्विद्युताम् ।

कलिन्दगिरिनन्दिनीतटसुरद्रुमालम्बिनी
मदीयमतिचुम्बिनी भवतु काऽपि कादम्बिनी।।

- रसगङ्गाधरे पण्डितराजजगन्नाथस्य

1004. स्वीयनीलतनुकान्तिसङ्गमाद् इन्दिरामनयदेव कृष्णताम् ।
तत्सुवर्णतनुकान्तिसङ्गतेर्योजयामि हरिमाश्रयामि तम् ।।

- बौधायनीयशुल्बसूत्रस्य टीकायां शुल्बमीमांसाख्यायाम्

1005. हृदयभुजविशालः कण्ठमन्दारमालः
समरभुवि करालःशोचिषा शोभिभालः।
दनुजनिचयकालः सर्वलोकैकपालः
स जयति मतिशालश्छद्मगोपालबालः।।

- क्षेमकुतूहले क्षेमशर्मणः

1006. हृदये यत्प्रेरणया समुद्यतोऽहं विमूढतरबुद्धिः।
तत्पदकमलं वन्दे गोकुलनाथस्य वेदादेः।।

- हनुमन्नाटकस्य टीकायां दीपिकाख्यायां मोहनदासमिश्रस्य

बालकृष्णः

1007. अधरमधरे कण्ठे कण्ठं सचादुदृशोर्दृशा-
वलिकमलिके कृत्वा गोपीजनेन ससंभ्रमम् ।
शिशुरिति रुदन् कृष्णो वक्षःस्थले निहितोऽचिरा-
न्निभृतपुलकः स्मेरः पायात्स्मरालसविग्रहः।।

- सदुक्ति० दिवाकरदत्तस्य

1008. अभिनवनवनीतस्निग्धमापीतदुग्धं
दधिकणपरिदिग्धं मुग्धमङ्गं मुरारेः।

बालकृष्णः

दिशतु भुवनकृच्छ्रच्छेदितापिच्छगुच्छ-
च्छविनवशिखिपिच्छालाञ्छितं वाञ्छितं नः॥

- कृष्णकर्णामृते बिल्वमङ्गलस्य

1009. अर्द्धोन्मीलितलोचनस्य पिबतः पर्याप्तमेकं स्तनं
सद्यः प्रस्नुतदुग्धदिग्धमपरं हस्तेन संमार्जतः।
मात्रा चाङ्गुलिलालितस्य चिबुके स्मेरायमाणे मुखे
विष्णोः क्षीरकणाम्बुधामधवला दन्तद्युतिः पातु वः॥

- शा० प०

1010. करीषदिग्धाङ्गमलीकसस्मितं समन्ततोलम्बितचूर्णकुन्तम्।
वदन्तमस्पष्टमितस्ततो वलाद् व्रजन्तमीडे भुवि केशवं महः॥

- रत्नावलीव्याख्यायां प्रद्युम्नस्य

1011. कालिन्दीपुलिनोदरेषु मुसली यावद्गतः क्रीडितुं
तावन् कर्बुरिकापयः पिब हरे वर्धिष्यते ते शिखा।
इत्थं बालतया प्रतारणपराः श्रुत्वा यशोदागिरः
पायाद्वः स्वशिखां स्पृशन् प्रमुदितः क्षीरेऽर्धपीते हरिः॥

- सुभा० जीवकस्य

1012. कालिन्दीवारिधारा निजचरणरजःखण्डिता येन नीता
वन्ध्यायोध्याधिराज्यात् परिचितमथुरा गूढमन्दाकिनीगा।
संश्लिष्टा ब्रह्मपुत्र्या मगधपरिसरात् कान्तबङ्गाब्धिसंगं
वन्दे तं बालकृष्णं दिनमणिदुहितुर्बान्धवं गोकुलस्थम्॥

- कालिन्द्यां हरिदामोदरवेलणकरस्य

1013. दूरदृष्टनवनीतभाजनं जानुचङ्क्रमणजातसंभ्रमम्।
मातृभीतपरिवर्तिताननं कैशवं किमपि शैशवं भजे॥

- गव्यहरणे

1014. न्यञ्चन्नुदञ्चन् बहुशः कथंचि-
दुदञ्चितो वेपथुमान् हरिर्वः।
देवोऽसि देवोऽसि सपाणितालं
यशोदयोक्तं प्रहसन् पुनातु॥

- सदुक्ति०

1015. पाणौ पायसभक्तमाहितरसं विभ्रत्सुधां दक्षिणे
सव्ये शारदचन्द्रमण्डलनिभं हैयङ्गवीनं दधत्।
कण्ठे कल्पितपुण्डरीकनखमण्युद्दामदीप्तिं दधत्
देवोदिव्यदिगम्बरो दिशतु वः सौख्यं यशोदासुतः॥

- श्रीरामकल्पद्रुमे

1016. मन्थानमुज्झ मथितुं दधि न क्षमस्त्वं
बालोऽसि वत्स विरमेति यशोदयोक्तः।
क्षीराब्धिमन्थनविधिस्मृतिजातहासो
वाञ्छास्पदं दिशतु वो वसुदेवसूनुः॥

- सदुक्ति०

1017. मौलौ चञ्चलचूलिनी तिलकिनी भाले मुखे हासिनी
कण्ठे मौक्तिकमालिनी मलयजैः प्रत्यङ्गमालेपिनी।
हस्ताग्रे नवनीतिनी चरणयोः क्रीडारसान्नर्त्तिनी
जीयाच्छैशवशोभिनी चिदमलागोपाङ्गनालिङ्गिनी।

- गोपीनाथपुर-अभिलेखे

1018. रजश्छुरितकुन्तलं दधिविलिप्तवक्त्राम्बुजम्
क्वणन्नवलकिङ्किणीरवमनोहरं गोकुले।
नमामि नवसुन्दरीसदसि नृत्यलीलाऽकुलम्
श्रिया जिततमालकं कमपि बालगोपालकम् ॥

- बृहद्दैवज्ञरञ्जनस्य व्याख्यायां श्रीधरी इत्याख्यायाम्

1019. वितरतु गोपशिशुः श्वोवसीयसं नो यदुरसि विलसति माला।
नवशिखिपिच्छाकलिताभीरसुनयनादृगञ्चलोत्पलपंक्तिवत् ॥

- बालभागवतस्य व्याख्यायां सुधीचन्द्रिकाख्यायां रामसूरिणः

1020. विहाय पीयूषरसं मुनीश्वरा ममाङ्घ्रिराजीवरसं पिबन्ति किम् ।
इति स्वपादाम्बुजपानकौतुकी स गोपबालः श्रियमातनोतु वः॥

- संस्कृतभाषाप्रदीपे सखारामरावजीशर्मणः

1021. शिशुरसि दुग्धमुखस्त्वं कलयसि मुरलीं कुतोऽतिरसचित्तम् ।
इति गोपीमृदुस्मितवचनैः सुस्मितवदनो हरिः पातु॥

- हरिदासीयकुसुमाञ्जलिटीकायां राधामोहनगोस्वामिनः

1022. संमुष्णन् नवनीतमन्तिकमणिस्तम्भे स्वबिम्बोद्गमम्
दृष्ट्वा मुग्धतया कुमारमपरं सन्चिन्तयन् शङ्कया।
मन्मित्रं हि भवान् मयात्र भवतो भागः समः कल्पितो
मा मां सूचय सूचयेत्यनुनयन् बालो हरिः पातु वः॥

- गव्यहरणे

1023. स्तनं धयं तं जननीमुखाब्जं विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम् ।
स्पृशन्तमन्यं स्तनमङ्गुलीभिर्वन्दे यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

नवनीतप्रियः

1024. कस्त्वं कृष्णमवेहि मां किमिह ते मन्मन्दिराशङ्कया
युक्तं तन्नवनीतभाजनपुरे न्यस्तं किमर्थं करः।

कर्त्तुं तत्र पिपीलिकापनयनं सुप्ताः किमुद्बोधिताः
बालवत्सगतिं विवेक्तुमिति संजल्पन् हरिः पातु वः॥

- संगमनी-पत्रिकायाम्

1025. कृष्ण क्वासि करोषि किं सुत इति श्रुत्वैव मातुर्वचः
साशङ्कं नवनीतचौर्य्यविरतो विश्राम्यतामब्रवीत्।
मातः कङ्कणपद्मरागमहसापाणिर्ममातप्यते
तेनायं नवनीतभाण्डविवरे विनस्य निर्वापितः॥

- गव्यहरणे

1026. को वा घोषितमातन्नोति कलशे मातर्वदेतीरिते
भूतं मा स्पृश मा स्पृशेति कथितो मात्रा हठात् पाणिना।
तस्यान्तर्नवनीतभाण्डममलं प्रोद्धृत्य भूतेन मे
दत्तं दत्तमिति प्रमोदभरितो नृत्यन्हरिः पातुः वः॥

- सुभा० सुधा०

1027. क्रीडारतं गोपकुमारसङ्घै-
र्नन्दांगणेधूलिविभूषिताङ्गम्।
गृहे गृहे यं नवनीतचोरम्
तमादिदेवं पुरुषं प्रपद्ये॥

- विष्णु-अष्टाक्षरमन्त्रविधाने

1028. घननीलमुदारकौस्तुभाङ्कं जननीचित्तसरोजसप्तसप्तिम्।
अवनीतलकिंगिणं सदा तं नवनीतग्रहिलं शिशुं भजामः॥

- कुण्डकल्पलतायां ढुण्डिराजसूनुपुरुषोत्तमस्य

1029. दधिमथननिनादैस्त्यक्तनिद्रः प्रभाते
निभृतपदमगारं वल्लवीनां प्रविष्टः।

मुखकमलसमीरैराशुनिर्वाप्यदीपान्
कवलितनवनीतः पातु मां बालकृष्णः॥

- गव्यहरणे

1030. नवनीलमेघरुचिरः परः पुमा-
न्नवनीमवाप्य धृतगोपविग्रहः।
नवनीयकीर्तिरमरैरपि स्वयं
नवनीतभिक्षुरधुना स चिन्त्यते॥

- बिल्वमङ्गले

1031. नवनीलाम्बुदरुचिरं चरणरणत्किंकीणीजालम्।
हैय्यंगवीनचोरं नंदकिशोरं नमस्यामः॥

- प्रत्यक्षचिन्तामणौ भवानन्दसिद्धान्तवागीशस्य

1032. बारम्बारमुदारसस्मितमुखः शिक्योपरिस्थापितम्
हारं हारमुलूखलो परिगतो हैयङ्गवीनं हठात्।
आयान्तीं पुरतो विलोक्य जननीमादाय यष्टिं करे
धावन्धावमिह प्रकाशितभयः पायात्स मायार्भकः॥

- शङ्कराचार्यकृत -आनन्दलहर्याष्टीकायां नृसिंहठक्कुरस्य

1033. भोक्तुं नवनवनीतं विनीत्तमिव यान्तमङ्कमम्बायाः।
वेदाविदितगुणान्तं नन्दसुतं तं नमस्यामः॥

- नव्यन्याये नवनिर्मितौ रघुदेवशर्मणः

दधिप्रियः

1034. दध्नो मंथनकाम्यया व्रजवधु-कुम्भे तदा सिञ्चतीं
सस्नेहं दधि देहि मह्यमधुनेत्युक्ते रमेशेन या।

ओमित्युक्तिपुरःसरं निजकरे तस्यार्पणं कुर्वतीं
प्रत्युक्तिः कुरु कार्यमस्तुशमिति श्रीशस्य सा पातु नः।।

- स्मृतिकौस्तुभे

1035. मातरं दधिविमन्थनादरां वीक्ष्य नन्दतनयस्य हृष्यतः।
श्री हरेः स्फुरदतीवचञ्चला दारयन्तु दुरितं दृगञ्चलाः।।

- पदार्थमण्डने वेणीदत्तस्य

गोपालकः

1036. नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय
गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्त्रजे कबलवेत्रविषाणवेणु-
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय।।

- मानक्षेत्र-अभिलेखे

1037. प्रातःकाले प्रयातो दिशिदिशि विबुधैरर्चितः पुष्पवृष्ट्या
प्रेमार्द्रैर्दृष्टिपातैर्मनसि मनसिजं दीपयन् गोपिकानाम्।
कृत्वाऽग्रे धेनुसङ्घं सजलजलधरश्यामलो वेत्रपाणिः
कालिन्दीकूलकेलिः प्रदिशतु भवतां वाञ्छितं नन्दसूनुः।।

- वीरमित्रोदये तीर्थप्रकाशे मित्रमिश्रस्य

1038. वन्दे वृन्दावनचरं गोविन्दं गोपिकापतिम्।
गाः पालयन्तं गायन्तं वेणुना षड्जवादिना।।

- भावप्रकाशने शारदातनयस्य

1039. वरेण्यं ब्रह्माद्यैर्विविधविबुधैर्वन्द्यमनिशम्
सुवेद्यं वेदान्तैर्भवविटपिबीजं यदुपतेः।

शरण्यं सर्वेषां चरणकमलं नौमि सततम्
सदा वृन्दारण्ये पशुपपशुवृन्दानुगमनम् ॥

- दशश्लोकीव्याख्यायां लघुमञ्जूषिकाख्यायाम्

1040. वृन्दारण्यमहीषुवंशनिनदा मन्दानिलास्वादनात्
निष्पन्दालिदुधुक्षयेव सुरभीवृन्दालिसन्धानयन् ।
मन्दारद्रुमवीथिकासु विहरन् वन्दारुवृन्दारक-
द्वन्द्वस्तुत्यभिनन्दितोऽस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजः॥

- रामचन्द्राचार्यकृत-प्रक्रियाकौमुद्याष्टीकायां
शेषनृसिंहसूनुकृष्णस्य

दामोदरः

1041. कठिनतरदामवेष्टनलेखासन्देहदायिनो यस्य।
राजन्ति वलिविभङ्गा स पातु दामोदरो भवतः॥

- वासवदत्ता-आख्यायिकायां सुबन्धोः

1042. यस्याम्भोधरकान्तिसुन्दरतरे वक्षःस्थले निर्मले
भास्वत् कौस्तुभनामकेन मिलिता संशुद्धमुक्तावली।
कालिन्दीसलिलैकपङ्कजलसद्गङ्गाम्बुधारोपभां
शोभामातनुते स मे वितनुतां दामोदरो मङ्गलम् ॥

- श्रीतत्त्वचिन्तामणौ

1043. योगीन्द्रैर्मुनिपुङ्गवैरनिमिषैर्यो भक्तिवश्यः परं
न ध्यायेन न चेज्यया न तपसा धर्तुं हृदाप्याप्यते।
गोप्यासौ नवनीततस्करपरो बद्धो गवां दामभिः
स्थाणुत्वं निरमोचयदद्रुवरयोर्दामोदरोऽव्याज्जगत् ॥

- जूनागढ़-अभिलेखे

1044. लक्ष्मीमशेषविधिहेतुतयाप्यलभ्याम्
य: केवलं पुरुषकारतया व्यवाप।
सोयं प्रसिद्धविभव: श्रुतिगीतकीर्तिः
दामोदरो मतिमतां मतिमादधातु॥

- श्रीगङ्गानन्दकृत-भृङ्गदूतस्य टीकायां
रामेश्वरप्रसादिन्याख्यायां चेतनाथस्य

1045. श्रमविलसितमात्रोलूखले योऽतिमात्रो-
द्धत इति हि विचित्रो दामबद्धोऽतिचित्र:।
हरिरवतु स धात्रोदारदृष्ट्यापवित्रो-
यमिति विनुत उक्त्या चित्रया त्रातमित्र:॥

- अमरकाव्ये रणछोभट्टस्य

गोवर्द्धनधर:

1046. असुरवरविदारी धेनुमालाधिहारी
निजजनसुखकारी गोपनारीविहारी।
ललितलकुटधारी पाणिना वेणुहारी
सुखयतु गिरिधारी गोपसंतोषकारी॥

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

1047. आनन्देन यशोदया समदनं गोपाङ्गनाभिश्चिरं
साशङ्कं बलविद्विषा सकुसुमं सिद्धैः पृथिव्याऽकुलम्।
सेर्ष्यं गोपकुमारकै: सकरुणं पौरै: सुरै: सस्मितं
यो दृष्ट: स पुनातु वो मधुरिपु: प्रोत्क्षिप्तगोवर्द्धन:॥

- सुभा. भट्टचूलितकस्य

1048. उद्धर्त्तुं धृतसाहसो हृदि गवां गोवर्द्धनं गुप्तये गोपीभि-
स्तिलकं निधाय निटिले गोरोचना कुंकुमैः।
दध्यालिप्तसिताक्षतैरुपचितो लाजान्स दूर्वांकुरा-
न्बिभ्रन्मूर्द्धनि मङ्गलानि सततं कृष्णः स पुष्णातु वः॥

- हरिवंशविलासे निबन्धराजे संस्कारकौतुके
रामपण्डितसूनुनन्दपण्डितस्य

1049. एकेनैव चिराय कृष्ण भवता गोवर्धनोऽयं धृतः
श्रान्तोऽसि क्षणमास्व सांप्रतममी सर्वे वयं दध्महे।
इत्युल्लासितदोष्णि गोपनिवहे किञ्चिद्भुजाकुञ्चन-
न्यञ्चच्छैलभरार्दिते विरमति स्मेरो हरिः पातुः वः॥

- सदुक्ति०

1050. खिन्नोऽसि मुञ्च शैलं बिभृमो वयमिति वदत्सुशिथिलभुजः।
भरभुग्नविततबाहुषु गोपेषु हसन् हरिर्जयति॥

- वासवदत्ता-आख्यायिकायाम् सुबन्धोः

1051. खेलया करनिरुद्धभूधरं हेलया दलितमत्तकुञ्जरम् ।
छद्मना विजितपद्मसंभवं कैशवं किमपि शैशवं भजे॥

- संक्षेपशारीरकस्य टीकायां सुबोधिन्याख्यायां पुरुषोत्तमस्य

1052. गर्जद्गम्भीरनीरप्रदनिकरमहाचण्डवातप्रकम्पत्
शम्पासंघातपातप्रचुरतरमहासारधाराप्रपातैः।
त्रस्यद्गोगोपगोपीकुलमचलमयात्पाणिनोद्धृत्ययेऽसौ
पायात्त्रैलोक्यमायापतिरखिलगतिर्गोपरूपो मुरारिः॥

- गुणरत्नमालायाम्

1053. गवार्थं हस्ताग्रे गहनभुवि गोवर्धनगिरिम्
वहन् किंचित्किञ्चित्प्रणमितमुखो वक्षसि मुहुः।
कटाक्षैरास्तृण्वन् स्तनगिरिविसंवादपिशुनैः
किशोरो गोपो वः किसलयतु कल्याणलहरीम् ॥

- मलयजाकल्याणनाटके वीरराघवस्य

1054. गोवर्द्धनोद्धरणहृष्टसमस्तगोप-
नानास्तुतिश्रवणलज्जितमानसस्य।
स्मृत्वा वराहवपुरिन्दुकलाप्रकाश-
दंष्ट्रोद्धृतक्षिति हरेरवतु स्मितं वः॥

- सुभा0 विभूतिबलस्य

1055. दूरं दृष्टिपथात्तिरोभव हरेर्गोवर्धनं बिभ्रत-
स्त्वय्यासक्तदृशः कृशोदरि करः स्रस्तोस्य माभूदिति।
गोपीनामिति जल्पितं कलयतो राधानिरोधाश्रयं
श्वासाः शैलभरश्रमभ्रमकराः कृष्णस्य पुष्णन्तु वः॥

- सदुक्ति0

1056. पिण्याकपिण्डमिव चण्डरुचिर्मुरारि-
र्गोवर्द्धनाचलमलंकृतवान् कराग्रे।
प्रेत्मोत्कवल्लवजनीजनिताद्भुतश्रीः
श्रेयांसि वो दिशतु गोगणदृश्यमानः॥

- अजयगढ़-प्रस्तराभिलेखे

1057. प्रारम्भे हसितं भुजभ्रमकृतैरान्दोलनैर्विस्मितम्
म्लानं बाहुलतोपपीडनभयात् प्रोल्लासने भूभृतः।

गोवर्द्धनधरः

दत्ताः कृष्णकराब्जशायिनि नगे श्रेयांसि पुष्णातु वो
गोपीभिर्भुजवल्लिकङ्कणकणत्कारोत्तरास्तालिकाः॥

- जोधपुर-अभिलेखे

1058. वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्धनं
बिभ्रद्वल्लववल्लभाभिरधिकानन्दाच्चिरं चुम्बितः।
कन्दर्पेण तदर्पिताधरतटीसिन्दूरमुद्राङ्कितो बाहु-
र्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः॥

- सुभा० सुधा० भा०

1059. सत्रासार्तिं यशोदया प्रियगुणप्रीतेक्षणं राधया
नग्नैर्वल्लवसूनुभिः सरभसं संभाविताऽऽत्मोर्जितैः।
भीतानन्दितविस्मितेन विषमं नन्देन चालोकितः
पायाद्वः करपद्मसुस्थितमहाशैलः सलीलो हरिः॥

- सदुक्ति० सोल्लोकस्य

1060. स्नेहादंसतटेऽवलम्ब्य चरणावारोप्य तत्पादयो-
र्दूरोदस्तमहीधरस्य तनुतामाशङ्क्य दोष्णो हरेः।
शैलोद्धारसहायतां जिगमिषोरप्राप्तगोवर्धना
राधायाः सुचिरं जयन्ति गगने वन्ध्याः करभ्रान्तयः॥

- सदुक्ति० शतानन्दस्य

1061. स्रावैर्धातुरसाक्तमुद्यदुपलासङ्गासृगाशङ्कया
हा किं जातमिति प्रमृज्य परितः स्वस्योत्तरीयाञ्चलैः।
यं रोमाञ्चितमक्षताङ्गमपि च व्यालोक्य गोप्यो मुदा
वल्गन्तिस्म सहेलमुद्धृतगिरिः कृष्णः स पुष्णातु वः॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

वेणुवादकः

1062. अधरे निवेश्य वंशनालं विवराण्यस्य सलीलमङ्गुलीभिः।
मुहुरन्तरयन् मुहुर्विवृण्वन् मधुरङ्गायति माधवो वनान्ते॥

- प्रबोधसुधाकरे मातृकायां स्फुटश्लोकः

1063. अन्तर्मोहनमौलिघूर्णनवलन्मन्दारविस्रंसनः
स्तब्धाकर्षणदृष्टिहर्षणमहामन्त्रः कुरङ्गीदृशाम् ।
दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां
भ्रंशः कंसरिपोर्व्यपोहयतु वोऽश्रेयांसि वंशीरवः॥

- सुभा० सुधा० भा०

1064. आनन्दमांदधतमायतलोचनाना-
मानीलमावलितकंधरमात्तवंशम् ।
आपादमा मुकुटमाकलितामृतौघ-
माकारमाकलयताममुमन्तरं नः॥

- शा० प० राघवचैतन्यस्य

1065. ओङ्कारे मिलितश्रुतेर्मृगदृशां मानावदाने रण-
त्पञ्चेषोर्निशितः शरो निधुवनक्रीडातरोरङ्कुरः।
आतोद्यध्वननं मनोभवमनोराज्याभिषेकश्रियः
स्वान्ते शातमुरी करिष्यति चिरात्कंसारिवंशीरवः॥

- मन्त्रकौमुद्यां देवनाथठक्कुरस्य

1066. अंसालम्बितवामकुण्डलधरं मन्दोन्नतभ्रूलतं
किञ्चित्कुञ्चितकांमलाधरपुटं साचि प्रसारीक्षणम् ।

वेणुवादकः

आलोलाङ्गुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयन्तं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभङ्गललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

1067. अंसासक्तकपोलवंशवदनव्यासक्तबिम्बाधर-
द्वन्द्वोदीरितमन्दमन्दपवनप्रारब्धमुग्धध्वनिः।
ईषद्वक्रिमलोलहारनिकरः प्रत्येकरोकानन-
न्तञ्चञ्चञ्चदुदञ्चदङ्गुलिचयस्त्वां पातु राधाधवः॥

- सदुक्ति० केशरकोलीयनाथोकस्य

1068. कटाक्षनिर्धूतकुलाङ्गनाव्रजो
नवीनधाराधररम्यमूर्त्तिकः।
वंशीरवानन्दितगोपवृन्दकः
सपिच्छभूषो हृदये सदास्तु मे॥

- न्यायकारिकाटीकायां जगन्नाथतर्कालङ्कारस्य

1069. कालिन्दीकलकूलकाननकृतक्रीडाकलापोल्लस-
द्वोगोपालकबालकैः प्रतिदिशं सानन्दमाविष्ठितम् ।
वंशीनादवशीकृतव्रजवधूस्वान्तं सदाह्लादकम्
सद्भक्त्या समुपास्महे वयमघध्वंसैकधीरं महः॥

- वैराग्यशतके गोस्वामिजनार्दनभट्टस्य

1070. कालिन्दीकूलकल्पद्रुमतलविलसत्पद्मपादारविन्दो
मन्दादोलांगुलीभिः स्वरितमुरलिकानंदगीताभिनन्दः।
राधावक्त्रेन्दुमन्दस्मितमधुरसुधास्वादसंदोहसान्द्रः
श्रीमद्वृंदावनेन्द्रः प्रभवतु भवतां भूतये कृष्णचन्द्रः॥

- श्रीरामकल्पद्रुमे

1071. कालिन्दीतटसन्निधावुपवने गोपाङ्गनालिङ्गनः
क्रीडाकर्षणचुम्बनादिरचितस्सम्मूर्छितो वेणुना।
स्थित्वा कल्पमहीरुहाश्रितलता वासे सुपुष्पान्विते
नानाभूषणभूषितो विहसितः कृष्णः प्रसन्नोस्तु मे।।

- विद्यासुन्दरे

1072. कालिन्दी-पुलिने चरन्वदनजैर्वातैस्सुवेणोर्नखैः
छिद्राणां परिचालनैर्व्रजसखीचेतांसि सञ्चालयन् ।
यान्तीनां रमणेषु मोहनिचयं संवर्धयन्केशवो
दुण्ढेः पण्डितमण्डनस्य विपदं विद्रावयन् रक्षतु।।

- श्रीमद्भागवतव्यञ्जने महाकाव्ये दुण्ढिराजशास्त्रिणः

1073. कालिन्दीबहुलप्रवाहरभसं संस्तंभयंस्तत्क्षणात्
शैलान् विद्रवयन् मृगान् विवशयन् गोवृन्दमानंदयन् ।
गोपान् संभ्रमयन् मुनीन्मुकुलयन् सप्तस्वरान् जम्भयन्
ॐकारार्थमुदीरयन् विजयते वंशीनिनादः शिशोः।।

- कर्णामृते

1074. कुञ्चिताधरपुटेनपूरयन् वंशिकां प्रचलदङ्गुलीदलः।
मोहयन्नखिलवामलोचनाः पातु कोऽपि नवनीरदच्छविः।।

- दीधितौ मथुरानाथस्य

1075. कृष्णः पातु स यस्य संसदि गवां वेणुप्रणादोर्मयो
गोपीनामनुवासरं नवनवा घूर्णन्ति कर्णोदरे।
तद्वक्त्रासववासिता इव तदाकूतिप्रपञ्चा इव
भ्राम्यत्तत्करपल्लवांगुलिगलल्लावण्यलिप्ता इव।।

- सदुक्ति० लक्ष्मीधरस्य

1076. केलीलोलमुदारनादमुरलीनालीनिलीनाधरं
धूलीधूमलकान्तकुन्तलभरव्यासङ्गिपिञ्छाञ्चलम्।
नालीकायतलोचनं नवघनश्यामं क्वणत्किंकणी
पालीदन्तुरपिङ्गलाम्बरधरं गोपालबालं भजे॥

- पूर्वभारतचम्प्वां मानवेदस्य

1077. चलाचलाङ्गुलिव्यक्तवरवंशार्पिताधरम्।
त्रिभङ्गिललिताकारमनाकारमुपास्महे॥

- गङ्गेशोपाध्यायकृत- तत्त्वचिन्तामणेष्टीकायां
आलोककण्टकोद्धाराख्यायां मधुसूदनस्य

1078. तिर्यक्कन्धरमंसदेशमिलितश्रोत्रावतंसं स्फुरद्-
बर्होत्तंसितकेशपाशमनृजुभ्रूवल्लरीविभ्रमम्।
गुञ्जद्वेणुनिवेशिताधरपुटं साकूतराधानन-
न्यस्तामीलितदृष्टिगोपवपुषो विष्णोर्मुखं पातु वः॥

- सदुक्ति० लक्ष्मणसेनदेवस्य

1079. पायाच्चिरायभवतः सकलादपायात्
कंसारिचारुकरवारिजवर्त्तिवेणुः।
आभीरवामनयनाचयचित्तवित्त-
चौर्याय संधिरिवनिःस्वनतस्करस्य॥

- काव्यडाकिन्यां गङ्गानन्दस्य

1080. पूतं पञ्चमरागतोऽपि सुभगं बालाविलासादपि
श्लाघ्यं कोकिलकूजितादपि मनोमोहं मनोजादपि।

शीतं शीतमयूरवतोऽपि मधुरं माध्वीकमध्वादपि
श्रीगोविन्दपदारविन्दमुरलीमाहात्म्यमाराध्नुमः॥

- श्राद्धक्रियाकौमुद्यां गोविन्दकवेः

1081. प्रारम्भः शुभकर्मणस्त्रिभुवनक्लेशाभिचारागमः
कान्ताकर्षणकर्मकार्मणविधिः कामाद्वितीयश्रुतिः।
हुङ्कारो मदनस्य निर्वृतिवधूमञ्जीरशिञ्जाध्वनिः
श्रेयः संपदमातनोतु भवतः कंसारिवंशीरवः॥

- कंसवधे शेषकृष्णस्य

1082. मन्द्रक्वाणितवेणुरह्नि शिथिले व्यावर्तयन् गोकुलं
बर्हापीडकमुत्तमाङ्गरचितं गोधूलिधूम्रं दधत्।
म्लायन्त्या वनमालया परिगतः श्रान्तोऽपि रम्याकृति-
र्गोपस्त्रीनयनोत्सवो वितरतु श्रेयांसि वः केशवः॥

- सदुक्ति०

1083. मुरलीरवरंजितविश्वजनस्तनुभाविजितोत्तमनव्यघनः।
चलदृक्चपला निचयेनवृतस्तनुतां मम शर्म मुकुंदहितः॥

- मन्त्रचन्द्रिकायाम्

1084. विस्फारयन् हसितचन्द्रिकया चकोरान्
मायन् सिताब्जनिचयं यमुनातटान्ते।
वंशीनिनादमुदितैर्निकरैर्मृगाणामा-
वेष्ठितो जयति कोऽपि तमालनीलः॥

- रसप्रकाशिकायां कृष्णशर्मणः

1085. श्रीमद्गोपवधूस्वयंग्रहपरिष्वङ्गेषु तुङ्गस्तन-
व्यामर्दाङ्गलितेऽपि चन्दनरजस्यङ्गे वहन्सौरभम्।

कश्चिज्जागरजातरागनयनद्वन्द्वः प्रभाते श्रियम्
बिभ्रत्कामपि वेणुनादरसिको जाराग्रणीः पातु वः॥

- पुष्पबाणविलासे कालिदासस्य

1086. सायं व्यावर्तमानाखिलसुरभिकुलाह्वानसंकेतनामा-
न्याभीरीवृन्दचेतो हठहरणकलासिद्धमन्त्राक्षराणि।
सौभाग्यं वः समन्ताद्दधतु मधुभिदः केलिगोपालमूर्तेः
सानन्दाकृष्टवृन्दावनरसिकमृगश्रेणयो वेणुनादाः॥

- सदुक्ति० उमापतिधरस्य

बाललीला

1087. करालं कंसादेः कुलकुवलयोन्मीलनकरं
कदम्बाग्रात् कूर्दत् कवलितवलत्कालियकुलम्।
कथंचिन्मच्चित्तं कलयतु महो गोकुलकुले
कुलस्त्रीणां केलीविकलितमनः कामुकतरम्॥

- कस्यचिदज्ञातनाम्नो नाटकस्य प्रस्तावनाभागे
शंकरदीक्षितस्य

1088. कालिन्दीजलदन्दशूकवसतिस्कन्दाय वृन्दावने
यद्वृन्दारकवृन्दमौलिविलसन्मन्दारमालाञ्चितम्।
सद्यः स्यन्दनभञ्जनाय कलितस्पन्दादिनन्दात्मज
श्रीगोविन्दपदारविन्दमखिलानन्दाय वन्दामहे॥

- वृत्तमुक्तावल्यां दुर्गादत्तस्य

1089. कालीयाहिफणाली क्रमणकराली भवन्नघक्षाली।
गोपालीकरतालीनर्तनशाली पुनातु वनमाली॥

- अन्यापदेशशतके मधुसूदनकवेः

1090. कृष्णेनाम्ब गतेन रन्तुमधुना मृद्भक्षिता स्वेच्छया
सत्यं कृष्ण क एवमाह मुसली मिथ्याम्ब पश्याननम् ।
व्यादेहीति विकासितेऽथ वदने माता समस्तं जगद्-
दृष्ट्वा यस्य जगाम विस्मयवशं पायात् स वः केशवः॥

- सुभा० चन्दकस्य

1091. कंसं ध्वंसयते मुरं तिरयते हंसं तथा हिंसते
बाणं क्षीणयते बकं लघयते पौण्ड्रं तथा लुम्पते।
भौमं क्षामयते बलाद्बलभिदोदर्पं पराकुर्वते
क्लिष्टं शिष्टगणं प्रणम्रमवते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

- सुभा० सुधा० भा०

1092. चण्डचाणूरदोर्दण्डमण्डलीखण्डमण्डितम् ।
अव्याद्वो बालवेषस्य विष्णोर्गोपतनोर्वपुः॥

- सुभा० इन्दुभट्टस्य

1093. दूरं यातु भुजङ्गपुङ्गवपतिः पेयं दिनेशात्मजा
तोयंचास्तु खलप्रसङ्गवशतो मोच्या च निर्दूषणा।
इत्थं पातितकन्दुकोद्धृतिकृते प्रोत्कूर्द्य नीपाद्धलात्
नृत्यन् दुर्दमभोगिमूर्धसु मुदे वेणुं स मे वादयन् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

1094. पीठे पीठनिषण्णबालकगले तिष्ठन्सगोपालको
यन्त्रान्तस्स्थितदुग्धभाण्डमवभिद्याच्छाद्य घण्टारवम् ।
वक्त्रोपान्तकृताञ्जलिः कृतशिरःकम्पं पिबन्यः पयः
पायादागतगोपिकानयनयोर्गण्डूषफूत्कारकृत् ॥

- सुभा० सुधा०

1095. मदमयममदमयदुरगं यमुनामवतीर्य वीर्यशाली यः।
मम रतिममरतिरस्कृतिशमनपरः स क्रियात्कृष्णः॥

- सुभा० अमृतदत्तस्य

1096. लीलाताण्डवनिर्धूतनागकर्कशमस्तकः।
वीक्षितो विकुलैर्गोपैर्वनमाली पुनाति माम् ॥

- वैशेषिककारिकाटीकायां जगन्नाथस्य

1097. हरतु दुरितंजातङ्केशवस्यैकबाहुः
विपुलगलविलान्तः केशिनस्सम्प्रविष्टः।
असुपवनमिवास्यप्राशितुं सम्प्रवृत्तः
कुवलयदलनीलः पञ्चशीर्षो भुजङ्गः॥

- शुद्धिविवेके रुद्रधरस्य

गोपीप्रियः

1098. आखेटनर्मललितं विदधद्धरिर्वो
गोपीकठोरकुचकुंठितशायकश्रीः।
कामातुरोत्तरकुरङ्गवधूविलासा-
न्रुन्धन् कुतूहलतया धियमादधातु॥

- अजयगढ़-प्रस्तराभिलेखे

1099. आदाय यत्कणशतांशमयं प्रपञ्चः
पीयूषसारसरसः प्रथतेऽनुरेणु।
तं प्रेमसागरमनन्तसुखानुभावम्
वन्दामहे कमपि गोपवधूविधेयम् ॥

- दिव्यरसतरङ्गिण्यां जयमङ्गलार्णवयतेः

1100. आभीरनारीपरिरम्भशुम्भत्काश्मीरसाराकलितोरुवक्षाः।
चिरस्फुरद्विद्युदिवाम्बुवाहः पुष्णातु कृष्णः पृथुलां श्रियं नः॥

- भागवतचम्प्वाम्

1101. कारुण्यामृतनिर्भरः सुरसरिज्जन्माकरःश्रीवधू-
लीलाब्जं व्रजकामिनीकुचतटीकस्तूरिकास्थासकः।
उत्तंसः सुरयोषितां मुनिमनोवश्यौषधीपल्लवो-
यस्यांघ्रिः सुरवल्लभः स जयति श्रीपुण्डरीकप्रियः॥

- श्रीमद्भगवन्नामकौमुद्यां लक्ष्मीधरस्य

1102. कालिन्दीतटसैकते विषमितन्यस्तांघ्रिपद्मः क्वचित्
लक्ष्ये निश्चलबद्धदृष्टिरसकृन्मन्दं हसन्माधवः।
गोप्योरंसनिवेशितोभयभुजस्तत्संगजं भावयन्
आनन्दं धृतवेणुराश्रितनिधिः कृष्णस्स पुष्णातु नः॥

- कुवलयानन्दचन्द्रिकाचकोरे

1103. कृष्णस्य व्रजयोषिदंबरमुषः कुन्दद्रुमालङ्कृतेः
पायाद्वः प्रतिबिम्बमम्बुनि धृतं भानोर्दुहित्रा चिरम् ॥
व्यातेनुः प्लवनच्छलाद्विवसना यस्योपरि प्रस्फुर-
द्वेगोक्षिप्तनितम्बबिम्बसुषुमं वीरायितं गोपिकाः॥

- अनङ्गजीवनभाणे वरदकवेः

1104. कोपिसगोपकुमारः स्फुरति समाजे व्रजस्त्रीणाम् ।
नवजलधर इव मध्ये तडितां परितः स्फुरन्तीनाम्॥

- कृष्णभक्तिचन्द्रिकायां अनन्तदेवस्य

1105. क्व यासि खलु चौरिके प्रमुषितं स्फुटं दृश्यते
द्वितीयमिह मामकं वहसि कन्दुकं कञ्चुके।
त्यजेति नवगोपिकाकुचयुगं प्रमथ्नन्बला-
ल्लसत्पुलकपञ्जरो जयति गोकुले केशवः॥

- शा०प० दीपकस्य

1106. गच्छाम्यच्युतदर्शनेन भवतः किं तृप्तिरुत्पद्यते
किं त्वेवं विजनस्थयोर्हतजनः संभावयत्यन्यथा।
इत्यामन्त्रणभङ्गिसूचितवृथावस्थानखेदालसा-
माश्लिष्यन्पुलकाङ्कुराञ्चिततनुर्गोपीं हरिः पातु वः॥

- शा०प०

1107. गोपीपीनपयोधरपङ्कजवरषट्पदः कृष्णः।
कल्मषतरुवरकाननदाहे दावानलः पायात्॥

भास्कराचार्यकृत-ऋतुवर्णनस्य व्याख्यायां विद्याकरमिश्रस्य

1108. जयति गुहशिखीन्द्रपिच्छमौलि-
र्मणिगिरिगैरिककल्पिताङ्गरागः।
व्रजयुवतिविकीर्णसूनवर्ष -
स्नपित विभूषितकुन्तलः कुमारः॥

- बिल्वमङ्गलकाव्ये बिल्वमङ्गलस्य

1109. दध्यापूर्णसुमङ्गलोच्चकलशं धृत्वा व्रजन्तीं व्रजे
काञ्चिद्गोपकुमारिकां क्व नु गतिर्युक्तेति संमुह्यतीम्।
दृष्ट्वा श्रीमुरलीधरः स्मितयुतभ्रूयुग्मभङ्ग्या यया
तस्यै सूचितवान् गतिं समुचितां पायात्तया मे मतिम्॥

- स्मृतिकौस्तुभे आपदेवसुतानन्तदेवस्य

1110. देवः पायात्पयसि विमले यामुने मज्जतीनां
याचन्तीनामनुनयपदैर्वञ्चितान्यंशुकानि।
लज्जालोलैरलसवलितैरुन्मिषत्पञ्चबाणै-
र्गोपस्त्रीणां नयनकुसुमैरञ्चितः केशवो नः॥

- सुभा० सुधा० भा०

1111. प्रेम्णा कन्दलितं दृशोर्विलसितेनोल्लासितं प्रस्खल-
द्वक्षोजाञ्चलनीविबन्धवितथीभावेन सिक्तं मुहुः।
साकूतस्मितसम्पदाकुसुमितं विश्रब्धकेलिश्रिया
गोपीनां फलितं स्तुवीमहि हरेः कन्दर्पकल्पद्रुमम् ॥

- कृष्णकुतूहले मधुसूदनस्य

1112. बाले चञ्चलकोमले सुवदने ते शैलतुल्यौ स्तनौ
तुल्यं मे कुसुमैर्वपुर्दृढतरं मा मा त्वमालिङ्ग माम् ।
यद्यालिङ्गसि मां बलादहमिदं सर्वं यशोदाऽग्रतो-
वक्ष्यामीति भणन् हसन् भवभयाल्लक्ष्मीपतिः पातु माम् ॥

- चमत्कारचिन्तामणौ लोलिम्बराजस्य

1113. मदनकदनवेल्लद्वल्लवीजाललोल-
त्कुचतटघटितोद्यत्कुङ्कुमालङ्कृताङ्गः।
निगमनिकरचूडाक्रीडलीलानुकूलः
कलयतु शुभगामी कोऽपि कामी मुदं नः॥

- ओङ्कारवादार्थे श्रीनिवासस्य

1114. मातस्तर्णकरक्षणाय यमुनाकच्छं न गच्छाम्यहं
कस्माद्वत्स पिनष्टि पीवरकुचद्वन्द्वेन गोपीजनः।

गोपीप्रियः

भ्रूभङ्गैर्विनिवारितोपि बहुशो जल्पन्यशोदाग्रतो
गोपीभिः करपद्ममुद्रितमुखः पायात्स वः केशवः॥

- सुभा०

1115. मूले कल्पतरोरमन्दवलितग्रीवं गवालोकने
ब्रह्मेन्द्रादिलुठन् महार्थमुकुटस्पृष्टांघ्रिपीठं वपुः।
लीलालम्पटगोपबालकबलव्यग्राननं गोपिका-
सङ्केतस्वनसावधानहृदयं सञ्चिन्तये श्रीपतिम् ॥

- रसमञ्जर्याष्टीकायां व्यङ्ग्यार्थकौमुद्याख्यायां अनन्तपण्डितस्य

1116. लीलालालसमानसाभिरभितो गोपीभिरन्तःपुरे
व्यालिप्तो मृदुचन्दनेन दिशतु श्रेयस्स मे श्रीपतिः।
यत्सौन्दर्यमवेक्ष्य कुन्दरदनाः कन्दर्परूपश्रियम्
निन्दन्त्यः कुपितेन तेन दलिता मुह्यन्त्यमन्दं शरैः॥

- लीलादर्पणभाणे पद्मनाभस्य

1117. श्रीमद्यामुनतीरशाद्वलतले गोपालिकां चालय-
न्नेकां सैकतसीम्नि तद्वदपरां दूरे मुहुः खेलयन् ।
संकेतोक्तलतानिकेतनगतामन्यां रते लालयन्
योऽभूद्वल्लवधाम्नि पल्लववरो देयात् स वोऽत्युत्सवम् ॥

- मदनाभ्युदयभाणे कृष्णमूर्तिशास्त्रिणः

1118. सुखयतु सुखदाता वल्लवीवल्लवानाम्
शिरसि विधृतलोलत्पल्लवो मल्लजेता।
श्रमजलमयगल्लः फुल्लमालाविशेषो-
ल्लसितहृदयदेशो गोकुले गोकुलेशः॥

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

1119. स्पृष्टा वक्षसि लीलया कररुहैः काचित्कचाकर्षणा-
दन्या कामपरेण पादपतनैः कण्ठग्रहेणापरा।
धन्यास्ता भुवने सुरेन्द्रतनवो याः प्रापिता निर्वृत्तिं
स्मृत्वेत्थं स्पृहयन्ति गोपवनिता यस्मै स पायाद्धरिः।।

- उदयपुर-अभिलेखे अपराजितस्य

राधाप्रियः

1120. कनककलशस्वच्छे राधापयोधरमण्डले
नवजलधरश्यामामात्मद्युतिं प्रतिबिम्बिताम्।
असितसिचयप्रान्तभ्रान्त्या मुहुर्मुहुरुत्क्षिपन्
जयति जनितव्रीडाहासः प्रियाहसितो हरिः।।

- सूक्तिमु०

1121. कपोले पत्रालीं पुलकिनि विधातुं व्यवसितः
स्वयं श्रीराधायाः करकलितवर्तिर्मधुरिपुः।
यदासीत्तद्वक्त्रे निहितनयनः कम्पिभुज-
स्तदेतत्सामर्थ्यं तदभिनवरूपस्य जयति।

- वृषभानुजायां मथुरादासस्य

1122. कमनीयतयानुरक्तगोपीकृतदुर्गार्चनकाम्यदानहेतुम्।
वृषभानुकुमारिकानिमित्तं श्रितसङ्केतवटं नटं नमामि।।

- रासपञ्चाध्याय्याष्टीकायां नारायणी इत्याख्यायाम्

1123. कषितविमलहेमोद्दामरेखाङ्कमाला-
वलयित इव भूयादिन्द्रनीलो मणिस्ते।

राधाप्रियः

हृदि निरवधिराधालिङ्गितश्रीमदङ्गो
निखिलहृदयहारिभ्रूतरङ्गो मुरारिः॥

- चित्रचम्प्वां बाणेश्वरभट्टाचार्यस्य

1124. कालिन्दीजलकुञ्जमञ्जुलवनच्छायानिषण्णात्मनो
राधाबद्धनवानुरागरसिकस्योत्कण्ठितं गायतः।
तत्पायादपरिस्खलज्जलरुहापीडं कलस्पृङ्नत-
ग्रीवोत्तानितकर्णतर्णककुलैराकर्ण्यमानं हरेः॥

- सदुक्ति० उद्भटस्य

1125. कालिन्दीमनुकूलकोमलरयामिन्दीवरश्यामलाः
शैलोपान्तभुवः कदम्बकुसुमैरामोदिनः कन्दरान्।
राधां च प्रथमाभिसारमधुरां जातानुतापः स्मर-
न्नस्तु द्वारवतीपतिस्त्रिभुवनामोदाय दामोदरः॥

- सदुक्ति० शरणस्य

1126. गीतीर्वैणवमन्द्रगानमधुराः सम्भावयन्निर्भर-
स्वेदाम्बुस्नपितं विलोक्य पुरतो राधामुखाम्भोरुहम्।
उत्कम्पस्खलदङ्गुलिः परिगलद्वेणुर्निमीलध्वनिः
स्विद्यत्पाणिरपाकरोतु दुरितं गोपालवेषो हरिः॥

- सूक्तिमु० माधवशीलस्य

1127. जगद्विलक्षणेक्षणे क्षणे क्षणे मदीयकं
कदम्बकोरकद्वयं न गोपि गोपितं कुरु।
इदं निगद्य राधिकां पयोधरं वरं हरन्
कलिन्दनन्दिनीतटे ननन्द नन्दनन्दनः॥

- संक्षिप्तसारे परिशिष्टे गोपीचन्द्रस्य.

1128. जयति जयति राधापाङ्गसङ्गीभुजङ्गो
कवलित उरुबाधामूर्च्छितोऽनन्यसाध्यः।
तदधरसुधयोच्चैर्जीवितः श्यामधामा
तदति विषविषङ्गेणेव कश्चित् किशोरः।।

- श्रीरासप्रबन्धे प्रबोधानन्दसरस्वत्याः

1129. तिर्यक्कण्ठविलोलमौलितरलोत्तंसस्य वंशोच्चरद्-
गीतस्थानकृतावधानललनालक्षैर्न संलक्षिताः।
संमुग्धं मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेन्दौ मृदु-
स्पन्दं पल्लविताश्चिरं ददतु वः क्षेमं कटाक्षोर्मयः।।

- सुभा० सुधा० भा०

1130. त्वां पातु नीलनलिनीदलदामकान्तेः-
कृष्णस्य पाणिसरसीरुहकोशबन्धः।
राधाकपोलमकरीलिखितेषु योऽयं
कर्णावतंसकमलं विपुली चकार।।

- सुभा० सुधा० भा०

1131. दृष्टः क्वापि स केशवो व्रजवधूमादाय काञ्चिद्गतः
सर्वा एव हि वञ्चिताः खलु वयं सोन्वेषणीयो यदि।
द्वे-द्वे गच्छत इत्युदीर्य सहसा राधां गृहीत्वा करे
गोपीवेषधरो निकुञ्जभवनं प्राप्तो हरिः पातु वः।।

- सुभा०

1132. दृष्ट्वा राधां सकोपां कृतककलहतो मौनमुद्रानिषण्णां
हस्तौ बध्वा विनीतस्तदपि किल तया नादृतो दृष्टितोऽपि।

राधाप्रियः

सद्यः साष्टाङ्गपातप्रणतिकृतिवशः सस्मितां वीक्ष्य हृष्टो
योऽश्लिक्षद् गाठबन्धं स भवतु भवतां भूतये कृष्णचन्द्रः॥

- गणेशपरिणये वैद्यनाथशर्मणः

1133. देहि मत्कन्दुकं राधे परिधाननिगूहितम्।
इति विस्रंसयन्नीवीं तस्याः कृष्णो मुदेऽस्तु नः॥

- सुभा० सुधा० भा०

1134. दंष्ट्रादुष्टकरालकालियशिरो भङ्गप्रसङ्गोच्छल-
द्रक्तव्यक्तजलौघपूर्णयमुनाकूलप्रवाहोत्सवः।
स्फूर्जद्दुर्जयकंसकेशिमथनो राधामुखेन्दूदये
जीवञ्जीवसमः करोतु कुशलं श्रीकृष्णदेवः प्रभुः॥

- सुदर्शनचम्पूकाव्ये कृष्णानन्दकवीन्द्रस्य

1135. नमन्निलिम्पावलिमौलिविस्फुरत्किरीटमाणिक्यमरीचिवीचिभिः।
चिराय नीराजनराजिराजितं स्मरामि राधारमणाङ्घ्रिसारसम्॥

- व्रजकौतुकामृते कुञ्जनविहारकविचन्द्रस्य

1136. नव्याम्भोदकलेवरः कटितटे सन्नद्धपीताम्बरो
वंशीवादनतत्परो ब्रजरमाचेतोहरः सुन्दरः।
राधायाः प्रणयाद्रिवर्द्धनकरः केयूरराजोत्करो
नानाश्चैर्य्यगुणाकरः परतरो जीयात् किशोरो वरः॥

- पद्यावलीव्याख्यायां दामोदरस्य

1137. नीतं नवनीतं कियदिति पृष्टो यशोदया कृष्णः।
इयदिति गुरुजनसंसदि करधृतराधापयोधरः पातु॥

- सुभा० सुधा० भा०

1138. नीलाम्भोरुहकोशकोमलतनुं स्मेराननं मालिनं
सुस्निग्धं दधतं दुकूलयुगलं वाग्वैभवस्यास्पदम् ।
स्वीयानां मुदितामृतेन हृदयं सन्तर्पयन्तं सदा
राधाकेलिकथासु सन्ततरतं ध्यायामि कृष्णाभिधम् ॥

- वृषभानुजायां मथुरादासस्य

1139. नीलां कञ्चुलिकां विमुञ्च कुचयोरास्तां सरोजेक्षणे
मुक्ताहारलतारथाङ्गयुगलश्रीशालिनी स्वर्द्धुनी।
इत्याभाष्य विमुक्तकुन्तलकुलच्छायां करेणामृशन्
राधाया विनते स्मिताननविधौ स्मेरो हरिः पातु वः॥

- कृष्णकुतूहले मधुसूदनसरस्वत्याः

1140. नीवीबन्धविधूननोद्यतकरो राधारतेरिच्छिया
कृष्णस्तत्क्षणमागतामभिमुखीं दृष्ट्वा यशोदां रुदन् ।
हे मातर्निजगोपगोपवनिता मे कन्दुकं वाससी-
त्येवं व्यस्तमुदीरयन् हरतु वः पापानि धूर्त्तक्रियः॥

- दानवाक्यावल्यां सूर्यकरस्य

1141. पद्माङ्घ्रिर्नवपत्रपाणिकदलीकुन्दोरुदन्तद्युतिः
फुल्लेन्दीवरबिम्बकिंशुकलसन्नेत्रोष्ठसन्नासिकः।
राधासल्लतिकाञ्चितः सुकुसुमस्त्रग्वीतमालच्छवि-
र्वृंदारण्यविनोदनैक रसिको राधाधवः पातु माम् ॥

- वनविनोदे

1142. पद्मे त्वन्नयने स्मरामि सततं भावो भवत्कुन्तले
नीले मुह्यति किं करोमि महितैः क्रीतोऽस्मिते विभ्रमैः।

इत्युत्स्वप्नवचो निशम्य सरुषा निर्भर्त्सितो राधया
कृष्णस्तत्परमेव तद्व्यपदिशन् क्रीडाविटः पातु वः॥

- यतिराजविजये श्रीवात्स्यवरदाचार्यस्य

1143. प्रत्यग्रोज्झितगोकुलस्य शयनादुत्स्वप्नमूढस्य मां
मा गोत्रस्खलितादुपैतु च दिवा राधेति भीरोरति।
रात्रावस्वपतो दिवा च विजने लक्ष्मीति चाभ्यस्यतो
राधां संस्मरतः श्रियं रमयतः खेदो हरेः पातु वः॥

- सदुक्ति0

1144. प्रोद्यन्नूतनयौवनान्वितमथो पृक्तं सदा राधया
श्रीकृष्णं जलदच्छविं सकरुणापाङ्गच्छटामञ्जुलम्।
वृन्दारण्यनिकुञ्जधामनिरतं गोपीगणाराधितम्
सान्द्रानन्दरसैकसारसुतनुं भक्त्या नमाम्यन्वहम्॥

- अजितोदये जगज्जीवनभट्टस्य

1145. बिम्बोष्ठे तव नाञ्जनं पुनरयं भृङ्गस्त्वदास्याम्बुजा-
स्वादाय स्तिमितोऽथवा जतुमयी मुद्रा कृता नीलया।
इत्थं राधिकयोदिते सुमुखि ते दृक्कान्तिसंक्रान्तिजम्
नैल्यं नान्यदिहेति तां सरभसं चुम्बन् हरिः पातु नः॥

- अनङ्गजीवने वरदगुरोः

1146. भ्रूवल्लीचलनैः कयापि नयनोन्मेषैः कयापि स्मित-
ज्योत्स्नाविच्छुरितैः कयापि निभृतं संभावितस्याध्वनि।
गर्वोद्भेदकृतावहेलविनयश्रीभाजि राधानने
सातङ्कानुनयं जयन्ति पतिताः कंसद्विषो दृष्टयः॥

- सदुक्ति0 उमापतिधरस्य

1147. मकरीविरचनभङ्ग्या राधाकुचकलशपीडनव्यसनी।
ऋजुमपि रेखां लुम्पन्बल्लववेषो हरिर्जयति॥

- शा॰प॰ हरिहरस्य

1148. मुग्धे नाथ किमात्थ तन्वि शिखरिप्राग्भारभुग्नो भुजः
साहाय्यं प्रिय किं भजामि सुभगे दोर्वल्लिमायासय।
इत्युल्लासितबाहुमूलविचलच्चेलाञ्चलव्यक्तयो
राधायाः कुचयोर्जयन्ति चलिताः कंसद्विषो दृष्टयः॥

- सदुक्ति॰ शङ्करस्य

1149. मुग्धे पङ्कजकुड्मलौ तव कुचौ पाकाद्विकासोन्मुखौ
प्रातश्चेत्प्रसरेद्दिवाकरकरः फुल्लौ भवेतामिमौ।
अर्धेन्दून् कलये तदत्र नखरैर्न स्याद्यतः फुल्लते-
त्येवं वञ्चनया हरिः परिमृशन् राधास्तनौ पातु नः॥

- अलङ्कारमकरन्दे कोल्लूरिराजशेखरस्य

1150. मुधा रुदन् गर्भगृहे समेतामादातुमालिङ्ग्य हठेन राधाम्।
कुर्वन्नखाङ्कान्कुचयोरनुष्या मायाशिशुर्मङ्गलमातनोतु॥

- रुक्मिणीकल्याणे राजचूडामणेः

1151. यल्लक्ष्मीवदनेन्दुना न सुखितं यन्नार्द्रितम्वारिधे-
र्वारा यन्न निजेन नाभिसरसीपद्मेन शान्तिङ्गतम्।
यच्छेषाहिफणासहस्रमधुरश्वासैर्न्न चाश्वासितं
तद्राधाविरहातुरं मुररिपोर्वेल्लद्वपुः पातु वः॥

- पत्राभिलेखे वाक्पतिमुञ्जस्य

1152. यामिन्यां परिवृत्तिभाजि चरिते चाराय वृन्दे गवां
गोपानां च विषाणवेणुतुमुलध्वाने समुत्सर्पति।
गाढालिङ्गितराधिकाभुजलताबद्धस्य कंसद्विषो
यातुं स्थातुमनीश्वरस्य मनसो डोलायितुं पातु वः।।

- सूक्तिमु० मदनस्य

1153. राधावासगृहं प्रविश्य सहसा प्रातस्सखीवेषधृत्
कृष्णायैव मम स्थितौ सखि कथं ते दीनतैवं वदन् ।
हा सत्यं सखि लोकयामितमिति क्षिप्रं तयाऽलिङ्गितः
सन्तोषावधिचुम्बितः स्मितयुतः प्रीतो हरिः पातु वः।।

- कृष्णलीलामृते केशवस्य

1154. राधासविभ्रमदृगन्तनिपातजात-
पत्रं प्रमोदकुसुमालिभिरुल्लसन्तम् ।
कूले कलिन्ददुहितुस्ततकेलिशाखम्
कृष्णानुरागतरुमादरतः प्रपद्ये।।

- प्रबन्धपारिजाते रामचन्द्रमिश्रस्य

1155. रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा -
मभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया।
साधु त्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति-
व्याजादुद्भटचुम्बितस्मितमनोहारी हरिः पातुः वः।।

- सुभा० सुधा० भा०

1156. वामां सस्थलचुम्बिकुण्डलरुचा जातोत्तरीयच्छविं
वंशीगीतिभवत्त्रिभंगवपुषं भ्रूलास्यलीलाकुलम् ।

किञ्चित्त्रस्तशिखण्डशेखरमतिस्निग्धालिनीलालकं
राधादिप्रमदाशतावृतमहं वन्दे किशोराकृतिम्॥

- वृषभानुजायां मथुरादासस्य

1157. विलिख्य सत्याकुचकुम्भसीम्नि
पत्रावलिन्यासमिषेणराधाम्।
लीलारविन्देन तया सरोषं
पायाद्विटः कोऽप्यभिहन्यमानः॥

- पञ्चायुधप्रपञ्चे त्रिविक्रमपण्डितस्य

1158. वृन्दारण्यमुकुन्दकुञ्जकुहरे गुञ्जन्मिलिन्दाकुले
सानङ्गं वृषभानुजाकुचतटी काश्मीरमुद्रायुतम्।
मन्दारं निजपादपद्मभजनानन्दातिसक्तात्मनां
तं वृन्दारकवृन्दवंदितपदं वन्दे मुकुन्दं मुदा॥

- रासपञ्चाध्याय्यां नारायणी इत्याख्यायां टीकायाम्

1159. व्यालाः सन्ति तमालवल्लिषु वृतं वृन्दावनं वानरै-
रुन्नक्रं यमुनाम्बुघोरवदनव्याघ्रा गिरेः सन्धयः।
इत्थं गोपकुमारकेषु वदतः कृष्णस्य तृष्णोत्तर-
स्मेराभीरवधूनिषेधिनयनस्याकुञ्चनं पातु वः॥

- सदुक्ति० उमापतिधरस्य

1160. शोणस्निग्धाङ्गुलि-दलकुलं जातरागं परागैः
श्रीराधायाः स्तनमुकुलयोः कुंकुमक्षोदरूपैः।
भक्तश्रद्धामधुनखमहः पुञ्जकिञ्जल्कजालं
जङ्घानालं चरणकमलं पातु नः पूतनारेः॥

- श्रीआनन्दवृन्दावनचम्प्वां कर्णपूरगोस्वामिनः

1161. श्रीकान्ता तव जीवितं खलु ततो वक्षःस्थले लक्ष्यते
नैकान्ता मयि चित्तवृत्तिरिह ते बुद्धोतिमुग्धागतिः।
का कान्ताद्य मदुक्तिरित्यतितरक्रोधाधिकां राधिकाम्
श्रीकान्तैव भवत्यसीत्यनुनयन् पीताम्बरः पातु नः ॥

- वल्लवीवल्लवोल्लासभाणे मञ्जुलाचार्यस्य वशिष्ठगोत्रस्य

1162. श्रीकृष्णः सूर्यकन्यातटनिकटमिलद्भृङ्गकुञ्जान्तराले
गोपीवृन्दैः परीतोहसितवदनया राधयालिङ्गिताङ्गः।
ईषत्साचीकृताङ्घ्रिर्नवजलदरुचिर्वेणुनिस्वानमुह्यद्-
गोवृन्दावेष्टितोऽयं हृदि निवसतु मे बर्हिबर्हावतंसः॥

- वशिष्ठस्मृतेष्टीकायां विद्वन्मोदिनी इत्याख्यायां कृष्णशर्मणः

1163. श्रेयः स मे दिशतु कोऽपि नवीनपीन-
भव्याम्बुदप्रभतनुर्जनवन्दनीयः ।
यद्बाहुपाशकलितालसितानन्श्री-
राधश्घनं प्रविशतीवतडिद्विभाति॥

- मदनन्तकृत-चम्पूभारतस्य टीकायां रामचन्द्रमिश्रस्य

1164. हृदयं कौस्तुभोद्भसि हरेः पुष्णातु वः श्रियम् ।
राधाप्रवेशरोधाय दत्तमुद्रमिव श्रिया॥

- शा० प० कुमुदस्य

राधाकृष्णौ

1165. आहूताद्य मयोत्सवे निशि गृहं शून्यं विमुच्यागता
क्षीबः प्रेष्यजनः कथं कुलवधूरेकाकिनी यास्यति।
वत्स त्वं तदिमां नयालयमिति श्रुत्वा यशोदागिरो
राधामाधवयोर्जयन्ति मधुरस्मेरालसा द्रष्टयः॥

- सदुक्ति० केशवसेनस्य

1166. उदञ्चद्वात्सल्यं निभृतमुपशल्यं गिरिपते-
स्तटे कृष्णाकुञ्जे विलसदलिपुञ्जेऽनवरतम्।
च्युताशङ्कं क्रीडद् दलितकलिपङ्कं करुणया
श्रितस्वान्तं ध्वान्तं व्रजयुवयुगं नस्तिरयतात्॥

- गुणेश्वरचरितचम्प्वां बदरीनाथस्य

1167. कृष्ण त्वद्वनमालया सह कृतं केनापि कुञ्जान्तरे
गोपीकुन्तलबर्हदाम तदिदं प्राप्तं मया गृह्यताम्।
इत्थं दुग्धमुखेन गोपशिशुनाऽख्याते त्रपानम्रयो
राधामाधवयोर्जयन्ति वलितस्मेरालसा दृष्टयः॥

- सदुक्ति० लक्ष्मणसेनस्य

1168. क्षमाभृत्कान्तहृदयं सुमनोमालयाञ्चितम्।
घनप्रभं तद्यमकं राधामाधवयोः स्तुमः॥

- घटकर्परकाव्यस्य टीकायां चन्द्रिकाख्यायां गोवर्द्धनदासस्य

1169. तूर्णं कृष्णानुकूलं नयतरणिरसौ मज्जतिस्त्रस्तरश्मिः
कान्ते कण्ठावलम्बी स्वयमयमुडुपो नौ प्रसङ्गे सहायः।
विश्वासो वाचिको वा तरल तव करं देहि दास्ये स्थितेत्थं
राधागोविन्दयोर्वः स्मितमुखमुदिताश्लेषभङ्गी पुनातु॥

- गीतगोपीपतौ कृष्णदत्तस्य

1170. मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः॥

- शा० प० जयदेवस्य

1171. श्रीमन्मञ्जुलवंजुलावलिलताकुञ्जेलिपुंजेहसत्
कुञ्जे रंजितइन्दुरश्मिनिकरैर्नानाद्रुमामोदिते।
कालिन्दीमृदुबालुकासुललिते श्रीमत्पदैरङ्किते
राधामाधवयोर्विषक्तमनसोर्वृन्दावने मङ्गलम्॥

- वृत्तरत्नावल्यां मणिराममिश्रस्य

राधामाधवालापः

1172. अङ्गुल्या कः कपाटं प्रहरति कुटिलो माधवः किं वसन्तो
नो चक्री किं कुलालो नहि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः।
नाहं घोराहिमर्दी त्वमसि खगपतिर्नो हरिः किं कपीन्द्रः
इत्येवं गोपकन्याप्रतिवचनजडः पातु वो पद्मनाभः ॥

- कृष्णकर्णामृते लीलाशुकस्य

1173. कस्त्वं चक्री व्रज निजपुरं नात्र सर्पस्य वासो
गोपालोऽहं विपिनसविधे गोष्ठमस्ति प्रयाहि।
पद्मेशोऽहं व्रजति न धरामण्डले चण्डरश्मिः
कृष्णो राधावचनविजितः पातु वोऽभीष्टमित्थम् ॥

- रसकौस्तुभे वेणीदत्तस्य

1174. कस्त्वं भो निशि केशवः शिरसिजैः किं नाम गर्वायसे
भद्रे शौरिरहं गुणैः पितृगतैः पुत्रस्य किं स्यादिह।
चक्री चन्द्रमुखि प्रयच्छसि न मे कुण्डीं घटीं दोह्निनी-
मित्थं गोपवधूहृतोत्तरतया दुःस्थो हरिः पातु वः॥

- सदुक्ति०

1175. कुशलं राधे सुखितोऽसि कंस कंस क्व नु सा राधा।
इति पालीप्रतिवचनैर्विलक्षहासो हरिर्जयंति॥

- सदुक्ति०

1176. कोऽयं द्वारि हरिः प्रयाह्युपवनं शाखामृगेणात्र किं
कृष्णोऽहं दयिते विभेमि सुतरां कृष्णादहं वानरात् ।
मुग्धेऽहं मधुसूदनो व्रज लतां तामेव पुष्पान्विता-
मित्थं निर्वचनीकृतो दयितया ह्लीणो हरिः पातुः वः।।

- सदुक्ति० शुभंकरस्य

1177. राधामोहनमन्दिरं जिगमिषोश्चन्द्रावलीमन्दिरा-
द्राधे क्षेममिति प्रियस्य वचनं श्रुत्वाह चन्द्रावली।
क्षेमं कंसं ततः प्रियः प्रकुपितः कंसः क्व दृष्टस्त्वया
राधा क्वेति तयोः प्रसन्नमनसोर्हासोद्गमः पातु वः।।

सुभा०

रुक्मिणीवल्लभः

1178. आनन्दरूपमुन्मीलन्नीलनीरजलोचनम् ।
वन्दामहे भवध्वान्तध्वंसिनं रुक्मिणीपतिम् ।।

- उदयनाचार्यकृत-लक्षणावल्याष्टीकायां
न्यायमुक्तावल्याख्यायां शेषशार्ङ्गधरस्य

1179. श्रीकान्तः श्रियमातनोतु भवतां शृङ्गारयन्रुक्मिणीं
नीलेत्यर्धसमुद्गतेन वचसा तां वीक्ष्यमाणां क्षणात् ।
प्रत्युद्यत्प्रतिबिम्बकुन्तलततिं प्रत्यग्रकस्तूरिका-
पत्राङ्कुरचमत्क्रियां व्यपदिशन् प्रस्तावनां गण्डयोः।।

- चन्द्रलेखाविद्याधरे

1180. श्रीमद्गोपशिशोस्तवाद्रिभरणं मिथ्येति लीलोत्कया
रुक्मिण्याभिहितो वहामि शिखरिद्वन्द्वं प्रिये लोकय।
इत्युक्त्वा तदुरोजशैलयुगलं गृह्णन् कराभ्यां तया
लज्जानम्रमुखाब्जया सरभसश्लिष्टो हरिः पातु नः॥

- पञ्चबाणविजयभाणे मन्मथस्य

रासविहारी

1181. अञ्जनाभमखिलव्रजवामारञ्जनाय कृतरासविलासम्।
तं जनाभयदमम्बुजनेत्रं कञ्जनाभमहमन्वहमीडे॥

- मृगयाचम्प्वां कविराजस्य

1182. कृष्णाकूलकदम्बमूलमुरलीनिर्ह्रादसंकर्षित-
क्रीड़ाकौतुकदर्शनेप्सुविलसद्गोगोपगोपीकुले।
वृन्दारण्यनिकुञ्जमञ्जुसदनस्वच्छन्दरासप्रिये
रामेन्दौ रमतां सदा मम मनो गोपालके बालके॥

- माधवकविकृत- दानलीलाकाव्यस्य टीकायां रामचन्द्रशर्मणः

1183. केकीवने निशि शशिद्युतिरञ्जिताया-
मालीजनैः सह सहासमुखो मुरारिः।
रासोत्सवैकरसिको रमणीयरूपो-
ल्लासोऽनिशं भवतु वः कुशलाय देवः॥

- अनङ्गसर्वस्वभाणे लक्ष्मीनृसिंहस्य

1184. गोपीनूतनरूपयौवनमहामाधुर्यलाभोन्मदम्
वृन्दाकाननिर्मितोज्ज्वलमयस्वच्छन्दरासोत्सवम्।
श्रीमद्वल्लभविट्ठलप्रकटितप्रेमाख्यभक्तिप्रियम्
वेदान्तोक्तरसात्मकं प्रभुमहं गोवर्द्धनेशं भजे॥

- प्रमेयरत्नार्णवे बालकृष्णभट्टस्य

1185. सङ्गीतं श्रुतिमूर्द्धभिस्तदविदां वागाद्यतीतं विदाम्
दूरं साधनसम्पदां निरुपधि स्नेहैः सखायं वृतैः।
रासोल्लासवशंवदव्रजवधूवृन्दे वसन्तं सदा
दासक्लेशहरं मुदा परतरं श्रीकृष्णदेवं श्रये॥

- अणुभाष्यप्रकाशे पुरुषोत्तमस्य

पार्थसारथिः

1186. कृष्णं गोविन्दमनिशं श्रीगोपीजनवल्लभम्।
वन्दे पार्थरथारूढं ज्ञानमुद्रालसत्करम्॥

- अहोबलसूरिकृत-वाक्यार्थरत्नस्य सोपज्ञटीकायां सुवर्णमुद्राख्यायाम्

1187. दिवाकरनिशाकरावनलविद्युतस्तारका
यदीयपरतेजसा जगति सत्प्रकाशक्षमाः।
यदाप्तसुखलेशतः सुखिन आह वेदोऽपरान्
धनञ्जयजयप्रदं जयति सूतवेषं महः॥

- राजधर्मकौस्तुभे आपदेवसुतानन्तदेवस्य

गीतोपदेष्टा

1188. प्रपन्नपारिजातायतोऽत्र वेत्रैकपाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः॥

- भगवद्गीताटीकायाम्

विश्वरूपः कृष्णः

1189. अग्नीषोमात्मनानाबुधधरमखिलव्याप्तमास्याङ्घ्रिदोष्णां
साहस्रैर्युक्तमन्तःकृतसुरनिवहं स्वप्रभोद्भासिताशम्।

(पार्थसारथिः, गीतोपदेष्टा, विश्वरूपः कृष्णः, दशावतारीकृष्णः) बुद्धः

नत्रैरर्केन्दुरूपैर्विलसितमनलोग्रानननं चित्रवर्णम्
भूषाकोटिप्रदीप्तावयवमवतु वो विश्वरूपं मुरारेः॥

- आदिशेषकृत-परमार्थसारस्य टीकायां राघवानन्दस्य

दशावतारीकृष्णः

1190. वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्विभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
सेतुं बन्धयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तस्मै नमः॥

- अनावादा-प्रस्तराभिलेखे शार्ङ्गदेवस्य

बुद्धः

1191. अस्तु स्वस्त्ययनाय वः स भगवान् श्रीधर्म्मचक्रः कियद् -
यन्नाम श्रुतवान्भवोऽस्थिरवपुर्निर्जीवमुत्ताम्यति।
तत्र श्रीघनशासनामृतरसैः संसिच्य बुद्धे पदे
तं धेयादपुनर्भवं भगवती तारा जगत्तारिणी॥

- नालन्दा-अभिलेखे विपुलश्रीमित्रस्य

1192. अस्यास्मद्गुरवो बभुवुरबलाः संभूयहर्त्तं मनः
का लज्जा यदि केवलो न.बलवानस्मिँत्रिलोकप्रभौ।
इत्यालोच्यतेव मानसभुवा यो दूरतो वर्जितः
श्रीमान् विश्वमशेषमेतदवताद्बोधौ स वज्रासनः॥

- घोसवारा बौद्धाभिलेखे

1193. कामक्रोधौ,द्वयमपि यदि प्रत्यनीकं प्रसिद्धं
हत्वानङ्गं किमिव हि रुषा साधितं त्र्यम्बकेन।

यस्तु क्षान्त्या शमयति शतं मन्मथादीनरातीन्
कल्याणं वो दिशतु स मुनिर्ग्रामणीरर्कबन्धुः॥

- सदुक्ति० सङ्घश्रियः

1194. कामेनाकृष्य चापं हतपटुपटहं वल्गुभिर्मारवीरै-
र्भ्रूभङ्गोत्क्षेपजृम्भास्मितललितदृशा दिव्यनारीजनेन।
सिद्धैः प्रह्वोत्तमाङ्गैः पुलकितवपुषा विस्मयाद्वासवेन,
ध्यायन्यो योगपीठादचलित इति वः पातु दृष्टो मुनीन्द्रः॥

- सुभा०सुधा०भा०

1195. कारुण्यामृतकन्दलीसुमनसः प्रज्ञावधूमौक्तिक-
ग्रीवालङ्करणश्रियः शमसरित्पूरोच्छलच्छीकराः।
ते मौलौ भवतां मिलन्तु जगतीराज्याभिषेकोचित-
स्त्रग्भेदा अभयप्रदानचरणप्रेङ्खन्नखाग्रांशवः॥

- सदुक्ति० श्रीधरनन्दिनः

1196. कृत्वा मैत्रीं तनुत्र स्फुरदुरुकरुणाखड्गमालम्बयन् यः
स्फूर्ज्जत् कन्दर्पसेनाप्रलयजलनिधेर्ध्वानभीमप्रमोषी।
कल्पान्तादीप्तवह्निज्वलितवरवपुः क्रोधजिह्वीकृतभ्रूं
जिग्ये निर्वान्तहेमद्युतिललितवपुः सोस्तु भूत्यै जिनो वः॥

- बोधगया-अभिलेखे गोपालदेवस्य

1197. जयति सुरासुर-मकुटस्फुटमणिकिरणावलीढच्चरणयुगः।
अपरिमितगुणनिधिर्न्निष्कारणवत्सलो बुद्धः॥

- पत्राभिलेखे भोज-अशंकितस्य

1198. जयत्यसंजातविचित्रवासना-
गुणानुरागोज्ज्वलधीस्तपोनिधिः।

बुद्धः

तथागतः स्तम्भितमारसुन्दरी-
महोत्सवः सिद्धगणैरभिष्टुतः॥

- कलचुरि-प्रस्तराभिलेखे

1199. जयन्ति वादाः सुगतस्य निर्म्मलाः
समस्तसन्देहनिरासभासुराः।
कुत्तर्क्कसम्पातनिपातहेतवो
युगान्तवाता इव विश्वसन्ततेः॥

- कोटा-बौद्धाभिलेखे

1200. ध्यानव्याजमुपेत्य चिन्तयसि कामुन्मील्य चक्षुः क्षणं
पश्याङ्गशरातुरं जनमिमं त्रातापि नो रक्षसि।
मिथ्या कारुणिकोऽसि निर्घृणतरस्त्वत्तः कुतोऽन्यः पुमा-
न्सेर्ष्यं मारवधूभिरित्यभिहितो बुद्धोजिनः पातु वः॥

- नागानन्दे श्रीहर्षस्य

1201. नमो बुद्धाय शुद्धाय नमो धर्म्माय शर्म्मणे।
नमः संघाय सिंहाय लंघनाय भवाम्बुधेः॥

- गया-अभिलेखे

1202. नैरोधीं शुभभावनामनुसृतः संसारसंक्लेशजिन् -
मैत्रेयस्य करे विमुक्तिवशिता यस्याद्भुता व्याकृता।
निर्व्वाणावसरे च येन चरणौ दृष्टौ मुनेः पावनौ
पायाद्वः स मुनीन्द्रशासनधरः स्तुत्यै महाकाश्यपः॥

- बोधगया -अभिलेखे महानामनस्य

1203. पादाम्भोजसमीपसन्निपतितस्वर्णाथदेहस्फुर-
न्नेत्रस्तोमतया परिस्फुटमिलन्नीलाब्जपूजाविधिः।

वन्दारुत्रिदशौघरत्नमुकुटोत्सर्पत्प्रभापल्लव-
प्रत्युन्मीलदपूर्वचीवरपटः शाक्यो मुनिः पातु वः॥

- सदुक्ति० वसुकल्पस्य

1204. बद्ध्वा पद्मासनं यो नयनयुगमिदं न्यस्य नासाग्रदेशे
धृत्वा मूर्तौ च शान्तौ शमरसमिलितौ चन्द्रसूर्याख्यवातौ।
पश्यन्नन्तर्विशुद्धं किमपि च परमं ज्योतिराकारहीनं
सौख्याम्भोधौ निमग्नः स दिशतु भवतां ज्ञानबोधं बुधोऽयम् ॥

- सुभा० सुधा० भा०

1205. मारानष्टनियम्य दक्ष्यधिपतीनायोज्य सत्त्वोदये
दुर्लंघ्यान्यवमत्य शम्बररिपोराज्ञाक्षराण्यादृतः।
उद्धर्त्तुं यतते स्म यः करुणया श्रीशाक्यसिंहो जगद् -
बोधिं प्राप्य च बुद्धतामभिगतः स त्वां परित्रायताम् ॥

- श्रावस्ति- बौद्ध- प्रस्तराभिलेखे

1206. यदाख्यानासङ्गादुषसि पुनते वाचमृषयो
यदीयः संकल्पो हृदि सुकृतिनामेव रमते।
स सार्वः सर्वज्ञः पथि निरपवादे कृतपदो
जिनो जन्तूनुच्चैर्दमयतु भवावर्तपतितान् ॥

- सदुक्ति० मङ्गलस्य

1207. ये धर्म्माहेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् ।
तेषां च यो निरोध एवं वादीमहाश्रमणः॥

- बोधगया-अभिलेखे

1208. वन्द्यो जिनः स भगवान् करुणैकपात्रं
धर्म्मोप्यसौ विजयते जगदेकदीपः।

बुद्धः

यत्सेवया सकल एव महानुभावः
संसारपारमुपगच्छति भिक्षुसंघः॥

- रामपाल-पत्राभिलेखे श्रीचन्द्रदेवस्य

1209. वर्द्धतां वर्द्धमानेन्दोवर्द्धमानगणोदधेः।
शासनं नाशितरिपोर्भासुरं मोहशासनम् ॥

- गोकक-पत्राभिलेखे

1210. वेदक्रियाम्बुरहितं करुणातृणौघ-
च्छन्नाननं सुगतदर्शननिम्नकूपम् ।
वाताय यः कलियुगैकसुहृच्चकार
लोकस्य बुद्ध इति रक्षतु वः स विष्णुः॥

- अजमेर-प्रस्तराभिलेखे

1211. व्याप्तो येनाप्रमेयः सकलशशिरुचा सर्व्वतः सत्त्वधातुः
क्षुण्णाः पाषण्डयोधास्सुगतिपथरुधस्तर्कशस्त्राभियुक्ताः।
सम्पूर्णो धम्मकोषः प्रकृतिरिपुहृतः साधितो लोकभूत्यै
शास्तुः शाक्यैकवन्धोज्जयति चिरतरं तद्यशस्सारतन्त्रम् ॥

- बोधगया-अभिलेखे महानामनस्य

1212. शीलाम्भःपरिषेकशीतलदृढध्यानालवालस्फुर-
द्दानस्कन्धमहोन्नतिः पृथुतरप्रज्ञोल्लसत्पल्लवः।
देयात्तुभ्ध्यंमवार्यवीर्यविटपः क्षान्तिप्रसूनोद्गमः
सुच्छायः षडभिज्ञकल्पविटपीसम्बोधबीजं फलम् ॥

- सदुक्ति० श्रीधरनन्दिनः

1213. श्रीमन्महाबोधिप्रदं पुराणं
परम्परीणं नियतं जिनानाम् ।

ह्यध्वस्थितानां स्थितिरस्ति यत्र
संबोधये बोधितरोस्तलं च॥

- जम्बीघा-अभिलेखे

1214. श्रीमानसौ जयति सत्त्वहितप्रवृत्त-
सन्मानसाधिगततत्त्वनयो मुनीन्द्रः।
क्लेशात्मनां दुरितनक्रदुरासदान्तः
संसारसागरसमुत्तरणैकसेतुः॥

- घोस्रावा बौद्ध-अभिलेखे

1215. श्रीसिद्धार्थनरेशवंशसरसीजन्माब्जिनीवल्लभः
पायाद् वः परमप्रभावभवनं श्रीवर्धमानः प्रभुः।
उत्पत्तिस्थितिरसंहृतिप्रकृतिवाग् यद् गौर्जगत्पावनी
स्ववर्पीव महाव्रतिप्रणयभूरासीद् रसोल्लासिनी॥

- शत्रुञ्जय-अभिलेखे

1216. सर्वज्ञतां श्रियमिव स्थिरमास्थितस्य
वज्रासनस्य वहुमारकुलोपलम्भाः।
देव्या महाकरुणया परिपालितानि
रक्षन्तु वो दश-वलानि दिशो जयन्ति॥

- कलीमपुर-पत्राभिलेखे धर्मपालदेवस्य

1217. सिद्धार्थस्य परार्थसुस्थितमतेस्सन्मार्गमभ्यस्यत-
स्सिद्धिस्सिद्धिमनुत्तरां भगवतस्तस्य प्रजासुक्रियात्।
यस्त्रैधातुकसत्वसिद्धिपदवीरत्युग्रवीर्योदया-
ज्जित्वानिर्वृतिमाससाद सुगतस्सर्वार्थभागीश्वरः॥

- नालन्दा-ताम्रपत्राभिलेखे देवपालदेवस्य

1218. सूर्य्यांशुद्युतिपरिपृक्तपङ्कजानां
शोभां यद्वहति सदास्य पादपद्मम् ।
देवानाम्मुकुटमणिप्रभाभिषिक्तं
सर्व्वज्ञस्स जयति सर्व्वलोकनाथः॥

- देवान्गोर-पत्राभिलेखे रविवर्मणः

1219. संसारस्थिरबन्धनात्कृतमतिर्मोक्षाय यो देहिनां
कारुण्यात्प्रसभं शरीरमपि यो दत्वा तु तोषार्थिने।
सेन्द्रैर्यः स्वसिरः किरीटमकरीघृष्टाङ्घ्रिपद्मः सुरै-
स्तस्मै सर्वपदार्थतत्वविदुषे बुद्धाय नित्यं नमः॥

- नालन्दा प्रस्तराभिलेखे

जगन्नाथः

1220. आस्ते देव! स्मरपरवशस्मेरतारुण्यनृत्य-
त्प्रौढोत्तुङ्गस्तनभरनमत्कामिनीकामकेलिः।
युष्मत्सेवापरवशमनाः किं जगन्नाथ तावद्
भावी भावश्चरणकमले तावके मामकीनः॥

- अधिकरणकौमुद्यां देवनाथठक्कुरस्य

1221. कारुण्यामृतवारिपूरलहरीदूरीकृतस्वाश्रित-
स्वान्तध्वान्तनिरन्तरान्तररजोराशिर्यशः शेवधिः।
भास्वद्भानुसहस्रभानुगहनोऽवज्ञाततिग्मद्युति-
र्देवः श्रीपुरुषोत्तमो विजयते नीलाद्रिचूडामणिः॥

- सुरेश्वराचार्यकृत-बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिकस्य
टीकायां शास्त्रप्रकाशिकाख्यायां आनन्दगिरेः

1222. नाथः सृजत्यवति यो जगदेकपुत्रः
प्रीत्या ततः परमनिर्वृत्तिमादधाति।

तस्मै नमः सहजदीर्घकृपानुबन्ध-
लब्धत्रितत्त्वतनवे पुरुषोत्तमाय॥

- न्यायलीलावत्यां वल्लभन्यायाचार्यस्य

1223. नीलाद्रौ च तदर्थिभ्यो दानकामचतुष्टयम् ।
अदृश्यो क्षेत्रपदवीं राति यस्तं हरिं नुमः॥

- मुक्तिचिन्तामणौ पुरुषोत्तमदेवस्य

1224. पुरिभुवि महितायां भूमिसाराभिधाया-
मधिमुनिभृगुतीर्थोपान्तमाबद्धखेलम् ।
किमपि नतशरण्यं मंगलं मंगवल्ली
जगदधिपतिसंज्ञं द्वन्दमानन्दयेन्नः॥

- भवभूतिकृत-उत्तररामचरितस्य टीकायां तलस्पर्शिनी
इत्याख्यायां वीरघवस्य

1225. मायामोहानलज्वालादग्धज्ञानांकुरो नरः।
योऽनेकधामो चयते कृपालुस्तमजं भजे॥

- मुक्तिचिन्तामणौ पुरुषोत्तमदेवस्य

1226. यज्जाग्रतो याति जगत्प्रकाशं
निद्रायमाणे पुनरेव यस्मिन् ।
निलीयमानं भवति क्षणेन
नमोस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय॥

- मेहर-पत्राभिलेखे दामोदरस्य

1227. श्रीनीलाचलतुङ्गशृङ्गविहरन्मातङ्गभङ्गीभृतो
दुर्दैवातपतापतप्तमनसां कदाम्बिनीकन्दलः।

पादाम्भोरुहरक्तभक्तजनताकारुण्यपाथोनिधिः
यस्सोऽयं जगदीश्वरो वितनुतां श्रेयांसि भूयांसि वः।।

- गंगवंशानुचरिते वासुदेवरथसोमयाजिन ः

1228. सद्यो भिन्नाञ्जनाभः कनकचयलसच्चञ्चलालिंगितांगः
स्निग्धो गम्भीरनादः त्रिजगति जनतालोचनालीविनोदः।
भूलक्ष्मीमोदकारी त्रिदशपतिधनुर्भूषणालङ्कृतोऽसौ
पायान्नीलाचलस्थो नवमुदिरवरो जीवनाधारमूर्त्तिः।

- गुण्डिचाचम्प्वां चक्रधरपट्टनायकस्य

1229. सद्यः पीयूषपातो मनसि नयनयोः कामचिन्ता दुरन्ता
शान्ताकृष्टं विनष्टं जनिरजनि सती लब्धमिष्टं यथेष्टम् ।
पापाकूपारपारं गतमपि पितरो ध्वस्तबन्धानुबन्धा
येनालोकि त्रिलोकी निलयमणिरयं नीलशैलावतंसः।।

- गोपीनाथपुर-अभिलेखे कपिलेन्द्रदेवस्य

1230. संसारार्णवकर्णधारमपि तं भक्तार्थसंसारणिं
वन्दे श्रीपुरुषोत्तमं तनुभृतां संकल्पकल्पद्रुमम्।
वेदान्तार्थमुदाहरन्ति खलु यं येनाखिलं भासते
हृष्टे यत्र हृणीयते पदमपि स्वायंभुवं देहिनाम् ।।

- गोपीनाथपुर-अभिलेखे कपिलेन्द्रदेवस्य

कामदेवः

1231. अतिपरिमलबन्धुः कामिनीकेलिसिन्धुः
विहितभुवनमोदः सेव्यमानप्रमोदः।
जयति मकरकेतुर्मोहनस्यैकहेतु-
र्विरचितबहुसेवः कामिभिः कामदेवः।।

- पञ्चसायके ज्योतिरीश्वरस्य

1232. अतिललितविलासं विश्वचेतोनिवासं
समरकृतविकासं शंम्बराख्यप्रणाशम्।
रतिनयनविरामं सन्ततं चाभिरामम्
प्रसभविजितवामं शर्मदं नौमि कामम्।।

— अनङ्गरङ्गे कल्याणमल्लस्य

1233. अनङ्गेनाबलासङ्गाज्जिता येन जगत्रयी।
स चित्रचरितः कामः सर्वकामप्रदोस्तु वः।।

— वृहत्कथामञ्जर्यां एकादशलम्बके क्षेमेन्द्रस्य

1234. अन्तर्बहिस्त्रिजगतीरसभावविद्वा-
न्यो नर्तयत्यखिलदेहभृतां कुलानि।
क्षेमं ददातु भगवान् परमादिदेवः
शृङ्गारनाटकमहाकविरात्मजन्मा।।

— सदुक्ति० भवानन्दस्य

1235. आम्रीमञ्जुलमञ्जरीवरशरः सत्किंशुकं यद्धनु-
र्ज्या यस्यालिकुलं कलङ्करहितं छत्रं सितांशु-सितम्।
मत्तेभो मलयानिलः परभृतो यद्वन्दिनो लोकजित्
सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसंन्तान्वितः।।

— ऋतुसंहारे कालिदासस्य

1236. आश्लिष्यमाणः प्रियया शङ्करोऽपि यदाज्ञया।
उत्कम्पते स भुवनं जयत्यसमसायकः।।

— कथास० तृतीये लम्बके सोमदेवभट्टस्य

1237. कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै कुसुमधन्वने।।

— सुभा० सुधा०

कामदेवः

1238. कान्ताकटाक्षवपुषे नमः कुसुमधन्वने।
जायते येन सच्छायो विरसोऽपि भवद्रुमः।।

— सुभा० सुधा०

1239. कामः कौसुमकार्मुकं करतले कृत्वाधिकं कामिनः
कान्ताकान्तकपोलमण्डलतले पत्रावली कर्मणि।
युञ्जानो विजया जगन्ति मदयन् रत्यानुयातोऽनिशम्
सौहार्दान्मधुमत्यजन् हि भवतां सौख्याय भूयाद् भुवि।।

— शृङ्गारहारावल्यां श्रीहर्षस्य

1240. कुलगुरुरबलानां केलिदीक्षाप्रदाने
परमसुहृदनङ्गो रोहिणीवल्लभस्य।
अपि कुसुमपृषत्कैर्देवदेवस्य जेता
जयति सुरतलीलानाटिकासूत्रधारः।।

— विद्धशालभञ्जिकायां राजशेखरस्य

1241. चापः क्षमाधरपतिः फणिनां पतिर्ज्या
बाणः पुराणपुरुषस्त्रिदशाः सहायाः।
ईशः पुरामिति पुरां तिसृणां विजेता
पुष्पायुधः पुनरयं त्रिजगद्विजेता।।

— सदुक्ति०भवानन्दस्य

1242. जयति स मदलेखोच्छृङ्खलप्रेमरामा-
ललितसुरतलीलादैवतं पुष्पचापः।
त्रिभुवनजयसिद्धौ यस्य शृङ्गारमूर्त्ते-
रुपकरणमपूर्वं माल्यमिन्दुर्मधुर्वा।।

— सदुक्ति० उत्पलराजस्य

1243. त्रिभुवनविजयि जनानामपि विजयीयुवतिनेत्रनाराचैः।
त्रिभुवनपरसुखहेतुर्विबुधनुतो रतिपतिर्ज्जयति।।

— विलासरत्नमालायां लक्ष्मीनारायणस्य

1244. धनुर्माला मौर्वी क्वणदलिकुलं लक्ष्यमबला-
मनो भेद्यं शब्दप्रभृतय इमे पञ्च विशिखाः।
इयाञ्जेतुं यस्य त्रिभुवनमदेहस्य विभवः
स कामः कामान्वो दिशतु दयितापाङ्गवसतिः।।

— सुभा० घण्टकस्य

1245. नमः कामाय यद्बाणपातैरिव निरन्तरम्।
भाति कण्टकितं शम्भोरप्युमालिङ्गितं वपुः।।

— कथास० पञ्चमे लम्बके सोमदेवभट्टस्य

1246. नितम्बालसगामिन्यः पीनोन्नतपयोधराः।
मन्मथाय नमस्तस्मै यस्यायतनमङ्गनाः।।

— सुभा० विटवृत्तस्य

1247. पुष्पसमुज्ज्वलाः कुरबका नदति परभृतः
कान्तमशोकपुष्पसहितं चलति किसलयम्।
चूतसुगन्धयश्च पवना भ्रमररुतवहाः
सम्मति काननेषु सधनुर्विचरति मदनः।।

— पद्मप्राभृतके शूद्रकस्य

1248. भ्रूलेखाधनुरानतं विचलितो लीलाकटाक्षः शरौ
हासस्तत्सितपुङ्खपक्षरचना मौर्वी च पक्षच्छविः।

क्रेङ्कारः कलपञ्चमाश्रयिवचो॰ यस्येत्थमासूत्र्यते
जैत्रं तन्त्रस्रनारतं युवतिभिः कामाय तस्मै नमः।।

— वृहत्कथामञ्जर्यां सप्तमलम्बके क्षेमेन्द्रस्य

1249. मनसि कुसुमवाणैरेककालं त्रिलोकीं
कुसुमधनुरनङ्गस्ताडयत्यस्पृशद्भिः।
इति विततविचित्राश्चर्यसङ्कल्पशिल्पो
जयति मनसिजन्मा जन्मिभिर्मानिताङ्गः।।

— सदुक्ति॰

1250. मलयपवनः क्षीबः कुम्भी क्षपाकरमण्डलं
भुवनविदितं श्वेतं छत्रं पिकाः परिचारिकाः।
विकचतरवो यस्योत्तुङ्गाः पटाः पटमण्डपा-
स्त्रिभुवनमहाधीशः कामो विभाति जगत्त्रये।।

— शृङ्गारशतके जनार्दनभट्टस्य

1251. यतः सर्वं विश्वं भजति जनिसत्तालयमिदं
य आत्मा सर्वेषां स्थिरचरजडानामपि विभुः।
तमेतं भास्वन्तं विधिहरिमहेशानुवपुषं
नमस्यामः कामं परमकमनीयं सुकृतिनाम्।।

— संस्कारमयूखे नीलकण्ठभट्टस्य

1252. याच्यो न कश्चन गुरुः प्रतिमा च कान्ता
पूजा विलोकननिगूहनचुम्बनानि।
आत्मा निवेद्यमितरव्रतसारजेत्रीं
वन्दामहे मकरकेतन देव दीक्षाम्।।

— सदुक्ति॰ वल्लनस्य

1253. येनाकारि प्रसभमचिरादर्द्धनारीश्वरत्वम्
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषां चाक्षुषेण।
इन्द्रोर्मित्रं स जयति मुदां धाम वामप्रचारो
देवः श्रीमान् भवरसंभुजां दैवतं चित्तजन्मा।।

— रतिरहस्ये कोकस्य

1254. वन्दे देवमनङ्गमेव रमणीनेत्रोत्पलच्छद्मना
पाशेनायतिशालिना सुनिविडं संयम्य लोकत्रयम्।
येनासावपि भस्मनाञ्जिततनुर्देवः कपाली बला-
त्प्रेमक्रुद्धनगात्मजाङ्घ्रिविनतिक्रीडाव्रते दीक्षितः।।

— ललितोकस्य

1255. शम्भु स्वयंभु हरयो हरिणेक्षणानां
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः।
वाचामगोचरचरित्रविचित्रताय
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय।।

— शृङ्गारशतके भर्त्तृहरेः

1256. स एष भुवनत्रयप्रथितसंयमः शङ्करो
बिभर्त्ति वक्षुषाऽधुना विरहकातरः कामिनीम्।
अनेन किल निर्जिता वयमिति प्रियायाः करं
करेण परिताडयन् जयति जातहासः स्मरः।।

— सूक्तिमु०

1257. स जयति संकल्पभावो रतिमुखशतपत्रचुम्बनभ्रमरः।
यस्यानुरक्तललनान्नयनान्तविलोकितं वसतिः।।

— कुट्टनीमते भट्टदामोदरस्य

1258. सम्पदमन्तरलभ्यामनन्यसामान्यबहलदर्पनिधेः।
पुष्णातु चित्तयोनेरघटितघटनापटीयसी विभुता।।

– पार्वतीपरिणये बाणभट्टस्य

1259. सुधासूतेर्बन्धुर्मधुसहचरः पञ्चमरुचि-
दिशँल्लीला बर्ह्वीः कुवलयदृशां नर्मणि गुरुः।
स देवः शृङ्गारी हृदयवसतिः पञ्चविशिखः
सदा स्वादून् कुर्वन्मधुमदविकारान् विजयते।।

– सदुक्ति० राजशेखरस्य

1260. सौन्दर्ये सकलोपमानमभवद्योऽसौ विनाप्यङ्गकम्
यद्बाणाः पतनं विनापि जगतां चित्तं हरन्ति क्षणात्।
यत्सैन्ये करिणां वज्रा विजयिनःशुण्डाशिरोभ्यां परे
स श्रीमान् रतिनायको वितरतां तुङ्गोदयं मङ्गलम्।।

– शृङ्गारजीवनभाणे वरदाचार्यस्य

अनिरुद्धः

1261. इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं
न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैव भगवान्।
उषाकर्णोत्तंसीकरणसुभगं नीलनलिनं
वहत्यद्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः।।

- सासबहू-देवालयाभिलेखे महीपालस्य

1262. मुक्ताशैलच्छलेन क्षितितलकयशोराशिना निर्मितोय-
न्देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति।
तन्वानः सर्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामतापह्नवं यः
शङ्के स्वं वर्णचिन्हं मुकुटतटमिदन्नीलकान्त्या विभर्त्ति।।

- सासबहू-देवालयाभिलेखे महीपालस्य

1263. हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोद्गीयमानं जनै-
र्मेदिन्यां विततन्ततो हरिं हरब्रह्मास्पदानि क्रमात्।
श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्रीपद्मभूभृद्यशः
पायादेष जगन्ति निर्मलवपुः श्वेतानिरुद्धश्चिरम् ॥

- सासबहू-देवालाभिलेखे महीपालस्य

द्विदेवौ

1264. अमन्दहृदयानन्दनिदानं शिवयोश्चिरम्
नमस्कुरुत हेरम्बं निष्प्रत्यूहफलाप्तये।
वल्लकीपुस्तककरां पुण्डरीकासनस्थिताम्
शारदां क्षीरकुन्देन्दुधवलां भावयेतराम् ॥

- परिभाषाप्रदीपार्च्याम्

1265. गजास्यमगजापुत्रं विघ्नाद्रिभिदुरं शिवम्।
नमामि वचसां देवीं मन्दारकुसुमप्रभाम् ॥

- वास्तुविद्यायाम्

1266. दत्तस्तन्यरसं कराग्रिमभुवा वक्रान्तरेष्वादरा-
द्दोर्विक्षेपनिषिद्धकुम्भविचरन्मत्तद्विरेफोत्करम्।
अम्बाया धयतोः पयोधरयुगं, तिर्यग्मिथः पश्यतो-
र्बाल्यस्नेहविजृम्भितं विजयते द्वैमातुरस्कन्दयोः॥

- अलंकारकौस्तुभे विश्वेश्वरपण्डितस्य

1267. प्रणताज्ञानसन्दोहध्वान्तध्वंसनकर्मठम्
नमामि तुरगग्रीवं हरिं सारस्वतप्रदम्।

यन्नामग्रहमात्रेण क्षीयन्ते विघ्नहेतवः
तमेकदन्तं वन्देऽहं वन्दकाभीष्टदायकम् ॥

- नयविवेकस्य व्याख्यायां नयदीपिकाख्यायां वरदराजस्य

1268. राजत्कुंजरराजकृत्तिविमलोद्दच्छदद्दुकूलावृत्ति-
भ्राजद्भोगिफणामणिप्रविलसन्मुक्तामणिग्रामणीः।
पादांभोजभुजंगफूत्कृतिरणन्मंजीरमंजुद्युति -
श्रेयो वः शिवशैलराजसुतयोर्दद्यादभिन्नं वपुः॥

- वाणीभूषणे दामोदरस्य

1269. वन्दे कुन्देन्दुधवलदन्तभिन्नान्तरायकम्
दानधारापतद्भृङ्गसंगीतं कुञ्जराननम् ।
श्रीमदभ्रसभामध्ये नित्यमानन्दताण्डवम्
कुर्वाणमुमया देव्या सेव्यमानं शिवं भजे॥

- उमापतिशिवाचार्यसंगृहीत - शृतरत्नसंग्रहस्य
टीकायां शतरत्नोल्लेखनी इत्याख्यायाम्

1270. वाग्देवीममरार्चिताह्निकमलामापीनतुङ्गस्तनीम्
वन्दे भक्तिविनम्रवाग्विभवदां निःशेषजाड्यापहाम् ।
हेरम्बं च शितैकदन्तमनिशं सद्बुद्धिविद्याप्रदम्
प्रध्वस्तामितविघ्नराजिमखिलाभीष्टार्थसत्सिद्धिदम् ॥

- अजितोदये जगजीवनभट्टस्य

1271. वाणीगणेशावमरेन्द्रमौलिमाणिक्यनीराजितपादपद्मौ।
अविघ्नमाविष्कृतभक्तलोकमनोरथावन्वहमानमामि॥

- कालादर्शे आदित्यसूरिणः

1272. विघ्नं निघ्नं तमखिलं भजे देवं गजाननम् ।
वन्दे कुन्देन्दुधवलां शारदां सारदायिनीम् ॥

- कोण्डकुर-अभिलेख

1273. शशिखण्डमण्डनयोः समोहनाशयोः सुरगणप्रिययोः।
गिरिशगिरीन्द्रसुतयोः संघटना वः सुखं ददातु॥

- कर्पूरमञ्जर्यां राजशेखरस्य

1274. श्रियं पुंनागसर्वाङ्गो नगनाथसुतासुतः
विनायकाङ्कादिपूज्यो ददातु स विनायकः।
कालिन्दीजलकालीयसर्पदर्पहरो हरिः
कादम्बिनीश्यामश्री कल्याणानि करोतु नः॥

- काव्यकलानिधौ कृष्णसुध्याः

1275. श्रीमान्मंगलमूर्तिराशुनिखिलान्विघ्नान्हरेद्विघ्नराट्
देवः सोऽपि महाबलो निखिलदः सिद्धिं क्रियादीप्सिताम् ।
सा चाम्बाऽखिललोकमङ्गलकरी गौरीविदध्याच्छिवं
श्रीगोकर्णविभूषणाश्चिरमभी क्रीडन्तु नश्चेतसि॥

- बोधायनीयब्रह्मकर्मसमुच्चये

1276. हेमादिगर्भविपुलैकपुरोपकण्ठ-
प्राकारभूतमहितावधिपर्वताग्रे।
विश्वं प्रबोधयितुमुज्वलितौ प्रदीपौ
देवाज्ञयेव जयतामिह पुष्पवंतौ॥

- अभिलेखे

1277. हेरम्बं जनकं वन्दे निघ्नवृन्दविनाशकम्।
सरस्वतीम्मातरं च प्रज्ञाप्रागल्भ्यदायिनीम् ॥

- गोविन्दव्यंकटेशकृत-दर्शपूर्णमाससरण्यां मातृकायां स्फुटश्लोकः

मिश्रदेवाः

1278. अगजाजानिमगजामब्धिजाजानिमब्धिजाम्।
वाणीं वाणीशमनिशं वारणास्यमहं भजे॥

- वराहनदीमाहात्म्ये

1279. आनन्दं वो गणेशार्कविष्णुगौरीमहेश्वराः।
देवाः कुर्युः श्रियं सौख्यमारोग्यं च गृहे सदा॥

- वास्तुशास्त्रराजवल्लभे सूत्रधारमण्डनस्य

1280. कल्याणं कमलासनः स भगवान् विष्णुः स जिष्णुः
श्रियं प्रालेयाद्रिसुतापतिः सतनयो ज्ञानं च निर्विघ्नताम्।
चंद्रज्ञास्फुजिदर्कभौमधिषणाछायासुतैरन्वितम्
ज्योतिश्चक्रमिदं सदैव भवतामायुः श्रियं यच्छतु॥

- जन्मपत्रलेखक्रमे दिवाकरसूनुविश्वनाथस्य

1281. कल्याणं कमलासनः सृजतु वः क्लेशव्ययं केशवो
गौरीशः खलु गौरवं गणपतिर्निःशेषविघ्नक्षयम्।
सर्वारातिविनाशमाशु ककुभामीशाः सुरेशादयः
कुर्वन्तु ध्रुवमाधिपत्यमधिकं सूर्यादयः खेचराः॥

- उना-अभिलेखे

1282. कालिन्दी कनकाम्बुजं कलशजं काश्मीरजं कौस्तुभम्
कोशं कोकिलकूजितं कुवलयं कौमोदकीकुङ्कुमम्।
कल्याणीकलहंसकूजितरवं कैलासशैलोद्भवम्
केयूरं कमलापतिः करिमुखः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥

- मङ्गलाष्टके शिशुकालिदासस्य

1283. गजास्यं सिन्दूरारुणितवदनं विघ्नदमनं
स्वकार्ये वृन्दारैर्नमितचरणं शीर्षकमलैः।
तथा देवीं वन्दे सकलसुखदात्रीं त्रिभुवने
द्युदीपं चक्रस्थं सकलदुरितौघार्दनमजम् ॥

- रमलचिन्तामणौ

1284. गौर्गोजनिर्गविगवांस्वगवाचितां वाष्ठ्याभिनंदयति योजनताः स्वगोदः।
गोपंत्रगोंपतिगवेन्द्रगवीश्वराणां पूज्यो गवांसभुगसौ ददतां श्रियं वः॥

- वाग्भूषणे

1285. चन्द्रार्धचूडचरणाब्जयुगं प्रणम्य
वागीश्वरीं गणपतिं क्रमशो गुरुँश्च।
लेशाद्यथामतियथागमयुक्तिगूढम्
श्रीमन्मृगेन्द्रपरमार्थमहं व्यनज्मि॥

- श्रीमृगेन्द्रतन्त्रे

1286. जयति जनमनिष्टादुद्धरन्ती भवानी
जयति निजविभूतिव्याप्तविश्वः पुरारिः।
जयति च गजवक्त्रस्सोत्र यस्य प्रसादा-
दुपरमतिं समस्तो विघ्नवर्गोपसर्गः॥

- दानपत्राभिलेखे सोमवर्मदेवस्य

1287. जयति भुवनकारणं स्वयम्भू-
र्जयति पुरन्दरनन्दनो मुरारिः।
जयति गिरिसुतानिरुद्धदेहो
दुरितभयापहरो हरश्च देवः॥

- नीलगुण्डाभिलेखे अमोघवर्षस्य

1288. जयति वरदमूर्तिर्मङ्गलम्मङ्गलानाम्
जयति सकलवन्द्याभारतीब्रह्मरूपा।
जयति भुवनमाता चिन्मयी मोक्षरूपा
दिशतु मम महेशो वाङ्मयः शब्दरूपम् ॥

- विश्वकर्माप्रकाशे

1289. जयति विबुधसंसन्मानसावासहंसी वचनमयशरीराभारतीहारगौरा।
तदनु च विजयन्ते सूर्यमुख्याग्रहेन्द्रास्तदपि च पदपद्मद्वन्द्वमस्मद्गुरूणाम् ॥

- होरामकरन्दे दैवज्ञगुणाकरस्य

1290. जयन्ति सन्तः कुशलं प्रजानां नमो मुनीन्द्राय सुराः स्मृताः स्थ।
स्मृतासि वाग्देवि दयस्व मातर्विधेहि विघ्नाधिप मङ्गलानि॥

- त्रिकाण्डशेषाभिधानकोशे पुरुषोत्तमदेवस्य

1291. दशास्योद्यदास्यच्छिदं जानकीशं कुलोपास्यमानस्य साष्टाङ्गपातम् ।
गणेशं च गण्डोल्लसद्भृङ्गसङ्गं हरोच्चाङ्गसङ्गांश्च गंगातरंगान् ॥

- कर्पूरमञ्जर्याष्टीकायां वासुदेवस्य

1292. नमामि सीतां जनकप्रसूतां नमामि रामं रघुवंशजातम् ।
नमामि श्रीमद्भरतादिबन्धून्नमामिवातात्मजमुग्ररूपम् ॥

- तिलकभास्करे हरिहरप्रसादस्य

1293. पद्मोल्लासकरं द्विजेश्वरभृतं गोपालकं निर्जरैः
संसेव्यं हरिसादरं मधुपरोत्कंठं गिरीशाश्रितम् ।
भक्त्या नौमि निरन्तरं मुरहरं लम्बोदरं शंकरं
वन्दे तिग्मकरं हरप्रियकरं तेजो जगत्सुन्दरं॥

- सुश्लोकलाघवे विट्ठलकवेः

1294. मङ्गलं दिशतु मे विनायको
मङ्गलं दिशतु मे सरस्वती।
मङ्गलं दिशतु मे महेश्वरो
मङ्गलं दिशतु मे महेश्वरी॥

- मानसोल्लासे विश्वरूपाचार्यस्य

1295. रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः॥

- मूलरामायणे

1296. रामः कामं निकामं वितरतु सततं धामधामासुनामा
देवश्चन्द्रार्धचूडो गजवदनयुतः कीर्त्तिकान्तिप्रदोस्तु।
श्रीदेवी वः सुखायाखिलजनजननीपार्वतीपावनी स्याद्
वाग्देवी वाक्प्रदास्तु द्युमणिरपिपरां सिद्धिमृद्धिं ददातु॥

- मिथ्याज्ञानखण्डने रविदासस्य

1297. वन्दे ब्रह्माणमायुष्करममृतकरं दक्षदस्त्रेन्द्रमूर्तिं
विष्णुं पापापनोदस्थिरमतिमगदाचार्यवर्यर्षिरूपम्।
शम्भुं संसाररोगप्रशमनसुखदं जीवसंजीविनीड्यं
मायामोहान्धकारप्रहरणकिरणं ज्ञानसूर्यं परेशम्॥

- जीवसंजीवनीनाटके वेंकटरमणार्यस्य

1298. वन्दे श्रीगणनायकं सुरगुरुं सर्वार्थसिद्धिप्रदम्
भक्तानां सुखदायकं गजमुखं सिन्दूरशोभाकरम्।
ब्रह्माविष्णुशिवार्कमुख्यखचरान्श्रीशारदां शैलजां
लक्ष्मीपद्मनिवासिनीं निजगुरून् कार्यस्य संसिद्धये॥

- संस्कारगणपत्याम् रामकृष्णस्य

1299. शिवं हरिं विधातारं तत्पत्नीस्तत्सुतान्गुरून् ।
नत्वा समस्तप्रत्यूहशान्तये मङ्गलाय च॥

- योगरत्नाकरे

1300. श्यामश्वेतारुणांगाजलधरणिधरोत्फुल्लपंकेरुहस्था-
मोमासावित्र्युपेतारथचरणपिनाकोग्रहुंकारशस्त्राः।
देवा द्वित्र्यष्ट नेत्राजगदवनसमुच्छेदनोत्पत्तिदक्षाः
प्रीता वः पान्तु नित्यं हरिहरविधयस्ताक्ष्यर्गोहंसपत्राः॥

- श्रीरामकल्पद्रुमे

1301. श्रीगुरुं गणपं दुर्गां बदुकं शिवमच्युतं
ब्रह्माणं गिरिजां लक्ष्मीं वाणीं वन्दे विभूतये।
त्वत्प्रसादान्महादेव ज्ञातागुह्यागमा मया
त्वत्तः सर्वागमज्ञानं जातं मे परमेश्वरम्॥

- गणपतिकल्पे

1302. श्रीमद्दिव्यनटेशकुञ्चितपदाम्भोजं परं मङ्गलम्
श्रीगोविन्दपदाम्बुजं च भजतां क्षेमङ्करं सर्वदा।
श्रीमच्छङ्करदेशिकेन्द्रचरणौ ज्ञानप्रदौ प्राणिना-
मद्वैतात्मविनिश्चयाय च भजे दुर्न्यायभंगाय च॥

- न्यायेन्दुशेखरे हरिहरशास्त्रिणः

1303. श्रीमान् यः पृथुनागजालंकयुजा देहेन विद्योतते-
ऽत्याहुर्यं जनतापहारकमहो यो दानवार्याश्रयः।
सत्कारुण्यकविग्रहोदितसदा मोक्षस्थयोगोहितो
हेरम्बः स हरो हरिश्च हरतात् कालात्त्रिलोकीभयम् ॥

- शब्दचित्रावल्यां योगदेवमालवीयस्य

1304. श्रीविघ्ननाशममृतं करुणासमुद्रं
लक्ष्मीपतिं शिवमुमां विधुचित्रभानुम् ।

वाणीं ग्रहान्मुनिगुरून् पितरौ प्रणम्य
तिथ्यादि भास्करमहं प्रतनोमि सिद्ध्यै।।

- तिथिभास्करे रघुनाथदैवज्ञस्य

1305. श्रीशङ्करं मौलिसुधाकरं गुरुं शुभां भवार्धांगभवां भवानीम्।
विघ्नानदन्तं वरदैकदं तं वन्दे विधिं वेदनिधिं सरस्वतीम् ।।

- तोषणीसारसंग्रहे

1306. हरिरिहमुखमेकं वक्त्रयुग्मं हुताश-
स्त्रयमपि वदनानां संविधत्ते गणेशः।
विधिरपि वदनानां संदधानश्चतुष्कम्
जयजयवदनानां पंचकं विभ्रदीशः।।

- अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

Abbreviations

(Used in notes)

AL	Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Adyar Library, Adyar, Madras.
ALRC	Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in Adyar Library and recearch centre, Adyar, Madras.
AS	Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in the collection of the Asiatic Society, Calcutta.
ASI	Archaeological Survey of India
BORS	Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in Bihar and Orissa Research Society Patna.
Catal	Catalogue.
E. I.	Epigraphia Indica
GNJ	Ganga Nath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha, Allahabad.
GOML	Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Govt. Oriental Manuscript Library, Madras.
GVL	Govt. Vir Library Nepal.
I H Q	Indian Historical Quarterly
Ins.	Inscription
JAHRS	Journal of Andhra Historical Research Society
JBORS	Journal of Bihar and Orissa Research Society.
MPL	Descriptive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in H. H. The Maharajaha's Palace Library Trivandrum.
Ms.	Manuscript
OHRJ	Orissa Historical Research Journal, Bhuvaneswar
RASB	Descriptive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in the Royal Asiatic Society of Bengal, Calcutta.
SA	Subhasitavali of Vallabhadeva edited by Peter Peterson Poona 1961.
San.	Sanskrit.
SC	Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in Sanskrit Collage Calcutta.

SK	Sadukti-Karnamrita of Sridhardasa edited by Sures Chandra Benerji Callcutta-1965.
SMA	Suktimuktavali of Bhagadatta Jallhana edited by Embar Krishnamacharya Baroda - 1938.
SML	Descriptive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in the Tanjore Maharaja Sarfoji's Saraswati Mahal Library, Tanjore, Srirangam.
SP	Sarangadhar Paddhti Compiled by Sarangadhar edited by Peter Peterson Delhi, 1987.
SR	Suktiratnakar.
SRH	Suktiratnahara edited by K. Sambasiva Sastri Trivandrum - 1938.
SS	Subhasita - Sudhanidhi of Sayana Edited by K. Krishnamoorthy Dharwar - 1968.
SSRB	Subhashitasudha - Ratna - Bhandagaram Compiled and edited by Shivadatta Kaviratna Bombay.

NOTES

Verse No.

1. *Vide* Catal. of GOML Madras Vol. II, Part I San C, Ms 1939.
3. In GNJ Ms. 23461.
4. Also in SSRB 1.9.
5. From SSRB 1.23.
6. In GNJ Ms. 39622.
8. From SSRB. 2.16.
9. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, San. A Ms. 2203.
10. In GNJ Ms. 30113.
11. In GNJ Ms. 27/745.
12. In GNJ Ms. 29198.
14. In GNJ Ms. 11801. This Ms. also called as नाममाला
16. From SSRB 1.11.
17. In GNJ Ms. 3091.
20. From SSRB 1.12.
24. From SSRB 2.13.
25. In GNJ Ms 25936. Ms drops the letter व In ष्विव. भाति is read as धाति.
26. In GNJ Ms 24123.
27. In GNJ Ms 718.
28. In GNJ Ms 8426. Also occurs in GNJ Ms 8736. *v.l.* सुपर for व्ययपर, शिवम् for शुभम्.
30. GNJ Ms 30016, with commentary 'चन्द्रिका' of भावा गणेश. The Ms mentions the father's name of कृष्णमिश्र as भावा विश्वनाथ दीक्षित. Also in SSRB 2.20
31. In GNJ Ms 4657.
32. In GNJ Ms 194.
34. In GNJ Ms 3103.

35. In GNJ Ms 19010.

40. In GNJ Ms 28562.

42. From SSRB 2.19.

44. In GNJ Ms 2775.

46. In GNJ Ms 718.

47. From SSRB 2.21.

48. In GNJ Ms. 13902.

49. From SSRB 2.14.

50. From SSRB 2.24.

51. In GNJ Ms 17280.

53. In GNJ Ms 15037.

54. From SSRB 2.22.

56. From SSRB 2.25.

58. In GNJ Ms 194.

60. From SSRB 2.17.

61. From Sk.2. Also in SMA 2.108, *v.l.* कैटभ प्रमथने for कालनेमिदलने, स्ववासोन्मथनो for आवासोन्मथनो, तत्क्षणात् for संभ्रमात्, वाग्वृत्तयः पान्तु for वाचः प्रसीदन्तु।

62. In GNJ Ms 39463.

64. In GNJ Ms 19024.

65. From SK.5. Also in SMA 2.105 *v.l.* यत् for यः, तत् for स, वचो बाल्याच्छिशौ for मुहुर्वार्णी गुहे, पाणि for हस्त, चतुराननस्य वदनावृत्तिं for चतुरास्य ... वृत्तिः।

66. From SP 85. Also in SSRB 28.1, *v.l.* यः for यं, निषेव्यते for निषेवने। Also in SMA. 1.44, *v.l.* अभिषिच्यते for निषेवते।

68. From SK.3.,

69. From SMA. 1.45.

70. From SK.4.

72. From SK.1

73. Pithapurám Ins. of Prithvisvara, 1186 AD, *Vide* E.I. IV, P. 39f.

74. In GNJ Ms 26955.

75. From Peshawar Museum Ins. of Vanhadaka, *Vide* E.I. X, P. 80 F. 1461 AD. घृष्ट is emended from the original reading दुष्ट.

78. *Vide* Catal. of BORS, Patna, Vo. III, R.No. 344. Also GNJ Ms 1205/11151, *v.l.* कृ

for ह, सद्यो for संघा।

79. *Vide* catal of GOML Madras, Vol. III, Part I, Sans. A., R.No. 2156(a.)

81. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. XXVI, R.No. 14911.

82. From Copper-plate grant fromBehar, 1324 AD. *Vide* E.I. XXXV, P, 142.

83. In GNJ Ms 36891.

84. From SSRB 24.20. Also in GNJ MS 39/710.

85. From Ins. of Brahman ruler of Gaya *Vide* E.I. XXXVI, PP. 84-85.

86. *Vide* catal. of MPL, Trivandrum, Vol. I.R.No. 143

87. Nagpur Stone Ins. 1104 AD, *Vide* in Ep. Ind. Vol. II, P. 182 F. ता अमी is emended from the original reading तोप्यमी.

88. In GNJ Ms 14192.

90. From SSRB 24.12.

92. From Ins. of the Vaillabhattasvamin temple at Gwalior, *Vide.* E.I. I P. 156 कालिन्द्या is emended from the original reading कालन्द्या : and पूष्णो from पुष्णो.

93. In GNJ Ms 19099.

95. In GNJ Ms 36710

96. *Vide* Catal. of GoML, Madras, Vol. II, Part I, Sans C, R.No. 1466.

98. *Vide* Catal. of RASB, Cal. Vo. X, Part I. R.No. 7095.

99. From Kanyakumari Ins. of Vira Rajendradeva, 11th cen. AD, *Vide* E.I. XVIII, pp. 31-32 ff. यस्मदस्तं is emended from the original reading यस्समस्तं.

100. In GNJ Ms 19502.

103. From Eran Stone Ins. of Budhagupta, *Vide* C.I.I. Vol. III, p. 89. रराण is emended from the original reading व्यत्यादि।

104. From SMA 1.29.

105. From Nelkunda Grant of Chalukya Abhinavaditya, *Vide* E.I. XXXII, p. 215.

108. From Bahur Plates of Nripatunga Varman *Vide* E.I. XVIII, p. 9 लय is Emended from the original reading णम।

109. From Sanskrit and old canarose Ins. 1253 AD, *Vide* I.A. Vol. IV, P. 275.

110. In GNJ Ms 30009.

112. In GNJ Ms 19453. Also in SS 3.11, *v.l.* कायक्लेशाः for क्लेशाः पञ्च; कोशो for ईशो. Also in सूक्तिरत्नहार 2.5

113. From SS 3.10

NOTES

114. In GNJ Ms 2877. विष्णवीश is emended from the original reading विष्णुमीश्व

115. In GNJ Ms 20688

117. From SSRB. 26.43

118. Also in SSRB 25.32 Also in catal. of GOML Madras, Vol. XVIII, R. No. 10354 विष्णुस्तोत्रम्, *v.l.* भवच्च for वसच्च, गीर्ण for गीत, सोच्छ्वास-प्रणय for सोत्प्रासप्रणयं.

119. In GNJ Ms 25942.

120. From Purushottampuri Plates of Ramchandra 1310 AD, *Vide* E.I. XXV, P. 209.

121. In GNJ Ms 34804. Also in SSRB 25.33

122. In GNJ Ms 17297.

123. In GNJ Ms 36710.

125. Also in GNJ Ms 33247 योगशास्त्रम्, *v.l.* गुणेषु for गुहासु.

126. In GNJ Ms 10960.

128. In GNJ Ms 28157.

129. From SK 295. Also in SP 113. *v.l.* मण्डप for नगर, author's name not mentioned.

130. In GNJ Ms 12705.

133. From SK. 1.

135. From SMA 2.62. Also in SSRB 26.40, *v.l.* जृम्भितैः for जृम्भणैः.

136. From Raghudevapur Grant of Raghudeva, 1456 AD, *Vide* JAHRS Vol. XXIII, pp. 11-12 ff.

138. From SMA 2.64. Also in SSRB 25.34, *v.l.* लावण्यैक for लावण्यस्य Also in SA 43 *v.l.* हरणं for शमनम्

139. From the Pallava Ins. of the seven Pagodas, *Vide* E.I. X, P. 8.

140. From SA. 35.

142. From SA. 84.

143. In GNJ Ms 5019.

145. In GNJ Ms 21809.

146. From Benaras copper Plates Ins. of Karnadeva, 1042, AD, *Vide* E.I. II, p. 305.

147. From A Kalachuri stone Ins. from Kasia, 11th or 12th cen. AD, *Vide* Ep. Ind. Vol. XVIII, pp. 130-131 ff.

148. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. IV. R.No. 2342.

149. Ins. from Nepal, 1723 AD, *Vide* I.A. Vol. IX, p. 192 f.

NOTES

150. Ins. of 8th Cen. AD.

152. From Jodhpur Ins of Pratihara Bauka, *Vide*. E.I. XVIII, p. 95.

153. In GNJ Ms 3587.

154. *Vide* catal. of MPL Trivendrum, Vol. I. R.No. 147.

155. In GNJ Ms 1223.

156. In GNJ Ms 42210.

159. from SMA 2.104. Also in SK 163 and SA 44.

160. from SSRB 25.30.

161. In GNJ Ms 18845.

162. *Vide* Catal. of AL, Adyar, Vol. VI, R. No. 720.

164. From Silimpur Ins of the time of Jayapaladeva, 11th Cen AD, *Vide* E.I. XIII, p. 290.

165. Bhatela copper plate Ins. of Govinda Keshavadeva, 1049 AD, *Vide* E.I. XIX pp. 279-280.

166. From Suktiratnahar. 3.2.

167. From SSRB 24.11.

168. From SMA 2.65.

169. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, Sans A. R.No. 5360.

170. In GNJ Ms 19462.

173. In GNJ Ms 351.

175. यन्मुख is emended from the original reading यान्मुखं and पादपद्मे is emended from the original reading मत्पादाब्जे.

176. From SMA 2.33. Also in GNJ Ms 34804, *v.l.* पथैक for पदैक, पुरःशिल्पी for पुरीशिल्पी, किमधिकरणा for किमिह करणं। Also in SSRB 24.23 with v.l. पथैक and पुरः for पदैक and पुरी.

177. *Vide* Catal. of MPL Trivendrum, Vol. III, R.NO. 643.

179. In GNJ Ms 33996.

180. Also in SSRB 24.16.

181. From Masulipatam Plates of Ammaraja II, 10th cen AD, *Vide* E.I. XXIV p. 274. त्रिलोक is emended from the original reading विलोकः

183. Also in GNJ Ms 18267, *v.l.* दिशतु घन for दिशतु धनधनाभः, मध्य for मध्ये.

184. In GNJ Ms 39209, Also in SS 1.

185. Ins. from Gwalior, *Vide* The Archaeological Survey of India, a Annual report for

the year 1903-1904 p. 280.

186. from Mandkila Tal Ins, 987 AD. *Vide* E.I. XXXIV.

188. In GNJ Ms 45155.

189. Also in SSRB 24.14.

190. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I. Sans A, R.No. 2192.

193. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, Sans A, R.No 2219.

194. In GNJ Ms 21812.

195. In GNJ Ms 19013.

196. In GNJ Ms 25404.

198. In GNJ Ms 31499.

199. from Mera Visnu Temple Ins. of Haridharman, 1175, *Vide* JBRS, Vol. LII, p. 63.

200. Ins. from Kama or Kamadeva 10th cen. AD, *Vide* I.A. Vol. X, p. 34.

204. In GNJ Ms 18923.

205. In GNJ Ms 26372.

206. from Anbil Plates of Sundara Chola, 10th cen AD, *Vide* E.I. XV, pp. 58-59. मखव्या is emended from the original reading मघव्या.

209. *Vide* catal. of GOML, Vol. I, Part I, R.No. 479.

210. In GNJ Ms 18845.

211. from SSRB 25.28.

214. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, R. No. 4306.

215. from SMA 2.30. Also in SSRB 23.5, it writes मुहुलक्ष्म्याः. Also in SP 76.

216. In GNJ Ms 36699.

218. In GNJ Ms 36711.

219. from Ajmer Stone Ins. 12th Cen. AD. *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182 ff.

220. In GNJ Ms 42197.

222. from Mangalgiri Pillar Ins. of Krisnadevaraya, 1516 AD, *Vide*. E.I. IX p. 308.

223. In GNJ Ms 28315.

224. from SSRB 24.22.

225. In GNJ Ms 30544.

226. In GNJ Ms 3575.

229. from Srirangam Plates of Devaraya II, 1434 AD, *Vide* E.P. Ind. Vol. XVIII, p. 140 f.

232. from Two Bhubaneswar Ins. 1200 AD *Vide* E.I. VI, p. 205.

233. Ins of 14th cen. AD. *Vide* JAHRS Vol. XI, Pts. 3 &4 pp. 202 & 204. चक्रं and यस्सुरमौलि are emended from the original reading चक्र and यस्सुरगौलिं.

234. Also in SSRB 25.35, Also in SS 4.96. *v.l.* कालेष्व for भालेष्व, भवन्ति for लिखन्ति.

235. *Vide* Catal. of GOML Madras Vol. I Part III, R. No. 509.

236. From Chittur Plates of Kulottunga Chodadeva II 1134 AD, *Vide* IA Vol. XIV, p. 56.

237. In GNJ MS 49351.

238. from SSRB 2413.

239. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. I. No. 232. व्रीडित in emended from the origional reading व्रातित.

240. from Sanskrit Ins. of Gujarat Kings 1354 AD, *Vide* IA Vol. XI p. 102 f.

242. A Sanskkrit Grant and Ins of W. Chalukya Dynasty, 1050 AD, *Vide* IA Vol. XII, p. 201 f.

243. In GNJ Ms 38100. Also in GNJ Ms 15349, आचारादर्श of श्रीदत्तोपाध्याय.

244. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I, Part I, Sans I, R. No. 37.

245. from SMA 2.32. Also in SSRB 25.26, v.l. उल्लसन् for उल्लपन्.

246. from SK 276.

248. In GNJ Ms 13839.

250. In GNJ Ms 7574. तत्त्वम् is emended from the Ms reading ततः.

252. from SSRB 24.18.

253. from SK. 323.

254. from SMA 2. 63. Also in SK. 325, v.l. भुवः for भूवा.

255. from An Ins of the time of Allata of Mewar, 951 AD, *Vide* I.A. Vol. LVIII, p. 162.

256. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, R.No. 5162. Also in same catal. Vol. III, part I, Sans. A,R. No. 2208 v.l. रुहाक्षम् for रहस्थम् and सुरमणिं प्रणतोऽस्मि विष्णुम् for प्रणतकल्पतरुं भजामः।

259. *Vide* catal. of SML, Tanjore, Vol. VIII, R.No. 4313.

261. from SS 4.38.

264. *Vide* catal of GOML Madras Vol. II, part, I, Sans C, R. No. 1854.

265. In GNJ Ms 23793.

266. *Vide* catal of GOML Madras Vol. IX, R. No. 4686. Also in SSRB, 7.29.

267. from Sobharampur Plates of Damodaradeva 1236 AD, *Vide* E.I. XXX, pp. 186-187.

268. from SA 29.

NOTES

269. In GNJ Ms 13881.
270. Also in SS. 430 *v.l.* 4.3 युष्माकं for अस्माकं।
271. *Vide* catal. of GOML Vol. III, Part I. Sans. B, R. No. 2394.
272. from SMA 2.39. Also in SSRB 24.24.
273. from the Larger Leiden Plates of Rajaraja I, *Vide* E.I. XXII, p. 238.
274. from Anbil Plates of Sundara-Chola 10th cen AD, *Vide* E.I. XV, pp. 58-59.
275. *Vide* catal. GOML Madras, Vol. IV R.No. 3213.
276. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. II.
278. *Vide* catal. of RASB, Vol. X, part I, Cal. R.No. 6891.
279. from SMA 1.28.
280. from Udayapur Ins. of Aparajita 660 AD, *Vide* E.I. IV, p. 31.
281. In GNJ Ms 45908.
283. from Garavapadu Grant of Ganapatideva, 1260 AD, *Vide* EP. Ind. Vol. XVII p. 349-350 ff. सौदा is emended from the original reading सीदा
284. *Vide* Catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, Sans A, R. No. 5204.
286. Also in SSRB 24.15.
287. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. X, R. No. 4962.
288. In GNJ Ms 27322.
289. In GNJ Ms 39809.
290. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. IV, R. No. 3307.
291. In GNJ Ms 35241.
292. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, Sans A. R. No. 2128.
293. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, Sans A, R. No. 2152.
295. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, Sans A, R. No. 2268.
296. *Vide* catal. of SML, Tanjore Vol. VIII, R. No. 4369.
297. *Vide* catal. of AS, Cal. Vol. XI, R. No. 8693.
298. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, Sans R. No. 5239.
299. In GNJ Ms 15333.
300. In GNJ Ms 36674.
302. from SSRB 24.19.
303. from Deoli Plates of Krisna III 940 AD, *Vide* E.I. V, p. 192.
304. In GNJ MS 48447.

NOTES

305. *Vide* catal of GOML Madras Vol. V, Part I, R. No. 4210.

306. In GNJ Ms 20976.

307. from Andura Plates of Govind IV of Saka 851, *Vide* E.I. XXXVI, p. 267.

309. In GNJ Ms 1966

310. In GNJ Ms 16701

314. In GNJ MS 36892

315. Vide Catal. of GOML, Madras vol III Part I Sans C.R.No. 1796.

319. In GNJ Ms 31495.

320. from SK. 164.

322. from SK. 169.

323. from SK. 170.

324. from SK. 162.

325. In GNJ Ms 44370.

327. from Ins of 987 AD, *Vide* E.I. XXXIV, p. 81.

328. In GNJ Ms 12252.

329. In GNJ Ms 20317.

330. from SK. 165.

331. from SK. 161.

333. from SK. 167.

334. In GNJ Ms 28306.

335. from SK. 166.

336. from SMA 2.103. Also in SP 110 with *v.l.* मम्भोधिपुत्र्या for मब्धेर्दुहित्रा। Also in SK 168 with *v.l.* भवान्याः for गिरिसुतायाः। SK attributes it to योगेश्वरः।

337. In GNJ Ms 25513.

338. from SS 4.58.

339. In GNJ Ms 29421. Also in GNJ Ms 27322 नृसिंहचम्पूकाव्य of केशव, *v.l.* सुकारी for सुखरासिः, नृसिंहः for मुकुन्दः, मङ्गलं नस्तनोतु for मङ्गलंस्तनोतु। Also in GNJ Ms 28492 the same work, v.l. लोल्लासि for लोद्धासि, सुखकारी for सुखरासिः, शेषधारी for शेषशायी, पालि for परि।

340. from Grant of Vikramaditya II *Vide.* I.A. Vol. XIII, p. 7. ff. इवाञ्जनाद्रि is emended from the original reading इवाज्ञानाद्रि।

341. from Ajmer stone Ins. 12th Cen. AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182 ff.

342. from Gorakhpur copper plate grant of Jayaditya of Vijaypur, 10th Cen. AD, *Vide* I.A. Vol. XXI, p. 170 f.

345. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, R. No. 5195.

346. Prasasti from the regin of MahendraPala of Kanauj.

348. from SA. 60, Also in SSRB 26.50.

349. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, Part I, R. No. 5224.

352. from SSRB 29.3.

354. from SSRB 29.2.

356. from SSRB 29.4.

357. from SSRB 29.5.

358. from Methi Ins of Yadava Krishna, 1254 AD, *Vide* E.I. XXVIII, pp. 318-319. Also in SA. 83.

359. *Vide* catal of MPL, Trivendrum, Vol. III, R. No. 657.

360. Mandsore Ins of the time of Narvarman, *Vide* E.I. XII, p. 320.

361. Raghudevapur Grant of Raghudeva, 1456 AD, *Vide* JAHRS Vol. XXIII, pp. 11-12 ff.

362. In GNJ Ms 28157. Also in दूताङ्गदम् of सुभट, *v.l.* पूर्णचन्द्र for राजहंस काञ्च्यो for नीव्यो। Also in SA 48 with *v.l.* करतलाम्बरपूर्णचन्द्रः for कुमुदकुन्दमृणालगौरः and काञ्च्यो for नीव्यो.

363. From SA 47.

365. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I, Sans C., R. No. 1679.

366. From SMA 2.66.

367. Circa Ins. 12th Cen. AD. *Vide* E.I. XXIX pp. 180-182 f.

368. from SSRB 30.9.

369. from SMA 2.34. Also in SSRB 29.3 *v.l.* तलं for तलाः। यैर्व्यावृत्य for यैरुत्पत्य.

370. from SSRB 29.6.

371. SSRB 30.11.

372. SSRB 29.4, Also in SP. 123 *v.l.* विष्वग्वार्धि for क्षुभ्यद्वर्धि.

373. from SK. 182.

375. from SK. 184.

376. SSRB 30.8.

377. from SK. 183.

378. SSRB. 29.1

379. Ins of 1287 AD, *Vide* E.I. XXVIII, pp. 100-102.

380. from SK. 185.

381. from SK. 181.

382. SSRB 29.5. ,

383. SSRB 30.10.

384. SSRB 29.2, Also in SP 82. पृषतलवशून्यो for पृथुललवदुःस्थो अभूद्भास्वाननौ for निधिभासिमौर्वो

386. SSRB 29.7.

388. from SK. 190.

389 from SK. 187.

391. SSRB 30.5

392. SSRB 30.2.

393. SSRB 30.1.

394. from SP. 124. Also in SSRB 30.3 *v.l.* चरित for चलित and कल्प is added.

395. from SK. 188.

396. from SK. 189.

397. from SK. 186. Also in SSRB 30.4, *v.l.* कण्डूयनै· for कण्डूयनात्, मतन्द्रितं for मयन्त्रितं। also in SMA 2.36. Also in SA 36 *v.l.* निभे for च्छले, तन्द्रितं for यन्त्रितं.

398. from SMA 2.68.

399. from SMA 2.67.

400. Ins. of the 12th Cen. AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182.

401. from SSRB 30.6.

402. Ins of 1287 AD, *Vide* E.I. XXVIII, pp. 100-102 f.

403. Grant of Vaidyadeva of Kamarupa 12th Cen. AD., *Vide* E.I. II p. 350.

404. Prolavaram Grant of Kapaya Nayanka 1346 AD, *Vide* JBORS Vol. XX, p. 271.

405. Mangalgiri Pillar Ins of Krishnadeva, 1516 AD, *Vide* E.I. VI, p. 117.

406. Vanapalli Plates of Anna-vema, 1380 AD, *Vide* E.I. III, p. 60.

407. Srirangam Plates of Mallikarjuna, 1462 AD, *Vide* E.I. XVI, pp. 347-348.

408. SSRB 31.8.

409. Pentapadu grant of Choda Bhaktiraja, 1343 AD, *Vide* E.I. XXXIII, p. 226.

411. Alampundi Plate of Virupasha, 1383 AD, *Vide* E.I. III, pp. 226-227.

412. Soraikkavur Plates of Virupaksha, 1383 AD, *Vide* E.I. III, pp. 226-227.

413. Mangalagiri Pillar Ins. of Krishnadevaraya. 1516 AD, *Vide* E.I. VI, p. 117.

415 Ins of the Reddis of Kondavidu, 1410 AD, *Vide* E.I. XI, pp. 319-320.

416. Kakatiya Ins from Manthani, 1199 AD, *Vide* E.I. V, p. 183 विरासीत् is emended from the original reading शीत.

417. Yenamadala Ins. of Ganapati, 1249 AD., *Vide* E.I. III, pp. 96-97.

418. Ajayagadh Stone Ins of Nana. 1287 AD. *Vide* E.I. XXVIII, pp. 100-102 f.

420. Chebrolu Ins. of Jaya 1213 AD, *Vide* E.I. V, pp. 143-144.

419. from SK. 194.

421. Eron Stone Boar Ins of. Taramana, 5th Cen. AD. *Vide* CII Vol. III, p. 159.

422. Kandukur stone Ins. 1398 AD. *Vide* in the Ins. of Guntur district Vol. II, p. 554.

423. Lohaner Plate of Chalukya Pulakesin II, 630 AD, *Vide* E.I. XXVII, p. 39.

424. Copper Grant of Chalukya Vijayaditya *Vide* E.I. XXVI, p. 323.

425. SSRB 31.7.

426. Kondukur Ins. 14th Cen. AD. *Vide* Inscriptions in the Nellore district Vol. II, p. 548 ff.

427. Motupalli Pillar Ins of. Ganapatideva. 1244 AD, *Vide* E.I. XII, pp. 190-191. Vr. 4.

428. from SK. 191.

429. from SMA 2.35. Also in SSRB भया for वशा, मादत्तेऽप्यु for मन्विष्यत्यु, भयतःfor चकितः, सघृणो for भयतो, घर्घ for घुर्घु, महाक्रोडः पायादिति सकल for वराहो माहात्मया .....जयति, मुखः for वपुः।

430. from SS. 3.12. Also in SA 7.

431. Assam Plates of Vallabhadeva, 1185 AD, *Vide* E.I. V, p. 183.

432. Dharwar Plates of the time of Simhana, 1247 AD, *Vide.* EI. XXXIV, pp. 38-39. Also in SSRB 31.5 रोलम्वति is emended from the original reading लोलम्बति। Also in SMA. 2.73

433. SSRB 30.3.

434. from SA 30.

435. SSRB 31.6. Also in SK 192 by नग्नस्य, *v.l.* अस्ति for पातु, सर्व for नः स।

436. A copper-plate of the Yadava King Krishna, 1249 AD, *Vide* I.A. Vol. XIV, p. 69.

437. Koduru Grant of Ana-Vota-Reddi, 1358 AD, *Vide* E.I. XXV, pp. 142-143.

438. Devulapalli Plates of Immadi Narasimha 1504 AD, *Vide* E.I. VIII, p. 80 f.

439. Velicherla grant of Prataprudra Gajapati, 1511 AD, *Vide* E.I. JAHRS Vol. XI, pts 1 & 2, p. 55.

440. Vilasa grant of Prolaya Nayaka, 14th cen. AD, *Vide* E.I. XXXII pp. 259-260, ff. Vr. 2.

441. Thana Plates of Ramchandra, 1272 Ad, *Vide* E.I. XIII, p. 200f. Vr. 2.

442. from SMA 2.72. Also in SSRB 31.9, *v.l.* भगवान् for भवतां, नाल for तन्तु

443. In GNJ Ms 36782.

444. The Garavapadu Grant of Ganapatideva 1260 AD, *Vide* E.I. XVIII, pp. 349-350 f. Vr. 2.

445. SSRB 31.11.

447. Bhoj Grant of Kartavirya IV, 1208 AD, *Vide* I.A. Vol. XIX, p. 245.

448. Chirava Ins. of Samarasimha, 1273 AD *Vide* E.I. XXII, p. 288 f. Vr. 10. Also in SMA 2.71 and SSRB 31.10 *v.l.* यस्यिति for यसति; ङ्गरस्थेयसी for ग्रसंसर्गिणी, (SSRB क्रमात्) किल for भृशम्, ज्वलत् for मुहुः। (SSRB श्वासानिलाः for श्वासोर्मयः)।

449. Also in SA 54.

450. Arulala-Perumal Ins of Prataparudra 1316 AD, *Vide* E.I. VII, p. 130.

451. Ins. of the time of Kumargiri and Katya Vema of Rajahmundry 14th cen. AD. *Vide* JAHRS Vol. XI, pts. 3 & 4, pp. 202 and 204. यस्मिन्नुद्, ध्वनिः फणामणि and पतिः are the emendments from the original readings यस्मिन्मुद्, ध्वनी, फणेभि and पतेः।

452. from सूक्तिरत्नहार 3.1.

453. from S K 195.

454. Asankhali Plates of Narasimhadeva II, 1303 AD, *Vide* E.I. XXXI, p. 115.

455. Konkuduru Plates of Allaya-dodda. 1430 AD, *Vide* E.I. V, p. 57.

456. from SMA 2.74. Also in SSRB 31.12, *v.l.* नष्टे for याते, नः for वः Also in SA 57 with *v.l.* युक्ते for मुक्ते, मृग्यतः for मार्गतः and कलितविषयं for विकलविभवम्।

457. Fragmentary Ins. from Ardhapur 12th ot 13th cen. AD. *Vide* E.I. XXXV, p. 170 ff.

458. Kandukur Ins. 1407 AD *Vide* The Ins. in the Nellore district, Vol. II, pp. 508-509.

459. *Vide* catal. of GOML, Vol. III, Madras, R.No. 4213.

460. Tottaramudi Plates of Kataya-Vema, 1411 AD, E.I. IV, pp. 321-322.

461. In GNJ Ms 36782.

462. Ganapesvaram Ins. of Ganapati 1231 AD, *Vide* E.I. III, p. 84.

463. Pachchaani-Tondiparru Grant of Anna-Vema, 1336 AD, *Vide* E.I. XXI, p. 273.

464. Annavarappadu Plates of Kataya Vema Reddi, 1403 AD, *Vide* E.I. XXXVI, p. 181.

465. Madras Museum Plates of Vema, 1345 AD, *Vide* E.I. VIII, p. 13.

466. Kanigiri Stone Ins. 1416 AD, *Vide* The Ins. in the Nellore District Vol. II, pp. 637-

638.

467. Nadupuru Grant of Anna-Vema. 1374 AD, *Vide* E.I. III, p. 288.

468. Triplicana plates of Patna Mailara, 1428 AD, *Vide* E.I. XIII, p. 4.

469. Pushpabhadra Grant of Dharmpala, 9th Cen. AD.

470. Donepundi Grant of Namaya Nayaka 1338 AD, *Vide* E.I. IV, p. 358 f. Vr. 2.

471. Kandukur Ins. 1430 AD, *Vide* The Ins in the Nellore District, Vol. II, p. 502.

472. Nellore copperplate Ins. of Ramachandra 1390 AD, *Vide* the Ins. In the Nellore district, Vol I, pp.5-6.

473. Akalapundi Grant of Singaya Nayak 1368 AD, *Vide* E.I. XIII, p. 261-262.

475. From SSRB 30.2.

476. Srirangam Plates of Devaraya II, 1434 AD, *Vide* E.I. XVIII, p. 140 f. Vr. 2.

477. Grant of Ganadeva of Kondavidu 1455 AD, *Vide* I.A. Vol. XX, p. 391 f. Vr. 2.

478. SSRB 31.13.

479. Ajmer Stone Ins. 12th Cen. AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182 f. Vr. 14.

480. from SK. 193.

481. Sarangpuram grant of sarngadhar, 1254 AD, *Vide* The Ins. in the Nellore district, Vol. I. p. 144.

482. Ins of 1261 AD.

483. Chiruvroli grant of Hambira. 1461 AD, *Vide* E.I. XXXIV pp. 182-183.

484. Bitragunta grant of Samgam II, 1356 AD, *Vide* E.I. III, p. 24. Also in SMA 2.70 with author's name as वादीश्वरकाञ्चनस्य । Also in SSRB 30.1.

485. In GNJ Ms 23054.

486. from SSRB 32.18.

487. from SK. 209.

488. from SK. 203.

489. from SSRB 33.20. Also is SA 53 with *v.l.* मण्डितानि for मण्डलानि, नः for वः ।

490. from SK. 210.

492. In GNJ MS 21809.

493. from SK. 200. Also in SMA 2.76, *v.l.* नैवाद्यापि प्रचण्डो द्रुतमुपनयतायं ननु प्राप्त एव for नैवं धिक् ...... एव। नखाग्रं for नखङ्गं, त्वरितमहहहा kfor झटिति ह ह ह हा, यः स वोऽव्यात् for सोऽवताद्वः and SMA reads the poet's name as वाक्पतिनाथ।

494. Vide Catal. of GOML Madras Vol. XVIII R. No. 10080.

495. from SS 4.29.

496. In GNJ Ms unaccessioned लक्षणप्रकाश of मित्रमिश्र।
498. from SMA 2.78.
499. In GNJ Ms 3085.
500. from SK 199. Also SA 87, *v.l.* विष्णोर्मुखं पातु वः for शौरेर्गिरः पान्तुः वः।।
501. SSRB 32.11.
502. From SK 197, Also in SMA 2.77, *v.l.* चोच्चलत्छोणिते for चोच्छलच्छोणिते, धगि for धग, स्फुटरवे for स्फुटतरो, अस्थिनि for अस्थिषु, Also in SSRB 32.9, *v.l.* स्ठागिति for ष्ठादिति, 'वक्षःस्थल for नाथोरसि, घर्षजन्माऽनलः for कार्षजन्मारवः।।
503. from SMA 2.75.
504. from SMA 2.36.
505. from SK. 205.
507. from Ins of Yasoverman.
508. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I, Sans B, R. No. 2487.
509. From SSRB 32.7, Also in SA 85.
511. from SMA 2.37, Also in SSRB 32.15, *v.l.* कराल for कराड Also in SP 84.
512. Also in SSRB 32.6. Also in SA 52.
514. from SK 201. Also in SSRB 32.12 with *v.l.* कन्दर for घर्घर, जिह्वस्य for जिह्वाभृतो, हव्याशन for हव्यभुग्, भासुर for भास्वर, लास्फालन for लीपाटनस्पष्ट।
515. from SSRB 31.1.
519. fron Sanskrit and old canarese Ins., 1075 AD, *Vide* I.A. Vol. IV, p. 208.
520. from SK. 207.
521. Ins. from Yewur, 1105 AD, *Vide* E.I. XII, pp. 229-30.
522. SSRB 32.19.
523. from SK. 204.
524. from SMA 2.80.
525. from SK. 198.
526. SSRB 32.4.
527. Gaya Ins. of the time of Narayanapala, 9th Cen. AD. *Vide* E.I. XXXV, p. 227 f.
529. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VII, part I R. No. 5434.
531. In GNJ Ms 16481.
532. From SK 202.
533. In GNJ Ms 15369

535. From SK. 206.

539. *Vide* catal of GOML Madras Vol. XI R. No. 5268.

540. from SMA 2.38. Also in SSRB 32.8 with *v.l.* करताउनात् for करधूतिभिः पुरो for पुनः

541. In GNJ Ms 25871. Also in GNJ Ms 40036. भागवतस्यसंक्षिप्तकथा.

543. Two Harsola Grants of Paramara Siyuka, 949 AD, *Vide* E.I. XIX p. 241. कराल and भारस्य दैत्यद्रुहः are emended from the original readings कड़ार and भिन्नाम्बुदश्रेणेयः।

545. Ajmer stone Ins. 12th Cen. AD. *Vide* E.I. XXIX, p. 180-182 ff.

546. In GNJ Ms 33889. गदासि is emended from the original reading गदाभि। Also in SSRB 32.5 with केसर and गदाभि but the Ms writes केसंभ and गदाभि for that.

547. SSRB 32.3.

548. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. XV R. No. 7778.

550. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I, Part I R. No. 365.

551. In GNJ Ms लक्षणप्रकाश of मित्रमिश्र Unaccessioned.

552. *Vide* Catal. of AS Cal. Vol. XI R. No. 7451.

553. from SMA 2.79.

554. SSRB 32.10.

556.– From Ajaygadh Stone Ins. of Nana, 1287 AD.

558. SSRB 31.2.

559. from SK. 196. Also in SSRB 32.13 with *v.l.* निरोधपीवर for गभीरपल्वल, त्वक्रूप for त्वग्रूप, स नः for जगत्।

562. from SK. 208.

564. SSRB 33.2.

565. from SK. 212. Also in SMA 2.81 with *v.l.* भूधरा for भूभृतो, जगतां for जगती, पायात् for पातु।

566. SSRB 33.1 Also in SA 59 with poet's name as विजयमाधव। SSRB not mentions the poet's name.

568. from SMA 2.82.

569. from SK. 211.

570. from SMA. 2.83

571. SSRB 33.9.

572. from SS 4.40. Also in SK 216, *v.l.* तिलकमथ तथा for किमु तिलकमिदं, ध्वंसि for

द्वेषि। Also in SMA 2.85 with *v.l.* तिलकमुत तथा for किमु तिलकमिदं। SK and SMA write the poet's name as हनूमतः।

573. from SK 213.

574. from SK. 220, Also in SSRB 33.3 with *v.l.* विलसद् for विकसद् and पुरी for कुटी।

575. from SK. 218.

576. from SMA. 2.87.

577. SSRB 24.17.

578. In GNJ Ms 351.

582. Stone Ins. of Yasovarman, 953 AD *Vide* E.I. I, pp. 124-125 ff.

583. from SK. 214.

584. Also in SMA 2.86, *v.l.* भवन for विजय। Also in SS 4.39, *v.l.* स्त्रवद for क्षरद। Also in SSRB 33.7.

585. from SK. 219.

586. Ajmer Stone Ins, 12th cen AD. *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182, Vr. No. 16.

587. Grant of Vikramaditya II (Bana Dynasty) 8th cen. AD, *Vide* I.A. Vol. XIII, p. 7 f.

588. Ajaygadh Stone Ins. Of Nana, 1287 AD, *Vide* E.I. XXVIII, pp. 100-102, Vr. No. 8.

589. Junagadh Rock Ins. of Skandagupta 456 AD, *Vide* CII Vol. III, pp. 58-59.

590. from SA 86. Also in SSRB 33.5, *v.l.* जलं दीयताम् for गृहीतं मया, ब्रवीत् for कुतः, चेत्येवं for यो हीत्थं।

591. from SA 56.

592. Plate of Naravarma, 1228 AD, *Vide* E.I. XXX, p. 151.

593. from SMA 2.84.

594. SSRB 33.4.

595. SSRB 34.2

596. SSRB 33.1

597. Mandhata Plates of Paramara Jayasimha Jayavarman, 1274 AD, *Vide* E. I. XXXII, pp. 148-149, Vr. No. 2.

598. Mandhata Plates of Devapala, 1225 AD, *Vide* E.I. IX, p. 108, Vr. No. 2.

599. Ajmer stone Ins. 12th cen. AD. *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182, Vr. No. 17.

600. from SK. 225.

601. from SK. 221.

NOTES

602 SSRB 34.5.

603. SSRB 34.3.

604. SSRB 34.6.

605. SSRB 34.4.

606. In GNJ Ms 48648.

607. from SMA 2.88.

608. from SK 223.

610. SK. 222.

611. from SK. 237

612. from SSRB 42.1

613. from SSRB 43.2.

614. from SK. 238.

615. from SK. 240.

616. from SK. 239.

617. from SK. 236.

618. from SK. 249.

619. from SSRB 44.1

620. from SK. 248.

621. Ajmer Stone Ins, 12th cen. AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182.

622. from SK. 250.

623. from SSRB 44.3.

624. from SK. 246.

625. from SK. 247.

626. SSRB 34.4.

628. *Vide* Catal of GOML Madras, Vol. V, Part I, Sans A. R. No. 4209.

629. In GNJ Ms 28157.

631. Mandhata Plates of Paramara Jayasimha Jayavarman, 1274 AD, *Vide* E.I. pp. 148-149.

633. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I, Sans C, R. No. 1626.

634. In GNJ Ms 49350.

637. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, Part I Sans A, R. No. 2322.

638. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, R. No. 3722.

639. In GNJ Ms 3616.

NOTES

640. In GNJ Ms 18923.

641. In GNJ Ms 28157. Also in SSRB 34.7.

642. Also in GNJ Ms 28157. सुभाषित पद्धति of श्रीपति with *v.l.* उद्धत्तासौ for उद्धर्त्ताऽसौ, भुजंग for भुजगा, घौरीद्रहवोन्निद्रा for द्यौरितीन्द्रः and सफलतु for सफलयतु।

643. In GNJ Ms 49350.

645. *Vide* catal. of GVL, Nepal, Part I, S No. 128.

646. SSRB 35.11.

647. In GNJ Ms 28157. Also in SSRB 34.5. Also in Catal. of GOML Madras Vol XVIII R. No. 10313 with *v.l.* युव for इव, सन्ततं for सर्वतो।

648. In GNJ Ms 28157.

649. In GNJ Ms 16748.

650. Also in GNJ Ms 34802, With *v.l.* जीवनं सज्जनानां in first line of sloka and पावनं पावनानां in third line of sloka. This verse also occurs in Moli Ins. 1629 AD, *Vide* NIA Vol. 3, p. 338 Vr. No. 3 with *v.l.* योगिनां ध्यानगम्यं for जीवनं सज्जनानां।

651. SSRB 35.15.

652. In GNJ Ms 33985.

653. *Vide* Catal. of ALRC, Madras Vol. IV, Part II, R. No. 1906.

654. In GNJ Ms 5848.

657. Also in SSRB 34.10.

658. In GNJ Ms 35002.

659. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. X R. No. 7070.

660. from SMA 2.89. Also in SSRB 34.11, *v.l.* सूर्येन्दवः for सूर्यादयः, तरुः for तरुं, क्रमे मम क्रियान् for ममाक्रमवतः श्रुत्वेति।

662. In GNJ Ms 27770. Ms drops the letter शौ in शौभाद्व्यं and the letter ड् in नौमीड्यं।

663. SS 4.103.

664. In GNJ Ms 12252.

665. In GNJ Ms 27770.

666. In GNJ Ms 20317.

667. from SS. 3.13

671. In GNJ Ms 39208.

672. In GNJ Ms 5848.

673. In GNJ Ms 13949.

674 *Vide* Catal. of GOML Vol. III, R. No. 1494.

676. In GNJ Ms 15278. Also in GNJ Ms 15229 with *v.l.* सततं for तं तं, स्थित संहताम् for स्थितसंहृतं and यस्मिन्नो निगमा भवन्ति नमनोमानं चराधीश्वरे for यश्चैतन्यघनः प्रामाणविधुरो वेदान्तवेद्योविभुः ।

677. In GNJ Ms. 5848.

678. In GNJ Ms 8948.

680. In GNJ Ms 45131.

682. In GNJ Ms 3426.

683. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VI, R. No. 3723.

684. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II Part I, Sans C, R. No. 1677.

685. In GNJ Ms 35796, Also in GNJ Ms 30034 with *v.l.* देवाधिपो for देवाग्रणी ।

686. In GNJ Ms 34548.

687. In GNJ Ms 33985.

688. *Vide* catal. of SML, Tanjore, Vol. VIII, R. No. 4259.

689. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. XVIII, R. No. 10298. भुसण्डि and सदाहं are emended from the Ms reading भिण्डि and त्रिणेत्रं ।

690. In GNJ Ms 28433.

692. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VII, R. No. 5792.

693. In GNJ Ms 37237.

694. In GNJ Ms 49350.

695. In GNJ Ms 19462, Also in GNJ Ms 19463 with *v.l.* सुखपूर्णधामं for परिपूर्णकामं and चरिद्विचित्रं कपिराजमित्रं दयाकरं तं दशकन्धरारिम् for last line of sloka.

697. *Vide* catal of MPL Trivandrum Vol. I R. No. 189.

698. In GNJ Ms 39653.

699. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I Sans C, R. No. 1848.

700. In GNJ Ms 5387.

701. from SSRB 34.2.

702. SSRB 34.6.

703. In GNJ Ms 30123.

704. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. IV, Part I, Sans C. R. No. 3988.

705. In GNJ Ms 39509.

706. In GNJ Ms 18217. शासितुं ओल् गतमति is emended from the Ms reading शातुं

709. In GNJ Ms 15876.
710. Ins. of 1516 AD, *Vide* E.I. VI, p. 117.
711. from SSRB 35.13.
713. In GNJ Ms 20496.
714. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I, Sans C, R. No. 1697.
715. In GNJ Ms 19662.
716. Also in AS Cal. Vol. XI, R. No. 7558 of the same text with *v.l.* निकर for निचर and निशम् for चिरान्।
717. In GNJ Ms 12352.
718. In GNJ Ms 47701
719. from Ajmer Stone Ins. of 12th AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182, Vr. No. 19.
721. from SK. 228.
723. In GNJ Ms 19138.
724. In GNJ Ms 11867.
725. In GNJ Ms 38133.
726. from SS 4.104.
727. In GNJ Ms 97/4222.
730. from Rajaprasati Ins. of Udipur 1676 AD, *Vide* E.I. XXIX, Appendix pp. 3-4.
731. Vilpak-Grant Ins. of Venkakta Ist 1601 AD, *Vide* E.I. IV, p. 272.
632. In GNJ Ms 49350.
733. Mandhata Plates of Devapala 1225 AD *Vide* E.I. IX, p. 102, Vr. No. 3. प्राणेश्वर्या is emended from the original reading प्राणेश्वरी।
735. In GNJ Ms 5848.
737. SSRB 35.16
738. SSRB 34.8.
739. *Vide* catal. of MPL Trivandrum Vol. I. R. No. 86.
741. In GNJ Ms 18923.
742. In GNJ Phto State Ms 5848.
744. In GNJ Ms 28433.
745. Also in SSRB 34.9.
746. In GNJ Ms 23914.
748. In GNJ Ms 13905.

749. In GNJ Ms 38133.
750. In GNJ Ms 17798.
751. In GNJ Ms 19462.
752. In GNJ Ms 34548 and 194.
753. In GNJ Ms 19463.
754. In GNJ Ms 49332.
755. In GNJ Ms 19463.
756. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. IV, Part I, Sans C. R. No. 3799 (a). Also in कविमनोरञ्जकचम्पूः of सीतारामसूरि
757. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I, Sans C. R. NO. 1803.
758. In GNJ Ms 16736.
759. from SSRB 34.1
760. In GNJ Ms 16978.
762. In GNJ Ms 13905.
764. In GNJ Ms 12252.
766. In GNJ Ms 48440.
767. In GNJ Ms 49350.
768. *Vide* catal of GOML Madras Vol. IV, Part I, Sans C, R. No. 3982.
769. In GNJ Ms 17058.
772. In GNJ Ms 33985.
773. *Vide* catal. of MPL Trivandrum, Vol. I, R. NO. 86.
777. In GNJ Ms 48440.
778. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. XXVI, R. NO. 14903.
781. In GNJ Ms 5848
782. In GNJ Ms 15876.
783. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. III, part I, Sans B, R. No. 2623.
784. *Vide* catal. of MPL Trivandrum, Vol I. R. No. 183.
786. In GNJ Ms 49350.
787. In GNJ Ms 47475.
788. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I, Part I Sans A, R. No. 331.
789. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. II, Part I, Sans C, R. No. 1938.
790. In GNJ Ms 49350.

NOTES

791. *Vide* catal. of AL, Vol. VI. R. No. 953.
794. In GNJ Ms 696.
795. *Vide* catal. of GOML BORS, Patna, Vol. IV, R. No. 121.
800. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. VIII, R. No. 4330.
801. In GNJ Ms 38762.
802. Vide catal. of SML, Tanjore Vol. VIII, R. No. 4339.
803. In GNJ Ms 24641.
806. In GNJ Ms 49326.
808. In GNJ Ms 28433.
809. In GNJ Ms 12252.
812. from SSRB 34.3.
813. In GNJ Ms 49350.
815. In GNJ Ms 49350.
816. In GNJ Ms 49350.
817. In GNJ Ms 28077. Also in SSRB 36. 24, *v.l.* तीर for कूल.
819. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. I. Part I, R,No. 479.
820. In GNJ Ms 14460.
821. In GNJ Ms 39653
823. Also in GNJ Ms 49226 *v.l.* खरकिरणविशाल : प्रेमवल्लीप्रवालः for the third line of sloka. This verse also occurs in catal. of AS, Calcutta Vol. XI *v.l.* पुण्ड्रको for चन्द्रको and खरकिरणविशालः प्रेमवल्लीप्रवालः for the third line of the sloka.
825. In GNJ Ms 19018.
827. From SSRB 38.44.
828. In GNJ Ms 48671.
830. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. XXVI, R.No. 14801
831. In GNJ Ms 14516.
832. In GNJ Ms 28305.
833. From Gadag Ins. of Bhillama, 1119 AD *Vide* E.I.III P. 219 F.
834. From SSRB 38.52.
836. In GNJ Ms 29788.
837. From SS. 4.48.
840. In GNJ Ms 23912. Also in SSRB 36.1

NOTES

841. In GNJ Ms 49292. This Verse also occurs in GNJ Ms 49338 व्याकरणवार्तिकम्, The poet's name not mentioned.

848. In GNJ Ms 38133. Also in GNJ Ms 31794 as स्फुटश्लोकः with *v.l.* भूत्यै for विभूत्यै, कल्प for पुण्य, स for तव.

849. In GNJ Ms 12227. Also in GNJ Ms 16503, *v.l.* नन्द for मन्द.

850. *Vide* Catal. of GOML, Madras Vol. VI, Part I, Sans. A, R.No. 5260.

851. *Vide* Catal. of GOML Madras, Vol II, Part I, Sans. C, R.NO. 1725.

852. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. II

854. In GNJ Ms. 14806. Also in Pub. Text *v.l.* कल for कर, त्रिलोकी for त्रिलोकीं.

855. In GNJ, Ms 16475.

856. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol III, Part I, Sans. A, R.No. 2281.

857. *Vide* catal. of BORS Patna Vol. III R.No. 126.

858. From SA. 27.

860. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. III. R.No. 4030.

861. In GNJ Ms 15276.

862. From Chitorgadh Ins. of Mokala of Mewad. *Vide* E.I. II, PP. 410-411 FF.

863. From SK. 259.

864. *Vide* catal. of MPL Trivandrum, Vol. III, R.No. 693.

865. *Vide* Catal. of GVL Nepal. Part III, S.No. 89.

866. In GNJ Ms 31821

867. From SP. 130

868. In GNJ Ms 8462.

869. In GNJ Ms 22222.

870. In GNJ Ms 11812.

871. In GNJ Ms 30012.

873. In GNJ Ms 39548. Also in GNJ Ms 44774, *v.l.* कुलेभूत for कुलैंपि.

874. In GNJ Ms 17659. Ms reads भक्तकारुण्य for भक्तैककारुण्य.

876. In GNJ Ms 36710.

878. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol VI, Part I, Sans. A. R.No. 5154. पर्यायपदावलीalso called व्याकरणपदावली.

880. In GNJ Ms 18845.

881. IN GNJ Ms 14168.

NOTES

882. From Rewah Plates of Trailokyamalladeva, 1212 AD, E.I. XXV., P.5.
883. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. VII, Part I, R.No. 5439.
884. From Tusam Rock Ins, *Vide* C.I.I. Vol. III, P. 270.
886. In GNJ Ms 31871.
887. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. IV R.No. 121.
889. From SS. 4.101.
891. In GNJ Ms 10958.
892. In GNJ Ms 39255.
893. In GNJ Ms 9065.
895. In GNJ Ms 24789.
898. In GNJ Ms 16706.
900. In GNJ Ms 22068.
901. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. X R.No. 5028.
903. In GNJ Ms 44546.
904. In GNJ Ms 12906. Also in SSRB 36.17.
906. From SP 71, Also in SSRB 37.26.
908. In GNJ Ms 5415.
909. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I, Part III, R.No. 763.
910. In GNJ Ms 27943. मद्भृत्य is emended from the Ms reading मद्भ.
911. In GNJ Ms 24652. Also in GNJ Ms 23946, *v.l.* बाला for बालाय, महीरुह for महीभर
913. In GNJ Ms 16472.
914. *Vide* catal. fo GOML Madras, Vol. XII, R.No. 6262.
915. From Pathari Pillar Ins. of Parabala, 859 AD, *Vide* E.I. IX P. 252.
916. In GNJ Ms 40149.
917. In GNJ Ms 2852.
918. In GNJ Ms 39509.
919. In GNJ Ms 19420.
921. Also in SSRB 36.19.
922. From SK 291.
923. In GNJ Ms 27785.
926. From SA. 46.
927. *Vide* catal. of GVL, Nepal. Vol. II, R.No. 370.

928. *Vide* Catal. of GOML Madras Vol VII R.No. 4970.

930. From SSRB 42.97.

931. In GNJ Ms. 18845.

934. In GNJ Ms 35796. शोभायै and स मां are emended from the Ms reading शोभास्यैand य मां

935. From the Ins. of the Reddis of Konavidu, 1410 AD. *Vide* E.I. XI. PP. 319-320.

936. In GNJ Ms 14203. Also in GNJ Ms 986, v.l. गम्यं for मृग्यं.

937. In GNJ Ms 24206.

940. In GNJ Ms 22222.

941. From SK. 293.

943. In GNJ Ms 22034. मोह word is missing in the last line of Ms.

944. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. V Part I, Sans. A. R.No. 4164.

945. In GNJ Ms 28157.

946. In GNJ Ms 30117.

947. In GNJ Ms 17788. Also in GNJ Ms 17239, v.l. द्रुतमलरं for द्रुमतरलं

950. In GNJ Ms 696.

952. In GNJ Ms 22224.

954. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. XXVI, R.No. 14895.

956. In GNJ Ms 8179.

960. From SS. 4.35.

966. In GNJ Ms 10958.

967. In GNJ Ms 19019.

968. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. V, Part I, Sans-A, R.No. 4156.

969. From Ammanabrolu Temple Ins. 16th Cen. AD.

970. In GNJ Ms 11816. Also in GNJ Ms 16409, v.l. वद्भुतः for वक्रतः

973. In GNJ Ms 23722.

974. *Vide* catal of GOML Madras, Vol. IV, Part I. Sans. A. R.No. 2925.

975. In GNJ Ms 22222.

977. In GNJ Ms 10960.

979. From SSRB 37.43. Also in SP. 121. v.l. मित for मिति, मायी for मायां, वः for नः

980. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. II, Part I, Sans C, R.No. 1694.

NOTES

981. *Vide* Catal. of BORS Patna, Vol III, R.No. 328.

982. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol III, R.No. 1522.

983. Ins. From Nepal, 1723 *AD Vide* I.A. Vol. IX, P. 192 F.

984. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. VII, R.No. 5448.

986. In GNJ Ms 25942.

989. Also in GNJ Ms 25886 जागदीशी अनुमितिदीधितटिप्पणी of जगदीशतर्कालङ्कार, *v.l.* रिङ्गमाणप्रतिलोलकुन्तलं for the second line of the sloka. and Also in GNJ Ms 12888 शिरोमणिटीका of जगदीश भट्टाचार्य, *v.l.* रिङ्गमाणमतिलोलकुण्डलम् for the second line of sloka.

990. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. III, R.No. 4124.

991. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. II. वर्गे, स्त्रीषु are emended from the reading वर्गैःand श्रीसु.

993. In GNJ Ms 49204.

997. From Belva copper-plate of Bhojavarmadeva, 11th cen AD *Vide* E.I. XII, P. 39.

999. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. III, Part I, Sans. A. R.No. 2281.

1001. In GNJ Ms 15736.

1006. In GNJ Ms 49290.

1007. From SK 254.

1008. In GNJ Ms 29788. Also in SSRB 38.46, v.l. छदित for छेदित and वः for नः.

1009. From SP 115. Also in SSRB 39.70 and SA. 37, *v.l.* किञ्चित्कुञ्चित For अर्द्धोन्मीलित, प्रस्नुत for प्रस्तुत, बिन्दु for दिग्ध, मात्रैकाङ्गुलि for मात्रा चाङ्गुलि, स्मेराननस्याननाच्छौरेः for स्मेरायमाणे मुखे विष्णोः, वलीव पतिता for म्बुधामथवला.

1010. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol. III R.No. 295.

1011. From SA 38. Also in SS 4.75, v.l. वशाः for पराः, स for स्व, करेण विमृशन् for स्पृशन् प्रमुदितः.

1013. In GNJ Ms 2791.

1014. From SK 253.

1015. In GNJ Ms 20317. Also in SS. 4.51, v.l. विभ्रन्मुदां for विभ्रत्सुधां, नखमपि for नखमणि, वहन् for दधद्।

1016. From SK 260. वसुदेव is emended from the original reading वासुदेव।

1017. From Gopinathpur Ins. of Kapilendradeva, 1465 AD, *Vide* JASB Vol. LIXIX, P. 175 F.

1019. *Vide* Catal. of GOML Madras, Vol. XXI, No. 12323.

1020. From SSRB 36.20. Also in वृहत्स्तोत्ररत्नाकर.

1021. *Vide* catal. of AS cal. Vol. XI, R.No. 7523.

1022. In GNJ Ms 2791.

1023. From SSRB 36.18.

1025. In GNJ Ms 2791.

1026. From SS 4.59.

1027. In GNJ Ms 13303.

1028. In GNJ Ms 23743.

1029. In GNJ Ms 2791.

1030. From SP 73.

1031. In GNJ Ms 39426.

1032. In GNJ Ms 6955.

1033. In GNJ Ms 39462.

1034. In GNJ Ms 29783. Also in GNJ Ms 28181 न्यायप्रकाशटीका of अनन्तदेव Son of आपदेवसूरि। v.l. पूवे for ग्रुक्ते, रमेशोप्ययां for रमेशेनया।

1036.... From Mankhetra Ins. 1583 AD, *Vide* NIA Vol. 3, P. 204. भ्रवपुषे and वन्यस्त्रजे are emended from the original reading भुवपुषे and वन्यश्रजै।

1039. In GNJ Ms 10959.

1040. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. II, Part I, Sans. C, R.No. 1563.

1041. In GNJ Ms 36879. Also in SSRB 36.11.

1043. From Junagadh Ins. 1417 AD, *Vide* NIA Vol. 2, P. 603.

1047. From SA 39.

1048. In GNJ Ms 31578.

1049. From SK 297.

1050. In GNJ Ms 36879. Also in SP 78, SSRB 36.12 and SMA 1.41. *v.l.* भारं for शैलं in SMA 1.41.

1052. In GNJ Ms 48391.

1053. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I, Part I, Sans B, R.No. 409.

1054. From SA 34.

1055. From SK 299.

1056. From Ajaygadh Stone Ins of Nana, 1287 AD. *Vide* E.I. XXVIII, PP. 100-102 FF.

कृतवान् and वल्लव are the emendments from the original reading कृतवन् and वल्लर।

1057. From Jodhapur Ins. of Rupadevi 1248 AD, *Vide* E.I. IV, P. 313.

1058. From SSRB 41.88.

1059. From SK 296.

1060. From SK. 298.

1061. From Ajmer Stone Ins, 12th cen. AD *Vide* E.I. XXIX, PP. 180-182 FF. स्रावै is emended from the original reading श्रावै.

1062. In GNJ Ms 7574.

1063. From SSRB 42.96.

1064. From SP 70.

1066. From SSRB 42.99.

1067. From SK 285.

1068. *Vide* catal. of AS cal. Vol XI, R.No. 7559.

1070. In GNJ Ms 20317. मुरलिका is emended from the original reading मुरली।

1071. *Vide* catal. of BORS, Patna, Vol. II. Also in GNJ Ms 11388 विद्यासुन्दरप्रस्तावः v.l. द्विधा for निधा, संधावितो for सम्मूर्च्छितो, स्थिरो for स्थित्वा, वासेषु पुष्पस्थितो for वासे सुपुष्पान्विते।

1073. In GNJ Ms 29198.

1074. In GNJ Ms 40500. Also in GNJ Ms 44539 शब्दमानपरिच्छेदालोकः, v.l. क्व for कुत्र् Also in SSRB 22.36, v.l. वंशिका for वंशिकां, निखल for नखिल.

1075. From SK. 281.

1078. From SK 282.

1079. In GNJ Ms 2691.

1082. From SK 284.

1083. In GNJ Ms 15276.

1084. In GNJ Ms 16046, v.l. निचयं for नित्यं।

1086. From SK. 283.

1088. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol II. No. 19.

1090. From SA 40, Also in SS 4.76, *v.l.* विदारिते शिशुमुखे दृष्ट्वा समस्तं जगन्माता for विकासिते .... दृष्ट्वा। Also in SK 251, *v.l.* नाद्य for नाम्ब, विदारिते शिशुमुखे दृष्ट्वा समस्तं जगत् माता for विकासिते .... दृष्ट्वा, पदं for वशं, मनसा for मधुना Also in

SP 4016 with *v.l.* अम्ब for अद्य, ऽसकृत् for मधुना, विदारिते च वदने दृष्ट्वा समग्रं जगन्माता for विकासिते .... दृष्ट्वा पदं for वशं Also in SSRB 40.81 with *v.l.* किमेष आह for क एवमाह, च वदने दृष्ट्वा समस्त जगन्माता for ऽथ वदने माता समस्तं जगद् दृष्ट्वा, पदं for वशं, श्रीपतिः for केशवः।

1091. From SSRB 41.84.

1092. From SA 33.

1093. From SSRB 39.65.

1094. From SS 4.50. Also in SSRB 40.74.

1095. From SA 31.

1096. *Vide* catal. of AS cal. vol. XI, R.No. 7500.

1097. In GNJ Ms 40134.

1098. From Ajaygadh stone Ins. of nana, 1287 AD, *Vide* E.I. XXVIII PP. 100-102 FF.

1099. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. III, Part I, Sans. B, R.No. 2608.

1101. In GNJ Ms 21809.

1104. In GNJ Ms 2852.

1105. From SP 74. Also in SSRB 38.56.

1106. From SP 118.

1107. *Vide* Catal. of BORS Patna, Vol. III, R.No. 18.

1108. *Vide* Catal. of GVL Nepal Vol. II, R.No. 1427.

1110. From SSRB 38.49.

1113. *Vide* Catal. of GOML Madras, Vol X R.No. 4871.

1114. From SA 101. Also in GNJ Ms 20317. श्रीरामकल्पद्रुमः, *v.l.* फूले for कच्छ, संज्ञाविनिfor मङ्गैर्वि, सहसा for बहुशो, गोपीपाणिसरोज for गोपीभिः करपद्म, दामोदरः पातु वः for पायात्स वः केशवः। Also in SSRB 39.62, v.l. संज्ञा for मङ्गै, गोपीपाणिसरोज for गोपीभिः करपद्म and गोपीपतिः पातु वः for पायात्स वः केशवः।

1115. In GNJ Ms 16056.

1116. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. III, Part I Sans A, R.No. 2310.

1117. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. II, part I, Sans. C, R.No. 1467.

1119. From Udaypur Ins. of Aparajita, 660 AD, *Vide* E.I. IV, p.31.

1120. From SMA 1.31. Also in SSRB 38.47.

1122. In GNJ Ms 22224.

1124. From SK. 287.

NOTES

1125. From SK. 302.

1126. From SMA. 2.90.

1127. *Vide* catal. of Vishvabharti shantiniketan, Part. I. R. No. 189.

1129. From SSRB 41.87.

1130. From SSRB 37.41.

1131. From SA. 100.

1133. From SSRB 36.7.

1135. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. V, Part I, Sans A, R.No. 4210.

1137. From SSRB 36.13.

1140. *Vide* catal. of BORS Patna, Vol I, R.No. 195.

1141. In GNJ Ms 25160.

1143. From SK. 304.

1146. From SK. 273.

1147. From SP. 77 Also in SSRB 36.10.

1148. From SK. 300

1149. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol III Part I, Sans A, R.No. 2285.

1151. From Gaonri Plates of Vakpati Munja, 981 AD, *Vide* E.I. XXIII, P. 108 F.

1152. From SMA 2.92.

1153. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. V, Part I, Sans A, R.No. 4164.

1155. From SSRB 41.85.

1158. In GNJ Ms 22224.

1159. From SK 274.

1161. *Vide* catal of GOML Madras, Vol. III, Part I, Sans B, R.No. 2592.

1162. In GNJ Ms 16689.

1164. From SP. 119 Also in SSRB 36.6.

1165. From SK. 270.

1167. From SP 272.

1169. *Vide* catal. of BORS Patna Vol II.

1170. From SP. 69.

1171. In GNJ Ms 19420.

1172. From SS 77. Also in SSRB 42.102, *v.l.* कुटिले for कुटिलो, किमुत for त्वमसि, सत्यभामा for गोपकन्या, जितः for जडः, चक्रपाणिः for पद्मनाभः।

1173. Also is Catal. of BORS Patna Vol. II, *v.l.* नाम for नात्र, सर्पस्य for सर्वस्य and किमिह विपिने for विपिनसन्निधे।

1174. From SK. 278.

1175. From SK. 280.

1176. From SK. 277. Also in SSRB 40.73. v.l. मृगस्य for मृगेण, राधे for मुग्धे, तन्वीमलमूfor पुष्पान्विता. Also in SA. 104 and SP 122, v.l. मृगस्य for मृगेण, राधे for मुग्धे, SA v.l. पिब for व्रज, तन्त्रीमले for पुष्पान्वितां SK reads कृष्णः कथं वानरः for कृष्णादहं वानरात्।

1177. From SA 98.

1180. *Vide* catal. of GOML Madras, Vol. II Part I Sans C, R.No. 1466.

1181. *Vide* catal. of GOML, Madras Vol. IV, R.No. 3218.

1183. *Vide* Catal of SML, Vol VIII, R.No. 4580.

1184. In GNJ Ms 44491. Also in catal. of AS cal. Vol. XI R.No. 8802., v.l. र्याभावात् for र्यलाभोन् and श्वत्थ for ज्वल।

1185. *Vide* catal of AS cal. Vol. XI R.No. 8248.

1187. In GNJ Ms 4546.

1188. In GNJ Ms 11816.

1190. From Anavada stone Ins. of Sarangadeva, 1291 AD, *Vide* I.A. Vol. XLI, P.21. Also in SP 80, *v.l.* तुभ्यं for तस्मै.

1191. Nalanda Ins. of vipulasrimitra.

1192. from Ghosrawa Buddhist Ins., 9th cen. AD. *Vide* I.A. Vol. XVII, p. 309.

1193. from SK. 241.

1194. from SSRB 44.6.

1195. from SK. 243.

1196. Buddhgaya Ins. of Gopaladeva, 8th cen. AD; *Vide* Gaudalekhamala, Vol. I. p. 89.

1197. from Hiregutti Plates of Bhoja Asorikita, 6th cen. AD, *Vide* E.I. XVIII, p. 75.

1198. from A Kalachuri stone Ins. from Kasai, 11th or 12th cen. AD, *Vide* E.I. XVIII, p. 130-131 ff, Vr. Nos. 4 & 5.

1199. Buddhist Ins. from Kota, 10th cen. AD, I.A. Vol. XIV, pp. 45-46.

1200. Also in SMA 2.95 *v.l.* नित्यं for सेर्ष्यं, हरि for जिनः।

1201. Ins. from Gaya (Surya Temple Ins.), 1335 AD, *Vide* I.A. Vol. X, p. 342.

1202. Bodhagaya Ins. of Mahanaman, 588 AD, *Vide* I.A. Vol. XV p. 357.

NOTES

1203. from SK. 242.

1204. from SSRB 44.5

1205. A buddhist stone Ins. from Sravasti, 1219 AD, *Vide* I.A. Vol. XVII, p. 62.

1206. from SK. 245.

1207. Ins. from Bodh-gaya, 12th cen. AD, *Vide* E.I. XII, p. 29.

1208. Rampal Plate of Srichandradeva, 10th cen. AD, *Vide* E.I. XII, p. 138.

1209. Gokak Plates of Dejja-Maharaja, 532 AD. *Vide* E.I. XXI, p. 291.

1210. from Ajmer Stone Ins, 12th cen. AD, *Vide* E.I. XXIX, pp. 180-182.

1211. Bodhgaya Ins. of Mahanaman, 588 AD. *Vide* I.A. Vol. XV, p. 357.

1212. from SK. 244.

1213. The Jambigha Ins, 1202 AD, *Vide* JBORS Vol. IV, p. 279.

1214. Ghosrawa Buddhist Ins., 9th cen. AD *Vide* I.A. Vol. XVII, p. 309.

1215. Satrunjaya Ins., 1583 AD, *Vide* NIA, Vol. 3, p. 205 f.

1216. Kalimpur Plate of Dharmpaladeva, t9th cen. AD, *Vide* E.I. IV, p. 247.

1217. The Nalanda Copper-Plate of Devapaladeva 9th cen. AD, *Vide* E.I. XVII, p. 318.

1218. Devangree Plates of Ravivarman, 6th cen. AD, *Vide* E.I. XXXIII, p. 90.

1219. Nalanda stone Ins. of the region of Yasovarmandeva, 6th cen. AD, *Vide* E.I. XX, p. 43.

1222. *Vide* Catal. of AS Cal. Vol. XI, R. No. 2938.

1223. In GNJ Ms 25075.

1225. In GNJ Ms 25075

1226. Meher Plate of Damodaradeva, 1234 AD, *Vide* E.I. XXII, p. 187.

1227. *Vide* Catal. of GOML Madras Vol. IV. Part I, Sons A, R. No. 3030.

1228. *Vide* Catal. of GOML Madras, Vol. VII, R. No. 5424.

1229. Gopinathpur Ins. of Kapilendradeva 1465 AD, *Vide* JASB, Vol. LXIX, p. 175.

1230. Gopinathpur Ins. of Kapilendradeva 1465 AD, *Vide* JASB Vol. LXIX, p. 175. वेदान्तार्थ is emended from the original reading वेदान्ताथ।

1231. In GNJ Ms 4577/12. Also is GNJ Ms 34167 मन्मथमन्त्रसमुद्देशः of शेखर With *v.l.* रतिपतिमलसिन्धु कागिनाकेलबन्धु for the first line of sloka, साध्य for सेव्य, बहुसेकः for बहुसेवः and कामिनी for कामिभिः।

1232. In GNJ Ms 41519, 11820 And 35485. Also in GNJ Ms 4573 with *v.l.* निवासं for विकासं, प्रनाशं for प्रणाशं, निवासं for विरामं, धामं for वामम्।

NOTES

1233. Also in समयमातृका of क्षेमेन्द्र with *v.l.* अनङ्गवातलास्त्रेण for अनङ्गेनाबला, सङ्गाज्, विचित्रशक्तये तस्मै नमः कुसुमधन्वने for second line of sloka.

1234. from SK. 462.

1237. from SS. 3.25.

1238. from SS. 3.24.

1240. Also in SK 469, SMA 1.25 and SP 3077.

1241. from SK. 467.

1242. from SK. 463.

1243. In GNJ Ms 16735.

1244. from SA 82, Also in 470.

1246. from SA 10.

1249. from SK. 464.

1252. from SK. 265.

1253. In GNJ Ms 4426.

1254. from SK. 466.

1255. In GNJ Ms 20466

1256. from SMA 1.26.

1257.—*Vide* Catal. of GOML Madras Vol. VII R. No. 5086.

1259. from SK. 461.

1260. *Vide* Catal. of GOML Madras, Vol. V, Part I Sans. A, R. No. 4207.

1261. from the Sasbahu Temple Ins of Mahipala, 1150 AD, *Vide* I.A. Vol. XV, p. 36 f.

1262. from the Sasbahu Temple Ins. of Mahipala 1150 AD, *Vide* I.A., Vol. XV, p. 36 f. तन्वानः is emended from the original reading नन्वानः।

1263. from the Sasbahu Temple Ins. of Mahipal 1150 AD, *Vide* I.A. Vol. XV, p. 36 f.

1264. *Vide* catal. of GOML Madras Vol. I R. No. 751.

1267. *Vide* Catal. of MPL, Vol. III Trivendrum R. No. 670.

1268. In GNJ Ms 12314.

1271. In GNJ Ms 45155.

1272. from Kondakur Ins. 1408 AD, *Vide* the Ins. in the Nelore district, Vol. II, p. 508.

1276. from Circa Ins. 1417 AD.

1277. In GNJ Ms 29150.

1278. *Vide* catal of GOML Madras Vol. IV, part I, Sans C, R. No. 4121.

NOTES

1279. In GNJ Ms 31516.

1280. In GNJ Ms 24575.

1281. from Una Ins. 1526 AD, *Vide* NIA Vol. III, pp. 193-194.

1282. *Vide* catal of GOML Madras Vol. XIX, R. No. 11331.

1283. In GNJ Ms 19017.

1284. In GNJ Ms 36363.

1286. from Grant of Somavarmadeva and Asatadeva (Circa the 15th cen. AD.) *Vide* IA Vol. XVII, p. 11.

1287. Nilgunda Ins. of amoghavarsa 866 AD, *Vide* E.I. VI, p. 102.

1289. In GNJ Ms 26921.

1290. In GNJ Ms 34042.

1292. In GNJ Ms 22495.

1293. In GNJ Ms 35611.

1294. In GNJ Ms 25511.

1295. In GNJ Ms 29800.

1296. In GNJ Ms 21812.

1300. In GNJ Ms 20317. Also in GNJ Ms 29873 अनुमिति-परामर्शः of महादेव as a स्फुटश्लोकः Ms 20317 reads धरकु for धरणि, Ms 29873 reads धरणि।

1301. In GNJ Ms 18223.

1305. In GNJ Ms 14168.

श्लोकानुक्रमणिका

श्लोकानुक्रमणिका

श्लोकानुक्रमणिका

श्लोकानुक्रमणिका

ग्रन्थानुक्रमणिका

ग्रन्थकारानुक्रमणिका

ग्रन्थकारानुक्रमणिका

ग्रन्थकारानुक्रमणिका